त्रि-इब्लिसी

शोषण-व्यूह विध्वंस भाग 1 सिरीज

(किताब 1 ली)

आर्य-ब्राह्मण मूलनिवासी नाग-द्रविडों के धोखेबाज सेवक थे !

मुख्य लेखक/संपादक

मान॰ शीतल मरकाम

सरसेनापति,गोंडवाना मुक्ति सैनिक दल !

प्रस्तुति शोषित समाज जागरुकता मुहिम !

Know the truth, and the Truth shall make you free.

किताब का नाम : त्रिइब्लिसी शोषण-व्यूह विध्वंस भाग 1 सिरीज किताब 1 ली
'' आर्य-ब्राह्मण मूलनिवासी नाग-द्रविडों के धोखेबाज सेवक थे ! ''

भाषा : आम लोगों की असाहित्यीक हिन्दी।

लेखक/संपादक : शोषित समाज जागरुकता मुहिम !
मान॰ शीतल मरकाम (मुख्य लेखक/संपादक)

प्रकाशक : मान॰ शीतल मरकाम, सरसेनापति, गोंडवाना मुक्ति सैनिक दल, गोंडवाना विकास मंडल, 233 संत तुकडोजी नगर, मानेवाडा रोड, नागपुर - 24 शोषित समाज जागरुकता मुहिम के अंतर्गत प्रकाशित। (कृपया इस पते पर किताबें न मंगाए।)

सर्वाधिकार : यह किताब शोषित बहुजन समाज की संपत्ति है इसलिये शोषित समाज का कोई भी व्यक्ति, संगठन अथवा प्रकाशन संस्था इस पुस्तक का पुनःमुद्रण करके, या किसी भी भाषा में अनुवादित करके, या इसे छोटे छोटे बुकलेटों के रुप मे छापकर अपनी पसंद की कीमत पर बेचने के लिये स्वतंत्र है; उन्हे किसी से अनुमति लेने की या किसी को एक नया पैसा देने की भी जरुरत नही है।

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2013

मुद्रित प्रतियाँ : 2000 (दो हजार सिर्फ)

इस इंटरनेट एडीशन की किताब को आप मुफ्त में डाउनलोड कर उसे वितरित करने के लिये पूरी तरह से स्वतंत्र है।

क्र. **अनुक्रमणिका** पेज क्र.

01 मूलनिवासी अफ्रिकी वंशी अवाम 11

मानव-विकास की दास्तॉन, **Y-dna haplogroup "I"**, इजिप्त के मूलनिवासी अफ्रिका वंशीय काले थे, युरोप में काले अफ्रिका वंशीय लोगों की वसाहतें थी, द्रविड लोग अफ्रिका वंशीय है, अफ्रिकी तथा द्रविडों के धार्मिक विश्वास समान है, द्रविडों तथा अफ्रिकी लोगों में भाषा संबंधी समानता, द्रविड तथा अफ्रिकन लोगों के बीच अनुवांशीक समानता, आरंभीक चीनी अफ्रिका वंशी थे, काले अफ्रिका वंशियों की अतिप्राचीन गौरवशाली सभ्यता

02 अफ्रिका वंशीय लोगों में मेलॅनिन रसायन की भूमिका 21

शरीर के स्वास्थ्य में मेलॅनिन की भूमिका, मानसिक-आध्यात्मिक विकास में मेलॅनिन तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका, अफ्रिका के काले लोगों की बेहतर शारीरिक क्षमताओं का अध्ययन, गोरी त्वचा की वजह क्या है, गोरे लोगों में पाई जाने वाली शारीरिक समस्याएं, क्या गोरे लोगों का वंश समाप्ती की ओर अग्रेसर है, विटॅमिन डी को लेकर गोरों का झूठा प्रचार, वंशवादी गोरे लोगों का, कालों के खिलाफ प्रतिशोध

03 आर्य-ब्राह्मण अलबिनो-निन्डरथॉल के वंशज है 34

निन्डरथॉल प्रजाति के सामान्य गुणधर्म, निन्डरथॉल की बौध्दिक असामान्यताएं, निन्डरथॉल्स आदमखोर थे, निन्डरथॉल प्रजाति विलुप्त होने के सिधान्त, गोरे लोग अलबिनो-निन्डरथॉल से संकरित प्रजाति है

04 खाजार-यहूदियों में ज्यादा निन्डरथॉल गुणधर्म है 40

खाजार यहूदियों में निन्डरथॉल शारीरिक गुणधर्म, खाजार यहुदियों के मानसिक निन्डरथॉल गुणधर्म, निन्डरथॉल अनुवांशिकता छुपाने की खाजार यहूदियों की कोशिशें

05 आर्यो की जन्मभूमि आर्क्टिक ध्रुव के क्षेत्र थे 45

आर्क्टिक क्षेत्र अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो की जन्मभूमि थी, अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य आदमखोर थे, अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य जानवरों के साथ भटकती टोलियां थी, अलबिनो-निन्डरथॉल वंशी आर्य सुखलोलुपता से ग्रस्त समुदाय था !, आर्यो में अग्निहोत्री का विकास

06 अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य आदिम एनिमिस्ट (animist) **थे 50**

आर्यो के ''सनातन-धर्म'' का स्वरुप, सोमा सायकोडेलिक रसायन युक्त पौधा है, धार्मिक विश्वासों का उगम सायकेडेलिक रसायनों से उत्पन्न अनुभव है, कौनसा पौधा सोमा है, अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो का धर्म टोने-टोटकों पर आधारित धर्म है

07 अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य लैंगिक संबंधों में अत्यंत उदार थे ! 57

,अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य लैंगिक संबंधों में अत्यंत उदार थे !

आर्यो में अतिउदार लैंगिक संबंध, अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो में स्त्रीयों के बलात्कार को मान्यता थी, आर्य मुक्त रुप से अपने लैंगिक संबंधों की चर्चा करते थे, आर्यो के यज्ञ का लैंगिक स्वरुप, जानवरों के साथ संभोग को आर्यो में पूरी तरह से मान्यता थी, आर्य शराब और जुँए को गौरवास्पद कृत्य समझते थे

08 अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य हम नाग-द्रविडों के धोखेबाज सेवक थे 63

आर्य-यहूदियों में मोलेच पूजा का विकास, आर्यो के लैंगिक यज्ञों का, नाग-द्रविड असूरों व्दारा विरोध

09 अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य कुटीलता से नाग-द्रविड सत्ता पर हावी हुए 72

अपना अस्तित्व बचाने अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो की योजना, आर्यो में ब्राह्मणों तथा अन्य वर्णो की उत्पत्ति, अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो ने धूर्तता से नाग-द्रविडों से वैवाहिक संबंध कायम किये, झोरोस्टर के धर्म पर मॅजी-ब्राह्मणों का कब्जा, ब्राह्मणों की जासूसी भाषा संस्कृत का विकास, मॅजी-ब्राह्मणों की राजनीतिक अप्सराएं, आर्यो का जासूसी वेश्याजाल, आर्य-ब्राह्मणों की विषकन्याएं, नाग-द्रविडों के धन पर मॅजी-ब्राह्मणों का कब्जा, मॅजी-ब्राह्मणों की गोपनीय षडयंत्र तकनीकें, मॅजी ब्राह्मणों ने नाग-द्रविडों को आपस में लडाकर कमजोर किया, पुरोहित पद के लिये क्षत्रीय तथा ब्राह्मण आर्यो के बीच संघर्ष, मॅजी-ब्राह्मणों के खिलाफ जन-प्रतिरोध, अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य-ब्राह्मणों ने नाग-द्रविड राजाओं को अपने हित में इस्तेमाल किया

10 यहूदी-रॅबी तथा ब्राह्मण, आर्यो के विभक्त हुए समूह है 90

यहूदी रॅबी तथा ब्राह्मणों के धार्मिक विश्वासों की समानता, वैद्यकीय सबूत (medical Evidences), ऐतिहासिक सबूत (**Historical Evidences**)

11 आर्यो की वसाहतों का विस्तार 96

अर्केम (Arkaim) पुरातत्वीय वसाहत (Complex), अन्ड्रोनोवो पुरातत्वीय वसाहत, बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स (BMAC)

12 सींधू घाटी की गौरवशाली नाग-द्रवीड सभ्यता (Civilization) 103

सिंधु घाटी सभ्यता सबसे बडी और दुनियां की सबसे पुरानी नागरी सभ्यता है सिंधु घाटी सभ्यता की खोज का संक्षिप्त इतिहास, सिंधु घाटी सभ्यता की नगर रचना उन्नत इंजिनियरिंग तकनिक से बनी है, सिंधु घाटी सभ्यता सर्वोच्च स्तर की लोकतांत्रिक व्यवस्था थी, सिंधु-घाटी सभ्यता के वजन तथा गिनने के साधन, सिंधु घाटी सभ्यता का दंत व औषधी विज्ञान, सिंधु घाटी सभ्यता के संगीत, खिलौने तथा दिगर कलाकृतियां, सिंधु घाटी सभ्यता में व्यापार का स्वरुप व विस्तार, सिंधु घाटी सभ्यता की मुद्राएं, सिंधु घाटी की लिपि, सिंधु घाटी की लिपि को जानने-समझने की कोशिशें

13 अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो का सिंधु घाटी पर आक्रमण और विध्वंस 113

आर्य विदेशी भूमि से आये थे, वांशीक रुप से आर्य सिंधु घाटी मूलनिवासियों से भिन्न है, आर्यो की भाषा और संस्कृति मूलनिवासी नाग-द्रविडों से अलग है, आर्यो का धार्मिक विश्वास नाग-द्रविडों से पूरी तरह से अलग है, अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो की तथा नाग-द्रविडों की संस्कृति परस्पर विरोधी है, भारत में आर्यो का विस्थापन और आक्रमण भी हुआ, सिंधु-घाटी में युध्द और विध्वंस के सबूत है, पाखंडी आर्य-ब्राह्मणों का,भारत के मूलनिवासी होने का झूठा प्रलाप, आर्य-ब्राह्मणवादियों की, झूठी दलितों का पर्दाफाश

14 सिंधु घाटी की नाग-द्रविड श्रमण संस्कृति (Culture)..... 132

श्रमण संस्कृति ब्राह्मण-धर्म विरोधी संस्कृति थी, ब्राह्मण-धर्म का विरोधी मूलनिवासी नाग-द्रविडों का जैन धर्म, श्रमण परंपरा का शैववाद, श्रमण योग परंपरा, लैंगिक-तंत्रयान वेदिक ब्राह्मणों की पध्दति है, शैविजम की मातृ-पितृ शक्ति ब्राह्मणों के तंत्रयान से एकदम विपरित है, ब्राह्मणों का वेदिक धर्म श्रमण परंपरा का दूश्मन रहा है, जैन धर्म और बौध्द धम्म सिंधु घाटी सभ्यता के मुख्य धर्म थे

15 भारत में नाग-द्रविडों के श्रमण परंपरा के साम्राज्य 143

नाग-द्रविड भारत के मूलनिवासी है, जैन सम्राट अजातशत्रु, जैन सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य, अजिविक पंथी सम्राट बिंदुसार, महान बौध्द सम्राट अशोक, सम्राट अशोक महान व्दारा शिलाओं तथा स्तभों पर लिखे राजादेश, सम्राट अशोक व्दारा बौध्द धम्म का विदेशों में प्रचार-प्रसार, सम्राट अशोक के बाद मौर्य राजवंश, ग्रीक-बुध्दीस्ट शासन, बौध्द सातवाहन साम्राज्य, जैन सम्राट खारावेला, बौध्द सम्राट कनिष्क, बौध्द सम्राट हर्षवर्धन, पाल राजवंश के बौध्द सम्राट

16 मूलनिवासी श्रमण धर्मो की जनहितकारी गौरवशाली परंपरा ! 167

मूलनिवासी श्रमण धर्मो ने जनता के कल्याण को सबकुछ माना, कल्याणकारी बुध्दिस्ट राज्य की रुपरेखा : करुणा-भाव बौध्द-राज्य मूलाधार है, बौध्द सम्राटों ने समाजिक समानता को प्रोत्साहित किया , बौध्द शासन-व्यवस्था धर्मपिरपेक्ष जनतांत्रिक व्यवस्था है, आम लोगों के लिये सम्राट अशोक की आश्चर्यजनक उपलब्धता, स्थानीय भाषाओं में राजकाज, न्याय तथा दंड-व्यवस्था, रोगियों के उपचार की सुविधाएं, बौध्द शासन-व्यवस्था में अन्य जन-सुविधाओं का निर्माण, बौध्द शासन सदाचार के पालन के लिये समर्पित है, बौध्द धम्म विचारों को लादने में नही बल्कि समझाने में विश्वास करता है, बलिप्रथा तथा जानवरों की हत्या पर पाबंदी, बौध्द शासन में पर्यावरण का संरक्षण, बौध्द व जैन धर्म ने विभिन्न कलाओं तथा निर्माणों को बढावा दिया, बौध्द साम्राज्य में बिना किसी भेदभाव के सबको समान शिक्षा, प्राचीन भारत के बौध्द विश्वविद्यालय, ब्राह्मण तथा ईसाई पूजारियों व्दारा ज्ञान तथा विरोधी साहित्य का विध्वंस,

17 मूलनिवासी श्रमण धर्मो का शोषणपरस्त ब्राह्मण-धर्म में रुपांतरण ! 189

बौध्द धम्म ब्राह्मण-धर्म का सबसे बडा खतरा, सम्राट अशोक बौध्द धम्म के मूल सिध्दान्तों की रक्षा करना चाहते थे, घुसपैठ और भ्रष्ट्राचार से ब्राह्मणों व्दारा बौध्द धम्म का विध्वंस, भिख्खुओं का बददिमाग पंडों में रुपांतरण

18 गुप्त साम्राज्य आर्य-ब्राह्मणों का सुवर्ण-युग 197

अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने कुटील षडयंत्रों से श्रमण परंपरा के मूलनिवासी राज्यों को नष्ट किया, कुटील षडयंत्रों से अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के राज की स्थापना, वेदिक यज्ञ प्रथा की पूर्नस्थापना , स्थानीय भाषाओं को कुचलकर संस्कृत का पुरस्कार, ब्राह्मणों को सर्वोच्च बनाने वेद, पुराण इ. धर्म-ग्रंथ दोबारा लिखे गए, दिगर धर्म-पंथों के व्यक्तित्वों को ब्राह्मण-धर्म में शामिल करने धर्मग्रंथ दोबारा लिखे गये, ईसाई ध र्म से ब्राह्मण-धर्म को बचाने अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय ने अपने धर्मग्रंथों में बदलाव किये, बहुसंख्यंक मूलनिवासियों को शुद्र करार देने अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथों को दोबारा लिखा, नये देवताओं के निर्माण के लिये पुराण इ. धर्मग्रंथों को दोबारा लिखा गया, बौध्द जैन इ. के धर्मस्थलों को हडपने के लिये अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथ दोबारा लिखे, बुध्द के खिलाफ नफरत फैलाने के लिये अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथ दोबारा लिखे, श्रमण धर्मो के दमन के लिये नये पूजा-कर्मकांडों का निर्माण, श्रमण धर्मो पर कब्जा करने और दान वसूलने अल्पसंख्यक ब्राह्मणों ने मूर्तिपूजा शुरु की, गुप्त साम्राज्य में अल्पसंख्यक ब्राह्मणों को ताकतवर बनाया गया, ब्राह्मणों की रक्षक जातियों को अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने क्षत्रिय वर्ण प्रदान किया, बौध्दों को शह देने गाय-भक्षी वेदिक ब्राह्मण शाकाहारी बनें, वेदिक ब्राह्मणों में गोमांस भक्षण का प्रचलन, मांस-भक्षण संबंधी

ब्राह्मण-धर्म के नियम, वेदिक आर्यो में इन्सानों की बलि चढाने की प्रथा, अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के संघ-परिवार व्दारा गोभक्षण की सच्चाई को नकारने की कोशिशें, अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के संघ-परिवार व्दारा गो-वध के नाम पर मुस्लिम इसाईयों के खिलाफ नफरत का प्रचार, ब्राह्मण ावादियों की पाखंडी-क्रूरता की इन्तेहा

19 ब्राह्मणों का स्वर्ण-युग मूलनिवासी जनता का घोर काला युग है 228

गुप्त साम्राज्य भारत का सुवर्णयुग होने का झूठा प्रचार, गुप्त राजाओं ने लोकतांत्रिक राज्यों को खत्म किया, गुप्त साम्राज्य ने मूलनिवासी जनता को कमजोर किया, गुप्त राजाओं ने मनुस्मृति के कानून को लागू किया, गुप्त काल में ही ब्राह्मणों ने अस्पृस्यता का विकास किया, अल्पसंख्यक ब्राह्मणों व्दारा बौध्द आदिवासियों से प्रतिशोध, ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य महिलाओं के लिये असहनीय नर्क, गुप्त साम्राज्य ने ब्राह्मण अंधकार युग की घिनौनी चुडैल-हत्या प्रथा को पूर्नजीवीत किया, गुप्त अंधकार युग में ब्राह्मण-धर्म ने मंदिरों में देवदासियों से वेश्यावृत्ति कराई, अल्पसंख्यक आर्य-ब्राह्मणों ने बहुसंख्यक मूलनिवासियों को अपमानित किया, ब्राह्मण ावादी गुप्त साम्राज्य में ब्राह्मणों ने औरतों को अशुध्द और गैरभरोसे का प्रचारित किया, वेदिक ब्राह्मण-धर्म दहेज और भ्रुण हत्या को मान्यता देता है, वेदिक ब्राह्मण-धर्म के नियमों के मुताबिक गुप्त अंधकार युग में बच्चियों की शादी होती थी, गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में स्त्रियों को शिक्षा व धार्मिक विधि से वंचित किया गया, ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक औरतें पति की संपत्ति है इसलिये उन्हे संपत्ति रखने का अधिकार नही है, गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में औरतें घर में कैद होकर रह गई, गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में बहुपत्निप्रथा को खुब बढावा दिया गया, ब्राह्मण-धर्म स्त्रियों पर बलात्कार किये जाने को मान्यता देता है, औरतों के खिलाफ हैवानियत के कानून, ब्राह्मण वंश की कथित शुध्दता के लिये बंगाल में कुलीन विवाह की प्रथा शुरु की गई, ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक विधवाओं का विवाह नही हो सकता, ब्राह्मण ध ार्म के मुताबिक पति की मौत की वजह औरतों के पाप है, गुप्त साम्राज्य के अंधकार-युग में सति-प्रथा को पूर्नजिवीत किया गया, सति-प्रथा की तीव्रता, वेदिक ब्राह्मण-धर्म में सति-प्रथा को मान्यता है, ब्राह्मण-धर्म-समाज में सति-प्रथा का गौरव-गाण, सति बनने के लिये ब्राह्मण ावाद-ग्रसित धर्म-समाज के विभिन्न दबाब, ब्राह्मण-पंडित की मौजूदगी में विधवाओं को जबरन सति बनाया जाता था, मुस्लिम व अंग्रेज शासकों व्दारा सतिप्रथा रोकने की कोशिशें, ब्राह्मण ावादी सरकारों का सतिप्रथा के खिलाफ ढूलमूल रवैया (266), ब्राह्मण धर्म समाज के तहत विधवा स्त्री की अंतिम नियति, विधवाओं की समस्या का हल क्या है, ब्राह्मण-नेतृत्व के महिला संगठनों का ढोंग-पाखंड

20 ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य के अंधकार युग में बौध्दों तथा जैनों का बर्बर दमन-उत्पिडन 266

ब्राह्मणों की बौध्द धम्म के प्रति नफरत, ब्राह्मणों व्दारा बौध्दों का दमन और प्रताडना, ब्राह्मणों के अधिन क्षत्रियों की श्रमण-संहार सेना, दक्षिण एशिया में बौध्द धम्म का विध्वंस और उन्मूलन,

21 ब्राह्मण अंधकार युग में ब्राह्मणों व्दारा बौध्द तथा जैन धर्म-स्थलों पर कब्जा-रुपांतरण 275

संपूर्ण भारत में बौध्द धम्म फैला था (279), सम्राट अशोक के स्तंभ तथा शिलादेशों के स्थल,

सम्राट अशोक व्दारा निर्मित बौध्द विहार, चैत्य, मोनेस्ट्रीज इ., ब्राह्मण अंधकार युग में बौध्द तथा जैन धर्मस्थलों का विध्वंस, बौध्द तथा जैन धर्मस्थलों का ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में जबरन रुपांतरण, ब्राह्मण-धर्म के मंदिरों में ब्राह्मणों ने बेशुमार दौलत इकट्ठा की, ब्राह्मण-धर्म के राजाओं ने भी मंदिरों की बेशुमार दौलत को लूटा है, मुस्लिम राजाओं ने भी मंदिरों की बेशुमार दौलत लूटी है, भारत से बौध्द धम्म के उन्मुलन के अन्य कारण

22 मुस्लिम राज की असली वजह
ब्राह्मण-धर्म नियंत्रित निरंकुश ब्राह्मण-राज 292

ब्राह्मणों ने भारत की जनता तथा भारतीय शासकों को विभाजित रखा, मुस्लिम आक्रमण के पहले से भारत में इस्लाम का फैलना शुरु हो चुका था, ब्राह्मण-धर्म ही भारत में विदेशी राज की असली वजह है, ब्राह्मणों के दमन से बचने श्रमण धर्म-पंथों ने इस्लाम कबुल किया, मुस्लिम शासकों को लुभाकर ब्राह्मण धर्म की रक्षा,

23 ब्राह्मण-धर्म के शोषण का प्रतिकार :बहुजन संतों का मानवता-धर्म 304

24 भेड की खाल में भेडिया यानि,हिन्दू-धर्म के बुर्के में ब्राह्मण-धर्म 337

अंग्रेजों-मुस्लिमों ने हिन्दू-धर्म बनाकर ब्राह्मणों को उसका मुखिया बना दिया, भारत के धर्म-पंथों को हिन्दू करार देना, तमाम नैतिक तथा न्याय के सिधान्तों के खिलाफ है, ब्राह्मणों ने बौध्द ध ाम्म और जैन धर्म को जबरन ब्राह्मण-धर्म की शाखा घोषित किया है, हिन्दुत्व का अर्थ सिर्फ और सिर्फ, ब्राह्मणों की निरंकुश धार्मिक-राजसत्ता (Theocracy) है, ब्राह्मणवाद की असहिष्णुता

25 सभी परजीवी जाति-समुदाय अपने वर्चस्व के लिये
नकली इतिहास गढते है 342

झूठा इतिहास लिखने में इस्तेमाल की जाने वाली तिकडमें, ईसाई पूजारियों ने अपने मन के मुताबिक बायबल गढी है, जाली ऐतिहासिक सबूतों का निर्माण, परजीवी जाति-समुदायों ने विरोधी सबूत तथा दस्तावेज नष्ट किये है, सम्राट अशोक को कलंकित और विस्मृत करने की ब्राह्मणों की कोशिशें, दफनाए गए बौध्द-सुवर्णयुग को पश्चिमी खोजकर्ताओं ने उजागर किया, अफ्रिका वंशियों के गौरवशाली इतिहास को नकारने की कोशिशें

26 ब्राह्मण-धर्मग्रंथों की असलियत 362

तमिल, पाली तथा प्राकृत पूर्वऐतिहासिक भारत की मूल भाषाएं है, पूर्वऐतिहासिक भारत में संस्कृत का अस्तित्व ही नही था, पुरानी चांदसा भाषा (संस्कृत) प्रोटो-इंडो-युरोपीयन (PIE) भाषा है, मूलनिवासी भाषाओं से ब्राह्मणों ने संस्कृत का विकास किया, ब्राह्मणों की संस्कृत भाषा त्रृटिपूर्ण तथा संभाषण के लिये अयोग्य भाषा है, आर्य-ब्राह्मण संस्कृत की लिपि तक विकसित नही कर सके है, बौध्द धम्म के पहले, आर्य-संस्कृति होने की झूठी कल्पना, ब्राह्मणों के वेद इ. धर्मग्रंथ बुध्द काल के बहुत बाद के है, मूल वेद सिर्फ दो ही है, ब्राह्मणों व्दारा वेदों को अस्पष्ट भाषा में लिखा गया है, वेदों में लगातार बदलाव किया जाता रहा है, वेदों की व्यर्थथा को कई विव्दानों ने महसूस किया है, ब्राह्मणों ने रामायण-महाभारत को लगातार क्यों बदला

27 ब्राह्मणों ने ब्राह्मणों को झूठमुठ महीमामंडित किया है 381

कौटल्य और उसके अर्थशास्त्र का ब्राह्मणों व्दारा झूठा महीमामंडन और गुणगाण , क्या चाणक्य / कौटिल्य चंद्रगुप्त मौर्य के काल का था, श्रमण धर्म-पंथों से नफरत करने वाला कथित चाणक्य श्रमण धर्म के चंद्रगुप्त मौर्य का मंत्री कैसे हो सकता है , चाणक्य का अर्थशास्त्र कब लिखा गया

28 खुद को श्रेष्ठ दिखाने आर्य-ब्राह्मणों के मिथक (Myths) 398

प्राचीन परग्रह-यात्रियों का मिथक, अटलांटिस का मिथक, थूले (Thule) का मिथक, अगार्था तथा शंभाला का मिथक, शुध्द आर्य-वंश का मिथक

29 ब्राह्मणों ने अपने अज्ञान को छुपाने
वेदों में हर ज्ञान होने का झूठा प्रचार किया 403

वेदों में औषधी-विज्ञान होने का झूठा दावा, वेदों में हर किस्म का सर्वोच्च ज्ञान होने का झूठा दावा, वेदिक ब्राह्मणों का वेदिक गणित का झूठा दावा, ब्राह्मणों का वेदिक खगोलशास्त्र का झूठा दावा, वेदिक काल में आण्विक अस्त्र होने का झूठा दावा, वेदिक काल में हवाई जहाज होने का झूठा दावा, ब्राह्मणों का शुन्य की खोज का झूठा दावा, वेदिक ब्राह्मणों ने श्रमण संस्कृति के योगशास्त्र को हडपकर खुद का घोषित किया, ब्राह्मणों का गुप्त काल की कलाओं का झूठा दावा, ब्राह्मणों का संस्कृत साहित्य नाग-द्रविड साहित्य की चोरी से बना है, वेदिक आर्य-ब्राह्मणों का बेहुदा कामशास्त्र, आर्य-ब्राह्मणों ने मंदिरों में विकृत-लैंगिकता का प्रदर्शन किया

30 सिंधु-घाटी की नाग-द्रविड सभ्यता को
हडपने की वेदिक ब्राह्मणों की कुटील तिकडमें 418

सिंधु-घाटी लिपि को ब्राह्मण झूठमूठ वेदिक लिपि प्रचारित कर रहे है (425), ब्राह्मणों ने घोडे की नकली मुद्राएं बनाई (425), ब्राह्मणवादी एजेंडे के लिये झूठे सबूतों को गढा जा रहा है (429), विदेशी सरस्वती नदी को भारत की नदी साबित करने की कोशिशें ! (430), ऋग्वेद की सरस्वती नदी विदेशी नदी होने के अकाटय सबूत (430), आर्य-ब्राह्मणों को मूलनिवासी जबकि मूलनिवासियों को बाहरी साबित करने की ब्राह्मणवादियों की नापाक कोशिशें (432)

30 इल्युमिनॅटी की झाओनिस्ट-ब्राह्मणवादी
त्रि-इब्लिसी साजीश को जान-समझ ले 441

संदर्भ सूची 449

किताब की सामग्री के संबंध में महत्वपुर्ण सूचना 454

.....

सादर अर्पण !

बहादूर माला दलित जाति में जन्में शोषित बहुजनों के मुक्तियोध्दा तथा पसमांदा दलित-मुस्लिम जनता की एकता के बहुत बडे पैरोकार बी. श्यामसुंदर की स्मृति को हमारी यह किताब सादर अर्पण है। बी. श्यामसुंदर उर्दू, फारसी, अरबी, फ्रेंच तथा इंगलीश भाषा के विव्दान थे तथा इतिहास को गहराई से जानते समझते थे। हमारी मौजूदा किताब बी. श्यामसुंदर की बेमिसाल किताब 'भूदेवताओं का मॅनिफेस्टो' की बुनियाद पर विकसित हुई है। इस किताब में बी. श्यामसुंदर ने आर्य-ब्राह्मणों के नामालुम इतिहास की कुंजी पेश की है।

... शोषित समाज जागरुकता मुहिम !

आदरांजली !

(1938 - 1995)

हमारी दिवंगत गुरुवर्य

डॉ. प्रो. अनिमा अरुणकुमार सेन

(पुर्व विभाग-प्रमुख, मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

इन्हे हम सभी जागरुक मूलनिवासी बहुजन साथियों की भावभीनी आदरांजली अर्पण है !

मूलनिवासी अफ्रिकी वंशी अवाम !

अफ्रिका वंशीयों के मुक्ति योध्दा माल्कम एक्स के अनुसार शोषकों ने हमारे सभी पहचान चिन्ह खत्म किये है क्योंकि अगर हम हमारी मौजूदा स्थिति के आरंभ को ही नही जानते तो हम अपनी गुलामी का कारण भी नही जान सकते। हम बडी आसानी से मान लेते है कि हम हमेशा से ऐसे ही लाचार थे और हमेशा लाचार ही रहने वाले है। लेकिन जब हम अपनी स्थिति के आरंभ को जान लेते है, तो हमको पता चलता है कि हमारी आज की स्थिति छल और मक्कारी से बनाई गई है। इस हालत को बदला भी जा सकता है। हम हमारी ही स्थिति में लाए गये शोषितों को एकदूसरे का हिस्सा मान लेते है। हम में अहसास जागने लगता है कि हम बहुसंख्यक समाज का हिस्सा है और बहुजनों को गुलाम बनाने वाले शोषक चंद संख्या वाले है। उन्हे उखाड फेंकने का हौसला हम में जागने लगता है। हम याचनाएं करने की बजाय लडकर हक हासिल करने की प्रवृत्ति विकसित कर लेते है। यही बात शोषकों को भयभीत कर देती है। (माल्कम एक्स, p. 12-15)

हर शोषकों की तरह ब्राह्मणवादियों ने भी मूलनिवासी बहुजनों को उनकी मूल पहचान मालूम नही होने दी। ब्राह्मणों ने हमें अनार्य यानि जो आर्य नही है प्रचारित किया। अनार्य शब्द से हमारा हतिहास पता नही चलता। ब्राह्मणवादियों का उद्देश्य मूलनिवासियों की पहचान आर्य-ब्राह्मणों के गुलामों के रुप में स्थापित करना है। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार जो लोग अपना इतिहास नही जानते वे कभी इतिहास कायम नही कर सकते। इसलिये शोषितों को अपने इतिहास को जानना-समझना बेहद जरुरी है।

मानव-विकास की दास्ताँन !

वैज्ञानिकों की मान्यता है कि बडे विस्फोट से अंतरिक्ष में ग्रह-तारों की निर्मिति हुई। पृथ्वी शुरु में आग का गोला थी। जैसे जैसे पृथ्वी ठंडी होती गई गॅस, तरल और धन पदार्थ बने। पृथ्वी पर सबसे पहले अमिबा (ameba) नामक एकपेशीय जीव निर्माण हुए। इनका विकास होकर बहुपेशीय जीव अस्तित्व में आये। शुरु में जेली की तरह बिना रीढ-हड्डी के जीव विकसित हुए। प्रतिकुल परिस्थिति से समायोजन के प्रयास में इन जीवों में आवश्यक परिवर्तन होते गये। कई लाख वर्षो की उत्क्रांति से जलचर, थलचर और पक्षी विकसित हुए। डार्विन के मुताबिक विशिष्ट वानर से मानव विकसित हुआ।

भूगर्भशास्त्रज्ञ पृथ्वी के कालखंडों की गणना मिलीयन वर्षो में करते है। एक मिलीयन वर्ष में दस लाख वर्ष (10,00000) होते है।

1) प्री-कॅमब्रीयन (Pre-Cambrian) : कालखंड आज से कम से कम 2500-3300 मिलीयन वर्ष पूर्व तक का है। 2) पॅलेओझेइक (Paleozoic, 230-600 मिलियन वर्ष) :- इस कालखंड में कॅमब्रीयन (Cambrian, 500-600), आर्डोविसियन (Ordovician, 425-500), सीलुरियन (Silurian, 405-425), डेवोनियन (Devonian, 345-405), मीसीसीपियन (Mississippian, 310-345), पेन्सीलवानियन (Pennsylvanian, 280-310), तथा पर्मीयन (Permian,230-280) कालखंडों का समावेश होता है। 3) मेसोझोइक युग (Mesozoic, 63-230 मिलियन वर्ष) इस कालखंड में ट्राइयासिक (Triassic,181-230), जुरॅसिक (Jurassic, 135-181), क्रेटॅसियस (Cretaceous,63-135) कालखंडो का समावेश होता है।

4) सेनोझोईक युग (Cenozoic, 63-0.1 मिलियन वर्ष) :- इसका कालखंड आज से लगभग 0- 63 मिलियन वर्ष का है। सेनोझोइक युग में क्वार्टरनरी तथा टेरटीयरी नामक दो कालखंडों का समावेश होता है। क्वार्टरनरी (Quarternary) में आधुनिक तथा प्लेइस्टोसेन (Pleistocene, 0-1 मिलियन) कालखंड का समावेश होता है। जिसकी कालावधी 0-1 मिलियन वर्ष मानी गई है। टेरटीयरी में प्लायोसीन (1-13मीलियन), मायोसिन (13-25मिलियन), ओलिगोसिन (25-36 मिलियन), इओसिन (36-58मिलियन), तथा पॅलिओसिन (58-63 मिलियन) इन कालखंडों का समावेश होता है। ये कालखंड 63 मिलियन वर्ष पूर्व के है। (Willium Lee Stokes, P. 120) दक्षिण अफ्रिका के भूगर्भशास्त्री डु टोइट (Du Toit) के अनुसार पृथ्वी उत्तर और दक्षिण दो महाखंडों में विभाजित थी। इन दो महाखंडों के बीच टेथिस (Tethys) नामक समुद्र था। रोडाल्फ स्टाउब (Rudolf Staub) नामक जर्मन भूगर्भशास्त्री ने लोरेंशियन पर्वतमाला (Laurention Mountains), कॅनॅडा शिल्ड का हिस्सा तथा युरोप और एशिया (Eurasia) को सम्मीलित रुप से दर्शाने हेतु सन 1926 में पृथ्वी के उत्तरी महाखंड को लोरेशीया नाम दिया। लोरेशिया महाखंड में वर्तमान उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलँड, युरोप तथा पेनिनसुला भारत (peninsular India) छोडकर सारे एशिया का समावेश होता था। Mesozoic Era में (245 million से 66.4 million पूर्व) लोरेशिया का विघटन होकर वह महाखंड आज की हालत में पहुँचने लगा।

पृथ्वी के दक्षिणी महाखंड को ''गोंडवानाभूमि'' नाम सन 1885 में ऑस्ट्रीयन भूगर्भशास्त्री एडवर्ड सुईस (Eduard Suess) ने दिया है। इसमें दक्षिण अमेरिका, अफ्रिका, पेनिनसुलर भारत (भारत के नक्शे का तिकोनी भाग), आस्ट्रेलिया तथा अंटार्टीका का समावेश होता है। सुईस ने दक्षिणी महाव्दीप को गोंडवानाभूमि यह नाम दिया क्योंकि मध्य भारत की नर्मदा घाटी में जो भूगर्भशास्त्रीय गुणधर्म पाये जाते है वैसे ही गुणधर्म आस्ट्रेलिया, फाल्कलँड व्दीपसमुह, मादागास्कर व्दीप, न्युझीलँड तथा दक्षिणी अफ्रीका में पाये जाते है। इन गुणधर्मो में 286 मिलियन वर्ष पूर्व के बर्फ-स्फटिकों की तरह के पत्थर, वनस्पति तथा प्राणियों का समावेश है जो लॉरेशिया महाखंड में नही पाये जाते जैसे कि seed fern Glossopter इ॰। गोंडवानाभूमि में जो पत्थर पाये गये है उन्हे दक्षिण अफ्रिका में कारु पध्दति, दक्षिणी अमेरिका में सांटा कॅथेरीना पध्दति तथा भारत में गोंडवाना पध दति कहा गया है। (Encyclopedia Americana, Vol.17, p.60 & Vol. 13, p. 70; and Encyclopedia Britanicca deluxe edition 2001 CD-Rom)

गोंडवानाभूमि के दक्षिणी अमेरिका, अफ्रिका, भारत, अरेबीया, आस्ट्रेलिया, तथा अंटार्टिका खंड मेसोझोइक (Mesozoic) कालखंड के मध्य तक आपस में जुडे हुए थे। ये खंड एक दूसरे से अलग होने लगे और मेसोझोइक के अंतिम तथा टेरटियरी के आरंभ में अलग हो गये। भूगर्भशात्रज्ञों ने स्पष्ट किया है कि नक्शे के ये भाग आपस में न केवल एक दूसरे से जुडते है बल्कि इन भागों में पाये जाने वाले खनिज पदार्थो के पट्टे भी आपस जुडते है।(Willium Lee Stokes, P. 155-156) भारत तथा आस्ट्रेलिया जुरॅसीक काल के आरंभ तक आपस में जुडे रहे। (Alfred Wegener, P. 8,87) भारत अफ्रिका से जुडा था। इसलिये दोनों का वंश एक है।(दलित व्हाईस, p. 6, 1-15 अगस्त 2000)

मॅडागास्कर तथा भारत एक दूसरे से 100–90 मिलियन वर्ष के दौरान अलग हुए। प्रति वर्ष 15 सेंटीमीटर की गति से भारत खंड युरेशिया की ओर सरकने लगा। भारत और युरेशिया खंड आपस में 35 मिलियन वर्ष पहले टकराये जिससे हिमालय की उत्पत्ति हुई और इनके बीच के टेथिस समुद्र का अस्तित्व समाप्त हुआ।(http://en.wikipedia.org/Pangaea - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) हिमालय पर्वत ऋंखला में आज भी समुद्र के जीवाश्म पाये जाते है, क्योंकि हिमालय पर्वत की यह चोटियाँ खंडों के टकराने के पहले समुद्र के तटीय भाग थे।(http://www.wisegeek.org//How Were the Himalayas Created.htm) आदि मानव के आरंभिक हथियार लकडी तथा हड्डियों के होते थे। जिस काल में मानव पत्थर के हथियारों का इस्तेमाल करने लगा उस काल को पाषाण युग (Stone Age) कहते है। पाषाण-युग को पूराना पाषाण युग (Paleolithic), मध्य पाषाण युग (Mesolithic), तथा नव पाषाण युग (Neolithic) में विभाजित किया गया है। (Willium Lee Stokes, P. 358-359)

अफ्रिकावंशी मानवों ने लगभग साठ हजार साल पहले अफ्रिका से बाहर विस्तारित होना शुरु किया। Y-chromosomal DNA, mitochondrial DNA तथा autosomal DNA अध्ययनों के मुताबिक आधुनिक मानव मूलतः अफ्रिकावंशी है। वे युरेशिया तथा ओसियाना में 40 हजार साल पहले तथा अमेरिका में व्दीप में कम से कम साढे चौदह हजार साल पहले बस गए थे। (http://en.wikipedia.org/Human evolution - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) आधुनिक मानवों का विकास स्थानीय स्तरों पर भी हुआ है क्योंकि गोंडवानालॅंड से जो खंड बने उनमें समान जैविक विशेषताएं थी। उत्क्रांतिशास्त्र से भी यह बात सत्य प्रतित होती है। (Gondwanaland Expedition Promoting togetherness and a brighter future.htm)

Y-dna haplogroup "I"

Y-dna बिना किसी परिवर्तन के पिता से उसके बेटों तथा बेटों के बेटों में स्थानांतरित होता है चाहे पिता गोरा हो या काला। संकरित नस्ल में भी मूल पिता का Y-dna haplogroup "I" पाया जाता है। वंश के बेटे गोरी लडकियों से संतान पैदा करते है तो भी उनका Y-dna haplogroup "I" ही रहेगा, लेकिन बच्चों के रंग में परिवर्तन होता है। अठरहवी शताब्दि तक युरोपीयन राजपरिवारों में मुख्यतः काले लोग थे। गोरी लडकियों से संकरण से उनकी संतानें गोरी हुई लेकिन उनके Y-dna haplogroup "I" में कोई परिवर्तन नही हुआ।(The Original Black Cultures of Eastern Europe and Asia http://realhistoryww.com/index.htm) आधुनिक मानवों की उत्पत्ति अफ्रिकी वंशीयों से हुई इसे साबित करने के लिये Y-DNA संबंधी जानकारी जरुरी है। लेकिन गोरे अनुवंश शास्त्रज्ञों ने उत्खनन में प्राप्त कंकालों तथा ममियों पर जो भी डी.एन.ए. शोध किये है उन्होने अपने लेखों में जानबूझकर MtDNA की ही जानकारी दी है क्योंकि आधुनिक युरोपियन गोरों का विशिष्ठ गोरा haplogroup नही है; गोरे लोगों के डि.एन.ए. काले haplogroups से प्राप्त हुए है। (http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro, Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm)

इजिप्त के मूलनिवासी अफ्रिका वंशीय काले थे !

दुनियां की प्रमुख सभ्यताओं का निर्माण काले लोगों ने किया है। इनमें सिंधु घाटी सभ्यता, सुमेरियन तथा इजिप्त की सभ्यताएं प्रमुख है। प्राचीन इजिप्त के लोग अपने देश को कामीट यानि काले लोगों का देश कहते थे। इजिप्त यह शब्द ग्रीक शब्द Aigyptos (or Aiguptos) से उत्पन्न हुआ है जिसका मतलब 'काला' होता है। इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) के मुताबिक इजिप्तवासी, कोलचियन्स, तथा इथिओपिअन लोग अफ्रिकावंशी थे। इजिप्त की सभ्यता इथिओपिअन लोगों से विकसित हुई। इजिप्त के लोग अफ्रिकी वंशी थे यह इजिप्त की ममियों की उच्च मेलॅनिन मात्रा से स्पष्ट होती है। Sphinx नामक अतिभव्य शिलाकृती जो एक ही शिला से बनायी गई है वह काले पॅरोहा खाफ्रे (Khafre) की प्रतिकृति है।(Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar)

युरोप में काले अफ्रिका वंशीय लोगों की वसाहतें थी !

इजिप्त, सुमेरिया, मोहेन्जोदारो, हरप्पा, Cretans इलेमाईटस् तथा न्युबियावासी इसापूर्व 3000 से 4000 साल पहले साक्षर थे। उस वक्त किसी ने ग्रीक अथवा रोमन लोगों का नाम तक नही सुना था। उस वक्त ग्रीक तथा रोम वासी काले रंग के थे। उन्होने गोरों को अपने बीच रहने दिया था। उस वक्त गोरे आदीम अवस्था में रहते थे। इतिहासकार हेरोडोटस ने भी गोरों को बर्बर कहा है। जिस चिज से वे अनजान होते थे कोई मनगढंत धारणा बना लेते थे। युरोपियन गोरों में खेती का विकास काफी देर बाद हुआ है। (http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro, Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm) knights वीर काले थे। इनमें आर्थर राजा के करीबी knights लोगों का भी समावेश है। उनके काले रंग से उन्हे knights कहा जाता था। गोरमुंड नामक अफ्रिका वंशी राजा आयरलंड में इंग्लंड के एंग्लो-सेक्सन काल में राज करता था। हाल्फदान नामक अफ्रिका वंशीय राजा संयुक्त नार्वे पर राज करता था।

अफ्रिका वंशी मूर (Moors) लोग सन् 711-1492 A.D. के दौरान दक्षिण-पश्चिमी युरोप पर लगभग चौदह सौ सालों तक राज करते रहे थे। युरोपियन लोगों के वंशज अफ्रिका वासी थे। इसे श्री जे. ए. राजर्स ने अपनी किताब 'Nature Knows No Color Line' में स्पष्ट किया है। युरोप के गोरे राज-परिवारों को काला-राज परिवार "Black Nobility" कहा जाता है क्योंकि उनके वंशज अफ्रिकी वंशी काले थे। वंशीय संकरण से ही स्पेन, ग्रीस तथा इटालियन लोग सांवले है। दसवी शताब्दि में मूर लोग स्कॉटलंड में इस कदर गोरों से संकरित हुए की उनका काला रंग लुप्त हो गया। काले सेल्ट तथा काले वाईकिंग्स Scandinavia के लोगों के साथ संकरित हुए। न्यूयार्क टाईम्स दि. 7/1/1940 के मुताबिक हिटलर के परिवार में कालों का रक्त पाया जाता है। हुनों में काले मंगोलियन भी शामिल है। भारी तादाद में जर्मनी के गोरों से उनका संकरण हुआ है। बायबल के मुताबिक सेमाईट लोग नोह के पुत्र शेम के वंशज है। इतिहासकार Cheikh Anta Diop के मुताबिक सेमिटिक लोगों का विकास ईसापूर्व 4000 साल पहले उत्तर से आये गोरे आक्रमणकारियों के साथ वर्ण संकर से हुआ। वर्ण संकर इतनी अधिक मात्रा में हुआ कि इजरायल के काले ज्यू मूलनिवासियों की अपनी मूल पहचान जैसे खो गई। सेमाईट शब्द की उत्पत्ति लॅटिन शब्द semi से हुई है। सेमी का अर्थ 'आधा'

यानी न ही पूरा गोरा न ही पूरा काला है। आज 90 फीसदी ज्यू यूरोपियन खाजार ज्यू है जिनका इजरायल की धरती से कोई संबंध नही है। दरअसल शुध्द गोरे व्यक्ति का अस्तित्व ही नही है। वंशीय शुध्दता एक काल्पनिक सोच मात्र है।

द्रविड लोग अफ्रिका वंशीय है !

मुगीसा रॅथेल फॅम्ब्रो (Mugisa Rathael Fambro) के अनुसार पूरातत्व विज्ञान, मानवविकास शास्त्र, भाषाशास्त्र, चिन्हशास्त्र (iconography), चित्रशास्त्र (Pictographs), डि.एन.ए.; आर.एन.ए. परिक्षणों तथा osteology से यह निर्विवाद रुप से साबित हुआ है कि अफ्रीका के लोग विश्व के सब से प्राचीन लोग है। भारत के द्रविड अफ्रिका वंश से संबंधित है। अंदमान, निकोबार, बंगाल की खाडी, भारत के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी एशिया में आज भी काले लोग है।(Dalit Voice, dt. April, 1-15, 2000) अंदमान वासियों के डीएनए अफ्रीका वंशियों से करीब है। वे हिम युग के अंतिम समय में अफ्रिका से पूर्व की ओर विस्थापित हुए। यह युग लगभग 20,000 वर्ष पहले समाप्त हो गया था। (नवभारत, 11 दिसंबर 2002) प्रस्तुत चित्र काले अंदमान वासियों का है।

ओगनेस जातियां अंदमान में साठ हजार वर्ष के पहले से अंदमान के निवासी है। इरुला, कोडार, पनियन, कुरुंबा इ. पर्वतीय जातियां दक्षिणी भारत के विभिन्न हिस्सों में पाई जाती है। उनकी त्वचा काली व कत्थई है। बाल घुंगराले तथा सीधे दोनों तरह के है। अफ्रिका के बाहर अफ्रिका वंशीयों की सबसे बडी आबादी भारत में पाई जाती है। भारत की गंगा नदी का नाम इथोपिया के अफ्रिका वंशीय राजा के नाम पर रखा गया है जिसने एशिया में गंगा तक के प्रांत पर कब्जा किया था। भारत के अधिकांश द्रविड इथिओपिया से भारत में बसे है। इन्ही अफ्रिका वंशी द्रविडों ने सिंधु घाटी सभ्यता का निर्माण किया। जे राजर्स के मुताबिक एशिया तथा ओसियाना वासी अफ्रिका वंशीयों की तादाद अफरिका के काले लोगों की कुल तादाद से ज्यादा ही होगी। (Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar)

तमिलों तथा इथिओपिया वासियों में जरा भी अंतर नही नजर आता। दक्षिण भारत, सेनेगल, माली, नाईजर, चाड, सुदान, इथिओपिया तथा सोमालिया समान भौगोलिक रेखा (latitude) पर है। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) कुछ इतिहासकारों का मानना है कि नुबिया पर Senefru (c.2613 B.C.)के कब्जे और विध्वंस से द्रविडों / Kushites ने नुबिया छोड दिया। (http://homepages.luc.edu/Cultural Unity of the Dravidian and African Peoples.htm)

द्रविड लोगों की नौका निर्माण पध्दति, कपडों तथा अन्य वस्तूओं को रंग देने की पध्दति, आभुषण तथा धातुओं के हथियार निर्माण की पध्दति अफ्रिकी लोगों के समान ही है। मध्य भारत में रहने वाले गोंड मूलनिवासी आज भी अपने घर सोमालीलंड के गाला लोगों की तरह बनाते है। उनमें कई समानताएं पाई जाती है।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

अफ्रिकी तथा द्रविडों के धार्मिक विश्वास समान है !

भारत के द्रविडों तथा अफ्रिका के लोगों में नाग-पूजा का प्रचलन है। वे नाग का

अंतिम संस्कार करते है। दोनों में मातृदेवता की पूजा का प्रचलन है। पितृ देवता का महत्व मातृ देवता के आगे गौण माना जाता है। भारत में शक्ति तथा शीव की संकल्पना का विकास द्रविडों की धार्मिक मान्यताओं से ही उपजा है। दक्षिणी भारत के सभी गांवों में बीमारियों तथा खतरों से रक्षा करने के लिये मातृ-देवता की पूजा की जाती है।

द्रविड तथा अफ्रिकन देवताओं के नाम भी समान है। जैसे कि अमुन / अम्मा तथा मुरुगन। पूर्वी अफ्रिका की कम से कम 25 जातियां 'मुरुगु' को अपना सबसे बडा देवता मानती है जो द्रविडों के देवता मुरुगन की तरह पर्वतों में रहता है। फिग, ओक तथा पीपल (fig, oak, or peepul) के वृक्षों की पूजा की परंपरा दोनों में पाई जाती है। अपने पुरखों के नाम पर बलि चढाने की प्रथा सभी अफ्रिका वंशीयों में है। उनका मानना है कि पुरखों की आत्माएं उनकी रक्षा करती है। अफ्रिका वंशीयों का उत्तराधिकारी बेटे की बजाय भतीजा होता है। यही प्रथा द्रविडों में भी पाई जाती थी।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm; Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar)

द्रविडों तथा अफ्रिकी लोगों में भाषा संबंधी समानता !

क्लायड ए. विंटर्स इ. के मुताबिक द्रविड-अफ्रिकी भाषा-संस्कृति में अनगिनत समानताएं है। (http://homepages.luc.edu/Cultural Unity of the Dravidian and African Peoples.htm) धातुकार्य तथा बुनने के कामों से संबंधीत शब्द द्रविड तथा अफ्रिकन भाषाओं में समान है। उन्नीस वी शताब्दि में अलफ्रेडो थोंम्ब्रेट्टी (Alfredo Trombetti) ने अफ्रिकन तथा द्रविड भाषाओं की समानता को उजागर किया। कोलंबो विश्वविद्यालय के ए. सदाशिवम के मुताबिक सुमेरियन भाषा द्रविड मूल की भाषा है। मिस होम्बर्गर का मत था कि द्रविडन भाषाएं सेनेगल के लोगों की भाषाओं से मिलती है। कन्नड तथा बांतु भाषाओं के बीच धनिष्ट संबंध है। आगे की खोज के लिये वह जीवित नही रही। युनेस्को (UNESCO) की 1969 की विज्ञप्ति के मुताबिक आरंभिक सभ्यताएं द्रविड भाषाओं से संबंधित थी। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

सदाशीवम ने यह साबित करने की कोशिश की है कि द्रविड और सुमेरियन भाषाओं का उगम एक ही है। टटल (Tuttle) ने नुबियन तथा द्रविड भाषाओं के बीच व्याकरण तथा शब्दों में पाई जाने वाली समानताओं का जिक्र किया है। कई जर्मन इथनोलॉजिस्टस् (ethnologists) ने सन् 1897 के दौरान अफ्रिकी तथा प्राचीन भारत के लोगों के बीच सांस्कृतिक समानताओं को अनुभव किया है। बलुचिस्तान तथा अफगानिस्तान की ब्रहुई, पूर्वी भारत की कुडुख, माल्टा इ. द्रविडन भाषाओं का विस्तार अत्यंत व्यापक था।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

द्रविड, अफ्रिकन तथा मध्य-पूर्व की प्राचीन भाषाओं के बीच की समानताएं अनगिनत है। प्रकारात्मक ही नही बल्कि मूल शब्दों तथा व्याकरण में भी समानताएं है। द्रविड तथा अफ्रिकन लोग भौगोलिक रुप से काफी दूर रह रहे है इसलिये यह नही कहा जा सकता कि एक ही क्षेत्र में रहने से उनके बीच शब्दों का आदान प्रदान हो गया है। इसलिये सिर्फ इकलौति यही संभावना है कि द्रविड तथा अफ्रिकन लोगों की भाषाओं का उगम

एक ही है। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

गोंडी तथा अफ्रीकी भाषाओं की समानता के अध्ययन से नाग द्रविड संस्कृति के विस्तार को समझा जा सकता है क्योंकि गोंडी भाषा द्रविड भाषाओं की जननी मानी गई है। जर्मन भाषातज्ञ जुल ब्लांच इन्होने गोंडी भाषा की अंर्तराष्ट्रीयता खोजने की कोशिश की लेकिन उनके निधन से यह कार्य अधूरा रह गया। (व्यंकटेश आत्राम, पेज 118)

द्रविड तथा अफ्रिकन लोगों के बीच अनुवांशीक समानता !

डॉ. वेल्स ने मदुरै के गांव के लोगों पर तुलनात्मक डी.एन.ए. संशोध ान किया और पाया कि अफ्रिकन वंशी लोग भारत होते हुए ऑस्ट्रेलिया जा बसे थे।(History of Tantra: http://spiritonthebrain.com/Spirit on the Brain.htm) ऑस्ट्रेलिया में तमिल में लिखी इबारतें तथा दक्षिण भारत से संबंध जोडने वाली कई चिजें पाई गई है। ऑस्ट्रेलिया के मूलनिवासी बच्चे औरे द्रविड बच्चों की वांशीक समानता से उनकी अलग रुप में पहचान करना नामुकिन है। श्रीलंका, बंगला देश के अलावा ओमान खाडी, ईरान के खाडी देश तथा अन्य जगहों में द्रविड आबादी है।(http://s1.zetaboards.com/Dravidians Related to Australian Aborigines.htm) अनुवंश शात्रज्ञों ने द्रविडों, अफ्रिकनों तथा ऑस्ट्रेलिया की जनजातियों में अनुवांशीक संबंध पाया। अफ्रिका वंशी लोग भारत होते हुए ऑस्ट्रेलिया बसे थे। ॲडेलेड विश्वविज्ञालय के उत्क्रांतिवादी जीव वैज्ञानिक जेरेमी ऑस्टिन के मुताबिक अफ्रिका वंशी लोग भारत से समुद्र के रास्ते होते हुए ऑस्ट्रेलिया जा बसे थे।

आरंभीक चीनी अफ्रिका वंशी थे !

पूर्वी-एशिया के मूलनिवासी काले थे। इनमें आज भी कई काले है। वे इस क्षेत्र में लगभग पचास हजार साल पहले आये थे। चीन तथा जापान में इन्सानों व्दारा बनाये विशाल पिरॅमिडस् पाये गए। चीन में ये पिरॅमिड शेन्सी प्रांत में सिएंग फु शहर के निकट है। चीनी लोगों को नही पता कि ये पिरॅमिड वहां कैसे आये। यह विश्वास किया जाता है कि इन पिरॅमिडस् के निर्माता अफ्रिका की नाईल नदी घाटी के लोग थे।(J. Perry: The Growth of Civilization p.106,107) माना जाता है कि इन पिरॅमिडों को 'मु' साम्राज्य

के काल में 'तॅन्ग' या 'ता' नामक राजा ने बनाया था। चीन के लिखित इतिहास में सबसे पहला राज्य शांग वंश का था जिसका काल c. 1500-1000 B.C., माना जाता है। इन्हे नाखी (Na=Black, Khi=man) यानी काले लोग कहा जाता था। चीन का पहला सम्राट फु त्ही (Fu-Hsi, 2953-2838 B.C.) अफ्रिका वंशी था। उसने राज्य-सरकार का निर्माण किया, सामाजिक संस्थांए कायम की तथा सांस्कृतिक खोजें की। उसने आई चींग नामक 'परिवर्तन की किताब' तैयार की। इस पुस्तक ने चीन के कई दर्शनशास्त्रियों को प्रभावित किया।(http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro, Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm)

काले तथा लाल रंग की वस्तुएं चीन के शुरुआती स्थलों से प्राप्त हुई। इन वस्तुओं पर बने कई चिन्ह हरप्पा तथा दक्षिणी भारत में प्राप्त वस्तुओं जैसे है। यांग शाओ तथा मियाओटी कोउ के उत्खननों से जानकारी मिलती है कि उनका आध्यात्मिक चिन्ह (totem) क्रमशः मछली तथा पक्षी था। भारत के पांडियन तथा मारावार द्रविडों का धार्मिक प्रतिक चिन्ह लैंगिक-मछली (phallic-fish) था। चीन के 'मा' जनजाति का प्रतिक चिन्ह मछली था। दक्षिणी चीन के मूलनिवासी युएह (Yueh) वंशी थे। वे काले रंग के थे। उनके तथा भारत के शीव भक्तों के धार्मिक चीन्ह पक्षी थे। क्सीया (Xia) साम्राज्य का निर्माता राजा यु था। वह युएह (Yueh) जनजाति का था। उनकी जनजाति नहर इ. व्दारा पानी का खेती इ. के लिये उचित संचालन करने तथा बाढ इ. पर नियंत्रण करने में माहिर मानी जाती थी। इन्हे भारत में यक्ष कहा जाता था।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के अन्नामाईट लोग मंगोल थे। वे द्रविडों तथा श्रीलंका के वेड्डा लोगों की तरह काले थे। शन शेंग लिंग के मुताबिक चीनी साहित्य में काले लोगों को यी तथा युएह नामों से जाना गया। हुआ जनजातियों के कई प्रकार थे इसलिये प्राचीन चीन तथा दक्षिण-पूर्व के मूलनिवासी द्रविडों को अलग अलग नामों से संबोधित किया गया है। प्राचीन चीनी पूर्व-द्रविडों को लिमिन यानि काले सिर वालों के नाम से जानते थे, खासकर व्हांग हो घाटी के लोगों को। काले लोग चीन के विकास तथा स्थायित्व की दृष्टी से महत्वपूर्ण थे। सर ब्राडेल ने ऐतिहासिक तथा पुरातत्विय आधार पर साबित किया है कि भारत के लोगों का दक्षिण-पूर्वी एशिया में उत्तरी दीशा से आना शुरु हुआ जो बाद में दक्षिण दीशा में मुड गया। इस सिधान्त के मुताबिक भारत के द्रविड युनान के मार्ग से दक्षिण-पूर्व एशिया आये न कि दक्षिण भारत से दक्षिण-पूर्व एशिया।

यी जनजातियों को आधुनिक हुआ जनजातियों ने परास्त किया। कुशाईट जनजातियां पॅसीफिक व्दीपसमूहों में विस्थापित हो गई। इन कुशाईट जनजातियों को एन्थ्रोपोलॉजिस्ट ओसिनियन्स या मेलानेसियन्स कहते है। (http://www.oocities.org/THE DRAVIDIANS IN CHINA.htm) हुन भी मूलतः काले रंग के थे। अपने नायक अट्टीला (Attila) के नेतृत्व में चौथी तथा पांचवी शताब्दि में हुनों ने युरोप को उध्वस्त किया था।

एशिया में अफ्रिका वंशीयों की उपस्थिति का विस्तृत वर्णन श्री इवान वॅन सेरटिमा तथा श्री रुनोको राशीदी ने किया है। जेम्स ब्रन्सन ने अफ्रिका वंशीयों की चीन में उपस्थिती का विस्तृत वर्णन किया है।(http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro,

Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm)

काले अफ्रिका वंशियों की अतिप्राचीन गौरवशाली सभ्यता !

ऐतिहासिक दृष्टी से काले अफ्रिका वंशीयों ने कामिट यानि प्राचीन इजिप्त, सुमेर, बॅबिलॉन, कॅनन, कुश यानि इथिओपिया, इन्डस कुश, हरप्पा, ओलमेक्स यानि प्राचीन अमेरिका, प्राचीन चीन की शांग संस्कृतियों को कायम किया है। उन्होने घाना, माली, सोंघाई, बेनिन, झिम्बाब्वे, तथा दक्षिण-पश्चिमी मूर साम्राज्य कायम किये। अफ्रिका की डॅगोन जनजाति अपने अचुक नक्षत्रविज्ञान की white dwarf star, Sirius B की जानकारियों से वैज्ञानिकों को अचंभित करती है क्योंकि ये नक्षत्र-तारे आधुनिक वैज्ञानिकों ने हाल ही में खोजे है। प्राचीन अमेरिका में ओल्मेक संस्कृति के लोगों ने पत्थर के अतिविशाल अफ्रिका वंशी सीर बनाये है। कोलंबस के पहले संपूर्ण अमेरिका में अफ्रिका वंशीयों की उपस्थिति का वर्णन Ivan Van Sertima ने अपनी किताब में किया है। प्राचीन अमेरिका और इजिप्त के बीच के संबंधों का वर्णन R.A. Jairazbhoy ने किया है।

इजिप्त प्राचीन काल में सबसे बडा शैक्षणीक केन्द्र था, जिसकी शाखाएं चीन तक में फैली थी। काले इजिप्त वासियों ने ग्रीक लोगों को शिक्षित किया। उन्होने प्लेटो, थेल्स, ॲरिस्टॉटल, डेमोक्रिटस, ॲनॅक्सिमॅन्डर, सोलोन इ. को पढाया है। इतिहासकारों ने लिखा है कि Lykourgos जैसे कानून तज्ञों ने इजिप्त में अध्ययन किया। Trojan नायक Aeneas Troy के अफ्रिका वंशीय निर्माता थे। विध्वंस से बची एक सॉक्रेटस की मूर्ति से यह स्पष्ट है कि वे अफ्रिका वंशी काले थे। लघुकथाओं के लिये प्रसिध्द इसाप (Aesop) भी अफ्रिका वंशी काले थे। पायथागोरस तथा युक्लीड ने इजिप्त की रहस्यवादी शालाओं से ज्ञान हासिल किया था। कम्प्युटर विश्लेषण के मुताबिक एक वर्ग मिल क्षेत्र में विस्तारित लक्सर का प्राचीन विश्वविद्यालय कुल 80,000 छात्रों को पढाता था। इथोपियन तथा इजिप्त वासियों ने गणीत तथा भूमिती (Trigonometry) का विकास किया। अफ्रिकन मूर लोगों ने अलजेब्रा तथा भूमिती को विज्ञान के रुप में विकसित किया। अलजेब्रा शब्द "Al-Jabr wa'l Muqabala," नामक इस विषय की किताब के शीर्षक से बना है। इस किताब का लेखक अफ्रिका वंशी "Al-Khowarizmi" था जिसके नाम से गणीत की पध दति अलगोरिदम शब्द का निर्माण हुआ है। दवा विज्ञान के असल जनक अफ्रिका वंशी प्राचीन इजिप्त के इमहोटेप (Imhotep) थे न कि हिप्पोक्रेटस जो 2000 साल बाद पैदा हुआ। इमहोटेप ने ही दवा विज्ञान को ग्रीक तथा रोम पहुंचाया। वे विश्व विख्यात डॉक्टर थे। वे उच्च स्तर के पूजारी, अर्थशास्त्री, कवि, दर्शनशास्त्री, इंजिनियर, खगोलशास्त्री तथा सक्कारा के स्टेप पिरॅमिड के इंजिनियर भी थे। उन्हे दैवीय ताकतों से युक्त माना जाता था। ग्रीक लोग उन्हे Aesclepios यानि चंगाई के देवता कहते थे। डॉक्टरी पेशे का प्रतिक चिन्ह caduceus (a winged staff entwined by two serpents), इमहोटेप के मंदिरों में पाया जाता था। इमहोटेप के मंदिर वास्तव में सबसे पहले के अस्पताल थे। इमहोटेप के चुराये कई ग्रंथ लेपझिग, जर्मनी की कार्ल मार्क्स युनिवर्सिटी में रखे है। इजिप्त से ही हमें मेडिकल संबंधी किताबें हासिल हुई है। इनमें इन्सान और जानवरों के शरीर विज्ञान की जानकारी है। इजिप्त में शल्य चिकित्सा तथा फार्मसी संबंधी प्रयोग सबसे पहले किये गए। इजिप्त में हड्डीयों को जोडने हेतु प्लास्टर और बॅन्डेज बांधने इ. की पध्दतियों का विकास किया गया।(S. Glanvile: The Legacy of Egypt p.196)

फ्रेंच स्कॉलर Count C. Volney ने सन् 1787 में लिखा कि :-

यह अफ्रिकी वंशी .... ऐसा वंश है जिनके कला, विज्ञान यहांतक की भाषा में हम उनके ऋणी है। उनकी Ruins of Empires नामक किताब का कई विव्दानों ने अंग्रेजी में भाषांतर किया। वंशवादियों के लिये प्रकाशित 'विशेष संस्करण' में से निम्न उध दहरण को हटाया गया था :- ''वे लोग जिन्हे हम भूल चुके है उन्होने ही उस वक्त कला और विज्ञान खोजे है जिस वक्त हम जंगली अवस्था में थे। उनके वंश को हम उनके काले रंग, घुंघराले बाल की वजह से नकार चुके है, उन्होने ही प्रकृति के नियमों की खोज की, नागरी तथा धार्मिक व्यवस्थाएं कायम की जो आज भी हमारी श्रृष्टी को नियंत्रित करती है।''

युरोप के राजवंश अफ्रिका वंशी काले लोग थे। जे. ए. राजर्स ने लिखा है कि किस तरह अमेरिका के पांच अध्यक्ष वास्तव में अफ्रिका वंशीयों से संकरित है। इन अध्यक्षों के नाम थॉमस जेफरसन, अलेक्झांउर हॅमिलटन, वारेन हार्डिंग, एन्डरु जॅक्सन तथा अब्राहम लिंकन है। (http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro, Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm) अमेरिकन डॉलर पर The Eye of Horus, pyramid, six-pointed star (made up of 13 stars), and the eagle इ. कई अफ्रिकी चिन्ह है। अमेरिका का वाशिंगटन मानुमेंट भी इजिप्त के देवता ओसीरिस का चिन्ह है। लिंकन मेमोरियल इजिप्त के पॅरोहा रामसेसे व्दितीय के सम्मान में बने मंदिर पर आधारित है। अमेरिका में हजारों शिल्प कृतियां वास्तव में अफ्रिकी चिन्ह है। अमेरिका के शहर के निर्माण का नक्शा अफ्रिका वंशी वैज्ञानिक बेंजामिन बॅनेकर ने तैयार किया था। पॅरिस यह नाम इजिप्त की देवता इसिस के प्राचीन मंदिर Pari Isidos से बना है।(Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward). (Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar)

अफ्रिका वंशीय लोगों में मेलॅनिन रसायन की भूमिका !

मेलॅनिन काले-कत्थई रंग के, प्रकाश को परावर्तित न करने वाले 800 नॅनोमिटर से भी छोटे कण होते है। त्वचा में मेलॅनिन के उत्पन्न होने की प्रक्रिया को मेलॅनोजेनेसिस (melanogenesis) कहा जाता है। काले मेलॅनिन तत्व कत्थई मेलॅनिन से ज्यादा गहरे और काले होते है। इन्सानों में मेलॅनिन त्वचा, बालों, आँखों के रेटिना की पर्त में, मश्तिष्क के रेनल मेडुला में, एड्रिनल ग्रंथी के zona reticularis में, कान के भीतरी हिस्से में, तथा substantia nigra नामक मश्तिष्क के हिस्से में होता है। त्वचा का काला या कत्थई रंग मेलॅनिन की अधिक मात्रा व्दारा उत्पन्न होता है। Pheomelanin नामक मेलॅनिन का रंग गुलाबी होता है और यह मुख्यतः ओठों में, छाती पर पाये जाने वाले nipples में, पुरुष लींग के glans में तथा स्त्री योनी की भीतरी त्वचा में पाया जाता है। (http://en.wikipedia.org/Melanin - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

मेलॅनोसोम्स की चार स्थितियों से वांशीक फर्क निर्माण होता है। 1) मेलॅनोसोम्स मेलॅनिन से एकदम खाली होते है क्योंकि इस अवस्था में मेलॅनिन निर्माण की यंत्रणा नही होती। 2) मेलॅनिन निर्माण की यंत्रणा तो होती है लेकिन मेलॅनोसोम्स मेलॅनिन से खाली होते है। 3) मेलॅनिन निर्माण की यंत्रणा भी होती है और मेलॅनोसोम्स मेलॅनिन से आधे भरे होते है। 4) न सिर्फ मेलॅनिन निर्माण की कारगर यंत्रणा होती है बल्कि मेलॅनोसोम्स मेलॅनिन्स से पूरे भरे होते है। गोरे लोगों में आमतौर से पहली और दूसरी अवस्था पायी जाती है जबकि विभिन्न रंग-छटा के लोगों में तिसरी और चौथी अवस्था पाई जाती है। गोरों के अलावा सभी रंग-छटा के लोगों के रक्त में मेलॅनिन प्रवाहित होते रहता है। अफ्रिका वंशियों में ही चौथी अवस्था पाई जाती है। गोरे सिर्फ गोरों को ही पैदा कर सकते है। काले लोग हर रंग-छटा के बच्चे पैदा कर सकते है, उनके जीन में खराबी आने से गोरे अलबिनो बच्चे पैदा होते है। (http://en.wikipedia.org/Melanin theory - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अधिकतर गोरे मेलॅनिन के निर्माण में अक्षम है क्योंकि उनकी पीनीयल ग्रंथी सख्त होकर (calcified) क्रियाहीन हो जाती है। अफ्रिका के लोगों में Pineal calcification का दर 5-15%; एशिया के लोगों में 15-25%; जबकि गोरों में यह 60-80% है। (Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar; http://stewartsynopsis.com//More Hidden Truths About White People.htm)

शरीर के स्वास्थ्य में मेलॅनिन की भूमिका !

कालों में मेलॅनिन की अधिकतम मात्रा होती है इसलिये तेज धूप में भी त्वचा को कोई नुकसान नही पहुंचता। मेलॅनिन आँखों की तीक्ष्ण दृष्टी के लिये बेहद जरुरी है क्योंकि वह आँखों के भीतर प्रवेश करने वाली प्रकाश किरणों की तीव्रता को नियंत्रित करती है। मेलॅनिन आखों में परावर्तित होने वाले प्रकाश को भी नियंत्रित करती है। इससे व्यक्ति बेहतर ढंग से देख सकता है। आँखों की रेटिना में मौजूद मेलॅनिन आँखों को तेज रोशनी से होने वाले नुकसान से बचाती है। जिनकी आँखे भूरी, नीली या हरी होती है वे

तेज रोशनी से अपने आँखों की रक्षा नही कर पाते। मेलॅनिन त्वचा का कर्करोग होने से रोकती है। मेलॅनिन शरीर के अंदर प्रवेशित घातक धातुओं से, oxidizing agents से तथा घातक जीवाणुओं से शरीर की रक्षा करती है। किसी के भीतरी कानों stria vascularis में मेलॅनिन कम है तो वे ठिक से सून नही पाते क्योंकि मेलॅनिन ध्वनी को सोखने वाला बेहतरीन तत्व है जो कानों की रक्षा करता है। जे. डी. सीमॉन तथा उनके साथियों ने किये शोध से सुचित होता है कि मेलॅनिन प्रकाश की तीव्रता से रक्षा के अलावा मश्तिष्क की पेशीयों की भी रक्षा करता है। मश्तिष्क की पार्किन्सन बीमारी होने वाले व्यक्ति में न्यूरोमेलॅनिन की मात्रा कम हुई पाई गई है। मेलॅनिन सूर्य की तमाम उर्जा को सोख लेती है। यह प्रक्रिया थंडे रक्त वाले सरीसृपों में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि सुर्य की किरणों को सोखकर ही वे अपने शरीर का उचित तापमान कायम रख सकते है। (http://www. answers.com//Who are melanin recessive.htm; http://en.wikipedia.org/Melanin - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि मेलॅनिन प्रकाश का उत्सर्जन भी करता है। प्रत्येक पेशी में मेलॅनोसोम्स न्युक्लिअस के उपरी सतह पर रहकर डी.एन.ए. की पॅरा बैंगनी रोशनी से रक्षा करते है।(http://5starnutrition.ca/Melanin And Its Link To Diet.htm) मेलॅनिन हमारे मश्तिष्क और मज्जा तंत्र की कार्यक्षमता के लिये भी बेहद जरुरी है। मश्तिष्क के महत्वपूर्ण हिस्सों में ज्यादा मेलॅनिन पाई जाती है। हमारी प्रजनन क्षमता में मेलॅनिन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मेलॅनिन की पर्त sperm and the egg की रक्षा करती है। जब भ्रुण के ectoderm में मेलॅनिन की मात्रा बेहद कम होती है तो काली स्त्रियों में गर्भ ठहर नही पाता, जबकि गोरी औरतों में त्रृटिपूर्ण बच्चा पैदा होता है। मेलॅनिन से त्वचा में झुर्रियां पडने की प्रक्रिया धीमी होती है। गोरे लोगों में 30 साल में ही झुर्रियां पडती है जबकि काले लोगों की त्वचा बुढापे में भी कम झुर्रियों वाली होती है। आदीम जीवों में मेलॅनिन सबसे कम जबकि उन्नत जीवों में मेलॅनिन सबसे ज्यादा होती है। अफ्रिका वंशीयों में सबसे ज्यादा मेलॅनिन होती है।

मिडल स्कूल की किताबों में पढाया जाता है कि सफेद रंग में सारे रंगों का समावेश है, काले रंग में सभी रंगों का अभाव है। इस कथन को सही अर्थो में समझना जरुरी है। वस्तु से परावर्तित प्रकाश आँखों की रेटिना पर पडने से हमें वह वस्तु नजर आती है। चीज जिस रंग की प्रकाश तरंग का परावर्तन करेगी वह वस्तू हमें उस रंग की नजर आएगी। काले रंग की वस्तू सारे रंगों को खुद सोख रही है और किसी भी रंग की प्रकाश तरंग को परावर्तित नही कर रही है। हमारी आँखों की रेटिना पर कोई प्रकाश नही पड रहा है इसलिये दिखने वाले काले रंग को हम प्रकाश का अभाव कह रहे है। प्रकाश का अभाव हमारे रेटिना पर है न कि काले रंग में। सफेद प्रकाश में भले ही कई रंगों का समावेश हो लेकिन सारे रंगों का समावेश नही है। काले रंग में सोखने की क्षमता के चलते तमाम रंगो का समावेश है। काला रंग सभी प्रकार की प्रकाश तरंगों तथा अन्य उर्जा तरंगों को खुद में समाविष्ठ करता है। यही क्षमता मेलॅनिन में भी पाई जाती है। मेलॅनिन हर प्रकार की उर्जा को ग्रहण करता है। मेलॅनिन में आकाशमंडल के "black hole" जैसे गुणधर्म पाये जाते है। मेलॅनिन अपनी संरचना में जरुरी परिवर्तन कर सभी उर्जा तरंगों को जैसे की सूर्य-प्रकाश, संगीत, एक्स रे, राडार इ. को सोख कर बाद में काम में लाने के लिये संग्रहित कर सकता है। मेलॅनिन प्रकाश तरंगों को ध्वनी तरंगों में तथा ध्वनी तरंगों को दोबारा प्रकाश तरंगों में परिवर्तित कर सकता है। मेलॅनिन उर्जा का संग्रह करता है, उर्जा को रुपांतरित करता है तथा उर्जा का वहन भी करता है।

मेलॅनिन हमारी मज्जा संस्था का इस तरह से संचालन करता कि काले लोगों में मश्तिष्क से शरीर के हर हिस्से तक संदेश फौरन पहुंचता है। काला बच्चा गोरे बच्चों की तुलना में जल्दी बैठना, जल्दी घुटनों पर चलना तथा खडे होना सीख जाता है। मेलॅनिन की अधिकता से उनमें समझने की क्षमता तीव्र होती है। कॅरोल बार्नेस के मुताबिक आपके मश्तिष्क की मानसिक प्रक्रियाएं उसी रसायन से नियंत्रित होती है जो काले लोगों को श्रेष्ठ शारीरिक क्षमताएं जैसे कि एथलेटिक तथा लयबध्द नाचने इ. की क्षमताएं प्रदान करता है। ... यह रसायन मेलॅनिन है। जेफ्रिज (Jeffries) का दावा है कि मेलॅनिन बुध्दि तथा सृजनात्मक क्षमता का स्त्रोत है। वे मानवता का विभाजन अफ्रिका के 'सुर्य जनों' तथा युरोप के 'बर्फ जनों' में करते है। युरोप के 'बर्फ जन' मेलॅनिन से लगभग वंचित है इसलिये वे जन्मतः संवेदनाहीन, लालची, आक्रमक प्रवृत्ति के, अधिनायकवादी तथा वंशजन्य विकारों से युक्त है। काले लोगों में मेलॅनिन भरपूर मात्रा में होने से वे तमाम मानवी संवेदनाओं से युक्त सामाजिक किस्म के होते है। (http://en.wikipedia.org/ Melanin theory - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

मानसिक-आध्यात्मिक विकास में मेलॅनिन की महत्वपूर्ण भूमिका !

शरीर में प्रचुर मात्रा में पाये जाने वाले मेलॅनिन की वजह से काले लोग शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रुप से श्रेष्ठ बनने की क्षमता रखते है। तमाम धर्मो के संस्थापक अफ्रिका वंशी काले है। ईसा मसिह को सभी प्राचीन चित्रों में काला तथा घुंघराले बालों से युक्त दिखाया गया है। रोम के भूमिगत कब्रगाहों (catacombs) में ईसा मसिह की तस्वीर सबसे पहली बार बनाई गई। उन चित्रों में तथा उनकी मूर्तियों में वे काले रंग के है। कॅथलिक चर्चो तथा युरोप के महत्वपूर्ण चर्चो (cathedrals) में मदर मेरी तथा शिशु ईसा मसिह काला है। ब्रिटिश म्युजियम में रोमन सम्राट Justinian II व्दारा बनाये गए सोने के सिक्के में ईसा मसिह के बाल अफ्रिका वंशी लोगों के बालों की तरह घुंगराले है। जे. ए. राजर्स ने Sex and Race Vol.1, p.292 में लिखा है कि कॅम्ब्रीज इन्सायक्लोपिडिया कंपनी के मुताबिक इन सिक्के से स्पष्ट है कि ईसा मसीह अफ्रिकन वंश के थे।

बुध्द भी काले रंग के थे क्योंकि चित्रों तथा मूर्तियों में उनके बाल अफ्रिकन लोगों की तरह घुंघराले है। बुध्द के प्राचीन शिल्पों में उनके अफ्रिकी गुणधर्म जैसे कि चौडी नाक और मोटे ओंठ है। प्राचीन भारत में देवताओं के चित्र अफ्रिकी गुणधर्म वाले होते थे।

जापान के झाहा, चीन के फुत्सी (Fu-Hsi), Scandinavia के Tyr, मेक्सिको के Quetzalcoatl, सीयाम के Sommonacom, इजिप्त तथा रोम की इसीस सभी काले रंग के थे। इस्लाम के संस्थापक हजरत महम्मद काले-सांवले रंग के तथा घुंघराले बालों वाले थे। उनके दादाजी पूरी तरह से काले रंग के थे।

इजिप्शीयन देवता ओसीरिस का मुख्य शीर्षक / संबोधन "Lord of the Perfect Black" था। जिस तरह क्रृष्ण को ''सांवरे'' के नाम से जाना जाता है उसी तरह उन्हे "The Great Black" के तौर पर जाना गया। ग्रीक देवता Zeus का मुख्य शीर्षक "Ethiops" यानि काले रंग वाला है। मेक्सिकन देवता Ixtliton का अर्थ 'काले चेहरे वाला' है। कई मेक्सिकन देवता अफ्रिकी गुणधर्मो से युक्त काले रंग के है। प्राचीन ग्रीक देवि-देवता अपोलो, झेउस, हरकुलिस, अथेना, वेनस, इ. काले थे। हेरोडोटस के मुताबिक लगभग सभी ग्रीक देवताओं के नाम इजिप्त से लिये गए है। इलियाड, ओडिसी जैसी The Aeneid काव्यमय रचना भी कालों से संबंधित है। (Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress ; The Lost Continent of Mu and other books by

James Churchward ; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar). डॉ. वेलसिंग के मुताबिक अधिक मेलॅनिन से काले सभी उर्जाओं तथा भावनाओं के प्रति संवेदनशील होने से वे ईश्वर इ. संकल्पनाओं को भी अपना लेते है। कॅरोल बार्नेस लिखते है कि मेलॅनिन सभ्यता, दर्शन, धर्म, सच, न्याय तथा सदाचार इ. के लिये जिम्मेदार है। गोरों का पश्चीमी विज्ञान भी जान चुका है कि मेलॅनिन जीवन तथा मश्तीष्क की रासायनिक चाबी है।(http://www.livestrong.com//Dark Skin & Vitamin D Deficiency _ LIVESTRONG.COM.htm) गोरे लोगों में मेलॅनिन बहुत कम होने से गोरे आध्यात्मिकता विहीन, आत्मकेन्द्रित, दूसरों की भावनाओं को नजरंदाज करने वाले होते है। वे बर्बरता से पेश आते है और न्याय करने में सक्षम नही होते। (Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar; http://stewartsynopsis.com//More Hidden Truths About White People.htm)

अफ्रिका वंशीयों की बेहतर शारीरिक क्षमताओं का अध्ययन !

शारीरिक क्षमताओं के विकास में गोरे बच्चों की तुलना में काले बच्चे अधिक सक्षम होते है। चौथी, पांचवी तथा छँठवी कक्षा के छात्रों पर किये गए अध्ययन से पता चलता है कि काले लडके-लडकियाँ गोरे बच्चों की तुलना में 35 यार्ड दौड जल्दी पूरा करते है। उँची छलांग में काले बच्चे गोरे बच्चों से श्रेष्ठ साबित हुए है। काले बच्चों को समान अवसर और सुविधाएं हासिल हो तो वे सिर्फ ॲथलेटिक्स में ही नही बल्कि हर क्षेत्र में गोरों को पीछे छोड सकते है। अध्ययनों से पता चला है कि 100 मीटर तेज दौड में गोरे ॲथलेटस् की तुलना में काले ॲथलेट श्रेष्ठ है। पिछले 20-30 सालों से ऑलंपिक दौड में कालों का ही वर्चस्व है। अमेरिकी स्कूलों-कॉलेजों में यही स्थिति है। फुटबॉल इ. खेलों में जीस पोजीशन में खिलाडियों का तेज गति का होना जरुरी है उस पोजीशन पर अक्सर काले खिलाडी होते है। अमेरिका में कालों की तादाद मात्र 12 फीसदी है इसके बावजूद गोरे कालों से आगे नही जा सके है। काले लोग विटॅमिन डी के निर्माण में श्रेष्ठ साबित हुए है क्योंकि उनकी हड्डीयों का धनत्व ज्यादा पाया गया तथा उनकी हड्डीयों में पाये जाने वाले खनिजों की तादाद भी अधिक पाई गई। बेल तथा उनके साथियों व्दारा किये गए अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि काले लोगों में हड्डीयों के खनीजों का धनत्व गोरों से ज्यादा था। काले लोगों में हड्डीयों के खनीजों का धनत्व उनके उम्र के किसी भी काल में गोरों की तुलना में काफी अधिक होता है। (http://www.t-nation.com/T NATION _ Speed Demons The Domination of Sport by Blacks.htm) विभिन्न आयु समूहों पर किये गए अध्ययन से पता चला है कि काले लोगों में हड्डीयों का धनत्व हर उम्र में गोरों से ज्यादा होता है। कालों में औसत हड्डीयों का धनत्व 6.5% ज्यादा पाया गया। उम्र की वजह से हड्डीयों के धनत्व में होने वाली कमी गोरों में काफी ज्यादा पाई गई। (http://www.ncbi.nlm.nih.gov//Radial and vertebral bone density in... [J Clin Endocrinol Metab. 1989] - PubMed - NCBI.htm) उत्तरी कॅलिफोर्निया के Kaiser Permanente Medical Care Program में शामिल 25–36 साल के 402 काले और गोरे पुरुष तथा औरतों पर किये गए अध्ययन में पाया गया कि कालों के हड्डीयों का धनत्व गोरे पुरुषों की तुलना में 4.5–16.1% ज्यादा था। (http://jcem.endojournals.org//Racial Differences in Bone Density between Young Adult Black and White Subjects Persist

after Adjustment for Anthropometric, Lifestyle, and Biochemical Differences.htm) कई खोजकर्ताओं ने Health Care Financing Administration के आंकडों के अध्ययनों में पाया कि हड्डीयों में दरार पडने या चटखने, कुल्हे की हड्डीयों में दरार पडना इ. में गोरों की तादाद कालों की तुलना में बहुत ज्यादा है। गोरी औरतों में कुल्हे में दरार पडने का प्रतिशत 10.1 जबकि काली औरतों में यह प्रतिशत 4.1 है। गोरे पुरुषों में यह प्रमाण 4.3 फीसदी जबकि काले पुरुषों में यह तादाद 3.1 फीसदी है। 65 से 90 साल के गोरी औरतों में यह तादाद 16.3 जबकि काली औरतों में यह तादाद 5.3 फीसदी पाई गई। गोरे पुरुषों में यह तादाद 5.5 जबकि काले पुरुषों में यह तादाद मात्र 2.6 फीसदी पाई गई। कालों में हड्डियों के फॅक्चर कम होने की वजह हड्डीयों का अधिक धनत्व है। Osteoporotic Fractures (SOF) तथा Baltimore Men's Osteoporosis Study के आंकडों से यही निष्कर्ष प्राप्त हुए है। (http://www.ncbi.nlm.nih.gov//Racial Differences in Bone Strength.htm) Pittsburgh विश्वविद्यालय के अध्ययन में काली औरतों में फॅक्चर होने का प्रमाण 30-40% कम पाया गया। अपने अध्ययन में Cauley के साथियों ने 7,334 गोरी औरतें जिनकी उम्र 67-99 वर्ष थी तथा 67-94 वर्ष की 636 काली महिलाओं का अध्ययन किया। इन औरतों का अवलोकन औसत 6.1 साल तक करने के बाद पाया गया कि फॅक्चर होने का प्रमाण काली औरतों में 30 to 40 फीसदी कम था।(http://www.healingwell.com/Older Black Women Less Likely to Break Bones.htm)

गोरी त्वचा की वजह क्या है ?

यह सिधान्त पेश किया गया है कि थंडे मुल्कों में रहने वालों की गोरी त्वचा होती है क्योंकि गोरी त्वचा सुर्य की किरणों से ज्यादा विटॅमिन डी हासिल कर सकती है। (http://www.wrongplanet.net/Whats with white people and cold weather - Random Discussion.htm) उपरोक्त दलील सही नही है। इन्सानों को स्वस्थ रहने के लिये सप्ताह में दो बार 15 मिनट चेहरे या हाथों पर सुर्यप्रकाश की जरुरत होती है। इसलिये कोई कारण नही है कि काले लोग गोरे बन जाये। एक ही प्रांत में सैंकडों सालों से रहने वाले काले लोग गोरे नही हुए। पृथ्वी पर समान रेखा क्षेत्र में अलग अलग वंश के लोग है इसके बावजूद उनकी त्वचा का रंग अलग है। बर्फिले आर्क्टिक क्षेत्र में रहने वाले लोग गोरे नही बल्कि कत्थई त्वचा के है। वे मुख्यतः मंगोल प्रजाति के और इस क्षेत्र के ईसापूर्व 15,000 साल से निवासी है। गोरे लोग Scandinavia में 12 वी तथा 13 वी सदी तक नही पहुंचे थे। गोरे सामी भी आर्क्टिक क्षेत्र में हाल ही में स्थानांतरित हुए है। आस्ट्रेलिया के मूलनिवासी काले रंग के है। आस्ट्रेलिया में सैकडों सालों से रह रहे गोरों का रंग गोरा ही है। त्वचा का रंग थंडे वातावरण से नही बल्कि अनुवांशिकता से तय होता है। (http://realhistoryww.com/The Indus Valley The Arian Invasion - Ancient Man and His First Civilizations.htm; http://www.straightdope.com//Is white skin a Neanderthal trait - Straight Dope Message Board.htm) थंडे बर्फीले प्रदेशों में गोरी त्वचा का नुकसान है क्योंकि त्वचा में मेलॅनिन की कमी से शरीर तापमान का समायोजन नही कर पाता। मेलॅनिन सभी उर्जा सोखता है इसलिये शरीर को थंडी से जल्द तथा लंबे समय तक निजात मिलती है। थंडे मुल्कों में भी काले देर तक गर्म रहते है।(http://stewartsynopsis.com//WHAT WHITE PEOPLE DON.htm)

दूसरा सिधान्त यह है कि गोरे अलबिनो वंशीय है। अलबिनिजम से ग्रस्त व्यक्ति की

त्वचा एकदम गोरी, बालों का रंग लाल-सुनहरा तथा आँखें निली, हरी या भूरी होती है।

जिस व्यक्ति, प्राणी, सरीसृप या वनस्पति में मेलॅनिन का अभाव होता है उसे अलबिनो व्यक्ति, प्राणी या वनस्पति कहते है। अलबिनिजम अनुवांशीक विकृति है। अलबिनिजम के कई प्रकार है : OCA1 प्रकार अलबिनिजम की तीव्रतम अवस्था है जिसमें व्यक्ति में मेलॅनिन बिल्कुल नही होता। OCA2 प्रकार में कुछ मात्रा में मेलॅनिन मौजूद होती है। OCA3 अवस्था में सामान्य व्यक्तियों की तुलना में कम मेलॅनिन होती है।(The Original Black Cultures of Eastern Europe and Asia http://realhistoryww.com/index.htm)

अलबिनो दम्पत्ति सिर्फ अलबिनो बच्चों को ही पैदा कर सकते है। सामान्य लोगों में जीन संबंधी विकृति आ जाये तो उनको अलबिनो बच्चे पैदा हो सकते है। (http://www.nairaland.com//White People Are The Descendants Of African Albino's. - Ethnic, Racial, Or Sectarian Politics - Nairaland.htm) साउथ अफ्रिका में चार हजार लोगों में एक अलबिनो होता है। अफ्रिका में अलबिनिजम की तादाद अन्य जगहों से काफी ज्यादा है। सन् 2006 में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक तांजानिया में 1400 लोगों में एक अलबिनो पाया जाता है। यह आँकडा अधूरी जानकारी के आधार पर दिया गया है। तांजानिया की अलबिनो असोशिएशन के मुताबिक कई जनजातियों में जाति में ही विवाह होने से तांजानिया में देढ लाख अलबिनो होने की संभावना है।(http://www.slate.com//How many albinos are there in Tanzania - Slate Magazine.htm)

यह सिधान्त प्रस्तुत किया गया है कि इतिहासपूर्व काल में अफ्रिका में अलबिनो बच्चों को असामान्य बच्चे मानकर उनकी उपेक्षा की गई, उन्हे एक निश्चित आयु के बाद समूह से अलग किया गया। इससे अलबिनो की वसाहत बन गई। वे सुर्य की तीव्र रोशनी से बचने युरोप में विस्थापित हुए। (http://www.stewartsynopsis.com//Albinos--The Origin of the Caucasian Race.htm) अलबिनो मध्य एशिया के घास के क्षेत्रों (Steppes) में बस गए। वे उत्तर एशिया में काले मंगोल लोगों से संकरित हुए। इसका सबूत यह है कि गोरे लोग तथा मंगोल दोनों में ही Y-DNA haplogroup "K" पाया जाता है।

उनकी संतती पिली छटा युक्त त्वचा वाली हुई। काले और गोरे व्यक्ति की संतान की त्वचा का रंग हल्का पीलापन लिये होता है। चीन के Xinjiang प्रांत की Tarim Basin में 1,800 B.C. में पूरानी ममियां गोरी त्वचा युक्त जबकि ईसापूर्व 1100 में प्राप्त ममियां संकरित थी। इस संकरण से अलबिनो को कुछ हद तक मेलॅनिन धारण करने की क्षमता हासिल हुई। गोरे लोग अलबिनो है यह इस बात से भी स्पष्ट है कि उनका स्पष्ट कोई Y-DNA haplogroup "i" नही है वे कालों से ही विकसित हुए है। Meiners के मुताबिक काकॅशियन्स लोगों में सबसे ज्यादा गोरी तथा नाजुक त्वचा पाई जाती है। फ्रेंच प्रकृतिवादी Julien-Joseph Virey के मुताबिक कॉकॅशियन्स ही सबसे गोरी त्वचा के युरोपियन्स है।(http://en.wikipedia.org/Caucasian race - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) गोरे लोगों ने खुद के अलबिनो होने की बात नकारते हुए अपनी गोरी त्वचा की वजह बताने के लिये अब तक जितनी भी दलिलें पेश की है वे सभी झूठी साबित हुई है और वे अलबिनो से खुद को अलग साबित करने में नाकाम रहे है।

(The Original Black Cultures of Eastern Europe and Asia http://realhistoryww.com/index.htm)

अलबिनो जीवों की समस्याएं :- अलबिनो पौधों में क्लोरोफील की कमी होती है जिससे वे सुर्य की मदद से उचित मात्रा में अन्न पैदा नही कर सकते। इसलिये वे अल्पायु होते है। अलबिनो इन्सान अल्पायु होते है या नही इसके आँकडे उपलब्ध नही है। (http://www.articlesphere.com/A Short History of Albinism _ Disease And Conditions.htm) **अलबिनिजम से ग्रस्त लोगों में दृष्टी संबंधी समस्याएं पायी जाती है। उनकी आँख की रेटीना का विकास असामान्य होता है। मेलॅनिन न होने से उनको कम दिखाई देता है। उनकी आँखे तेज सुर्यप्रकाश नही सहन कर सकती; त्वचा झुलसने तथा त्वचा का कॅन्सर होने संभावना होती है। अलबिनों व्यक्तियों की हड्डियाँ कमजोर होती है। उन्हे सुनने में कठिनाई होती है। अलबिनिजम को ठिक नही किया जा सकता। उचित उपचार तथा सनस्क्रिन लोशन, गहरे चश्मे, हॅट इ. उपायों से उनकी समस्याओं को कम किया जा सकता है।** (http://www.medicalnewstoday.com/What Is Albinism What Causes Albinism.htm; http://www.nairaland.com//White People Are The Descendants Of African Albino's. - Ethnic, Racial, Or Sectarian Politics - Nairaland.htm)

गोरे लोगों में पाई जाने वाली शारीरिक समस्याएं !

प्रोजेरिया नामक बीमारी में बच्चा अस्सी साल के बूढे जैसा दिखने लगता है। Werewolf Syndrome **में सारे शरीर पर जानवरों की तरह बाल उगते है। निली त्वचा की बीमारी,** Jumping Frenchman Disorder (reflex and neurological disorder), Blaschko's Lines **(जिसमें सारी त्वचा पर विचित्र पट्टे दखाई देते है) यह बीमारियां अलबिनिजम की जन्मजात म्युटन्ट अवस्थाएं है। गोरों में स्वास्थ्य तथा बर्ताव संबंधी समस्याएं होती है। मायकल ब्राडले ने अपनी किताब** "Iceman Inheritance" **में इन समस्याओं का जिक्र किया है इन समस्याओं का वर्णन अगले अध्याय में विस्तार से किया है।**

अलबिनो सामान्य रुप से अपना प्रजनन नही कर सकते। उन्हे प्रजनन में सहायक औषधियां, स्टेम सेल्स इ. देने पडते है। कालों को इनकी जरुरत नही होती।(Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar; http://stewartsynopsis.com//More Hidden Truths About White People.htm)

पार्किन्सन्स विकृति में मश्तिष्क के substantia nigra **नामक हिस्से में मेलॅनिन की मात्रा बहुत कम हो जाती है। काले लोगों में मश्तिष्क से संबंधित पार्किन्सन्स की बीमारी लगभग नही पाई जाती। माना जाता है कि गोरे लोग अलबिनों से विकसित हुए है इसलिये उनमें यह बीमारी अधिक मात्रा में देखी जाती है।** (http://en.wikipedia.org/Melanin theory - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) **पार्किन्सन्स बीमारी के रोगियों में मेलॅनिन कम होने की वजह डोपॅमाईन संश्लेषण** (dopamine synthesis) **का कम हो जाना है। वैज्ञानिकों का मानना है कि कालों में अधिक मेलॅनिन मश्तिष्क के न्यूरोमेलॅनिन बरकरार रखने का काम करती होगी।** (http://5starnutrition.ca/Melanin And Its Link To Diet.htm) **गोरी त्वचा सुर्य की किरणों का परावर्तन करती है इसलिये उनमें विटॅमिन**

डी की कमी हो जाती है। हड्डीयों का खनीज धनत्व कम होकर Osteoporosis नामक विकृति पैदा होती है। वे सुरज की रोशनी में ज्यादा रहते है तो मेलॅनिन संरक्षण के अभाव में त्वचा का कॅन्सर या त्वचा की अन्य दिक्कतें पैदा हो जाती है। दुनियां में सब से ज्यादा त्वचा का कॅन्सर गोरे लोगों में होता है। गोरे लोगों में कीडनी में पत्थर बनने की संभावना ज्यादा होती है। (http://stewartsynopsis.com//WHAT WHITE PEOPLE DON.htm) अलबिनिजम से ग्रस्त जानवरों में सुनने की समस्या होती होती है। चार्लस डार्विन ने On the Origin of Species में लिखा है कि सफेद बिल्लीयाँ जिनकी आँखे नीली है वास्तव में बहरी होती है। कान के अंदरुनी हिस्से में स्थित stria vascularis में मेलॅनोसाईटस् के न होने से कान के cochlea में बिगाड पैदा हो जाता है। मेलॅनिन ध्वनी को अच्छी तरह से ग्रहण करती है और कान की हिफाजत करती है। डार्विन के अनुसार मेलॅनिन व्यक्ति के विकास को भी प्रभावित करती है।(http://en.wikipedia.org/ Human skin color - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

क्या गोरे लोगों का वंश समाप्ती की ओर अग्रेसर है ?

मेलॅनिन के अभाव में रक्त की मात्रा में फोलेट या फोलिक एसिड (folate or folic acid) के विघटन से पेशीयों का पूर्नविभाजन तथा निर्माण प्रभावित होता है। सुर्य किरणों के प्रभाव से फोलेट की मात्रा 50% तक कम हो जाती है। इसलिये सुर्य की किरणें गोरे लोगों का photolysis के माध्यम से निर्बिजिकरण (sterilization) करने का कार्य करती है। कॉकॅशियन गोरे लोगों में जन्म दर अत्यंत कम होने की यह एक प्रमुख वजह है। photolysis की वजह से गोरे सामान्य काले लोगों की तरह प्रजनन करने में असमर्थ है। वे प्रजनन में मदद करने वाली तरह तरह की दवाओं, किराये की कोख, टेस्ट टयुब बेबी, क्लोनिंग रिसर्च इ. का सहारा लेते है। गोरी महिलाएं अपने अजन्मे बच्चे को पूरे नौ महिने तक गर्भाशय में रख पाने तक में असमर्थ साबित होती है। यही वजह है कि कॉकॅशियन गोरों की आबादी लगातार कम हो रही है। उनकी जन्म दर दुनियां भर में सबसे कम है। अगर वे कालों से संकरित नही होते है तो यकीनन उनकी प्रजाति के समाप्त होने में ज्यादा देर नही लगेगी। (http://stewartsynopsis.com//WHAT WHITE PEOPLE DON.htm; http://stewartsynopsis.com//WHAT WHITE PEOPLE ARE HIDING.htm) गोरों व्दारा आपस में वैवाहिक संबंध बनाने की वजह से उनके जिन्स की तादाद बेहद कम हो गई है। जीन विविधता की कमी की वजह से गोरों का वंश नष्ट होने की दीशा में बढ रहा है।

अनुवांशिक विज्ञान की सच्चाई यह है कि गोरों को अपने अस्तित्व को बचाने के लिये कालों की जरुरत है जबकि कालों को गोरों की कतई जरुरत नही है।(Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar; http://stewartsynopsis.com//More Hidden Truths About White People.htm)

विटॅमिन डी को लेकर गोरों का झूठा प्रचार !

विटॅमिन डी के निर्माण में अपनी शारीरिक दुर्बलता पर पर्दा डालने के लिये गोरों ने यह झूठा प्रचार चलाया हुआ है कि अमेरिका में रह रहे अफ्रिकावंशी कालों में विटॅमिन डी की भारी कमी पाई जाती है। उनका यह दुष्प्रचार है कि कालों में यह विटामिन डी

की कमी उनकी काली त्वचा की वजह से पैदा हुई है क्योंकि काली त्वचा सुर्य की किरण ों को अवरोधित कर विटॅमिन डी के निर्माण में रुकावट पैदा करती है। इसके बावजूद अमेरिका के काले अपने खानपान में विटॅमिन डी वाले दुग्ध पदार्थो का सेवन नही करते।(http://jn.nutrition.org/Vitamin D and African Americans.htm)

गोरों का उपरोक्त प्रचार पूरी तरह से झूठा है। विभिन्न अध्ययनों से पहले ही साबित हो चुका है कि काले लोगों में उच्च मात्रा में serum 1,25-dihydroxyvitamin D, तथा उनके शरीर में गोरों की तुलना में कॅलशियम सोखने और उसे लंबे समय तक धारण करने की क्षमता है। यह बात उनके हड्डीयों के उच्च धनत्व, हड्डीयों के खनीज तत्वों के उच्च धनत्व इ. से साबित हो चुकी है। काले लोग विटॅमिन डी से प्रचुर दुग्ध पदार्ध नही लेने के बावजूद उनमें ज्यादा विटॅमिन डी मौजूद होने की वजह यह है कि काले लोगों के शरीर में विटॅमिन डी का निर्माण गोरे लोगों के तुलना में अलग तरह से और ज्यादा कार्यक्षम ढंग से होता है। शोधों से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि काली महिलाओं को गोरी महिलाओं की तरह अलग से विटॅमिन डी लेने की कतई जरुरत नही पडती। जब गोरे लोग यह दावा करते है कि सुर्यप्रकाश में वे कालों की तुलना में छह गुना ज्यादा विटॅमिन डी तैयार करते है तो इससे यही साबित होता है कि छह गुना ज्यादा विटॅमिन डी पैदा करने के बावजूद गोरे लोगों का शरीर काले लोगों के विटॅमिन डी के स्तर तक पहुचने में नाकाम साबित हुआ है। शरीर का 99 फीसदी कॅलशियम हड्डियों में पाया जाता है और काले लोगों की हड्डियों की श्रेष्ठता सारी दुनियां में साबित हो चुकी है। छह गुना ज्यादा विटॅमिन डी पैदा करने के बावजूद गोरों की हड्डियां कालों की तुलना में कमजोर साबित हुई है। हड्डियां टेढीमेढी होने की बीमारी जिसे rickets कहते है कालों में नही पाई जाती। Source: HTTP ://jcem.endojournals.0rg/cgi/content/full/82/2/429

काले लोग दूध के सेवन को नापसंद करते है इसलिये उनमें विटॅमिन डी का सेवन भी कम है इसके बावजूद उनका शरीर गोरों की तुलना में ज्यादा विटॅमिन डी पैदा करता है यह बात उनकी श्रेष्ठ हड्डीयों की रचना से साबित होती है। (http://www.t-nation.com/T NATION _ Speed Demons The Domination of Sport by Blacks.htm) गोरों को कॅलशियम की सतत जरुरत होती है क्योंकि उनके शरीर में कॅलशियम की कमी होती है। सामान्य शरीर को एक निश्चित उम्र के बाद दूध की जरुरत नही रहती। क्या आपने किसी वयस्क जानवर को माँ का दूध पिते देखा है ? दरअसल काले लोगों को दूध की कतई जरुरत नही है क्योंकि उन्हे जरुरी विटॅमिन डी सुरज की रोशनी से हासिल हो जाती है। जबकि गोरों को अपनी विटॅमिन डी की कमी को दूर करने के लिये अलग से विटॅमिन डी की मात्रा लेनी जरुरी होती है। यही वजह है कि जहां काले लोग दूध को सहन नही करते जबकि गोरों को दूध की सतत जरुरत महसूस होती है। (http://stewartsynopsis.com//WHAT WHITE PEOPLE ARE HIDING.htm)

विटॅमिन डी का कार्य शरीर में कॅलशियम के संतुलन को बनाये रखना होता है जो हमारी मज्जा संस्था के स्वस्थ रुप से कार्य करने, हड्डियों के विकास तथा हड्डियों के ध ानत्व के लिये बेहद जरुरी है। विटॅमिन डी पेशियों के भिन्नत्वीकरण (differentiation) में भी अहम भूमिका निभाती है। विटॅमिन डी टयुमर की रोकथाम में भी मददगार है। विटॅमिन डी हमारी शरीर संरक्षण यंत्रणा को भी नियंत्रित करने में मदद करती है तथा इंन्सुलिन के निर्माण में भी योगदान करती है। विटॅमिन डी उच्च रक्तचाप पैदा करने वाले रासायनिक तत्वों का नियंत्रण करने में मदद करती है।(http://www.livestrong.

com//Dark Skin & Vitamin D Deficiency _ LIVESTRONG.COM.htm) गोरे लोगों की मजबूरी यह है कि उन्हे विटॅमिन डी की कमी पूरी करने के लिये देर तक सुर्यप्रकाश में रहना जरुरी है। ऐसा करने पर उनमें त्वचा का कॅन्सर होने का खतरा बढ जाता है। अगर वे घरों की छांव में रहते है तो उन्हे विटॅमिन डी नही मिलेगी। इसलिये वे अधिकतर विटॅमिन की दवाओं पर निर्भर दिखाई देते है। (http://thebodytemple.ning.com/ The Truth About Vitamin D and Black People - THE BODY TEMPLE INSTITUTE. htm) इसके बावजूद गोरों में अमेरिका में प्रति वर्ष 20 लाख से भी ज्यादा लोगों को सुर्य प्रकाश से त्वचा का कॅन्सर होता है। (http://realhistoryww.com/The Indus Valley Mohenjo-daro, Harappa - Ancient Man and His First Civilizations.htm) गोरों में त्वचा के कॅन्सर की संभावना दस गुनी ज्यादा होती है। त्वचा के कॅन्सर इ. से बचने गोरे तरह तरह के सन-स्क्रीन लोशन्स इस्तेमाल करते है। काली त्वचा को किसी लोशन की जरुरत नही पडती क्योंकि मेलॅनिन उनकी त्वचा की भली भाँति रक्षा करती है। (http://en.wikipedia.org/Human skin color - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) मेलॅनिन हमारे शरीर में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है इस पर पर्दा डालने की गोरों ने पूरजोर कोशिश की है क्योंकि मेलॅनिन के महत्व के उजागर होते ही गोरों की शारीरिक कमियाँ अपने आप उजागर होती है और उनकी वांशीक श्रेष्ठता के दुष्प्रचार का गुब्बारा फट जाता है। यह भी स्पष्ट हो जाता है कि गोरे शारीरिक तौर पर कालों से निकृष्ट है। (http://www.livestrong.com//Dark Skin & Vitamin D Deficiency _ LIVESTRONG.COM.htm)

गोरे लोग सफेद चुहों पर इसलिये मेडिकल प्रयोग करते है क्योंकि सफेद चुहे अलबिनिजम से ग्रस्त होते है। सफेद चुहों पर किये परिक्षणों के परिणाम गोरों पर लागू किये जा सकते है। गोरों को जब यह जानना होता है कि सामान्य काले लोगों पर किसी चिज का क्या प्रभाव होगा तब वे काले चुहों पर प्रयोग करते है।

वंशवादी गोरे लोगों का कालों के खिलाफ प्रतिशोध !

गोरे लोग अपनी जैविक अक्षमता की खीज काले लोगों के खिलाफ उतारना चाहते है क्योंकि काले शारीरिक तथा मानसिक तौर से पूरे स्वस्थ है। कालों को शारीरिक तथा मानसिक तौर से कमजोर बनाकर ही वे अपनी हीनता के अहसास को कुछ कम कर सकते है। वंशवादी गोरे 'विशेष दवाओं से कालों की शारीरिक क्षमता को ध्वस्त करना चाहते है। कॅरोल बार्नेस के मुताबिक कोकेन, amphtamines, pyscholic, hallucinoge, marijuana, Nicotine इ. रसायन मेलॅनिन के साथ मिलकर घातक बन जाते है। काले लोग इन नशीली दवाओं के फौरन आदी बनते है। tetracyclines, neurolepts (tranquilizers) इ. रसायनों का भी मेलॅनिन से मिलकर घातक प्रभाव पैदा होता है। इन रसायनों का कालों बीच प्रसार किया जा रहा है। ये रसायन कालों की मौत का सामान बन गए है। (Lost Cities of Ancient Lemuria and the Pacific by David Childress; The Lost Continent of Mu and other books by James Churchward; Blacked out Through Whitewash by S. E. Suzar; http://www.news-medical.net//Melanin and Disease.htm) रॉकफेलर तथा प्रेसकॉट बुश ने नाजी जर्मनी के गैर आर्यो का बंध्याकरण (sterilization) इ. वंशवादी कार्यक्रमों का पूरजोर समर्थन किया। जे.डी. रॉकफेलर ने रविवार स्कूल में संबोधित करते हुए कहा था कि अमेरिकन खुबसुरत फुलों का विकास तभी हो सकता है जब उसके ईद्रगीर्द उगने वाली दिगर कोपलों को नष्ट किया जाये। शोधकर्ता ग्रेग

केथ ने मार्गारेट सँगर पर आरोप लगाया कि वह काले मूलनिवासियों का भ्रुण अर्बाशन, बंध्यीकरण, तथा जनसंहार के कार्यक्रमों से उन्मूलन कर रही है।

सुक्ष्मजीव वैज्ञानिक Dr. Ignacio Chapela ने पता लगाया कि मेक्सिको के दूरवर्ति प्रांतों में ऐसे जंगली जीन-परिवर्तित भुट्टे उगाये गए थे जिन्हे खाने के बाद पुरुषों के वीर्य में बच्चे पैदा करने की क्षमता खत्म हो जाती है।

बिल गेट की आर्थिक मदद से संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व स्वास्थ्य संगठन ने गर्भवति महिलाओं के लिये ऐसे टीके बनाये जिसमें माँ के गर्भाशय में ही उसके गर्भ की हत्या करने वाला रसायन मिलाया गया था। सन् 1999 में अमेरिकन लाईफ लीग के मुताबिक संयुक्त राष्ट्रसंघ का टीकाकरण अभियान वास्तव में छुपा हुआ जनसंहार का कार्यक्रम है :- 'क्या गेट-प्रायोजित टीकारण कार्यक्रम जनसंहार का हथियार है ?' वार्शीगटन, (दिसंबर 14 LSN.ca) - अमेरिकन लाईफ लीग ने बिल गेटस् को स्पष्ट रुप से कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन का टीटॅनस का टीकाकरण कार्यक्रम विश्व स्वास्थ्य संगठन के पहले के कार्यक्रम जैसा ही है जिसका मकसद फिलिपिन्स की गर्भवति महिलाओं का जबरन बंध्याकरण करना था। इन औरतों को Human Chorionic Gonadotrophin (HCG) नामक रसायन मिलाया हुआ टिटेनस का टीका लगाया गया था ताकि उनका गर्भपात हो जाये। टीकाकरण से कई फिलिपिनी औरतों के अचानक गर्भपात हुए थे। अविकसित या विकसनशील देशों में चलाये जा रहे बिल गेटस् के टीकाकरण कार्यक्रम का निशाना जवान माताएं होती है। दवा कंपनियां पूरी गुप्तता से इस कार्यक्रम पर अमल कर रही है।

सन् 1986 में वैद्यकीय अधिकारियों ने अलास्का के मूलनिवासी बच्चों को उनके माता-पिता की अनुमति के बगैर 'हेपिटाईटस बी' के टीके लगाये। कई बच्चे बीमार पड गए तथा कई बच्चों की मौतें हुई। इन टीकों में RSV - Rous Sarcoma नामक वायरस जानबूझकर मिलाया गया था। डॉ. Guylaine Lanctot, M.D के मुताबिक टीकाकरण का इस्तेमाल जैविक हथियारों के रुप में किया जा रहा है ... मैने पाया है कि टीकाकरण का इस्तेमाल बीमारियों को फैलाने के लिये किया जा रहा है। उनका इस्तेमाल खास किस्म के अवाम का जनसंहार करने के लिये किया जा रहा है।

कई बीमारियाँ फैलाई जा रही है। विशेष अन्न तथा दवाओं जरिये लोगों को कमजोर बनाकर उन्हे नियंत्रित किया जा रहा है। मूलनिवासी अवाम का जैविक हथियारों से जनसंहार किया जा रहा है। (Thanks for the Memories: The Memoirs of Bob Hope's and Henry Kissinger's mind control slave by Brice Taylor p281)

मूलनिवासी शेफार्डी बच्चों को स्कूल की पिकनिक के बहाने ले जाकर बच्चों के सिरों में जानबूझकर अधिकतम डोस से 35,000 गुणा बडा डोस देकर 6,000 बच्चों को मौत के घाट उतार दिया गया। इस काम को अंजाम देने के लिये अमेरिकी सरकार ने इजरायल की सरकार को 300 मिलियन इजरायली लीरा दिये थे। बाकी बच्चों में कॅन्सर, मिर्गी, विस्मृति, अल्जायमर, सीर दर्द, मनोविकृति जैसी बीमारियां उत्पन्न हुई। इन बीमारियों से हजारों की मौते होने लगी जिसका सिलसिला जारी है। कहा गया कि scalpal ringworm के इलाज के लिये बच्चों के सीर में एक्स रे दिया गया था। (August 19, 2004 Israel Ringworm and Radiation) कॅनडा की निवासी शालाओं में खुद सरकारी आँकडों के मुताबिक आधे यानि लगभग पचास हजार मूलनिवासी बच्चें जिन्हे न्यायालय व्दारा भेजा गया था या तो मर चुके है या गायब बताये गए है। इन बच्चों को सरकार तथा चर्च के कर्मचारियों व्दारा बूरी तरह मारा-पीटा जाता था, उन्हे यातनाएं दी जाती

थी। जानबूझकर टीबी इ. बीमारियों का शिकार बनाया जाता था। यह सब सरकार के इंडियन अफेअर्स विभाग, कॅथलिक तथा प्रोटेस्टंट चर्चो व्दारा इजाद किये गए "Final Solution" नामक योजना के तहत किया जाता था। सरकारी सहमति से ओटावा से शुरु होकर फैलाये गए मूलनिवासियों के जनसंहारों के लिये खुद चर्चेस जिम्मेदार थी। (November 12, 1999 HIDDEN FROM HISTORY The Canadian Holocaust by Rev. Kevin D. Annett, MA, MDiv) सी.आई.ए. की सुनवाई में Dr. Gotlieb ने कबुल किया था कि सन् 1960 में उसने झायरे की कांगो नदी में भारी तादाद में विषाणु मिला दिये थे ताकि नदी का इस्तेमाल करने वाले लोगों को इसका शिकार बनाया जा सके। इसके बाद डॉ. गोटलिब को नॅशनल कॅन्सर इंस्टिटयुट का प्रमुख बनाकर सम्मानित किया गया।

Dr. Archie Kalokerinos MBBS, PhD FAPM के मुताबिक मेरी देखभाल में जानबूझकर मूलनिवासियों का खात्मा करने की कोशिशें की जा रही है। अधिकारी यह कतई नही चाहते कि ये बच्चे जिन्दा रहे। अधिकारियों का असल मकसद इन बच्चों का जनसंहार है। अगर हम अफ्रिका का उदाहरण ले तो वहां की खास जनजातियों को खत्म किया जा चुका है। अफ्रिका में 50% to 70% लोग मारे जा चुके है।

ईसाई धार्मिक संगठनों व्दारा संचालित फोस्टर देखभाल केन्द्रों में शहर के 23,000 से ज्यादा बच्चे दाखिल है। कई बच्चे एच.आई.वी से ग्रस्त उन माता पिताओं के है। आब्जर्वर की रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटिश दवा कंपनी GlaxoSmithKline ने कॅथलिक चर्च की मिल्कियत के Incarnation Children's Center in NEW York में इन बच्चों पर सन् 1995 से कम से कम चार बार खतरनाक दवाओं के परिक्षण व प्रयोग किये। बच्चों के माँ-बाप या अभिभावकों से इजाजत तक नही ली गई। छह मास के बच्चों तक को मिसल्ज टीके के डबल डोस दिये गए। चार साल के बच्चों को सात दवाओं के मिश्रण के ज्यादा बडे डोस एक ही समय दिये गए। ये दवाएं बच्चों को बीमार बना रही थी। Dr David Rasnick ने बताया था कि बच्चों की मांस-पेशीयों में तेज दर्द होगा, उन्हे दस्त लगेंगे, उनके जोडों में सूजन आएगी, वे दर्द से जमीन पर लोटने लगेंगे। किसी का उन्हे स्पर्श तक सहन नही होगा। उन्होने खुद कहा कि कई दवाएं जो Glaxo SmithKline कंपनी ने प्रयोग में इस्तेमाल की है वे बडी घातक है। Jacklyn Hoerger जो एक प्रशिक्षित नर्स है ने बच्चों को परिक्षण की दवाएं देनी बंद कर दी तो बच्चों की हालत तथा मिजाज में तेजी से सुधार हुआ। लेकिन दवाएं देना बंद करने की वजह से कोर्ट में उल्टे उसपर बच्चों के प्रताडक होने का आरोप लगा।

टीकाकरण संबंधी अध्ययन विभिन्न जाति-समूहों में विभिन्न रोगों के प्रति पाये जाने वाले प्रतिरोध की जानकारियां इकट्ठा करते है। इजरायली वैज्ञानिकों ने तेल अविव के निकट स्थित अति-गुप्त प्रयोगशाला में ऐसे जीवाणू विकसित किये है जो सिर्फ अरब लोगों की पेशी के डी.एन.ए. के जीन्स को प्रभावित करते है। दक्षिण-अफ्रिकी रासायनिक तथा जैविक युध्द विभाग के प्रमुख Daan Goosen ने बताया कि उनकी टीम को सन् 1980 के दशक में आदेश दिया गया था कि वे सिर्फ काले लोगों को प्रभावित करने वाला जैविक हथियार तैयार करें। Merck ड्रग कंपनी ने कबुल किया कि टीकाकरण के माध्यम से लोगों के शरीर में SV40 तथा अन्य प्रकार के वायरसों को प्रवेशित कराने का काम दुनियां भर में किया जा रहा है। विश्व स्तर के प्रसिध्द टीका विशेषज्ञ Dr. Maurice Hilleman ने स्पष्ट किया कि क्यों मर्क कंपनी के टीके दुनियां भर में एडस्, लुकेमिया, तथा अन्य संक्रामक बीमारियों को फैलाने का काम कर रहे है।

एडस् का विषाणु सबसे पहले सन् 1978 में न्युयार्क शहर में पाया गया। सबसे पहला एडस् का रुग्ण अधिकारिक तौर पर सॅन फ्रॅसिस्को में सन् 1981 में पाया गया। एडस् हरे बंदरों से अफ्रिका में नही फैला क्योंकि एडस् उन पिग्मीयों में नही पाया गया जो न सिर्फ इन बंदरों के पास रहते थे बल्कि ये बंदर उनका आहार भी थे। सांख्यिकी के नियमों के मुताबिक एडस् का किसी एक स्त्रोत से सारी दुनियां में फैलना मुमकिन ही नही है। अमेरिका में जो एच.आई.वी पाया गया वह अफ्रिका में पाये गये एच.आई.वी की किस्म से अलग है। यानि अमेरिका का एडस् अफ्रिका में पैदा नही हुआ। Strecker की खोज से यह स्पष्ट हुआ कि एडस का वायरस जिसका सांकेतिक नाम 'MKNAOMI' रखा गया था को Frederick Cancer Research Facility of the National Cancer Institute ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से उनकी Fort Detrick, Maryland की प्रयोगशालाओं में bovine (cow) leukemia virus के साथ visna (sheep) virus मिलाकर इन्सानी पेशीयों में विकसित किया था। बोवाईन लुकेमिया वायरस गायों के लिये खतरनाक है लेकिन इन्सानों के लिये नही, विसना वायरस भेडों के लिये घातक है लेकिन इन्सानों के लिये नही। जब इन दोनों को मिला दिया जाता है तो वे ऐसा retro-virus पैदा करते है जो पेशी की अनुवांशीक रचना को बदल देता है।

अफ्रिका में एच.आई.वी. वायरस का प्रसार विश्व स्वास्थ्य संगठन के सन् 1972 के Smallpox टीकाकरण अभियान से कराया गया। 11 मई 1987 को सायन्स एडिटर Pearce Wright ने लंदन टाईम्स में अपने लेख में लिखा कि माता के टीकों व्दारा एडस् वायरस प्रसारित हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने 13 साला टीकाकरण अभियान को तिसरे विश्व के अविकसित तथा विकसनशील देशों में सन् 1981 में लागू किया। इन टीकों में एडस् के विषाणू यानि वायरस मिलाये गए थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी कथित जांच के बाद माना कि उनके टीके एडस् विषाणुओं से संक्रमित थे। उन्होने अपनी जांच रिपोर्ट को दबा दिया। इससे कितना जनसंहार जारी रहा इसका ब्यौरा इंटरनेट पर गुगल पर "W.H.O. Murdered Africa", by William Campbell Douglas, M.D. सर्च कर प्राप्त किया जा सकता है।

Dr. Archie Kalokerinos MBBS, PhD FAPM के मुताबिक दवा क्षेत्र में मेरे 40 साल से ज्यादा के व्यवसायिक अनुभव से मैने यही निष्कर्ष निकाला है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन, 'Save the Children Fund' तथा ऐसी ही टीकाकरण प्रायोजित करने वाली संगठनों की गैरअधिकारिक नीति हत्या और जनसंहार करना रही है। सन् 1948 में विश्व स्वास्थ्य संगठन कायम किया गया था। इस संगठन की सदस्यता तथा नीतियां WFMH and UNESCO के समान थी। इन्हे ब्रिटीश वंशवादी ज्युलियन हक्सले ने सन् 1946 में तृतीय विश्व की आबादी को अकाल और संक्रामक बीमारियों से नष्ट करने के मकसद से कायम किया था। अफ्रिका को लगभग तबाह कर दिया गया है। आगामी दस वर्षो में 75% अफ्रिका मर चुका होगा। अबतक अफ्रिका में तीन करोड से ज्यादा लोग एडस् विषाणु से मारे जा चुके है। एडस से भी ज्यादा खतरनाक वायरस को फैलाया जाना तय है। Mad Cow disease, Ebola viruses, AIDS-HIV, Staph infection, hoof and mouth disease, anthrax, swine flu, bird flu इ. के पीछे यही षडयंत्र है। Bosnia, Iraq, Afghanistan, Yugoslavia, Africa, and Latin America इ. देशों में चलाये जा रहे जनसंहारों के पीछे यही षडयंत्र है। कुछ प्रांतों के आकाश पर दिखाई देने वाले रासायनिक तत्वों के बादल भी इसी षडयंत्र का हिस्सा है। Persian Gulf illness का निर्माण लंबे समय तक चलाये

गए रासायनिक और जैविक अस्त्रों, त्वचा पर असर पैदा करने वाले रसायनों, युरेनियम संक्रमण तथा अन्य विषाणुओं की बदौलत है जो एडस् से भी ज्यादा खतरनाक और अत्यंत संक्रामक है।

मूलनिवासी अपनी अफ्रिकावंशी

नाग-द्रविड जडों की पहचान करें !

मान. वि.टी. राजशेकर लिखते है कि भारत के बहुतांश दलित यहांतक कि उनके शिक्षित दलित भी इस बात से बेखबर है कि वे मूलतः अफ्रिका वंशीय है। वे इसे जान-समझ लेते है तो उन्हे अमेरिका में बसे अफ्रिका वंशीयों के संघर्षो तथा उन्हे हासिल हुई कामयाबियों का भी पता चलेगा। हम फक्र महसूस करेंगे। दलितों के हताश दिलों में फक्र का एहसास पैदा होना बेहद जरुरी है। अफ्रिकन-अमेरिकन लोगों ने भी इस बात को भलीभाँति जान-समझ लेना चाहिये कि उनके आजादी के संघर्ष को तब तक कामयाबी नही मिल सकती जबतक वे एशिया तथा दुनियां के तमाम अफ्रिका वंशी दलितों के साथ एकता कायम नही कर लेते जो उन्ही की तरह वांशीक उत्पीडन के शिकार है। इनके बीच की एकता दोनों के संघर्षो को जबर्दस्त ताकत देगी। इस दीशा में काम करने वालों में मान. रुनोको राशीदी एक प्रमुख नाम है। वे अफ्रिकन-अमेरिकन इतिहासकार तथा इंटरनॅशनल दलित सपोर्ट ग्रुप के संस्थापक है। डॉ. रुनोको राशीदी को डॉ. अम्बेडकर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। (Rashidi (213) 293-5807)

आर्य-ब्राह्मण
अलबिनो-निन्डरथॉल के वंशज है !

गोरी त्वचा निन्डरथॉल प्रजाति की देन है। युरोपियन गोरे तथा पूर्व एशिया के लोग निन्डरथॉल के वंशज है जबकि आधुनिक मानव अफ्रिका में विकसित होमो सेपियन के वंशज है। क्रो-मॅगनन (Cro-Magnons) प्रजाति होमो सेपियन (Homo Sapiens) तथा निन्डरथॉल प्रजाति के संकरण से युरोप में उत्पन्न हुई प्रजाति है। क्रो-मॅगनन प्रजाति को निन्डरथॉल प्रजाति से गोरी त्वचा प्राप्त हुई। आधुनिक गोरे लोग निन्डरथॉल व होमो सेपियन से संकरित प्रजाति है।

त्वचा जितनी ज्यादा गोरी होगी अनुवांशीक रुप से वे निन्डरथॉल प्रजाति के उतने ही निकट होंगे। अफ्रिका के काले लोगों में निन्डरथॉल डी.एन.ए. बिल्कुल नही पाया जाता। भारत तथा आस्ट्रेलिया के काले मूलनिवासियों में भी निन्डरथॉल डी.एन.ए. नही है। (http://leejohnbarnes.blogspot.in//21st Century British Nationalism The New Race Theory.htm)

जर्मनी के Düsseldorf के निकट की निन्डर घाटी में सन् 1856 में प्राप्त हुए कंकालों से स्पष्ट हई मानव जैसी प्रजाति को निन्डरथॉल नाम दिया गया। निन्डरथॉल मानवों से मिलती जुलती अलग प्रजाति है। यह बात इटली, ब्रिटेन, बर्कले, अमेरिका इ. में हुए डि.एन.ए. परिक्षणों से साबित हो चुकी है। Mitochondrial DNA परिक्षण तथा Nuclear DNA परिक्षणों से भी यही परिणाम प्राप्त हुए है।

निन्डरथॉल का विस्तार उत्तरी अटलांटिक सागर से शुरु होकर मेडिटेरिनियन सागर, काला सागर, कॅस्पियन सागर, अराल सागर से रुस के सायबेरिया इ. क्षेत्रों तक है। वह रेड सागर के उपरी हिस्से तक फैला है।

निन्डरथॉल गुफाओं में रहने वाली युरेशिया की आरंभिक (primitive) प्रजाति है। निन्डरथॉल्स मुख्य रुप से गुफाओं में रहते थे। (http://www.nationalgeographic.com//Neanderthals ... They're Just Like Us.htm; http://hubpages.com/HUMAN ANCESTORS - NEANDERTHALS & CRO-MAGNONS - Roots of humanity.htm) सन् 1938 में A. Okladnikov को 70,000 वर्ष पुराने 8-11 साल के निन्डरथॉल बच्चे की खोपडी उजबेकिस्तान के Teshik-Tash में प्राप्त हुई।(http://en.wikipedia.org/History of Uzbekistan - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) उत्तरी रशिया से प्राप्त अवशेषों से सूचित होता है कि आर्क्टिक सर्कल में निन्डरथॉल 31,000 to 34,000 साल पहले तक जीवित थे। पुरातत्व वैज्ञानिकों को Mousterian Middle Palaeolithic कालखंड के 300 पत्थर के औजार मिले जो निन्डरथॉल प्रजाति से संबंधित है।(http://www.bluesci.org// The last Neanderthals may have lived near the Arctic Circle.htm) निन्डरथॉल मुख्य रुप से ब्रिटेन, इबेरिया, इजरायल, तथा सायबेरिया के क्षेत्रों में बसे हुए थे। निन्डरथॉल की अंतिम उपस्थिति लगभग 28-24 हजार वर्ष पहले जिब्राल्टर में पाई गई।(http://www.bbc.co.uk/BBC NEWS _ Science_Nature _ Neanderthals 'were flame-haired'.htm)

निन्डरथॉल प्रजाति के सामान्य गुणधर्म !

सन् 1856 में जर्मनी की गुफाओं से प्राप्त हड्डियों से निर्मित संरचना से पता चलता है कि निन्डरथॉल प्रजाति के शरीर पर काफी में बाल होते थे। मुडे हुए घुटनों की वजह से वे तेज नही दौड सकते थे।(http://www.nationalgeographic.com//Neanderthals ... They're Just Like Us.htm)

निन्डरथॉल छोटे कद के, उभरी छाती के, गोरे रंग के थे। उनके जबडे चौडे थे। माथे पर उतार (sloping foreheads) था। टोढी तथा माथा छोटा था। भँवे बडी थी। उनकी शरीर रचना थंडे प्रदेश में रहने के अनुकुल थी। निन्डरथॉल प्रजाति के गले का स्वर यंत्र औरतों के स्वरयंत्र से मिलता जुलता था। अपनी चौडी छाती, चौडा मुंह तथा बडे नाक के छेद की बदौलत उनकी आवाज शायद तेज और तीखी थी। निन्डरथॉल्स सहजता से स्वरों का उच्चारण नही कर सकते थे। निन्डरथॉल के कान के भीतर की अर्धगोल टयुब जैसी रचना आधुनिक मानवों से छोटे आकार की थी। इससे स्पष्ट है कि वे फुर्तिले नही थे क्योंकि जैसे जैसे व्यक्ति की फुर्ति में इजाफा होता है वैसे वैसे उनके कान की भीतरी semi-circular canals का आकार बडा होते जाता है। कान का यह हिस्सा शारीरिक संतुलन की स्थिति से अवगत कराता है और शारीरिक संतुलन में मदद करता है। प्रो. हॉलिडे (Holliday) के मुताबिक फुर्ति की कमी होने की वजह बाकी शरीर (कुल्हे, चौडी छाती) की तुलना में उनके हाथ-पैरों का छोटा होना है।(http://hubpages.com/HUMAN ANCESTORS - NEANDERTHALS & CRO-MAGNONS - Roots of humanity.htm ; http://www.bbc.co.uk/BBC - Science & Nature - Horizon.htm)

निन्डरथॉल की त्वचा गोरी तथा बाल लाल रंग के थे।(http://www.stormfront.org/Neanderthals were the first white people! - Stormfront.htm) स्पेन की बार्सिलोना युनिवर्सिटी के अनुवंश वैज्ञानिक Carles Lalueza-Fox के मुताबिक डी.एन.ए. अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि निन्डरथॉल प्रजाति में जो variant of MC1R जीन है जिसकी बदौलत बालों का रंग लाल होता है। वह जीन अन्य किसी मानव प्रजाति में नही मिलता।(http://www.bbc.co.uk/BBC NEWS _ Science_Nature _ Neanderthals 'were flame-haired'.htm)

निन्डरथॉल प्रजाति में तथा गोरों में The Melanocortin 1 receptor allele, on Chromosome 16, गोरी त्वचा और लाल बाल पैदा करता है। (http://www.sciencemag.org/cgi/content/abstract/1147417; http://www.delphiforums.com//Nordic History.htm) ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों का मानना है कि जिंजर नामक जीन जिसकी वजह से धब्बेयुक्त गोरी त्वचा, लाल बाल प्राप्त होते है यह जीन निन्डरथॉल प्रजाति में उत्पन्न हुआ है जो युरोप में लगभग 3 लाख वर्ष से रहते रहे है।(http://www.nhm.ac.uk/Neanderthals (Homo neanderthalensis) _ Natural History Museum.htm)

लाल रंग के बाल कुपोषण का लक्षण है। सुनहरे बाल अल्बिनिजम के लक्षण है। निन्डरथॉल की आँखे निली, हरी तथा भूरे रंग की थी। (Homo neanderthalensis) _ Natural History Museum.htm) इससे यह प्रतित होता है कि निन्डरथॉन प्रजाति अलबिनिजम से ग्रस्त प्रजाति है।

निन्डरथॉल होमो सेपियन्स से कम बुध्दिमान होते है। उन्हे लगभग 70 शब्दों की जानकारी थी। यानि उनकी बौध्दिक क्षमता आज के 2 साल के बच्चे की बौध्दिक क्षमता जैसी थी। उन्होने कला और साहित्य का विकास नही किया। हजारों सालों के बाद निन्डरथॉल प्रजाति के औजारों में कुछ सुधार हुआ। सोचने की क्षमता की कमी से उनके औजारों में विविधता नही थी। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि निन्डरथॉल प्रजाति नई

चिजों से घबराती (neophobic) थी, अपने मतों में परिवर्तन नही करती (dogmatic) थी, तथा नये लोगों के प्रति बेहद भय (xenophobic) रखती थी।(http://en.wikipedia.org/ Neanderthal behavior - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) वे फ्लिंट पत्थर से बने औजारों से शिकार करते थे। वे मुख्यतः माँसाहारी थे। उनके भोजन में विविधता नही थी। वे चमडे से कपडे, गहने बनाने इ. में सक्षम थे। वे आग पैदा करने में भी सक्षम थे। (http://www.nhm.ac.uk/Neanderthals (Homo neanderthalensis) _ Natural History Museum.htm) कई निन्डरथॉल गुफाओं में रहना पसंत करते थे तो कुछ जानवरों की हड्डियों से अपने घर बनाते थे। निन्डरथॉल प्रजाति के धनुष्य बाण थे या नही इसका कोई सबूत नही मिला है। धनुष्य बाण इ. का इस्तेमाल होमो सेपियन करते थे। निन्डरथॉल के भाले थे लंबी लकडी के सिरे पर बांधे गए नोकिले पत्थर इ. से बने थे। निन्डरथॉल व्दारा कारगर हथियार न बना पाने का कारण उनके cerebrum का कम विकसित होना था। cerebrum हमारी तर्क क्षमता का केन्द्र है। निन्डरथॉल प्रजाति की खोपडी का बडा आकार बडे आकार के cerebellum की वजह से था। बडा cerebellum स्नायु नियंत्रण में कारगर साबित होता है। निन्डरथॉल की एक बांसुरी मिलने से वैज्ञानिकों को हैरानी हुई है। यानि निडरथॉल्स संगीत में रुची रखते थे। पुरातत्वीय क्षेत्रों के विस्तार से पता चलता है कि निन्डरथॉल 5-10 लोगों की छोटी टोलियों में रहते थे। उनकी उम्र शायद ही 35 वर्ष से ज्यादा की थी। वे अपने मृत लोगों को दफनाते थे और मृत व्यक्ति के पास फुल इ. छोड देते थे।(http://national-socialist-worldview.blogspot.in//National-Socialist Worldview The White Race has Neanderthal Heritage.http; http://national-socialist-worldview.blogspot.in//National-Socialist Worldview The White Race has Neanderthal Heritage.htm; http://en.wikipedia.org/Neanderthal behavior - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) निन्डरथॉल प्राप्त कुछ हड्डियों से पता चला कि जख्म से वे काफी देर बाद ठिक हुई। यानि जख्मी की देखभाल की गई थी।

निन्डरथॉल की बौध्दिक असामान्यताएं !

कुछ खास बौध्दिक प्रक्रियाओं से संबंधित विकृतियां जैसे कि autism, आँखों तथा हाथों में समन्वन का अभाव (dyspraxia), भावनात्मक विकृति इ. निन्डरथॉल गुणधर्म है। बीबीसी के लेख के मुताबिक युरोपियन लोगों में autism अधिक तादाद में पाया जाता है। युरोपियन लोगों में अन्य वंशीय लोगों के मुकाबले ज्यादा तादाद में निन्डरथॉल जीन्स है। डॉ. डेविड ब्राउन ने वांशिंगटन पोस्ट में लिखा है कि कुछ अनुवांशिक बीमारियां जो निन्डरथॉल जिन्स (genes) की वजह से निर्माण होती है उनमें मधुमेह (THADA) डॉन सिंड्रोम (Down syndrome, DYRK1A), मनोविकृति (schizophrenia, NRG3), तथा autism (CADPS2) मुख्य है। खोपडी तथा कॉलरबोन के टेढेमेढे होने की विकृति जिसे RUNX2 के नाम से जाना जाता है निन्डरथॉल जीन की वजह से है। (Washington Post, 7 May 2010; http://national-socialist-worldview.blogspot.in//National-Socialist Worldview The White Race has Neanderthal Heritage.htm)

निन्डरथॉल्स आदमखोर थे !

आस्ट्रेलिया के शोधों से यह पता चलता है कि निन्डरथॉल बेहद गुस्सैल, आक्रमक वृत्ति के तथा जबर्दस्त माँसाहारी थे। वे रोज प्रति व्यक्ति लगभग 2 किलो मांस खाते थे जिसमें इन्सानी माँस भी शामिल था।(http://www.subvertednation.net//Jews Are

NOT Exactly Human…WHAT ! ! _ Subverted Nation.htm) फ्रांस क्षेत्र में निन्डरथॉल्स एक-दूसरे को मारकर खाते थे क्योंकि किसी भी हड्डी पर हिंस्त्र जानवरों के दांतों के निशान नही थे। ये इन्सानी हड्डियाँ किसी मृत्यु के बाद की प्रथा के मुताबिक तोडी नही गई थी क्योंकि हड्डियां हिरण की हड्डियों के बीच मिली थी। बच्चों के गालों का माँस नोंचकर निकाला गया था। हड्डियों से स्नायुओं को काट कर निकाला गया था। खोपडियों को तोड कर भेजा निकाला गया था। जांघ की हड्डी तोडकर अंदर का गुदा (marrow) निकाला गया था। सिर्फ हाथ और पैरों की उंगलियों की हड्डियाँ सलामत थी क्योंकि उनके अंदर गुदा नही होता। जीभ काट ली गई थी। डॉ. टीम व्हाईट के मुताबिक निन्डरथॉल आदमखोर थे। निन्डरथॉल कुशल खटीक थे। हड्डियों पर जलने के निशान नही थे। माँस को कच्चा ही या फिर अलग पकाकर या भूनकर खाया गया था। उपर दिया चित्र निन्डरथॉल का है।

कुछ निन्डरथॉल्स मरे लोगों को भृणावस्था की स्थिति में गाडते थे जबकि कुछ उन्हे खा जाते थे।(http://www.bbc.co.uk/BBC News _ Sci_Tech _ Neanderthals were cannibals.htm)

निन्डरथॉल प्रजाति विलुप्त होने के सिधान्त !

लगभग 40 हजार वर्ष पहले निन्डरथॉल आबादी विलुप्त होने लगी और उनकी जगह आधुनिक मानवों यानि होमोसेपिएन्स ने ले ली।(http://scienceblogs.com/gregladen// Neanderthals at the end of their days – Greg Laden's Blog.htm)

कई पुरातत्व वैज्ञानिकों का मानना है कि निन्डरथॉल 24 हजार साल पहले तक जीवित थे। Briggs' team के मुताबिक निन्डरथॉल आबादी हमेशा से अपेक्षाकृत बहुत कम थी। (http://www.dhamurian.org.au/Red hair a legacy of Neanderthal man. htm; http://www.newscientist.com/Why Neanderthals were always an endangered species - life - 17 July 2009 - New Scientist.htm)

कईयों का मानना है कि शीत युग की वजह से निन्डरथॉल प्रजाति विलुप्त हुई। लेकिन यह बात सच नही लगती क्योंकि निन्डरथॉल इसके पहले से आर्टिक्ट क्षेत्र के बर्फ में रह चुके है। उन्होने आग पैदा करना भी जान लिया था। निन्डरथॉल के कम लंबे हाथ-पैर, बाकी शरीर का बडा आकार शरीर की गर्मी को टिकाये रखने में मददगार था।(http:// corporate.britannica.com/Neanderthal(anthropology) Neanderthal behaviour -- Britannica Online Encyclopedia.htm)

कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि निन्डरथॉल अन्न की कमी से विलुप्त हुए। यह बात भी सत्य नही है क्योंकि निन्डरथॉल उपलब्ध शाकाहार भी करते थे। उनके शिकार प्राणि विस्थापित भी हुए तो वे अन्य जीवों तथा वनस्पतियों पर जीवित रह सकते थे। कुछ का मानना है कि होमोसेपिएन्स ने निन्डरथॉल को उनके क्षेत्रों से भगा दिया इसलिये उन्हे अन्न की कमी हुई। धरती इतनी विशाल है कि अन्न की कमी होना अविश्वसनीय बात लगती है।

यह बात भी सच प्रतित नही होती कि होमोसेपिएन्स ने उनको मार डाला। ऐसा होता तो जख्मी निन्डरथॉल हड्डियों के साथ होमो सेपिएन्स की हड्डियाँ भी पुरातत्व वैज्ञानिकों को मिली होती। हमले में कुछ निन्डरथॉल अपनी जान बचाने में अवश्य कामयाब हो

जाते और होमो सेपिएन्स से दूर चले जाते। होमो सेपिएन्स शायद आदमखोर नही थे।(http://www.theadvancedapes.com//Web Pages/Why Did Neanderthals Go Extinct.htm; http://www.allthingshuman.net//What Happened to the Neanderthals - AllThingsHuman.net.htm; http://www.allthingshuman.net//What Happened to the Neanderthals - AllThingsHuman.net.htm)

जिन्स की विविधता खत्म होने से वह प्रजाति परिवेश के बदलाओं का मुकाबला नही कर सकती और धीरे धीरे लुप्त होने लगती है। निन्डरथॉल बाहरी लोगों से दूर भागते थे और अपने छोटे से समुह में ही उनके शारीरिक संबंध होते थे इसलिये उनके जीन्स की विविधता खत्म होकर उनमें प्रजनन कम होते गया और वे लुप्त हुए। पारसी समुदाय भी वांशिक शुध्दता के नाम पर समुदाय में ही शारीरिक संबंध सीमित होने से उनकी जनसंख्या सतत कम हो रही है। पारसी समुदाय में मृत्यु दर की तुलना में जन्म दर 15 फीसदी है। प्रजनन इतना कम हो गया है कि भारत की {ब्राह्मणवादी} सरकार के योजना आयोग ने {पहले से ही रईस} पारसी समुदाय की जनसंख्या बढाने के लिये 2 करोड रुपयों की राशी मुकर्रर की है।(http://www.theaustralian.com.au//Purity makes Parsis an endangered species _ The Australian.htm; http://www.bbc.co.uk/ BBC News _ Sci_Tech _ Neanderthals were cannibals.htm; http://www.vmsherp.com/The Learning Center - Inbreeding Discussion.htm)

सामान्य मत है कि निन्डरथॉल प्रजाति ने होमोसेपिएन्स, क्रो-मॅगनन इ. प्रजातियों के साथ शारिरिक संबंध कायम किये जिससे उनके संकरित वंशजों में निन्डरथाल शारीरिक गुणधर्म लुप्त हुए। पुरातत्ववेत्ताओं को विभिन्न जगहों में मानवी अवशेष मिले है जिनमें निन्डरथॉल और होमोसेपिएन्स, डेनिसोवन्स, क्रो-मॅगनन इ. प्रजातियों के मिश्रीत शारीरिक गुणधर्म है। निन्डरथॉल अपने अनुवांशिक गुणधर्मो के रुप में गोरों के शरीर में कायम है। आधुनिक मानवों का संकरण एशिया में प्रवेश करने के बाद डेनिसोवन (Denisovans) प्रजाति से भी हुआ। पुरातत्ववेत्ताओं को फ्रांस की गुफाओं में 35 हजार साल पुराने औजार मिले है। यहां कम से कम 10 हजार सालों तक निन्डरथॉल क्रो-मॅगनन इ. के साथ रहते थे। उनके बीच शारीरिक संबंध भी कायम हुए। गोरे लोग निन्डरथॉल से संकरित प्रजाति है। इसलिये गोरों के बाल लाल-सुनहरे, आँखे निली, हरी और भूरी भी है। कुछ की त्वचा पर ब्राउन धब्बे (freckles) है। (http://www.allthingshuman.net//What Happened to the Neanderthals - AllThingsHuman.net.htm; http://www.sodahead.com/Are We Descended From Neanderthals Or Derive Genetic Variation From Them.htm; http://www.allthingshuman.net//What Happened to the Neanderthals - AllThingsHuman.net.htm; http://www.allthingshuman.net//What Happened to the Neanderthals - AllThingsHuman.net.htm; http://io9.com/New DNA evidence could explain what happened to the Neanderthals.htm) गोरे इसे छुपाने की पूरजोर कोशिश करते है कि वे अलबिनो / निन्डरथॉल से संकरित प्रजाति है। (http://www.topix.com//Whites hide The Fact That They are Albino_Neanderthal Hybrid - Topix.htm)

खाजार-यहूदियों में, ज्यादा निन्डरथॉल गुणधर्म है !

मायकल ब्राडले के मुताबिक भाषाविज्ञान तथा पुरातत्व विज्ञान तथा जॉन हॉपकिन अध्ययन ने साबित किया है कि खाजार अशकेनाझी यहूदियों का मूल देश रशियन घास के प्रदेश (steppe) है। आठवी शताब्दी के आरंभीक काल में इस्लाम और ईसाई साम्राज्यों के बीच बफर क्षेत्र की हैसियत पाने हेतु वे यहूदी बन गए। जब 13 वी शताब्दी में खाजार साम्राज्य का पतन हुआ तो खाजार यहूदी पूर्वी युरोप चले गए। (http://current.com/Johns Hopkins Study Confirms European Jews are Khazars _ Current TV.htm; http://www.algemeiner.com//Haaretz Resurrects the Khazar Jews Theory _ Jewish & Israel News Algemeiner.com.htm) फिलीस्तीन में कोई गोरा यहूदी नही था। मौजूदा गोरे अश्केनाजी तुर्क यहूदियों की मातृभूमि खाजारीया (652-1016) का राज्य था जो कॅस्पियन तथा काले सागर के बीच स्थित है। अब यह क्षेत्र रुस का हिस्सा है। पूराने ग्रीक समय में यह तनाई तथा बाद में सीथिया (Scythia) कहलाता था।

खाजारिया के दोनों तरफ समूद्र तथा दक्षिण में काकासस (Caucasus) पर्वत होने से अन्यों से वे संकरित नही हुए। उनके राज्य की दो राजधानियां सार्केल व अटील थी। सार्केल टानीस (Tanaïs) यानि डॉन नदी के किनारे थी। डॉन शब्द डानू शब्द से निकला है। इसका अर्थ सीथियन (Scythian) भाषा में नदी है। उनकी दक्षिण में मुस्लिम थे जबकि पूर्वी सीमा पर ईसाई थे। खाजारिया अपने इर्दगीर्द के क्षेत्रों में अपने सैनिक किराये पर देने के लिये मशहूर था। सन् 837-838 में यहूदी बनने के बाद उन्होने यहूदी नाम अपनाये, जर्मन यीड्डीश को हिब्रू अक्षरों में लिखना शुरु किया, खतना करना शुरु किया, अपने प्रार्थनास्थल तथा रॅबी पूजारी निर्माण किये। तोराह, तलमूद का अध्ययन शुरु किया तथा हानुक्काह (Hanukkah), पेसाच (Pesach) तथा साबाथ (Sabbath) इ. उत्सव मनाने शुरु किये। कुछ ही पीढीयों में उन्होने यह झूठ सत्य के तौर पर स्थापित किया कि वे बायबल में वर्णित यहूदियों के वंशज है जो पहले फीलीस्तीन में रहते थे। यहूदी इतिहासकार आर्थर कोईस्टलर (Arthur Koestler) ने सन् 1976 में 'The Thirteenth Tribe: The Khazar Empire and its Heritage' नामक किताब लिखी। उन्होने पर्दाफाश किया कि अश्केनाजी यहूदी मध्य युग में यहूदी बने है। कुल यहूदियों का वे 92% हिस्सा है। जब खाजारिया का सन् 1200 में मंगोल साम्राज्य ने विध्वंस किया तो अश्केनाजी यहूदी पोलंड, युक्रेन, लिथुआनिया, बोहेमिया, जर्मनी तथा अमस्टेर्डम में भी विस्थापित हुए।

30 जूलाई 1492 को स्पॅनिश इनक्विजिशन (Inquisition) के दौरान लगभग दो लाख अश्केनाजी यहूदियों को स्पेन तथा पुर्तगाल से निष्काषित किया गया। स्पॅनिश यहूदी उत्तरी अफ्रिका, इटली, ग्रीस तथा टर्की में विस्थापित हुए। बडी तादाद में सेफार्डीक (Sephardic) समूदाय वेनिस, लेघोर्न, लंदन, अँटवर्प, अमस्टेर्डम, बोर्डेअक्स (Bordeaux), बायोन्ने, सालोनिका तथा हॅमबर्ग में बस गए। सेफार्डीक यहूदी अन्य यहूदियों में श्रेष्ठ (elites) और धनी थे। लेकिन आज अश्केनाजी यहूदियों ने अपने हाथों में सारी ताकत केन्द्रित कर ली है। यहूदी का अर्थ जैसे अश्केनाजी यहूदी हो गया है। मायकल ब्राडले के मुताबिक दुनियां के मात्र 4.5% यहूदी ही फीलीस्तीन से संबंधित है। यह यहूदी सेफार्डीक यहूदी है। बाकी 95.5% खाजार यहूदी है जो रुस के घास के मैदानों से संबंधित है और

बायबल इ. ग्रंथ लिखे जाने के 1300 साल बाद यहूदी बने है। उन्हे अश्केनाजी यहूदी कहा जाता है। उनका बायबल तथा अब्राहम से कोई संबंध नही है। आज भी उनकी पहली भाषा रुसी भाषा है। तब संयुक्त राष्ट्रसंघ के इजरायल बनाने के निर्णय (1947-1948) का औचित्य क्या है ? सोवियत संघ में पहले से ही उनका पारंपारिक होमलँड था जो ''Jewish Autonomous Region'' से जाना जाता था। दुनियां को अश्केनाजी यहूदियों के मूल जन्म स्थान तथा रुस में उनके होमलँड के बारे में कभी नही बताया गया।

अश्केनाजी यहूदियों की जन्मभूमि वे क्षेत्र है जो निन्डरथॉल के क्षेत्र रहे है। मायकल ब्राउले के मुताबिक जब उन्होने ''The Iceman Inheritance'' किताब लिखी तब वे अनजाने में मानववंश शास्त्र की खोजबीन के क्षेत्र में उतरते चले गए जिसने अश्केनाजी यहूदियों की मूल यहूदी पहचान पर तथा होम लँड के तौर पर इजरायल बनाये जाने पर ही सवाल खडा कर दिया। इसलिये कई अतिवादी कथित यहूदियों ने उनकी हत्या की कोशिशें की। कुछ ऐसे यहूदी भी है जो न सिर्फ अश्केनाजी यहूदियों की सच्चाई को जानते है बल्कि दुनियां के सामने उसे उजागर करने की कोशिशें भी कर रहे है। इनमें इजरायल की तेल अवीब युनिवर्सिटी के डॉ. ए. एन. पोलियाक (Dr. A.N. Poliak) ने Khazaria: The History of a Jewish Kingdom in Europe in 1950 (in Hebrew) नामक किताब लिखी। यहूदी लेखक Arthur Koestler ने अपनी The Thirteenth Tribe (1976) नामक किताब में इसी सच्चाई को बेनकाब किया।(http://www.michaelbradley.info/iceman_promo.htm)

डी.एन.ए. परिक्षणों से साबित हुआ है कि गैरअफ्रिकी सेमिटिक आबादी में 70 फीसदी तक निन्डरथॉल डी.एन.ए. है। अशकेनाजी यहूदियों में यह मात्रा ज्यादा है क्योंकि वे बाहरी लोगों से विवाह संबंध के सख्त खिलाफ है। (http://downwithjugears.blogspot.in/Thoughtcrime The Neanderthal Hypothesis.htm)

खाजार यहूदियों में निन्डरथॉल शारीरिक गुणधर्म !

बालों का लाल रंग खाजार यहूदियों में आम है। युरोप में 20 वी शताब्दी के पहले लाल बाल यहूदियों की विशेष पहचान मानी जाती थी। शेक्सपीयर से लेकर डिकन्स तक सभी लेखक अपने यहूदी पात्रों को लाल बालों वाला बताते थे। बायबल के ईसाउ और डेविड दोनों के बाल लाल थे। (http://en.wikipedia.org/Red hair - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) आर्य अपने लाल, सुनहरे बालों से पहचाने जाते थे। डेविड और इसाउ के बाल लाल थे। उसके जुडवा भाई जॅकोब के बाल भी लाल थे। उन्हे शायद उनके पिता इसाक तथा दादा अब्राहम से लाल बाल मिले थे। हिब्रु भाषा में ॲडम (adom) शब्द का अर्थ 'लाल' होता है। ॲडम 'लाल धरती' {लाल बालों वालों के देश} से था। ॲडम की पहली बिवी लिलिथ के बाल भी लाल थे। Michelangelo के टेम्पटेशन में तथा सेंट पॉल के प्रमुख चर्च में ईव को ब्राउन तथा सुनहरी बालों वाली बताया गया है।(http://matter-of-spirit.com/ARYAN.htm) एशिया में लाल रंग के बाल चीन के उत्तर-पश्चिम में स्थित टॅरिम बेसिन में प्राचीन टोचॅरियन्स (Tocharians) के हुवा करते थे। कॉकॅशियन टॅरिम ममियों में लाल रंग के बाल पाये गए। उत्तरी तथा पश्चीमी युरोप में लाल रंग के बाल आम तौर पर पाये जाते है। युनाईटेड किंगडम तथा आर्यलँड के लोगों में लाल बाल खास तौर से पाये जाते है। विक्टोरिया काल के मानव संस्कृति का अध्ययन करने वालों (ethnographers) के मुताबिक वोल्गा के उडमर्ट (Udmurt) लोग दुनियां भर में सबसे ज्यादा लाल बालों के थे। जर्मन तथा सेल्टीक लोगों में भी लाल बाल आम है। युरोप में लाल बालों वाले लोगों की तादाद 4 फीसदी है। स्कॉटलँड में 13 फीसदी लोगों के बाल लाल है लेकिन 40-46 फीसदी लोगों में लाल बालों को निर्धारित करने वाला जीन मौजूद है। आरंभ में सभी गोरों के बाल लाल और आँखें निली थी। आज लाल बाल और आँखों का नीला रंग संकरण की वजह से लुप्त हो रहा है।(http://www.nhm.ac.uk/Neanderthals (Homo neanderthalensis) _ Natural History Museum.htm; The Original Black Cultures of Eastern Europe and Asia http://realhistoryww.com/index.htm)

मायकल ब्राडले ने सन् 1978 में The Iceman Inheritance प्रकाशित की। इसके बाद इसी कडी में Chosen People From the Caucusus नामक किताब प्रकाशित की। इस किताब में ब्राडले ने पर्दाफाश किया कि आधुनिक यहूदी वास्तव में बायबल में वर्णीत इजरायल के वंशज न होकर खाजार साम्राज्य के लोग है जो निन्डरथॉल के वंशज है। खास यहूदी गुणधर्म वास्तव में निन्डरथॉल गुणधर्म है। Koestler के मुताबिक खाजार ज्यू गोरी त्वचा के, निली आँखों वाले, लाल बालों वाले, नाटा गोलाकार कद, बडे कुल्हे तथा छाती, बालदार शरीर, तोते जैसी धुमावदार नाक, चौडा मुँह तथा सीर के पीछे गर्दन के ठिक उपर उभरी हुई गांठ जैसी हड्डी, न के बराबर टोढी (chin), कंधों की घुमावदार हड्डी, चपटी चौडी उंगलियां खासकर अंगुठा, इ. निन्डरथॉल शारीरिक गुणधर्म है। यहूदियों की लोकप्रीय आख्यायिकायें (legends) जानबुझकर खाजार साम्राज्य का उल्लेख नही करती बल्कि उसे लाल यहूदियों का साम्राज्य संबोधित करती है। (The

Revenge of Neanderthals (3845728) - Read article.htm; http://www.nytimes.com// Neanderthal Bones Make a Case for Redheads - New York Times.htm; http://answers.yahoo.com/Why is red hair associated with jewish ancestry in eastern europe - Yahoo! Answers.htm; http://www.michaelbradley.info/iceman_promo.htm)

अशकेनाजी खाजार यहूदियों में कई खतरनाक अनुवांशीक बीमारियाँ उत्पन्न होती है। वैज्ञानिक ग्रेगोरी कोचरान व हेनरी हार्पेडिंग (Gregory Cochran and Henry Harpending) **के मुताबिक यह कोई इत्तेफाक नही है कि क्यों युरोप के यहूदी एक दर्जन से ज्यादा खतरनाक आनुवांशिक बीमारियों के शिकार है। कृपया तालिकाएं देखें। स्क्रिनिंग कार्यक्रम, जन्मपूर्व परिक्षण, गर्भधारणापूर्व परिक्षण तथा अन्य परिक्षणों की मदद से इन बीमारियों की संभावना को कम किया जाता है।** (http://en.wikipedia.org/Medical genetics of Jews - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

खाजार यहुदियों के निन्डरथॉल मानसिक गुणधर्म !

यहूदियों का खुद के 'चुने गए' विशेष लोग होने के ढोंग की जड निन्डरथॉल प्रजाति के खुद में सिमटे रहने की मानसिकता है जिससे वे खुद को बाकी मानवता से अलग कर लेते है। इसी प्रवृत्ति की वजह से उनमें 'हम विरुध्द वे' (us against them) **की मानसिकता पैदा हुई है। तीव्र निन्डरथॉल आक्रमक वृत्ति की वजह से वे किसी भी समूदाय के साथ धुलमिल नही सके। जब वे जरा सा भी असहज महसूस करते है तो अपने मनोलैंगिक कुसमायोजन की वजह से उनमें भावनात्मक असंतुलन तथा भावनात्मक दौरे की हालत पैदा हो जाती है। इसलिये वे बदमिजाज, असहज, और दूसरों को अपने लिये खतरा समझने की मनोवृत्ति के होते है। उनकी आक्रमकता उन्हे औरों को सतत रुप से नियंत्रित करने को प्रवृत्त करती है। संवेगात्मक अस्थिरता उन्हे वाजीब और योग्य सामाजिक आलोचना में तथा आक्रमण में भेद करने में कठिनाई पैदा करती है। करिन फ्रेडमॅन** (Karin Friedemann) **जो झाओनिजम विरोधी यहूदी महिला है के मुताबिक अमेरिकन यहूदियों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि गैर यहुदियों के छल-कपट और बद-दिमागी से बर्ताव करना चाहिये। यहूदियों से तालमेल करते हुए गैर यहूदियों तथा इजरायल के विरोधियों को सामाजिक, भावनात्मक और व्यवसायिक रुप से तबाह-बर्बाद करना चाहिये। अधिकतर झाओनिस्ट यहूदी मनोविकृत** (schizophrenics) **होते है। वे अपनी निन्डरथॉल अनुवांशिकता को छुपाना चाहते है। खून का** RH factor **प्रकार इससे संबंधित है। अधिकतर यहूदियों में कुछ गलत है इसे खुद यहूदी भी जानते है। उनका मश्तिष्क भीड जैसी मनोवृत्ति** (hive mind) **का है इसलिये अन्य लोगों की तरह वे स्वतंत्र रुप से सोच नही सकते। वे अपनी मनोविकृति के लिये खुद जिम्मेदार है। उनका अतिवाद एक मानसिक बीमारी जैसा है। इसलिये आश्चर्य नही होना चाहिये कि** schizophrenia **नामक मनोविकृति यहूदियों में ज्यादा पाई जाती है। शायद यह उनके मश्तिष्क के भीतर छुपे निन्डरथॉल मश्तिष्क की वजह से है। इन बातों पर खुले रुप से बहस होनी चाहिये। इन्हे छुपाने का मतलब ऐसे अपराधियों को बचाना है जिनका मुख्य मकसद औरों पर नियंत्रण कायम करना है। यहूदी एन्टन लिवे** (Anton Lavey) **ने शैतानवादी चर्च को कायम किया था। यह स्पष्ट है कि क्यों यहूदी इजरायल दूनियां भर में हिंसा का केन्द्र बना है। खाजार यहूदियों से किसी भी मसले का शांति से समाधान नही हो सकता।** (http://www.michaelbradley.info/iceman_promo.htm; http://downwithjugears.blogspot.in/ Thoughtcrime The Neanderthal Hypothesis.htm; Bradley's idea, Iceman Inheritance,

1977; http://www.fourwinds10.net//The Controversial Story Of The Khazars - THE WORK OF MICHAEL BRADLEY) Four Winds 10 - Truth Winds.htm; http://www.subvertednation.net//Jews Are NOT Exactly Human…WHAT ! ! _ Subverted Nation.htm)

निन्डरथॉल अनुवांशिकता छुपाने की खाजार यहूदियों की कोशिशें !

गोरे इस सबब पर अपने निडरथॉल वंश को नकारते है कि निन्डरथॉल तथा क्रो-मॅगनन की संतानों में प्रजनन की क्षमता नही होगी। उनकी दलील बेबुनियाद है क्योंकि गधे और घोडे के संकर खच्चर (mule) **में प्रजनन क्षमता भी होती है।** (http://en.wikipedia.org/wiki/Panthera_hybrid ; http://www.sodahead.com/Are We Descended From Neanderthals Or Derive Genetic Variation From Them.htm) **मध्य-पूर्व की कई सेमिटिक आबादी में** 50 **फीसदी निन्डरथॉल डी.एन.ए. है जबकि कुछ खास आबादी में डी.एन.ए. की यह मात्रा** 70 **फीसदी तक है। ब्राडले के मुताबिक आर्मेनियन, कुछ खास यहूदियों, जार्जियन्स, अरब इ. में** 40 **फीसदी तक निन्डरथॉल डी.एन.ए. पाया जाता है। मायकल ब्राडले की वेबसाहट आगे दिये नुसार है :-** http://www.michaelbradley.info

तमाम समुहों की तुलना में अशकेनाजी यहूदियों में सबसे ज्यादा निन्डरथॉल डी.एन.ए. पाया जाता है क्योंकि यहूदियों में बाहर शारीरिक संबंध बनाने के खिलाफ कडी पाबंदियाँ है। उन्होने अपने निन्डरथॉल डी.एन.ए. को संजोकर रखा है। इस सच्चाई को यहूदी समर्थित वैज्ञानिकों ने आंकडों की तोडमरोड से छुपाने की कोशिशें की है। (http://www.democratic-republicans.us//Neanderthals and Semites.htm)

''निन्डरथॉल डी.एन.ए. नकारने वाले'' तमाम कथित अध्ययन ब्राडले की किताब 'The Iceman Inheritance' **की सच्चाई को झुठलाने के मकसद से गढे गए है। इंपिरियल कॅन्सर इंस्टिटयुट, लंदन के डॉ. टोमस लिंडाहल** (Dr. Tomas Lindahl) **ने कहा कि म्युनिख युनिवर्सिटी** (University of Munich) **के मार्क स्टोनकींग व डॉ. सावाते पाबो** (Marc Stoneking and Dr. Svaante Paabo) **के कथित शोध के** 17 **जुलाई** 1997 **को प्रकाशित आंकडे एक भद्दा मजाक था। मिशीगन युनिवर्सिटी के डॉ. मिलफोर्ड वोल्पोफ** (Dr. Milford Wolpoff) **के मुताबिक ये आंकडे** "statistical house of cards" **अंकशास्त्र की ताश की गड्डी थी।**(http://www.michaelbradley.info/iceman_promo.htm) **पाबो ने गुमराह करने वाला गलत आंकडा पेश किया कि अफ्रिका को छोडकर दुनियां की बाकी आबादी में निन्डरथॉल डी.एन.ए. की मात्रा समान रुप से** 1 **से** 4 **फीसदी तक है। यानि यहूदी जता रहे थे कि हम सभी लोग कुछ मात्रा में निन्डरथॉल है। जबकि ज्यादा निन्डरथॉल डीएनए काकॅशस-मध्य-पूर्व में है जहां निन्डरथॉल्स का आधुनिक मानवों से संकरण हुआ था। उस क्षेत्र से दूर यह मात्रा कम कम होते जाएगी। पाबो के साथी** Johannes Krause **ने** 10 **मई** 2010 **को मिड-जर्मन टीवी नेटवर्क पर कहा कि मध्यपूर्व के सेमाईटस् में** 10 **से** 20 **फीसदी निन्डरथॉल डी.एन.ए. है। लेकिन** 18 **मई** 2010 **को इस इंटरव्यू की इंटरनेट लींक निष्क्रिय** (deactivate) **की गई।** (http://www.democratic-republicans.us//Neanderthals and Semites.htm)

आर्यो की जन्मभूमि आर्क्टिक ध्रुव के क्षेत्र थे !

आर्क्टिक क्षेत्र में सोलोमन, सफेद मछली, व्हेल, सील तथा वालरस काफी तादाद में पाये जाते है। ताजे पानी के तालाबों तथा दलदली जगहों में प्रवासी पक्षी, मछली तथा अन्य छोटे सरीसृप पाये जाते है। रेनडियर (caribou), मस्क बैल (musk ox), भालू, लोमडी तथा भेडीये पाये जाते है। जिन जगहों में अच्छा पानी होता है वहां भरपूर वनस्पति होती है। आर्क्टिक क्षेत्र में छोटी छोटी झाडियां होती है जिसमें बेर जैसे छोटे फल लगते है। आर्क्टिक के निवासी इतिहासपूर्व समय से इन्हे अपने भोजन के रुप में इस्तेमाल करते रहे है। आर्क्टिक क्षेत्र में गर्मी का मौसम खतरनाक होता है क्योंकि पिघलने वाली बर्फ की वजह से चलना खतरनाक हो जाता है। (http://www.thecanadianencyclopedia.com/ Aboriginal People Arctic - The Canadian Encyclopedia.htm; http://www.about.com/ Arctic Culture - Guideline to the Prehistory of Arctic Culture.htm) जब मौसम बेहद ठंडा होता है तो आक्टिक में बर्फ ही बर्फ छा जाती है और सील इ. जलचरों की तादाद बढ जाती है। आर्क्टिक के निवासी इनका शिकार कर आसानी से अपना पेट भरते है। स्पष्ट है कि आर्क्टिक का ठंडा वातावरण अभिशाप नही बल्कि वरदान है। (http://carc. org/Climate and People in the Prehistoric Arctic.htm)

आर्क्टिक क्षेत्र अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो की जन्मभूमि थी !

{बहुजन-व्देषी} बाल गंगाधर तिलक के मुताबिक Paleolithic काल में उत्तरी ध्रुव के आर्क्टिक क्षेत्र आर्यो की जन्मभूमि थी। बर्फिले तुफान इ. से जीने के हालात नामुमकिन होने वे युरोप तथा एशिया विस्थापित हुए थे। ईरानियों के धर्मग्रंथ अवेस्टा में भी इसका उल्लेख किया गया है। वेदिक तथा ईरानी ही नही बल्कि ग्रीक तथा नार्स साहित्य में भी छह महिने के दिन और रातों का उल्लेख है क्योंकि वे सभी आर्क्टिक से विस्थापित हुए आर्य है। उषा वेदों की देवता है। उसकी प्रसंशा में ऋग्वेद में लगभग 20 ऋचाएं (hymns) है। उसका उल्लेख 300 से ज्यादा बार किया है। अगर उषा चंद मिनटों के काल की होती तो आर्यो ने उसकी इतनी प्रसंशा नही की होती। ओल्ड टेस्टामेंट (यहूदी बायबल) में कहा गया है कि ईश्वर ने पहले दिन आकाश, धरती और प्रकाश (उषा) का निर्माण किया, सूर्य को चौथे दिन बनाया। इसलिये वेदिक उषा (उषःकाल) का कालावध ी काफी लंबा होता था। प्रकाश तीव्रता की अलग अलग छटाएं 24 घंटे या अधिक समय की होती थी, एक के बाद एक प्रकट होती थी इसलिये उन्हे अनेक उषाएं माना गया है। क्षितीज पर प्रकाश होने तथा सुर्य के प्रकट होने के बीच कई कई {एशियाई} दिन बीत जाते थे (VII, 76, 3), या जैसे कि 11, 28, 9, ऋचाओं में बताया गया है एक के बाद एक कई उषाएं प्रकट होती थी तब कहीं जाकर सुर्य प्रकट होता था। उषाएं 30 की तादाद में महसूस की गई (I; 123, 8; VI, 59, 6; T.S., IV, 3, 11, 6)। उषाएं एकसाथ बडे प्रेम से नजर आती थी वे आपस में लडती नही थी (IV, 51, 7-9; VII, 76, 5; A.V. VII, 22, 2)। ये तीस उषाएं या एक उषा के 30 हिस्से चक्र की तरह निश्चित क्रम से घुमते थे (I, 123, 8, 9; III, 61, 3; T.S. IV, 3, 11, 6)। यह सारे गुणधर्म सिर्फ पृथ्वी के ध ्रुव पर ही प्राप्त हो सकते है और कहीं नही। इसलिये वेदिक देवता उषा निश्चित रुप से ध्रुवीय देवता है।

{बहुजन-व्देषी} तिलक के मुताबिक सप्त सिंधु (sapta sindhavah) की अभिव्यक्ति

पूरानी है जिसे आर्यो ने नये प्रदेशों पर लागु की। अंग्रेज भी अपनी मात्रभूमि की जगहों के नाम उपनिवेशीक प्रदेशों में लागू करते रहे है। इसी सूची में वारेना, हेतुमंत, रंघा तथा हरहवती भी है जो झेंड अवेस्टा की वरुणा, सेतुमत, रसा और सरस्वती के समकक्ष है। आर्यो ने अपने mythological नामों को याद रखा और ये नाम अपनी नई जगहों तथा वस्तुओं को दिये। बर्मा (मॅनमार) में अयोध्या, मिथिला, इ. नाम वहां बसे भारतीयों ने वहां की जगहों को दिये है। यही बात हप्ता हिन्दू (सप्त सिंधू) के बारे में लागू होती है। आर्यो के ध्रुवीय जन्मभूमि की सच्चाई को पारसियों तथा ब्राह्मणों ने अपने धर्मग्रंथों में भलीभाँति संजोकर रखा है इसलिये आर्यो की जन्मभूमि सायबेरिया का उत्तरी भाग, रशिया या स्कॅन्डिनाविया नही हो सकता। वेदिक आर्य लगभग 5000-6000 ईसापूर्व में मध्य-एशिया के घास के क्षेत्रों में बस गए थे। विस्थापित आर्य अलग जगहों पर अलग नामों से जाने गए। उनकी भाषाएं भिन्न हुई। पुराने वैदिक धर्म से ही उन्होने नये धर्म विकसित किये।(THE ARCTIC HOME IN THE VEDAS By Lokamanya Bâl Gangâdhar Tilak)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य आदमखोर थे !

इतिहासकार हेरोडोटस के मुताबिक मॅजी पूजारी न सिर्फ किसी भी जीव को अपने हाँथों से मार डालते थे बल्कि ऐसा करते वक्त उन्हे खुशी होती थी। चिंटियां, सांप, पक्षी जो भी उनको नजर आता था वे फौरन उसे मारने में जुट जाते थे।(Herodotus, Histories 1.140; tr. Aubrey de Sélincourt). इससे स्पष्ट है कि आर्क्टिक के अपने जन्मभूमि आर्याना वैजो में आर्य कुछ भी मारकर खाते थे।

मध्य एशिया में उन्होने गाय-बैल इ. जानवर पाल लिये। गाय-बैलों की तादाद से ही उनकी दौलत तय होती थी। जानवर आर्यो के लिये दुध, प्रजनन इ. के लिये महत्वपूर्ण थे इसलिये जानवरों को मांस के लिये सिर्फ खास धार्मिक मौकों पर या दुश्मन पर हासिल हुई जीत के जश्न में ही काटा जाता था। यही बात ऋगवेद से स्पष्ट होती है। शुरुआत में आर्य घोडों का इस्तेमाल वाहन के तौर पर नही कर सकते थे क्योंकि घोडों पर बिना लगाम के सवारी करना बेहद मुश्किल था। इसलिये वे घोडों को मारकर खाते थे। गाय-बैलों के लिये भरपूर पानी मिलना सबसे जरुरी था। इसलिये आर्य बारीश के लिये प्रार्थनाएं करते थे। पानी के स्त्रोतों के निकट अपने जानवरों के साथ एक चारागाह से दूसरे चारागाह भटकते थे। किसी चारागाह में दूसरी टोली पहले से ही है तो वे लडकर उनके जानवरों पर कब्जा कर लेते थे और कुछ लोगों को बंदी भी बना लेते थे।

टोली के राजा की जिम्मेदारी होती थी कि वह टोली के जानवरों की रक्षा करें। जब टोली का राजा दूसरी टोली के जानवरों पर कब्जा करने में कामयाब हो जाता था तो पूजारी दावा करते थे कि जीत उनकी प्रार्थना इ. से हुई है। जीत के धार्मिक अनुष्ठान में जानवरों की बलि चढाकर उनका माँस मादक सोमरस के साथ खाया जाता था। कब्जा किये हुए जानवरों को आपस में बाँट दिया जाता था। (The Vedic Age, 1500-500 B.C. pdf) ब्राह्मणों के धार्मिक ग्रथों में वर्णित राजा कोई आधुनिक राजाओं जैसा न होकर छोटी छोटी आर्य टोलियों का प्रमुख मात्र होता था। छोटी छोटी टोलियां राज्य और टोली प्रमुख राजा होते थे। सम्राट शब्द का मतलब ऐसा टोली प्रमुख था जिसका कई लोगों पर वर्चस्व था। उनकी लडाईयां गायों को कब्जे की लडाईयां थी। वेदों में उल्लेख है कि कुरु-पंचाला टोलियां बारीश के मौसम में औरों की गायों पर कब्जा करने के लिये निकले थे।(http://www.india-seminar.com/608 Romila Thapar, The epic of

the Bharatas.htm)

पुरातत्व वैज्ञानिकों को जली हुई, टूटी हुई इन्सानी हड्डियाँ मिली है। इसमें बच्चों की हड्डियाँ भी शामिल है। इससे स्पष्ट है कि आर्य आदमखोर थे। (http://www.oldandsold.com/Aryan Speaking Peoples In Prehistoric Times.htm) अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो में मानव-बली धार्मिक परंपरा के रुप में जारी रही। सतपथ ब्राह्मणा में इसकी सख्त मनाई है की पकडे गए लोगों को आजाद किया जाये। इससे भी यह सुचित होता है कि ऐसे लोगों को पुरुषमेध यज्ञ में मार कर खाया जाता था। Alfred Hillebrandt ने सन् 1897 में लिखा है कि यज्ञों में इन्सानों की वास्तव में बलि दी जाती थी। Albrecht Weber सन् 1864 में इसी नतिजे पर पहुंचे है। Willibald Kirfel ने सन् 1951 में दावा किया कि अश्वमेध यज्ञ के पहले से पुरुषमेध यज्ञ प्रचलित था।

कट्टर ब्राह्मणवादी लेखक सुधीर बिरोडकर लिखता है कि हालांकि वेदिक काल के टोली युध्द लगातार जारी रहे इसकी एक वजह यह भी थी कि दूसरी टोली के लोगों को पकड कर उन्हे बाद में खाया जाता था। पुरुषमेध यज्ञ से यह स्पष्ट है कि इन्सानों का मांस खाने की प्रथा आर्यो में थी। दूसरी टोली के बंदी बनाये गये लोगों को यज्ञ में मारकर उन्हे पकाकर खाया जाता था। भले ही इन्सानी मांस खाने की बात खौफनाक लगती हो लेकिन यह सच्चाई है कि यह प्रथा आर्यो में एक अवस्था में थी। मार डाली गई औरत के मांस को खाने की बात को वेद पूरी तरह से मान्य करते है। यर्जुवेद (Yajur Veda XXX) में प्रजापति को दी जाने वाली इन्सानी बलि का वर्णन किया गया है। इसलिये औरत को मार डालने के बाद उसके मांस को खाना वेदिक प्रथा के अनुसार ही है।

वेदिक ब्राह्मणा ग्रंथ वधुला अवाख्याना (Vadhula Anvakhyana 4.108; ed. Caland, Acta Orientalia 6, p. 229) में वास्तविक नरबली देकर उसका मांस खाये जाने (anthropophagy) को प्रमाणित किया है :- '' प्रजापति को शिकार के तौर पर पेश किया जाता था। जैसे कि कर्नजया। धर्तक्रतवा जातुकर्णी की इच्छा पेश किये गए स्त्री के हिस्से को खाने की नही थी इसलिये देवों ने इन्सानी बलि के बदले घोडे की बलि स्वीकार की। ("one formerly indeed offered a man as victim for Praja-pati," for example Karnajaya. "Dhartakratava Jatukarni did not wish to eat of the ida portion of the offered person; the gods therefore exchanged man as a sacrificial animal with a horse.")

मानव माँस को खाने की बात तैतिरिया ब्राह्मणा 7.2.10 तथा कथा संहिता 34.11 में भी दर्ज है। अैतरेया (Aitareya) ब्राह्मणा में लिखा है कि राजा हरिश्चंद्र ने वरुण को प्रार्थना की कि उसे पुत्र हो। वरुण ने उसे पुत्र दिया लेकिन उसकी बलि चढाने को कहा। राजा हरिश्चंद्र किसी न किसी बहाने से अपने बेटे रोहित की बलि टालता रहा। अंत में पर्यायी बलि में उसे अजिगर्था नामक ब्राह्मण ने अपने बेटे सुनाहसेपा को बलि के लिये बेचा। सुनाहसेपा को बलीवेदी पर बांधा गया। इस वाकये को भागवत पुराण में भी दोहराया गया है। पुरुषमेध यज्ञ में एक इन्सान की कीमत एक हजार गायों व एक सौ घोडे आँकी गई है।(http://en.wikipedia.org /Purushamedha - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Ashvamedha - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) राजा हरीश्चंद्र ने महोदर रोग से छुटकर पुरुषमेध यज्ञ व्दारा वरुण आदि देवताओं का यजन किया।(भागवत पुराण p.497)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य जानवरों के साथ भटकती टोलियां थी !

एच. जी. वेल्स के मुताबिक लगभग ईसापूर्व 2000 साल पहले मध्य तथा दक्षिण-पूर्वी युरोप तथा मध्य-एशिया में गोरी त्वचा और नीली आँखों वाले आर्यो ने प्रवेश किया। एक सामान्य मिलती-जुलती भाषा के माध्यम से वे एक दूसरे से संपर्क रखते थे। यह भाषा राईन से लेकर कॅस्पियन समुद्र तक बोली जाती थी। कुर्गान सिधान्त के मुताबिक प्राचीन इंडो-युरोपियन (Proto-Indo-European, PIE) भाषा का इस्तेमाल करने वाले आर्य पॉन्टीक-कॅस्पीयन घास के प्रदेश में बसे हुए थे। पांटिक घास के प्रदेश (steppe) का क्षेत्र 384,000 वर्ग मील था। इसका विस्तार पूर्वी रोमानिया से लेकर दक्षिण माल्डोवा, युक्रेन, रुस, उत्तरी कजाखिस्तान से लेकर उराल पर्वत तक था। इन युरेशीयन मैदानी क्षेत्रों में आर्य अपने जानवरों के साथ भटकते रहते थे।

आर्यो के शुरुआती वाहन बैलों व्दारा खेंचे जानी वाली छोटी गाडियां थी। इसके चक्के बेहद अविकसित थे। किसी पेड के तने को काटकर गोलाकार लकडे के चक्के बनाये जाते थे। इन गाडियों की गति बेहद धीमी थी। उनके घर भी बेहद नाजुक थे। आर्यो ने पहले अपने घरों के आस पास कुछ चीजें उगाई। उनके हल भी उचित ढंग से मुडी हुई लकडी होती थी। यह उनकी सामुहिक खेती होती थी।

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य टोलियों ने आपसी समझौतों से एक दूसरे की मदद करना तय किया। अपने नेता का चयन किया। उके नेतृत्व में वे खतरों से मुकाबला करते थे। आर्य समुदायों के प्रमुख को इंद्र कहा जाता था। इंद्र यह व्यक्ति का नही बल्कि पद का नाम है। जश्न में शराब तथा नाचगाना होता था और अपने अतित की यादों को गीतों में दोहराया जाता था और कथा-कहानियां सुनाई जाती थी। इन्हे उन्होने खुद गढा होता था।(http://www.oldandsold.com/Primitive Aryan Life.htm) निन्डरथॉल वंशी होने के कारण आर्य सुरिली आवाज में गा सकते थे। वे लिख नही सकते थे। उनके बीच का गायक ही उनके इतिहास की किताब होता था। गायक की स्मृति ही उनका साहित्य था। उनका सामाजिक जीवन मुखिया केन्द्रित था।(http://www.bartleby.com/19. The Primitive Aryans. Wells, H.G. 1922. A Short History of the World.htm)

अलबिनो-निन्डरथॉल वंशी आर्य सुखलोलुपता से ग्रस्त समुदाय था !

अलिबिनो-निन्डरथॉल वंशी आर्य असुरक्षा के माहौल में जीने से संवेगों से संबधित प्राथमिक मश्तिष्क (Premitive brain) के इस्तेमाल के आदी थे। वे सुखकारक अनुभूतियों के लिये लालायित तथा अज्ञात खतरों से भयभीत रहते थे। इसलिये आर्यो में नैतिकता, आध्यात्मिक उन्नति इ. के विकास की बात सोची तक नही जा सकती थी।

वेदों की तमाम प्रार्थनाएं अन्न, संपत्ति, जानवर, बेटे, ताकत तथा सुरक्षा प्रदान करने के लिये की गई है। वेदों के लिये मोक्ष इ. अनजानी संकल्पनाएं है। वेदों में न ही कोई पूर्नजन्म है, न ही कोई आत्मा है, न ही कोई स्वर्ग या नर्क है। यह दूनियां ही सबकुछ है। प्राचीन ग्रंथ 'निघान्तु' (Nighantu) के मुताबिक अन्न को 'परम-ब्रह्म' कहा जाता था। यानि अन्न ही ब्रह्म था। चट्टोपाध्याय के मुताबिक इससे वेदों की देवताओं के भौतिक स्वरुप का पता चलता है।(http://www.gurdjieff-con.net/The Gurdjieff Con » The Gita and the Neo-Brahmin anti-Buddhist reaction.htm)

वेदों की प्रार्थनाओं में सिर्फ और सिर्फ अन्न, सोमरस, इ. सुखकारक चीजों की अभिलाषा की गई है। लक्ष्मणशास्त्री जोशी के मूताबिक यह आर्यो के प्राथमिक, अविकसित मश्तिष्क को दर्शाता है। वे वास्तविक कार्य-कारण संबंधों के प्रति अनजान थे। वेदों में ऐसे श्लोक (hymns) है जिसमें करीबी संबंधों में बलात्कार, लैंगिक आक्रमकता, वैवाहिक जीवन में अप्रामाणिकता, धोखाधडी, चोरी तथा डाका इ. बातों को मान्यता है।(http://www.gurdjieff-con.net/The Gurdjieff Con » The Gita and the Neo-Brahmin anti-Buddhist reaction.htm)

आर्यो के लालच की कोई सीमा नही थी। आर्य खुद को बहुत ज्यादा गरीब अनुभव करते हुए नाग-द्रविडों के प्रति सतत ईर्षा प्रकट करते है। आर्य नाग-द्रविडों के जानवरों को चुराने, लूटने की कोशिशें में लगे रहते थे। उनकी प्रार्थनाओं में दासों की संपत्ति, सोना, जानवर, कपडे-वस्त्र लूटकर उन्हे देने की याचनाएं की गई है। ऐसी इच्छाएं आर्यो के अविकसित मश्तिष्क की मानसिक बाध्यता (obsession) थी।

आर्यो में अग्निहोत्री का विकास !

आग पैदा करना तकलीफ भरा काम था। इसलिये अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो के एक घर की जिम्मेदारी अग्नि को सतत प्रज्वलित रखने की थी। आग से जंगली जानवर दूर रहते थे। आग से जंगली जानवरों तथा थंड से सुरक्षा मिलती थी। कच्चे मांस को पकाकर स्वादिष्ठ भोजन मिलता था। अग्नि को सतत प्रज्वलित रखने वाले परिवार को अग्निहोत्री कहा गया। अग्नीहोत्री खाना पकाने व सोमा नामक मादक पेय भी बनाने लगे। इससे उनका संपर्क टोली के सभी सदस्यों से होने लगा। धार्मिक प्रथा परंपराओं में आग जलाने से लेकर बलिप्रथा को अंजाम देने में अग्निहोत्री की भूमिका थी। धार्मिक अनुष्ठानों के लिये सोमा पेय बनाने का काम अग्निहोत्री के पास ही था। इसलिये अग्नि. नहोत्री को महत्वपूर्ण स्थान हासिल हो गया। लोग अपने अपने घरों की आग जलाने के लिये अग्निहोत्री के पास रोज आते थे। वह उनकी समस्याओं की जानकारी भी रखता था और उसे सुलझाने की कोशिश करता था। ईरान में आतीशगाह स्थानीय कोर्ट की हैसियत रखते थे। प्राचीन ईरान के पश्चिम में अथर्वन यानि अग्निहोत्री की भूमिका मॅगोई या मॅगी नाम से जाने जाने वाले अग्निहोत्री करते थे। (http://www.heritageinstitute.com/Zoroastrian Priesthood - Atharvan, Magi, Modern Priests.htm)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य एनिमिस्ट थे !

एनिमिजम का अर्थ हर वस्तु में आत्मा होने पर भरोसा करना है।

आर्यो के ''सनातन-धर्म'' का स्वरुप !

अलबिनो-निन्डरथॉल वंशी आर्यो का धर्म आदिम अंधविश्वासों पर आधारित है इसलिए व ''सनातन'' यानी प्राचीन धर्म है। नासमझ शिशु की तरह आर्यो ने हर हिलने डुलने वाली चीज को जीवित माना। चाँद के कम होकर गायब हो जाने तथा फिर से बढने को अज्ञानी आर्यो ने मान लिया कि दुष्ट ताकते चांद को धीरे धीरे निगलती है तथा दैवी शक्तियाँ युध्द करके चाँद को मुक्त करती है। उत्तरी ध्रुव पर लंबी अवधी की उषाओं के प्रकाश को वे जीवित ताकतें मानकर उनकी पूजा करते थे। प्राचीन काल में बादल का गरजना, सुर्यग्रहण या चंद्र ग्रहण का होना, रात होना, दिन का निकलना, बादल, ज्वालामुखी, बारीश, तूफान, अंधड, तथा भूगर्भ की हलचलों से धरती काँपना, जमीन ध ंसना, भूकंप आना, पर्वत धंसना, भूगर्भ में होने वाले परिवर्तन से कोई नया पर्वत निर्माण होना, ज्वालामुखी, तेज बारिश, अन्धड, सुर्यग्रहण से अंधेरा फैल जाना, धूलभरी आँध ी फैलकर कुछ भी दिखाई न देना, अचानक नदी का पात्र बदलकर तबाही मच जाना, इ॰ घटनाएं आम थी। ऐसी किसी घटना से प्रतिपक्ष की तबाही मचने को उन शक्तियों की संघर्ष में प्रत्यक्ष भागीदारी मानकर उनमें यह विश्वास पैदा हुआ कि खुश होने पर ये ताकतें प्रत्यक्ष मदद करती है। इन्हे खुश करने बलि चढाने जैसे कर्मकांड निर्माण हुए। बिमारीयों के फैलने को दुष्ट शक्तियों का हमला समझ कर मंत्र तंत्र से इसका इलाज शुरु हुआ। कुछ बिमारियाँ स्वाभाविक रुपसे ठीक होती है लेकिन वे टोटकों से ठीक हुई मानकर मंत्र तंत्र विकसित हुए। आर्यो को अपने विचित्र सपने भी अर्थपूर्ण, सच्चे और चमत्त्कारिक शक्ति के कारनामे लगते थे। परिणाम स्वरुप कई विचित्र कल्पनाएं और अंधविश्वास निर्माण हुए।

ड्रेगन की झूठी संकल्पना मश्तिष्क में पैदा होने का जैविक कारण मानव उत्क्रांति में छुपा है। आरंभिक मानवों के मश्तिष्क बहुत छोटे होने से उन्हे खतरनाक जानवरों की जानकारियों को स्मृति में संजोंने के लिये उनका मश्तिष्क छोटा था। अधिक जानकारी के दबाव से बचने उनके मश्तिष्क ने खतरनाक हमलावर जानवरों के तमाम मुख्य लक्षण ों से एक ही जानवर ड्रेगन की शक्ल दे दी। ड्रेगन में सांप, मगरमच्छ, बाघ, इ. सारे चिन्ह मौजूद है। इनमें से कोई भी चिन्ह दिखते ही खतरे का संकेत भेजने और फौरन उचित प्रतिक्रिया करने में मश्तिष्क को आसानी हुई। यह मश्तिष्कीय ड्रेगन हजारों साल तक दिमाग में रहा और सपने में अपनी मौजूदगी जताता रहा। जब बोलना और लिखना शुरु हुआ तो वह शब्दों और कथानकों में अवतरित हुआ। जब लोगों ने प्राचीन डायनोसोर इ. की लाखों साल पहले की अस्थियां देखी तो उन्हे लगा होगा कि ये जीव अब भी आसपास ही कहीं मौजूद है। वैसी ही कल्पनाएं काव्यों, कथानकों में कर ली। सपनों के तथा सायकोडेलिक तत्वों के नशे में होने वाले अनुभव भी सच्चे मान लिये जिससे अंध ाविश्वासों की तादाद बढती गई।(Why we invented monsters: http://spiritonthebrain.com/Spirit on the Brain.htm) पेड, प्राणी इ॰ भी उस वक्त मानव की नजर में अच्छी और बूरी ताकतों के प्रतिक थे। पेडों के फलों को पेड का उपहार समझकर तथा जंगल में लगी आग में भुने हुए जानवरों का स्वादिष्ट मांस अग्नी देवता का उपहार समझकर

खाने लगे। उन्होने कल्पना की कि प्राणि की आत्मा को खाकर दैवी शक्तियाँ शरीर को वैसा ही छोड देती है। इसलिए अग्निकुंड में बलि चढाने की प्रथा आर्यो में शुरु हुई।

आर्य पूजारियों को ईरान, मीडिया इ॰ प्रांतों में मॅजी पूजारी (Magi) के नाम से जाना जाता था। आम लोगों में उन्होने यह ''डर और अंधविश्वास'' पैदा किया कि उनका दैवी शक्तीयों से न सिर्फ प्रत्यक्ष संपर्क है, बल्कि अच्छी तथा दुष्ट दोनों प्रकार की शक्तियाँ उनके अनुष्ठान, मंत्रों से उनकी गुलाम बन जाती है। सारे अनुष्ठान मॅजी पूजारी करते थे। बलि इ॰ के बाद भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त न होने पर दुश्मन दैवी शक्ति किसी खास बात या किसी खास व्यक्ति से नाराज होगी, दुष्ट शक्ति की ताकत उस वक्त ज्यादा होगी इ॰ काल्पनिक बातें गढ़ कर 'चित भी मेरी पट भी मेरी ' की नीति से मॅजी पूजारी अपनी कोई भी बात मनवाते थे। वील डुरंट के अनुसार आर्यो के सोमा नामक पूजारी ने उत्तेजक मादक द्रव निकलने वाले पौधे की खोज अलबुर्ज नामक पर्वत में की तथा उस पौधे को अपना नाम दिया। ब्राह्मणों की सोम मदिरा को पर्शियन में होम कहा जाता है क्योंकि ईरानी भाषा में अनेक शब्दों का 'स' का उच्चार 'ह' की तरह होता है। मॅजी पूजारी जानवरों की बलि चढाते थे और होम (सोम) मदिरा पीते थे।

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य सोमा नाम के एक पौधे को कुचलकर उसका नशिला रस निकालकर पीते थे। यह रस सायकेडेलिक होने से इन्सानी चेतना में बदलाव होता था। व्यक्ति को तरह तरह के अनुभव होते थे। सोमा को बेहद महत्पूर्ण माना जाता था। ऋगवेद में सोमा पर एक पूरा मंडल लिखा गया है। सोमा मंडल में पूरे 114 श्लोक (hymns) है जो उसके गुणधर्मो का गौरवगान करते है। ईरानियों के झेंड अवेस्टा में होमा पर पूरी Yašt 20 and Yasna 9-11 समर्पित है। (Closing in on Soma by Hasan Javaid Khan http://www.heritageinstitute.com/zoroastrianism/index.htm) वेद-पुराणों से स्पष्ट है कि आर्य निर्जिव वस्तुओं में चेतना होने का विश्वास करते थे :- राजा सोम को पति के रुप में पाकर औषधियां बहुत प्रसन्न हुई थी। (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 195) हे सोमरस ! आप इंद्रदेव के पीने के लिये निकाले गए है। अतः अत्यंत स्वादिष्ट, हर्षदायक धारसहित प्रवाहित हो। (सामवेद संहिता, भगवतिदेवी शर्मा p.85, 468) हे पाषाणों से कुटे शुध्द सोम ! आपकी उठती बल तरंगों से उन दोनों की श्रध्दा कर राक्षसों का विनाश होता है। आप हमसे संघर्ष करने वाले शत्रुओं से दूर रखे। (सामवेद संहिता, भगवतिदेवी शर्मा p.257, 1714) हे घर ! भयभित मत हो। प्रकंपित मत हो। हम शक्तियुक्त आपके पास आते है। हम ओजसंपन्न, श्रेष्ठ बुध्दि से युक्त, दुःख रहित तथा हर्षित होते हुए (आप में) प्रविष्ठ होते है। (यर्जुवेद संहिता, भगवतिदेवी शर्मा p.40,106) हे सोम ! रस निकालते समय पत्थर की चोट से आप भयभित और विचलित न हो। ..... (यर्जुवेद संहिता, भगवतिदेवी शर्मा p.68,243) हे अन्नदाता यज्ञ के दोनों साधन ओखल और मूसल ! जिस प्रकार अपना खाद्य चबाते समय इन्द्र के दोनों घोडे ध्वनी करते है, उसी प्रकार तुमुल ध्वनि से युक्त होकर तुम लोग बार-बार विहार करते हो।(हिन्दी ऋगवेद) हे सदृष्य दोनों काष्ठ (ओखल और मूसल) ! दर्शनीय अभिषव-मंत्र व्दारा आज तुम लोग इन्द्र के लिये मधुर सोमरस प्रस्तुत करो। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी) इस यज्ञ में अभिषव पाषाण सोमलता को उसी प्रकार कँपाता है जिस प्रकार तेंदुआ भेड को कँपाता है।..(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1124) जैसे पुरुष स्त्री का अनुगमन करता है, वैसे ही सुर्य दिप्तिमती उषा के पीछे-पीछे आते है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, 115-2) जैसे सांड गायों को देखकर बोलता है, वैसे ही स्तुतियां

सुनकर सोम शब्द करते है। ... (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1296) उषा दिन के प्रथमांश के आगमन का काल जानती है। वह स्वँय ही दीप्त और श्वेतवर्ण है। कृष्णवर्ण से उसकी उत्पत्ति हुई है। वह सुर्यलोक में मिश्रित होती है; किन्तु उसको हानी नही पहुंचाती; प्रत्युत उसकी शोभा बढाती है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, 123-9) भगिनिरुपी रात्री ने बडी बहण (उषा) को अपर रात्रि-रुप उत्पत्ति-स्थान प्रदान किया है एँव उषा को जनाकर स्वँय चली जाती है। सुर्य-कीरणों से अंधकार हटाकर उषा विद्युदराशी की तरह जगत को प्रोशित करती है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी 124-8)

सोमा सायकोडेलिक रसायन युक्त पौधा है !

वेदिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त सोमा अनुष्ठान के विभिन्न हिस्सों के मुताबिक अलग अलग होता था। कुछ खास मात्रा में सोमा लेने पर व्यक्ति को उत्तेजना और खुशी का एहसास होता था। अलग मात्राएं व्यक्ति को देखने तथा सुनने संबंधी विभ्रम (hallucinations) पैदा करती थी। ऋग्वेद के मुताबिक सोमा सभी चिजों को प्रकाशित करता है। सोमा से कामोत्तेजना होने का जिक्र है। सोमा से होने वाले अनुभवों को "ecstasy", "rapturous joy," "inspiration," "heightened awareness," व "exhilaration," इ. कहा जा सकता है। ऋग्वेद के मुताबिक सोमा खुशी से पूर्ण दृष्यों की अनुभूति कराता है। यह खुशी ध ारती और आकाश से भी व्यापक है। सोमा श्लोकों (hymns) में सोमा अनुभूति के दौरों का भी जिक्र है। कहा गया है कि सोमा से ही वेदिक देवताओं का अमरत्व कायम है।(http://csp.org/CSP - 'Soma The Divine Hallucinogen", by David L. Spess.html)

ऋग्वेद के कई श्लोकों में सोमा को देवों का निर्माता, देवों का पिता कहा गया है। ऋग्वेद में सोमा को देवता का भी ओहदा दिया गया है {क्योंकि आर्य हर वस्तु में आत्मा होने की बात पर विश्वास करते थे} ऋग्वेद में कहा गया है कि इंद्र सोमा का बडा भक्त था।(http://www.sacred-texts.com//Hindu Mythology, Vedic and Puranic Part I. The Vedic Deities Chapter VIII. Soma.htm) ऋग्वेद (RV 9.42) में इन्द्र तथा अग्नि भारी मात्रा में सोमा पीने वाले है। कहा गया है कि सोमा पीने से इन्सान अमर हो जाता है (Amrita, Rigveda 8.48.3) सोमा से प्राप्त अनुभवों को अमरता कहा गया है। सायकेडेलिक रसायन को आरंभ से ही अमृत कहा गया है। ऋग्वेद (8.48.3, tr. Griffith) में कहा गया है कि हम सोमा पी कर अमर हो गए है, हमें प्रकाश प्राप्त हुआ है और हमने देवों को खोज लिया है। ऋग्वेद में ऐसे कई उध्दहरण है (e.g. RV 9.4, RV 9.5, RV 9.8, RV 9.10, RV 9.42) जिसमें सोमा को प्रकाश की संवेदना कराने वाला कहा गया है। (http://en.wikipedia.org//Soma - Wikipedia, the free encyclopedia.html; http://www.erowid.org/Erowid Psychoactive Amanitas Vault Article %231.htm)

धार्मिक विश्वासों का उगम सायकेडेलिक रसायनों से उत्पन्न अनुभव है !

सोमा ऐसी साक्षात देवता है जिसको पीने के बाद उसने ऋग्वेद उजागर किया है।(http://aumstar.com//Soma The Mushroom Star Goddess of the Rig Veda « Aumstar_com.html) इसलिये स्पष्ट है कि पुराण इ. धार्मिक ग्रंथों में वर्णित चमत्कारिक बातें मश्तीष्क में प्रभाव पैदा करने वाली सोमा जैसी नशीली दवाओं (psychodelic drugs) की वजह से होने वाले अनुभव मात्र है।

झोरोस्टर धर्म की पवित्र पुस्तक वेंडिडाड (Vendidad) में भांग को ''झोरोस्टर की बेहतरीन नशिली दवा'' करार दिया है। झोरोस्टर धर्म के साहित्य में पूजारियों की उत्तेजना (ecstasy) की वजह भांग का उपयोग बताया है। झोरोस्टर की बिवी व्होवी (Hvovi) प्रार्थना करती है कि ईश्वर उसे भांग मुहैया कराए ताकि वह कानून के मुताबिक विचार कर सके, कानून के मुताबिक बात कर सके और कानून के मुताबिक बर्ताव कर सके। झोरोस्टर धर्म के पूजारियों को भांग पीने के बाद ही चमत्कार बताने ताकत हासिल होती है।(http://www.cannabisculture.com/Soma revealed _ Cannabis Culture.html) जादू तथा टोने-टोटकों का विकास इंडो-ईरानियन सोमा/ होमा उत्सवों से हुआ है। जादू (magic), जादूगर (magician), मॅगस अथवा मॅगी / मॅजी (magus, and magi) इ. शब्द एक-दूसरे से संबंधित है। उनका संबंध इंडो-ईरानियन होमा / सोमा प्रथाओं से है। ग्रीक, इजिप्त तथा युरोप के तांत्रिक अपनी जादूई परंपराओं तथा पदार्थों से सोना अथवा पारस पैदा करने के शास्त्र (alchemy) के उगम का श्रेय सोमा बलि विधियों को देते है।(http://csp.org/CSP - 'Soma The Divine Hallucinogen", by David L. Spess.html)

इतिहासपूर्व काल में सायकोडेलीक रसायनों की भूमिका लोगों की कल्पनाशक्ति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। निन्डरथॉल अपने मृत लोगों को दफनाते वक्त जिन फुलों को वहां रखते थे उनमें सायकोडेलिक विशेषताएं थी।(Leroi-Gouriian 1984)

माया संस्कृति के पुरातत्व वैज्ञानिक डॉ. स्टिफन एफ. बोरहेगयी का मानना था कि माया धार्मिक रितियों में विभ्रम पैदा करने वाले मश्रुमों (mushrooms) की केन्द्रिय भूमिका होती थी। Mckenna का मानना था कि धर्म के पैदा होने, तथा स्मृति, भाषा व स्वचेतना का विकास होने के जिम्मेदार इथनोजेन सिलोसिबीन (entheogen psilocybin) तथा स्ट्रोफॅरिया कुबेंसिस (Stropharia cubensis) रसायनों से युक्त मश्रुम है। ऐसे मश्रुम अफ्रिका में उपलब्ध थे। जिन पौधों में इंडोल कंपाउंड (indole) के साथ इथनोजेन्स (entheogens) होते है उनके सेवन से व्यक्ति में दिखाई देने संबंधी विभ्रम पैदा होते है। (http://www.ancient-wisdom.co.uk//Prehistoric Drugs.htm) सायकोडेलिक रसायनों के सेवन से उत्पन्न उत्तेजना तथा होने वाले देखने तथा सुनने संबंधी विभ्रम अलौकिक दृष्टान्त माने गए।

ग्रीक भविष्यवेत्ता (Oracles) तथा रोमन सीबील को उनकी कथित अलौकिक ताकत गुफाओं में जमीन के गर्भ से आने वाली हायड्रोकार्बन गॅसेस की बदौलत थी जिनसे व्यक्ति को तरह तरह के सुनने तथा देखने संबंधी विभ्रम होते है। शुरुआती धर्म (proto-religions) अलौकिक ताकतों से संवाद करने के लिये सायकेडेलिक रसायनों के उपयोग को जरुरी मानते थे। यही बात दुनियां भर की जनजातियों में पाई जाती है। चीन का ताओइजम सायबेरिया के शामानिजम् से उपजा है। शामान लोग सायकेडेलिक रसायनों का इस्तेमाल करते है। आधुनिक न्यू एज धार्मिक कल्ट भी सायकेडेलिक रसायनों का इस्तेमाल करते है। (http://www.iawwai.com/Psychedelia Past, Present and Future. htm) सन् 1970 में जॉन अलेग्रो (John Allegro) ने अपनी किताब The Mushroom and the Cross में दावा किया कि यहूदी तथा ईसाई धर्म का आधार वे गोपनीय पंथ है जिनके लिये Amanita muscaria नामक सायकेडेलिक मश्रुम ईश्वर की हैसियत रखता है। इस मश्रुम को उन्होने ईश्वरपुत्र यानि जेजस कहा। उनके मुताबिक ईसाई धर्म का उगम उपरोक्त मश्रुम खाने के बाद होने वाले सायकेडेलिक अनुभव है। अलेग्रो से काफी पहले सन् 1910 में Societe Mycologique de France के सत्र में इस संभावना को सुचित

किया गया था।(http://www.botany.hawaii.edu//Soma.htm) कुछ खास किस्म के कमल के पौधे में सायकेडेलिक गुणधर्म पाये जाते है, खासकर जडों में। तिब्बती तंत्रयानी पदम्संभव ने आठवी शताब्दी में भारत से तिब्बत आकर तंत्रयान का प्रचार किया था। उनके नाम का अर्थ कमल से जन्मा होता है। शायद तंत्रयान की गहराई में पहुंचने में कमल के सायकेडेलिक गुणधर्मो ने उसकी मदद की होगी। तंत्रयान में सायकेडेलिक नशे का इस्तेमाल होता है। (http://www.iawwai.com/Psychedelia Past, Present and Future.htm)

कौनसा पौधा सोमा है ?

Nelumbo nucifera नामक पौधा सोमा होने का दावा किया गया है। इसे पवित्र कमल भी कहा गया है। वेदों में सोमा वर्णन इस पौधे से कुछ मिलता-जुलता है। यह कमल का पौधा अपने तने पर लाल-सुनहरे फुल उगाता है जो वेदों में वर्णित तीर और सुर्य की उपमा से मिलता जुलता है क्योंकि फुलों से रोशनी की चमक महसूस होती है। वेद के श्लोकों में सोमा पौधे को जोड दर जोड और गांठ दर गांठ बढते बताया है जो इस कमल से मिलता जुलता है। इस पौधे में सायकोडेलिक तत्व पाये जाते है।(http://en.wikipedia.org/Botanical identity of soma–haoma - Wikipedia, the free encyclopedia.html)

वॅसन (Wasson) ने महाभारत का वाकया बताया कि इंद्र ने उत्तंक को अपना मुत्र पीने को दिया। amanita muscaria के रस को पीने वाले व्यक्ति के मुत्र में भी वैसा ही नशा पाया जाता है।(http://www.cannabisculture.com/Soma revealed _ Cannabis Culture.html) सायबेरिया में इसे पीने वाले व्यक्ति का मुत्र दूसरा व्यक्ति तथा उसके मुत्र को तिसरा व्यक्ति इस तरह पांच-छह लोगों को एक समान विभ्रमात्मक नशा होता है। वॅसन के मुताबिक amanita muscaria ही सोमा पौधा है। अन्यों ने इस दावे को नकारा है। (http://en.wikipedia.org/Botanical identity of soma–haoma - Wikipedia, the free encyclopedia.html) ब्रजलाल मुखर्जी ने एसिएटीक सोसायटी के जर्नल में लिखे अपने लेख में भांग को सोमा करार दिया है। उन्होने ध्यान दिलाया है कि कैसे हिंदूओं के विभिन्न पर्वो में भांग का इस्तेमाल होता है। वेदों में वर्णित सोमा को बनाने और भांग को बनाकर इस्तेमाल करने की विधी भी समान है। (http://www.cannabisculture.com/Soma revealed _ Cannabis Culture.html) सोमा रस **1**) को बार्ली, दूध अथवा दही के साथ पकाया जाता था, 2) उसके रस को वैसे ही पी लिया जाता था, 3) सोमा के रस को घी अथवा शहद में मिलाकर पिया जाता था। भांग भी कई तरह से पी या खाई जाती है।

अली जाफरी पिछले 40 सालों से झोरोस्टर के धर्म पर लिखते रहे है। उनके मुताबिक सोमा पर्वतों में उगने वाला हरे रंग की छटा का पौधा है। मध्य एशिया की शक जनजाति को अकामेनियन्स (Achaemenians) ने होमावर्का (haumavarka) यानि होमा को इकट्टा करने वाली कहा है। उनके मुताबिक होमा हेम्प (hemp) भांग ? नामक वनस्पति है जिसे सुफी, फकीर, साधू इ. इरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा भारत में धार्मिक स्थलों पर इस्तेमाल करते रहे है। तुर्कमेनिस्तान के काराकुम के उत्खनन में cannabis मिली है। सोमा शायद cannabis है। (http://www.cannabisculture.com/Soma revealed _ Cannabis Culture.html) तुर्कमेनिस्तान के मार्जियाना,गोनुर इ. स्थानों के उत्खनन में

खास कमरों में तीन सीरॅमिक बर्तनों में cannabis, Ephedra तथा अफीम जैसे रसायनों के अंश मिले है। ये चीजें ईसापूर्व 2000-1000 वर्ष पूर्व की है। इसलिये होमा / सोमा एक मिश्र पदार्थ था जिसे पहले प्रकार में कॅनेबिज तथा इफेड्रा के साथ तथा दूसरे प्रकार में अफीम तथा इफेड्रा के साथ बनाया जाता था। इस निष्कर्ष को पुरातत्व का आधार है इसलिये fly-agaric, Syrian rue या अन्य किसी को सोमा नही कहा जा सकता।(Soma from The Encyclopedia of Psychoactive Substances by Richard Rudgley Little, Brown and Company (1998) http://huxley.net/index.html)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो का धर्म
जादुई टोने-टोटकों पर आधारित धर्म है !

अथर्व वेद में तरह तरह के जादु–टोटकों की विधियों का वर्णन है जैसे बच्चे पैदा करने का जादु; गर्भपात रोकने का जादु, दुष्टात्माओं को दूर रखने का जादु, शत्रुओं को नष्ट करने या परेशान करने का जादु इ॰। डॉ. अम्बेदकर ने अपनी किताब में अथर्व वेद की जादूटोने-टोटके वाली विषय सूची के शिर्षक दिये जो पूरे छँह पेज है। अथर्व वेद की पहली किताब में रोग तथा रोगों को पैदा करने वाले पिशाचों से व्यक्ति को मुक्त करने के टोटके है। दूसरी किताब में दीर्घायु बनने की प्रार्थनाएं है। तीसरी किताब में पिशाचों, जादुगरों तथा दुश्मनों के खिलाफ शाप-विधियों के टोटकें है। चौथी किताब में स्त्रियों से संबंधित टोटके है। पांचवी किताब में राजाओं से संबंधित बातों के टोने टोटके है। छँटवी किताब में लोगों के समूह, दरबार इ॰ हालातों में अपना प्रभाव निर्माण करने इ॰ के टोटके है। सातवी किताब में घर, खेत, जानवर, व्यापार, जुएँ में समृध्दी, तथा बच्चों के मामलों में यश-समृध्दी के टोटके है। आठवी किताब में व्यक्ति के पाप तथा दुष्कृत्यों के निवारण संबंधी टोटके है।(Dr. B. R. Ambedkar, Vol. 4, P. 44-50) वेद ब्राह्मणों के कर्मकांड-टोटकों के ग्रंथ है। प्रत्येक वेद के लिए ''ब्राम्हणा'' नामक किताब ब्राह्मण पूजारियों के लिए लिखी गई है। इन में विधि, टोने-टोटके समझाए गये है। ब्राह्मण ा में निर्देश थे कि अगर यजमान कम दक्षिणा दे तो लाभ की जगह उसे नुकसान कैसे पहुँचाया जाए। वेदों तथा ब्राह्मणाज का समावेश कर्मकांड प्रकार में किया जाता है। (Will Durant, P. 402, 405, 407)

आर्य तांत्रिक नीचे दिये टोने टोटके करते थे :-

1) जन्म से पहले :- स्त्रियों को प्रजनन करने तथा पुरुषों को संभोग के लिए सक्षम बनाना; अजन्मे बालक की भावी विपदाओं को टालने के लिए अनुष्ठान करना; बालक का जन्म का उसके माता, पिता या परिवार के लिए अशुभ न हो इसलिए अनुष्ठान करना; लडके के लिए अनुष्ठान करना इ॰।

2) जन्म के बाद :- बालक का जन्म शुभ/अशुभ बताना; बालक के शरीर के चिन्हों के आधार पर उसका भविष्य बताना; बालक को आशीर्वाद देना, समारोह, अनुष्ठान करना; बालक का शुभ नाम बताना; बालक को भविष्य में किन बातों से खतरा है इ॰ के बारे में आगाह करना; बच्चों का उपनयन करना; हाँथ देखकर भविष्य बताना।

3) जीवन की सामान्य घटनाएं :- घटनाओं को शुभ या अशुभ बताना; तूफान, ग्रहण इ॰ के निवारण के लिए विधि करना; स्वप्न इ॰ के अर्थ बताना। चूहे के कुतरने से कपडों पर बनी आकृति का अर्थ लगाना; अग्नि को बलि चढाना; ईश्वर को समर्पित करने के लिए किसी के घुटने से रक्त निकालना; कोई घर शुभ है या अशुभ है यह

बताना; भुतों को बुलाना; आत्माएं बुलाना; साँपों का जादु करना; विष-विद्या, बिच्छु का जादु, चूहे का जादु, पक्षी का जादु, कौवे का जादु, युध्द में शरीर से तीर दूर रखने का जादु; मोती, हीरे, कपडे, तलवार, तीर, धनुष्य, हथियार, स्त्री, आदमी, लड़का, लड़की, गुलाम, कनिज (गुलाम लडकी, दासी), हाँथी, घोडा, बैल, भैंस, बकरा, भेड, मुर्गी लडाने के काम में आने वाला मुर्गा, तीतर, बटेर, मछली, कछूआ इ. जानवर शुभ है या अशुभ यह बताना।

4) विशेष अवसर :-- यात्रा पर जाने का, युध्द करने का शुभ दिन, युध्द में जीत किसकी होगी इ॰। भुकंप, ग्रहण, बाढ, अकाल, प्रलय, जंगल में आग लगना, पृथ्वी पर घुमकेतु का हमला होना। इ॰ की भविष्यवाणी कर उसके उपाय करना। वर्षा की, अच्छी उपज होने की, महामारी आने की, उपद्रव निर्माण होने इ॰ की भविष्यवाणियाँ, सलाह देना; गलत कार्यो को भी न्यायसंगत बनाने के लिए तर्क तथा धार्मिक आधार तैयार करना, गलत तर्क करना, शादी, बहु या दुल्हे के गृह प्रवेश की तिथि तय करना, राजाओं के बीच संधि की शुभ तिथियाँ तय करना, भाग्यशाली बनाने के लिए विधि करना, दुर्भाग्यशाली बनाने के लिए मंत्रविधि करना, तांत्रिक विधि से गर्भपात करना, जबडे बिठाने के लिए तांत्रीक विधि करना, गूंगा या बहरा बनाने के लिए तांत्रिक अनुष्ठान करना, जादुई शीशे से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना; प्रेतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति के मुँह से उत्तर हासिल करना; ईश्वर की आज्ञाएं प्राप्त करना; असंख्य देवों की पूजा करना; मुँह से अग्नि की ज्वालायें निकालना; मन्नतें अंजाम चढ़ाना, नपुंसक बनाना; घर को पवित्र या शुभ बनाना; बलि चढाना, उल्टियाँ या दस्त लगाना; सिर, नाक कान इ॰ का इलाज करना।

5) मृत्यु उपरांत :- मृत्यु के उपरान्त शव का दाह-संस्कार करना; मृतक की इच्छाओं के अनुरुप अनुष्ठान करना; मृतक की आत्मा को शान्त करना; मृत्यु उपरान्त अनेक विशेष दिवसों को मनाना; मृत्यु उपरान्त उसे स्वर्ग या नर्क में होने वाली तकलीफों में आराम दिलाने के लिए अनुष्ठान करना इ॰

मॅजी तांत्रिकों ने नर्क की यातनाओं की इतनी भयानक तस्वीर पेश की हुई थी की नर्क के खौफनाक अंजाम से मरने के नाम पर सबका मन काँपने लगता था। तांत्रिकों ने लोगों के मन में डर डाला था की नर्क की यातनाएं भोगने के बाद भी उसकी मुक्ति नही होगी बल्कि पुर्नजन्म में पापी व्यक्ति सांप, चूहा कीडा, गाय, बकरा, सूवर, किसी भी रुप में जन्म ले सकता है। बकरे के रुप में जन्म लेने पर काटे जाने का डर, सूअर बन कर मैला खाते रहने की धीन, कीडा बनने के बाद किसी पक्षी व्दारा निगल लिए जाने इ॰ डर से पुर्नजन्म के चक्कर से बचने के लिए जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति तथा बाद में उसका परिवार आर्य तांत्रिकों के मजबूत शोषण-गिरफ्त में बेबस होकर रह जाता था। स्वर्ग नर्क इ. संकल्पनाएं बहुत बाद में मॅजी तांत्रीकों में पैदा हुई है।

मध्य-पूर्व में अथर्वन / अग्निहोत्री / मॅजी ज्यू-रॅबी कहलाये गए। भारत में उन्हे ब्राह्मण कहा गया। तिब्बत में वे लामा कहलाये गए। बदनाम तंत्रयान का विकास अथर्ववेद के टोने-टोटके तथा आर्यो के लैंगिक यज्ञों की गतिविधियों को मिलाकर पैदा हुआ है जिसका मकसद अलौकिक ताकतों को हासिल करना है।

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य लैंगिक संबंधों में अत्यंत उदार थे !

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो में नैतिकता की संकल्पनाओं का विकास नही हुआ था इसलिये किसी भी फायदे के लिये आर्य महिलाएं लैंगिक संबंधों के लिये तत्पर रहती थी।

ऋग्वेद की किताब 10. 61 वे श्लोक (hymn) के 5-7 Verses को पढे तो आपको आश्चर्य होगा कि उनका अनुवाद अंग्रेजी भाषा की बजाय लॅटिन भाषा में किया गया है। गुगल तथा याहु पर भाषांतर की सुविधा होने के बावजूद इनकी अश्लीलता की वजह से वे इनका भाषांतर नही करते। इनमें ब्रह्मा व्दारा अपनी पुत्री से लैंगिक संबंध बनाने का वर्णन है। वेदों में पिता व्दारा पुत्री को तथा भाई व्दारा बहन को गर्भवति बनाने के कई वाकये है। अपनी बेटी सतरुपा के जवान होते ही वशिष्ठ ने उससे शादी कर ली। ब्रम्हा ने भी अपनी बेटी सतरुपा से शादी की। ऋग्वेद (Rig Veda 3.31.1-2) के मुताबिक ब्रह्मा ने अपनी बेटी के साथ शारीरिक संबंध कायम किया। सतपथ ब्राह्मणा (1:7:4:1-7, Jnanasamhita 18:62-80) के मुताबिक प्रजापति को अपनी बेटी की लैंगिक चाह थी और उसने अपनी बेटी से संबंध बनाया। ... स्वायम्भुव मनवन्तर में प्रजापति मरिचिकी की पत्नि उर्णा के गर्भ से छह पुत्र उत्पन्न हुए थे। वे सब देवता थे। वे यह देखकर कि ब्रह्माजी अपनी पुत्री से समागम करने के लिये उद्यत है, हँसने लगे। इस परिहासरुप अपराध के कारण उन्हे ब्रह्माजी ने शाप दे दिया ... (भागवत पुराण p. 804) ..... अपनी सुन्दरी कन्या (उषा) के शरिर में ब्रह्मा वा प्रजापति ने उस शुक्र (वीर्य वा रेत) का सेंक किया। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1454) जिस समय पिता युवती कन्या (उषा) के उपर पुर्वोक्त रुप से रतिकामी हुए और दोनों का संगमन हुआ, उस समय दोनों के परस्पर संगमन से अल्प शुक्र का सेक हुआ। सुकर्म के आधार स्वरुप एक उन्नत स्थान में उस शुक्र का सेक हुआ। (हिन्दी ऋगवेद, पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1454)

प्रजापति दक्ष अपनी कन्या सुव्रता को लेकर ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा वैराज में समवस्थित थे और धर्म तथा मन के व्दारा उपासीन थे। ब्रह्मा ने कहा हे दक्ष आपकी यह सुव्रत कन्या चार मनुओं को जन्म देगी। उस समय ब्रह्माजी के साथ ही मन से उन तीनों ने उस कन्या को गमन किया था। उसने रुप से उन्ही के सदृष्य चार कुमारों को जन्म दिया।(ब्रह्माण्ड पुराण व्दितीय खंड, संपादक डॉ. चमनलाल गौतम p. 77)

महाभारत (Mah.wh.153) के मुताबिक श्रीकृष्ण के अपनी बहन सुभद्रा के साथ शारीरिक संबंध थे। उसके साथ उसके भाई बलराम के भी शारीरिक संबंध थे। ऋग्वेद (Rig Veda 6.55.4) के मुताबिक पुशन अपनी बहन सुर्या का प्रेमी भी था। ऋग्वेद (Rig Veda 10.3.3) के मुताबिक अग्नि अपनी बहन का प्रेमी था। ऋग्वेद (Rig Veda 1.116.19) के मुताबिक अश्वीनों ने सुर्या और सावित्री नाम की अपनी बहनों से विवाह किया। ऋग्वेद (1.91.7) के मुताबिक बेटी को गर्भवति बनाकर पिता ने अग्नि को जन्म दिया। सावितार व उषा (Savitar and Ushas) भाई बहनों के संबंधों से अश्वीनों जन्में। (Apte 11) ऋग्वेद (Rig Veda 10.10.11) में यमी अपने भाई यम को संभोग के लिये आमंत्रित करती है।

पुशन ने अपनी माँ से, मनु ने उसकी माँ सतरुपा और श्रध्दा से संभोग किया। बाप और बेटा दोनों मिलकर एक ही औरत से संभोग करने के कई उदाहरण है। ब्रम्हा मनु का बाप और सतरुपा उसकी माँ है। सतरुपा मनु की भी बीवी है इससे स्पष्ट है कि बाप

और बेटे मिलकर एक ही औरत की भागीदारी करते थे। हरिवंश के दूसरे अध्याय से पता चलता है कि सोमा के दस पिता थे। सोमा को मरिशा नाम की बेटी थी। सोमा ने अपने दस पिताओं के साथ अपनी बेटी मरिशा से संभोग किया। इसी अध्याय में लिखा है कि सोमा के बेटे दक्ष प्रजापति ने अपनी 27 बेटियों को अपने बाप सोमा को संभोग तथा प्रजनन के लिए दिया। (Dr B.R. Ambedkar , Vol. 4 , P. 296,297) इन्द्र पर आरोप लगे है कि उसने अपनी माँ के साथ बलात्कार करके अपने पिता की हत्या की। इन्द्र ने उषा से बलात्कार किया।(Dr. Deviprasad Chattopadhyaya, Bhartiya Darsan, p. 78-79) पर्शियनों में भी भाई बहनों के बीच, पिता पुत्री के बीच, माँ बेटे के बीच विवाह हुआ करते थे। रईसों के पास क्षमता के अनुसार रखैलें होती थी। अविवाहीत युवक युवतियों तथा विवाहित स्त्री पुरुषों के संबंधों को भी मान्यता थी बशर्ते कि वे गर्भपात न करे। (Will Durant,375, 376) कामदेवता रति का बेटा तथा प्रेमी भी है।

मनु ने अपनी तिसरी कन्या प्रसुति का विवाह ब्रह्माजी के पुत्र दक्षप्रजापति से किया था। (भागवत पुराण, p.187) राजा सौदास के कहने से वसीष्ठ ने सौदास की पत्नी मदयन्ती को गर्भाधान कराया।(भागवत पुराण, p. 502) वृहस्पति ने अपने भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी से मैथुन कर उसे गर्भवती बना दिया। (भागवत पुराण, p. 525) व्यास ने अपने सन्तानहीन भाई की स्त्रियों से दृतराष्ट्र और पांडु दो पुत्र पैदा किये। उनकी दासी से तिसरे पुत्र विदुर हुए। (भागवत पुराण, p. 528) मनु ने अपनी बेटी इला से ब्याह रचाया। जान्हु ने अपनी बेटी जान्हवी से शादी की। सुर्य ने अपनी बेटी उषा से शादी की। हिरण्यकष्यपु ने अपनी बेटी रोहिणी से शादी की। वैदिक आर्यो में अपने सगे भाई की बेटी से शादी की अनुमति थी। धर्मा ने अपने भाई दक्षा की 10 बेटियों से ब्याह रचाया। वैदिक आर्यो में दादा ने पोती से ब्याह करने का भी प्रचलन था। दक्षा ने अपनी बेटी अपने बाप ब्रम्हा को दी जिस ब्याह से नारद का जन्म हुवा। दौहित्रा ने अपनी 27 बेटियों को अपने पिता सोमा को संभोग और संतति जनन के लिए दिया। भाईयों व्दारा बहन के साथ शादी करने की प्रथा वैदिक आर्यो में थी। पुशन ने अपनी बहन अछोदा व अमावसु से, पुरुकुत्सा ने नर्मदा से, विप्राचिती ने सिंहिका से, नाहुशा ने विरजा से, सुक्रउसना ने गो से, अमसुमत ने यसोदा से, दसरथ ने कौसल्या से, सुका ने पिराली से, तथा द्रौपदी ने प्रस्ती से ब्याह रचाया। ये सभी भाई बहन थे। ब्रम्हा के तीन बेटों में से एक बेटे दक्षा ने अपनी बहन से शादी की। बौध्द रामायण के अनुसार सीता राम की बहन थी। (Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 297,325, vol. 3, P. 155) मत्स्य पूराण के मुताबिक कृष्ण के पुत्र सांबा ने कृष्ण की बीबीयों से अनैतिक संबंध बनाए हुए थे जिसके लिए कृष्ण ने अपने पुत्र सांबा तथा अपनी बीबीयों को खुब भला बुरा कहा। सांबा के भाई प्रद्युमना ने अपनी दायी माँ से विवाह रचाया। (Ibid, Vol. 4, P. 304) ऋग्वेद में यमी अपने भाई यम को अपने साथ संभोग के लिए आमंत्रित करती है। इससे भी अश्लील संवाद सुर्य तथा पुशन के बीच (R.V. Mandal X;S85,37 तथा इन्द्र और इंद्राणी के बीच (Mandal X;S 86,6) है। बाप ने बेटी से, माँ ने बेटे से और बाप-बेटे ने एक ही स्त्री से संबंधों से बडे विचित्र रिश्ते निर्माण हुए है।

विष्णु की तीन बिबियां आपस में लडती रहती थी इसलिये विष्णु ने लक्ष्मी को अपने पास रखकर गंगा शीव को तथा सरस्वती ब्रह्मा को दे दी। (Brahma Vaivarta Purana 2.6.13-95) सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री थी, विष्णु की बिबी होने के नाते उसकी माँ भी थी। ब्रह्मा विष्णु की नाभी से निकले कमल में पैदा हुआ इसलिये ब्रह्मा विष्णु का पुत्र

भी है। ब्रह्मा और सरस्वती के संबंधों से स्वयांभुमारु (Swayambhumaru) नामक पुत्र और सतरुपा (Satarpa) नाम की बेटी हुई। स्वयंभुमारु और सतरुपा के लैंगिक संबंधों से दो बेटों और दो बेटियों का जन्म हुआ। द्रौपदी के पांच पति थे। (http://www.topix.com/Incest The Father Commits Incest With His Daughter - Topix.htm)

आर्यो में अतिउदार लैंगिक संबंध !

वेदकालीन आर्य अपनी बीवीयों तथा बेटियों तक को बेचते थे। हरिवंश के उन्निसवे अध्याय में बताया है कि पुण्यक व्रत करने वाले व्यक्ति ने किसी ब्राह्मण से उसकी बीवी खरीदकर उसे व्रत के पूजारी ब्राह्मण को फीस के रुप में देना चाहिये। वैदिक काल के आर्य अपनी महिलाओं को संभोग हेतु औरों को किराए से देते थे। महाभारत के 103-123 अध्यायों में बताया है कि राजा ययाती ने अपनी बेटी माधवी गलवा ऋषि को भेंट कर दी। गलवा ने उसे तीन राजाओं को किराए से दिया। बाद में गलवा ने माधवी को अपने गुरु विश्वामित्र को दिया। माधवी से एक पुत्र होने के पश्चात विश्वामित्र ने माधवी वापस कर दी। गलवा ने माधवी उसके पिता ययाती को वापस की। बेटी बेचने की प्रथा अर्श विवाह के रुप में दिखाई देती है। लडके का पिता बेटी की योग्य कीमत, गो मिथुन (गाय और बैल) चुकाकर अपने लडके के लिए दुल्हन प्राप्त करता था।(Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 298-299 ,300, 301) वेदकालीन आर्यो में नियोग प्रथा थी। पत्नी अपने पति के अलावा जिन व्यक्तियों से संभोग और गर्भ धारणा कर सकती है उस व्यक्ति को 'नियोग' कहते है। माधुती को उसके पति ने एक नियोग मंजुर किया हुआ था। अंबीका को एक नियोग था लेकिन उसे दूसरे नियोग का भी प्रस्ताव किया गया था। सरदंदयानी को तीन नियोग थे। पंडु ने अपनी पत्नी कुंती को चार नियोग की इजाजत दी हुई थी। व्युसीसस्टवा को सात नियोग तथा वली ने अपनी पहली बीवी को ग्यारह तथा दूसरी को छह नियोग रखने की इजाजत दी हुई थी। नियोग के लिए उसका पति बच्चे पैदा करने में अक्षम होना चाहिये ऐसी कोई शर्त नही होती थी। तीसरे जनमेजय के पूरोहित वेद की पत्नी ने वेद के शिष्य उटंक से प्रार्थना की कि वह उससे संभोग करे। उप्पक की बीवी अन्यों से संभोग के लिए स्वतंत्र थी। उसे अपने पति के शिष्यों से स्वेतकेतु नाम का पुत्र पैदा हुआ। जतिला गौतमी नामक ब्राह्मण स्त्री के सात पति थे जो सभी ऋषी थे। ब्रहस्पति ने अपने भाई उताथ्या की बीवी से उताथ्या की मर्जी से भोग संबंध कायम किये थे। जब दुर्योधन ने द्रोपदी को उसके पांच पति होने पर उसे गाय कहा तो उसका जवाब था कि उसके पति ब्राह्मण नही, इसका उसे अफसोस है।(Dr Ambedkar, Vol. 4 ,P. 299-300)

राजा पाण्डु वन में रहते थे। .... उनकी आज्ञा के अनुसार कुन्ती के गर्भ से धर्म के अंश से युधिष्ठिर का जन्म हुआ। वायु से भीम और इन्द्र से अर्जुन उत्पन्न हुए। पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के अंश से नकुल-सहदेव का जन्म हुआ। अविवाहित कुन्ती के गर्भ से सुर्य से कर्ण का जन्म हुआ था। (लिंग पुराण, p.23)

वैदिक काल में लडकियाँ बिना शादी किये किसी से भी बच्चे पैदा कर सकती थी। कुंती के पंडु से ब्याह करने से पहले अन्य लोगों से कई बच्चे हुए थे। भीष्म के पिता शांतनु से शादी करने के पहले मत्स्यगंधा के पाराशर ऋषी के साथ संभोग संबंध थे। कई आदमी जिस औरत के साथ संभोग करते थे उस स्त्री को ''गणिका'' कहा जाता था। संभोग का दिन पहले से ही तय स्त्री को ''वारांगणा'' कहते थे। (Dr Ambedkar,

Vol. 4 , P. 109, 295) एक पुरुष की कई बिवियां होने के तथा कई पुरुष मिलकर एक ही स्त्री की भागीदारी करने के कई वाकये है। अथर्ववेद के (Atharva Veda 14/1) श्लोक ''ओ पुरुषों इस स्त्री को गर्भवती बनाओ'' से भी उपरोक्त प्रथा की पुष्ठी होती है। अथर्ववेद (Atharva Veda,14/2/60) के मुताबिक कोई विधवा दूसरा विवाह नही करती थी तो उसके सीर को मुंडा दिया जाता था।(Refer 'Arya Niti Ka Bhadaphor'. 5th Edition page 14; http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm). दशरथ के पुत्र महायशश्वी वीर चतुरंग हुए, जो ऋषी श्रंग की कृपा से उत्पन्न हुए थे।(संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 27) केसरी नामक श्रैष्ठ वानर अंजना के पति थे। अंजना ने वायू के अंश से हनुमान को जन्म दिया। (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 156) महाभारत के आदि पर्व के त्रेसठ वे अध्याय में बताया गया है कि कैसे ऋषि पाराशर ने सत्यवती उर्फ मत्स्यगंधा के साथ खुले आम लोगों के सामने संभोग किया। आदि पर्व के एक सौ चार वे अध्याय के अनुसार ऋषि दीर्घातमा ने ऐसे ही खुले आम संभोग किया। महाभारत में ऐसे वाकयों की कमी नही है। (Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 298-299 ,300, 301) केवल लैंगीक सुख के लिए परस्पर सहमति से कायम लैंगिक संबंधों को आर्यो में गंधर्व विवाह कहते है।

मनु के अनुसार ''पत्नी, पुत्र तथा गुलामों की कानूनन अपनी खुद की कोई संपत्ति नही होती। वे जो भी आमदानी अर्जित करेंगे उसपर परिवार के प्रमुख यानी पिता / पति की मिल्कीयत होगी। (Dr. B. R. Ambedkar, Vol. 4, P. 226-227, 232) इसलिए ब्राह्मण धर्म का कानून निम्नलिखित तेरह प्रकार के पुत्रों को मान्यता प्रदान करता है : - 1) औरस :– अपनी ब्याहता बीबी से होनेवाला पुत्र 2) क्षेत्रजा :– नियोग के कारण होने वाला पुत्र 3) पौत्रिकपुत्र :– निपुत्रीक पिता व्दारा नियुक्त किये व्यक्ति से अपनी कुँआरी अथवा विवाहित पुत्री को गर्भवती बनाकर हासील किया गया पुत्र जिसपर लडकी के पिता का अधिकार माना जाता था 4) कानिना :– शादी के पहले बीबी के पुत्र को उसके पति ने अपने पुत्र का दर्जा देना 5) गुधजा :– पति को शक है कि पुत्र उसके संबंधों से नही हुआ है 6) सहोधजा :–श्शादी के पहले भावी पति से हुआ पुत्र 7) पुर्नभव :– पति व्दारा त्याग देने के बाद अन्य व्यक्तियों से संबंधों से हुए पुत्र के साथ उस स्त्री को दोबारा परिवार में शामिल किया जाना 8) पारासव :– ब्राह्मण का शुद्र पत्नी से हुआ पुत्र 9) दत्तकः– माँ बाप व्दारा अपने पुत्र को दूसरे व्यक्ति को पुत्र के रुप में देना। 10) कृत्रिम :– किसी को उसकी मर्जी से पुत्र बनाना 11) क्रिता :– माँ बाप से उसके पुत्र को खरीदकर उसे अपना पुत्र बनाना 12) अपविध्दा : – जिसे माँ बाप पहले छोड चुके है तथा बाद में उसे गोद लेकर पुत्र का दर्जा देते है 13) स्वयँमदात्ता : – माँ बाप व्दारा त्याग दिये गये पुत्र की विनती से उसे पुत्र स्वीकार करना। (Dr. B. R. Ambedkar, Vol. 4, P. 227-228)

अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो में स्त्रियों के बलात्कार को मान्यता थी !

ब्रहदारण्यका (Brhadarankyaka) उपनिषद (6.4.9,21) के मुताबिक अपनी माहवारी के बाद जिस महिला ने अपने कपडे बदल लिये है वह योग्य महिला है। इसलिये उसे संभोग के लिये आमंत्रित करना चाहिये। वह इन्कार करती है तो उसे प्रलोभन देना चाहिये, वह नही मानती तो उसे लाठी, घुंसे इ. से पीटते हुए उसपर काबू करते हुए कहना चाहिये कि मै तुमसे तुम्हारा लाजवाब रुप अपने पौरुषत्व व योग्यता से छीन लेता हुं।(http://www.apologeticspress.org/Apologetics Press - An Investigation of Hindu Scripture.htm) इन्द्र ने ऋषि गौतम का भेस बनाकर गौतमी से शारीरिक संबंध बनाया।

क्रोधित गौतम ऋषि की याचनाएं करने के बाद गौतम ऋषि ने कहा - पुरंदर ! तुम्हारा कल्याण हो। तुम गोदावरी के तट पर जाओ और उसमें स्नान करो। इससे तुम्हारे सारे पाप क्षणभर में धुल जाएंगे। (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 160) बलात्कार का समर्थन ब्राह्मण धर्म के विवाह प्रकारों से भी होता है। 1) राक्षस विवाह :– स्त्री को अगुआ कर बाधा बनने वाले स्त्री के संबंधियों की हत्या कर उसे वधु बनाने को राक्षस विवाह कहते है। 2) पिसाच विवाह :– सोयी हुई, मादक पदार्थो से मदहोश अथवा मंद बुध्दी अथवा नासमझ से बलात्कार इ॰ से स्थापित संबंध को पिसाच विवाह कहते है।

आर्य मुक्त रुप से अपने लैंगिक संबंधों की चर्चा करते थे !

डॉ. चार्ल्स के मुताबिक रामायण में इतने अश्लील संवाद है कि उसे आम लोगों के सामने नही पढा जा सकता। राम न सिर्फ सीता की सुंदरता का लैंगिक रुप से (lewdly) वर्णन करता है (refer to C.R. Srinivasalyengar's translation of Aranya Kandam - chapter 46) बल्कि किसकिंड कांडम् में राम सीता के साथ अपने यौन संबंधों का वर्णन अपने भाई लक्ष्मण से करता है।(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm) वैदिक काल में माँ, बाप और बेटा अपने यौन संबंधों पर मुक्त रुप से चर्चा करते थे। जैसे कि :- (इन्द्राणी की उक्ति) - मुझसे बढकर कोई स्त्री सौभाग्यवति नही है - सुपुत्रवाली भी नही है। मुझसे बढकर कोई भी स्त्री पुरुष (स्वामी) के पास शरीर को नही प्रफुल्ल कर सकती, और न रति समय में दोनों जांधों को उठा ही सकती है।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1498) (वृषाकपि की उक्ति) - माता (इंद्राणी) तुमने सुंदर लाभ किया है। तुम्हारा अंग, जंघा मस्तक आदि आवश्यकतानुसार हो जाएंगे प्रेमालाप से कोकिलादी पक्षि के समान तुम पिता को प्रसन्न करो। इन्द्र सर्वश्रेष्ठ है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1498) (इन्द्राणी की उक्ति) - इन्द्र, वह मणुष्य मैथुन करने में नही समर्थ हो सकता, जिसका पुरुषांग दोनों जघनों के बीच लंबायमान है। वही समर्थ हो सकता है जिसके बैठने पर, लोमयुक्त पुरुषांग बल प्रकाश करता वा फैलता है। इन्द्र सर्वश्रेष्ठ है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1499) (इन्द्र की उक्ति) - वह मणुष्य मैथुन करने में नही समर्थ हो सकता, जिसका पुरुषांग बैठने पर, लोमयुक्त पुरुषांग बल प्रकाश करता वा फैलता है। वही समर्थ हो सकता है जिसके बैठने पर, जिसका पुरुषांग दोनों जघनों के बीच लंबायमान है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1499) पुषा जिस नारी के गर्भ में पुरुष बीज बोता है, उसे तुम कल्याणी बनाकर भेजो। कामिनी होकर वह अपना उरु-व्दय विस्तारित करेगी और हम कामवश होकर उसमें अपना इन्द्रिय प्रहार करेंगे। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1496)

बंगाली रामायण (Kritivasa Ramayana) में समान लिंग के इन्सानों के बीच शारीरिक संबंध बनाये जाने के उल्लेख है। भगीरथ के पिता की उसके पैदा होने के पहले ही मौत हो चुकी थी तब शंकर के आशीर्वाद से उनकी दो स्त्रियों के बीच हुए लैंगिक संबंधों से ऋषि भगीरथ का जन्म हुआ। विष्णु मोहिनी का रुप धारण करता था। विष्णु ने शिव के सामने मोहीनी का रुप धारण किया और शिव कामोत्तेजित होकर मोहीनी के पीछे दौडा। शीव और विष्णु के साथ हुए इसी शारीरिक संबंधों से विष्णु की पीछाडी (arse) से अयप्पा का जन्म हुआ।(Queer Sexuality: A Cultural Narrative of India's Historical Archive Rohit K Dasgupta University of the Arts London)

आर्यो के यज्ञ का लैंगिक स्वरुप !

यज्ञ में भुने हुए माँस के साथ आर्य सोमा शराब पीते थे। सबके सामने खुले आम स्त्री पुरुष आपस में संभोग करते थे।(Dr,B.R. Ambedkar , Vol. 4 , P. 294, vol. 3, P. 174-175) **राजवाडे के अनुसार यज्ञ का अर्थ एक जगह इकट्ठे होकर यभनक्रिया अथवा जनन क्रिया करना है। लोहयुग के पूर्व के आर्य रात को आग जलाकर इकट्ठा होकर मदिरा के नशे में उन्मत्त होकर यौनक्रिडायें करते थे। कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से संभोग कर सकता था, यही उस वक्त का धर्म माना जाता था। वे यौन संबंधी समस्याओं की चर्चा करते थे तथा वही गर्भधान करते थे इन सब बातों को ही यज्ञ कहा जाता था।** (व्यंकटेश आत्राम, p. 153-154) **सभी यज्ञ इस कल्पना पर आधारित है कि इस दौरान लैंगिक संबंध बनाने से आध्यात्मिक खुशी भी हासिल होती है। आर्थर अवॅलॉन** (Arthur Avalon) **ने शक्ति और शक्ता नामक तंत्रयान के ग्रंथ के हवाले से कहा है कि यज्ञ के समय किये जाने वाले संभोग को पवित्र और अलौकिक माना गया है। इडा (औरत) कहती है कि अगर तुम यज्ञ के समय मेरे साथ संभोग करोगे तब मेरे जरिये जो भी कामनाएं तुम व्यक्त करोगे देवताओं व्दारा वे सब पूरी की जाएगी।**(http://sacred-sex.org// Maithuna in Tantra Shastra and Veda.htm) **चंदोग्या उपनिषद के अनुसार ऋषियों का नियम था कि संभोग की इच्छा करने वाली स्त्री के साथ यज्ञ स्थल पर सभी लोगों की उपस्थिती में खुले आम संभोग करते थे। इस नियम को धार्मिक मान्यता थी। पहले इस को 'वामदेव व्रत' के नाम से जाना जाता था। वामदेव व्रत 'वाम मार्ग' के नाम से जाना जाने लगा।** (Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 298-299 ,300, 301) **ओम चिन्ह लैंगिक संबंधों को दर्शाता है। आर्यो के तंत्रयान में लिंग-योनी संबंध को बेहद महत्व है। यह एक पवित्र चिन्ह माना जाता है। इंटरनेट के एक ब्लाग पर ब्लॉग के लेखक व्दारा भारतीय स्त्रोतों से प्राप्त कुछ आकृतियां दी है। जिससे ओम चिन्ह का संबंध यौन क्रियाओं से साबित होता है।** (http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm)

जानवरों के साथ संभोग को आर्यो में पूरी तरह से मान्यता थी !

यज्ञों में जानवरों के साथ भी लैंगिक संबंध बनाया जाता था। सतपथ ब्राह्मणा (13.5.2.1-10) **के मुताबिक** {**अश्वमेध यज्ञ में**} **वे घोडे के लिंग को मुख्य रानी की योनी में स्थापित करते है उस वक्त वह कहती है 'जोश, ताकत और पुरुषत्व से ओतप्रोत नर, बीज दान करने वाला बीज का दान करें'** ('May the vigorous virile male, the layer of seed, lay the seed') **ऐसा वह संभोग के लिये कहती है।**(http://www.apologeticspress.org/Apologetics Press - An Investigation of Hindu Scripture.htm) **महाभारत के वनपर्व के सौ वे अध्याय में बताया गया है कि ऋषि विभंदका ने हिरण के साथ संभोग किया।** (Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 298-299 ,300, 301) **भारत के खजुराहो इ. मंदिरों में औरत-आदमियों के बीच के ही नही बल्कि पुरुषों व्दारा गाय के साथ लैंगिक संबंध भी दिखाये गये है। यहांतक कि जानवरों को औरतों के साथ लैंगिक क्रिया में लिप्त दिखाया गया है।** (http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm)

मंदिर के उपरोक्त शिल्प में जानवर के साथ एक पुरुष संभोग कर रहा है।

आर्यो में स्त्री-पुरुष के जननेंद्रीयों को पूजने की प्रथा थी। अथर्व वेद के अनुसार ऐसा समुदाय उनके धर्म का ही धटक होकर उसे स्काम्भा के नाम से जाना जाता था। (Dr Babasaheb Ambedkar , Vol. 4 , P. 294-295)

आर्य शराब और जुँए को गौरवास्पद कृत्य समझते थे !

शराब पीना आर्य धर्म का अभिन्न तथा आवश्यक हिस्सा था। वे सोम नाम की शराब पीते थे। महिलायें भी शराब पीती थी। शराब पीना सम्मान जनक बात मानी जाती थी। ऋग वेद में कहा गया है कि ''मदिरा पीने के पहले सुर्य की पूजा अवश्य करनी चाहिये।'' रामायण के उत्तरखंड में उल्लेख है कि राम और सीता मदिरा का सेवन व माँसाहार करते थे। महाभारत के उद्योगपर्व में उल्लेख है कि अर्जुन तथा श्रीकृष्ण शहद से बनी शराब पीकर इतने मदहोश थे कि श्रीकृष्ण के पैर अर्जुन की गोद में तथा अर्जुन के पैर द्रोपदी और सत्यभामा की गोद में थे। (Dr B.R. Ambedkar , Vol. 4 , P. 296, 110) आर्य जुँआरियों की जमात थी। भाग्यशाली पांसे (Dice) को क्रित, सबसे दुर्भाग्यशाली पांसे को कली तथा बीच के मध्यम भाग्यशाली पांसो को त्रेता और व्दापर कहा जाता था। जुँआ खेलना प्रतिष्ठा की बात थी। पांडवों के बडे भाई धर्मा ने जुएँ में राज-पाट के साथ पांडवों की सम्मिलित बीवी द्रोपदी हार दी। धर्मा ने दलील दी कि एक इज्जतदार आदमी होने के नाते जुएँ के लिए दिया गया निमंत्रण ठुकराना उसके बस से बाहर था। राजा नल ने पास्कर को जुएँ में अपना राज-पाट सब कुछ हार दिया और जंगल में जाकर भिखारियों की तरह अपना जीवन बिताने लगा। (Dr,B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 295, vol. 3, p.153 -154)

अलबिनो-निन्डरथॉल वंशी आर्य नाग-द्रविडों के धोखेबाज सेवक थे !

उत्क्रांति के सिधान्त तथा मानव विस्थापन के अध्ययनों से स्पष्ट है कि होमोसेपियन मानवों की उत्पत्ति अफ्रिका में हुई। अफ्रिका से एक समूह दक्षिण भारत में बसा तो दूसरे समूह के लोग अरब तथा ईरान होते हुए युरोप बस गए। आर्यो व्दारा पांटीक घास के मैदानों में आने के पहले ही ईरान, अफगानीस्तान, भारत तथा युरोप में अफ्रिका वंशीय काले लोग भली भाँति स्थापित चुके थे।

वास्तव में काले लोग मेडिटेरॅनियन (Mediterranean) बेसीन, मिडल इस्ट, संपूर्ण दक्षिण एशिया तथा इंडो-चीनी पेनिनसुला में बस चुके थे। अफ्रिका वंशी इजिप्त, मेसोपोटॅमिया तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में बस चुके थे। उन्होने सबसे पहली कृषिप्रधान नागरी संस्कृति कायम की। उन्होने ही इजिप्त, सुमेर तथा भारत की संस्कृतियों की नींव

रखी। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) भारतीय उपमहाव्दीप में रहने वाले सबसे पहले लोग द्रविड थे जो आज बहुतायद में दक्षिण भारत में है। वे तमिल भाषा बोलते थे। उनकी लिपि ब्राह्मी लिपि थी। (Vedas and Upanishads http://www.san.beck.org/index.html) Zvelebil के मुताबिक द्रविड लोग उत्तर-पूर्वी ईरान के पर्वतीय क्षेत्र में ईसापूर्व 4000 वर्ष पहले रहते थे। McAlpin ने शब्दों तथा व्याकरण संबंध ी समानताएं इलामाईट तथा द्रविड लोगों के बीच गिनाई है।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) ब्रहुई नामक द्रविड भाषा बोलने वाले लगभग एक लाख लोग पश्चिमी पाकिस्तान, ईरान और अफगानिस्तान के निकटवर्ति क्षेत्रों में रहते है। भाषाशास्त्र तथा अनुवंशशास्त्र (genetics) के मुताबिक वे अपने बाकी द्रविड भाषा बोलने वालों से कई हजार साल पहले अलग हो गए थे। द्रविडन भाषाएं पूरे क्षेत्र में बोली जाती थी इस बात का सबूत दक्षिण-पश्चिमी ईरान में स्थित प्राचीन सुसा शहर के अवशेषों में मिले इलामाईट शीलालेखों से मिलता है।(http://boards.straightdope.com/The Straight Dope How come we can't decipher the Indus script.htm) द्रविडों, इंडस, प्राचीन पर्शिया, टीग्रीस इफ्रेटस् (Tigris-Euphrate) घाटी के मेल्लुहा (Melluha), इलम (Elam) तथा सुमेर सभ्यताओं के धनिष्ट संबंध थे। David W. McAlpin का दावा है कि इलम और द्रविडों का वंश समान है। (http://arutkural.tripod.com/Sumero Dravidian Studies.htm)

कुल 73 भाषाएं द्रविड भाषाओं के रुप में पहचानी और वर्गिकृत की जा चुकी है। ये भाषाएं भारत, दक्षिण-पश्चिम इरान, दक्षिण अफगानिस्तान, नेपाल, बंगलादेश तथा श्रीलंका इ. क्षेत्रों में 200 मिलियन लोग बोलते है। प्रसिध्द द्रविड भाषाएं तमिल, कन्नड, मलयालम, तेलुगु तथा तुलु है। द्रविड लोगों में जिनका शुमार होता है वे है : 1) ब्राहुई लोग :- जो मुख्यतः पाकिस्तान के बलुच प्रांत में पाये जाते है 2) कुरुख लोग :- बंगला देश तथा भारत में पाये जाते है 3) खोंड :- भारत के ओरिसा तथा आंध्र प्रदेश में पाये जाते है तथा कुई नामक द्रविड भाषा बोलते है 4) गोंड :- मध्य भारत की प्रमुख मूलनिवासी जमात है जो गोंडी भाषा बोलती है 5) कन्नडिगा :- मुख्यतः उत्तरी केरल और कर्नाटक में पाये जाते है 6) कोडावा :- कर्नाटक के कोडागु (Coorg) क्षेत्र में पाये जाते है 7) मलयाली :- मुख्यतः केरल में पाये जाते है 8) तमिल :- मुख्यतः तामिलनाडू तथा केरल, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रिका, सिंगापूर तथा मलेशिया में पाये जाते है 9) तेलगू :- मुख्यतः आंध्र प्रदेश, ओरिसा तथा तामिलनाडू में पाये जाते है। 10) तुलुवा :- दक्षिण कर्नाटक व उत्तरी केरल में पाये जाते है। उनके क्षेत्र को तुलुनाडू कहा जाता है।(http://www.newworldencyclopedia.org/Dravidian peoples - New World Encyclopedia.htm) कौलेश्वर राय के मुताबिक एक समय समूचे भारत जिसमें सींध, बलुचीस्तान, पंजाब भी शामिल है में द्रविड बसे हुए थे। कई द्रविड मेसोपोटॅमिया भी जाकर बस गए।(http://pkpolitics.com/discuss//People of Sub-Continent and their Herbrew Heritage « PKPolitics Discuss.htm)

कई इतिहासकारों तथा पुरातत्व वैज्ञानिकों का मानना है कि (आर्य) आने के पहले से ईरान में मातृसत्ता पध्दति को मानने वाले लोग बसते थे। (http://www.cais-soas.com/Medes, the First (Western) Iranian Kingdom - (The Circle of Ancient Iranian Studies - CAIS)©.htm) ईसापूर्व 1700 तथा उसके पहले से भारत की सत्ता काले अफ्रिकन कुशाईटों, नागों, तथा दस्यु नामक अफ्रिका वंशीयों के हाथों में थी। (http://www.civanharappana.org//Untold history The origin of Brahman and the Vedic hindu

religion! _ CIVAN HARAPPANA.ORGCIVAN HARAPPANA.ORG.htm) दास, दस्यु, असूर, पिशाच, इ. मूलनिवासी वेदिक आर्यो के विरोधी थे। वे अफ्रिका वंशी थे। (http://www.gurdjieff-con.net/The Gurdjieff Con » The Gita and the Neo-Brahmin anti-Buddhist reaction.htm) वायू, मत्य, तथा ब्रह्मांड पुराणों में जिक्र किया गया है कि हिमालय की सात नदियां म्लेच्छों के देशों से होकर गुजरती है। म्लेच्छ का मतलब ऐसे लोग है जो आर्य नही है, आर्यो के बलि इ. विश्वासों को नही मानते और अजनबी है। कुछ सीमावर्ति क्षेत्र के आर्य असूर भाषा बोलने लगे।(http://en.wikipedia.org/Mleccha - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) आर्यो तथा अफ्रिका वंशियों के बीच की बाद में बनी सीमारेखा को हम पांटिक घास के प्रदेशों (Pontic Steppe) की सीमा को मान सकते है, जिसका नक्शा पेज क्र. 50 पर दिया जा चुका है।

मूलनिवासी अफ्रीकीवंशी नाग–द्रविड राजाओं ने किले, महल और खुबसुरत बाग. –बगीचे बनाये। ईरान में स्वर्ग का मतलब ही बाग बगीचों से युक्त महल है।

अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो की टोलियाँ एक-दूसरों पर हमला कर उनके जानवर छीन लेती थी। जानवर छीने जाने की हालत में पराजित घायल टोली के सामने जिन्दा रहने की समस्या पैदा हो जाती थी। ऐसी पराजित घायल अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो की टोलियाँ मौका मिलने पर नाग–द्रविडों के जानवर तथा खेतों का अनाज चुराते थे। इसलिये इन आर्यो को 'चोर' समझा जाता था। आर्य शब्द का मूल अर्थ चोर ही था।

कुछ पराजित लाचार पशुविहीन आर्यो को दयावश नाग-द्रविडों ने अपना सेवक बनाकर अपने नगरों से दूर बसने की इजाजत दे दी। नाग-द्रविडों के यहां नौकरी करने के लिये जूंओं से भरे अपने सीर को मुंडाकर रोज नहाने की उनपर शर्त लागु की। साफसुथरे होकर ही ये आर्य नाग-द्रविडों के नगरों में काम कर सकते थे इसलिये आश्रित आर्यो में यह विश्वास बैठ गया कि नदी में डूबकी लगाने से स्वर्ग मिलता है। खेतों में काम करने उन्हे रस्सी दी जाती थी। कुशल आर्यो की पहचान के रुप में जनेउ में बदल गई। ऐसे आश्रित आर्य मानते थे कि उनका जैसे पुर्नजन्म हो गया, इसलिये वे खुद को व्दीज कहते थे। नाग-द्रविड उन्हे खाने पीने को देते थे इसलिये वे नाग–द्रविडों को ''देव'' यानी देने वाले कहते थे। वे इस बात से डरते थे कि नाग-द्रविड कहीं उन्हे जंगल की बदतर हालातों में जीने के लिये न भेज दें। ऐसी बदतर जगहों को वे नर्क कहते थे। जो नाग द्रविड उन्हे स्वर्ग ले जाने के लिये आता था उसे वे 'देवदूत' कहते थे। भगवान यह शब्द बडे जमीदारों, राजाओं के लिये इस्तेमाल होता था। भगवान उसे कहा जाता था जिसके पास बडा भाग, जमीन और बगीचे यानि स्वर्ग है। श्रग्वेद की श्रचाओं से आर्यो की असहायता प्रकट होती है :- दाता मरुतों, तिनके के समान नीच होने पर भी मेरी प्रजाओं को बचाना। हमें उन्नत करो, ताकि हम बच जाये। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, प्रकाशक इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन), लिमिटेड, प्रयाग 1954 p.172-3) उन्नत होकर हमें, ज्ञान व्दारा, पाप से बचाओ। सब राक्षसों को जलाओ। हमें उन्नत करो, जिससे हम संसार में विचरण कर सके। इसी प्रकार हमारा हव्य-रुप धन देवों के गृहों में ले जाओ, जिससे हम जीवित रह सकें। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगो. विन्द त्रिवेदी) वरुण ! नमष्कार करके हम तुम्हारे क्रोध को दूर करते हैं और यज्ञ में हव्य देकर भी तुम्हारा क्रोध दूर करते है। हे असुर। प्रचेतः ! राजन ! हमारे लिये इस यज्ञ में निवास करके हमारे किये हुए पाप को शिथिल करो। प्राज्ञ (असूर) देवों, यज्ञ के प्रति तुम्हारे लाभ के लिये हवि देनेवाले और यज्ञगामी यजमान को यदि तुम लोग गृह प्रदान

करते हो, तो हे वासदाता और सर्व-धन - संयुक्त देवों हम तुम्हारे उसी मंगलकर गृह में तुम्हारी पूजा करेंगे।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1113) ऋग्वेद के उपरोक्त उध्दहरणों से स्पष्ट है कि आर्य नाग-द्रविड असूरों से सुरक्षा और लाभ की याचनाएं करते थे।

आर्यो ने नगर के बाहर बसी अपनी बस्तियों में अपने मालिक नाग-द्रविड देवों को बडी मिन्नतें कर आमंत्रित करना शुरु किया। इन बातों का वर्णन ऋग्वेद में भी पाया जाता है :- अग्निदेव ! चुंकि देवताओं का दूत-कर्म तुम्हे प्राप्त हो चुका है; इसलिये हव्या. कांक्षी देवों को जगाओ। देवों के साथ इस कुश-युक्त यज्ञ में बैठो। .. अग्नि ! पूजनीय और यज्ञवर्धक देवों को पत्नियुक्त करो। सुजिव्ह ! देवों को मधुर सोमरस पान कराओ। ... द्रविणोदा, ऋतुओं के साथ, त्वष्टा के पात्र से सोमपान करना चाहते है। ऋत्विक लोग ! यज्ञ में आओ, होम करो; अनन्तर प्रस्थान करो। ... अग्निदेव ! देवों की अभिलाषा करने वाली पत्नियों को इस यज्ञ में ले आओ। सोमपान करने के लिये त्वष्टा को पास ले आओ। ...जिस यज्ञ में सोम कूटने के लिये दो फलक, जांघों की तरह विस्तृत हुए है, उसी यज्ञ में ओखल व्दारा प्रस्तुत सोमरस, अपना जानकर, पान करो।

.... अश्विनिकुमारों, अगस्त्य के प्रति संतुष्ट होकर अपने यजमान के पुत्रादि और अपने सुख-भोग के लिये यज्ञ-भूमि में आगमन करो। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी 184-5) आर्यो की असहाय टोलियां आश्रित बनने के लिये नाग-द्रविड देवों से मिन्नतें करती थी यह बात ऋग्वेद के निम्न रिचा से स्पष्ट होती है।

उग्र इंद्र, ... जैसे तुम पहले हमारे पूर्वजों को मार्ग दिखाकर ले गए थे, वैसे ही हमें भी ले जाओ। ....(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.129&5)

इन्द्र यह व्यक्ति का नही बल्कि पद का नाम है यह भागवत पुराण के पेज क्रमांक 518 में स्पष्ट की गई है। आर्यो में टोली प्रमुख को इन्द्र कहा जाता था। नाग-द्रविड देव राजा थे इसलिये उन्हे भी आर्य इन्द्र नाम से संबोधित करते थे। इसे ध्यान में रखना बेहद जरुरी है वर्ना यह गलत अर्थ निकाला जाएगा कि यह घटनाएं आर्यो के राज्य में हो रही है। दक्षिण भारत में प्राप्त प्राचीन कलाकृति पर रावण को भी इंद्र के नाम से पूकारा गया है। इस कलाकृति के नीचे इन्द्रन रावणेश्वरन (Indran Ravaneswaran) लिखा है। यह तस्वीर हमने गुगल इमेज से रावण शीर्षक से सर्च की है। आप भी गुगल इमेज पर इस तस्वीर को देख सकते है। इससे स्पष्ट है कि इंद्र संबोधन किसी भी राजा, प्रमुख या महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिये इस्तेमाल किया जाता था। ब्राह्मण धर्म-ग्रंथों में कुछ जगह इंद्र को श्रामणों का दुश्मन और संहारक तो कुछ जगह मित्र भी बताया गया है। जिस जगह इंद्र को उनका मित्र बताया गया है वह इंद्र मूलनिवासी नाग-द्रविड देव है न कि आर्य की टोलियों का प्रमुख इंद्र।

आश्रित आर्यो व्दारा आयोजित यज्ञों में नाग-द्रविड देवों को सोम रस पिलाकर आर्यकन्याएं नाग-द्रविड देवों को अपने साथ संभोग करने के लिये अनुनय करती थी यह बात ऋग्वेद से स्पष्ट हो जाती है :- 'हमारे पिता का जो ऊसर खेत है तथा मेरे शरीर (गोपनीय इन्द्रिय) और पिता का मस्तक (चर्मरोग के कारण लोमशुन्य है) -इन तीनों

स्थानों को उर्वर और रोमयुक्त करों।' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1198) 'इन्द्र ! मेरे पिता का मस्तक (केश रहित) और खेत तथा मेरे उदर के पास के स्थान (गुह्येन्द्रिय) - इन तिनों स्थानों को उत्पादक बनाओ।' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1198) उपरोक्त श्रचा में आर्य कन्या संभोग का निमंत्रण देते हुए शायद अपने पिता के मुंडाए गए सीर पर बाल बढाने की अनुमति नाग-द्रविड देवों से मांग रही है।

'कामवर्षक इन्द्र, इस नारी को प्रथमपुत्र और सौभाग्यवाली करो। इसके गर्भ में दस पुत्र स्थापित करो - पति को लेकर इसे गॅरह व्यक्तिवाली बनाओ।' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1497) 'प्रियदर्शन और कल्याणकर्त्ता अश्विदय, आजकल तुम कहां, किसके घर में, आमोद-प्रमोद करते हो ? कौन तुम्हे बांधकर रखे हुए है ? किस बुध्दिमान यजमान के घर तुम गए हो ?' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1425) 'इन्द्र ! तुम्हे छोडकर मेरा मन अन्यत्र नही जाता। तुम्हारे ही उपर मैने अपनी अभिलाषा स्थापित रखी है। जैसे राजा अपने भवन में बैठता है, वैसे ही तुम लोग कुशों पर बैठों। इस सुन्दर सोम से तुम्हारा पान-कार्य संपन्न हो।' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1428) 'जो यजमान इन्द्र को पुडोडाश और दुध मिला सोम प्रदान करता है, निश्चय ही पाप से उसे इन्द्र बचाते है।'(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1115)

अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो में होड लगी रहती थी कि नाग-द्रविड देवों को खुश कर उनसे ज्यादा से ज्यादा लाभ किस तरह से हासिल किया जाये। आर्यो में आपस में भी यज्ञों के फायदों को लेकर आपसी प्रतिस्पर्धा तथा इर्षा पायी जाती थी जैसा कि ऋग्वेद के उध्दहरणों से स्पष्ट है :- 'हे अग्नि जो कोई हमारी हिंसा करता है, उसके यज्ञ में तुम कभी न जाना। किसी दुष्ट बुध्दि वाले प्रतिवासी (पडोसी) के यज्ञ में न जाना। तुम कुटिलचित्त भ्राता के ऋण (हवी) की कामना न करना। हम लोग भी मित्र या शत्रु व्दारा प्रदत्त धन का भोग नही करेंगे। केवल तुम्हारे ही व्दारा प्रदत्त धन का भोग करेंगे।' (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.608)

नाग-द्रविड देवों को अतिथी, भगवान मानकर अपनी महिलाओं को पेश करने का जैसे रिवाज कायम हो गया था। लिंग पुराण के मुताबिक :- पूर्व में सुदर्शन नाम के ब्राह्मण ने अतिथि पूजा से ही काल को जीत लिया था। गृहस्थों के भूमि पर अतिथि पूजन के सिवा तारने का दूसरा उपाय नही है। सूदर्शन ने पूर्व प्रतिज्ञा की और अपनी भार्या से कहा - हे सुभगे, हे सुव्रते ! मेरे वचन सुनकर तुझको गृह पर आये अतिथियों का कभी अपमान नही करना चाहिये। सभी अतिथि शिव का रुप ही है। इससे अपने शरीर को भी समर्पण करके अतिथि पूजा करनी चाहिये। भार्या पतिव्रता थी, पति की आज्ञा शिरोधार्त कर अतिथि सेवा करती रही। एक दिन साक्षात धर्म ही उन दोनों की श्रध्दा की परीक्षा करने को ब्राह्मण रुप धारण कर उनके घर पर आया। उस ब्राह्मणी ने पूजा की सब सामग्री से उस विप्र का पूजन भली प्रकार किया। भली प्रकार पूजा गया ब्राह्मण उस सुदर्शन की पत्नि से बोला - हे भद्रे, अन्नादी सामग्री की आवश्यकता नही, तु अपना शरीर ही अर्पण कर दे। लज्जा से युक्त वह पतिव्रता पति की आज्ञा का ध्यान करके नेत्र मूंदकर उसके पास चली गई और अपना शरीर उस ब्राह्मण को निवेदन कर दिया। उसी समय उसका पति सुदर्शन व्दार पर आया और बोला - हे सुभद्रे ! आओ, कहां गई हो, तब उस समय वह अतिथि बोला - हे सुदर्शन ! तुम्हारी भार्या के साथ मै मैथून में लिप्त हूं। हे विप्र सुरत के अंत में मै संतुष्ट होउंगा। सुदर्शन बोला - हे विप्र यथा कामना इसका भोग करो, मै आ रहा हूं। (लिंग पुराण, p.124-125) ''और तो क्या

- अपनी स्त्री को भी, जिसे मनुष्य समझता है कि यह मेरी है - अतिथी आदी की निर्दोष सेवा में नियुक्त रखे। लोग स्त्री के लिये अपने प्राण तक दे डालते है। यहां तक कि अपने माँ-बाप और गुरु तक को मार डालते है। उस स्त्री पर से जिसने अपनी ममता हटा ली, उसने स्वँय नित्यविजयी भगवान पर भी विजय प्राप्त कर ली।(भागवत पुराण p. 417) दाता को शिघ्रगन्ता अश्व अलंकृत करके दिया जाता है। उसके लिये सुन्दरी स्त्री उपस्थित रहती है। .... (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1544) जिस तरह दूध दुहने वाला दोहन के लिये गाय का बुलाता है, उसी प्रकार अपनी रक्षा के लिये हम भी सर्त्मशील इन्द्र को प्रतिदिन बुलाते है। हे सोमपानकर्ता इन्द्र ! सोमरस पीने के लिये हमारे त्रिषवण-यज्ञ के निकट आवो। तुम धनशाली हो; प्रसन्न होने पर गाय देते हो। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी) आर्य अपनी खुबसूरत औरतों को अच्छे खाने, अच्छी चीजों के बदले में भोगने दिया करते थे। नाग द्रविडों के खुबसुरत महलों यानि स्वर्ग में दाखिल होने आर्य अपनी खुबसुरत औरतें नाग–द्रविडों को बेच देते थे :- अश्विव्दय, ... युवक स्वामी और युवती स्त्री के सहवास सुख को मुझे भली भाँति समझा दो। अश्विव्दय, मेरी एकमात्र यही अभिलाशा है कि मै, स्त्री के प्रति अनुरक्त, बलीष्ठ स्वामी के गृह में जाउं।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी,p.1425) अन्न और ध ान वाले अश्विव्दय, तुम दोनों मेरे प्रति सदय होओ। मेरे मन की अभिलाषाएं पूरी करो। तुम कल्याण करने वाले हो। मेरे रक्षक होओ। पति-गृह में जाकर हम पति के लिये प्रिय बनें।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1425)

असूर नाग-द्रविडों से अपनी रक्षा करने की जिम्मेदारी झोरोस्टुरा के काल से ही नाग-द्रविडों के भ्रष्ट देवों की थी। भ्रष्ट देवों को आर्यो से दो अधिकार हासिल थे। पहला अधिकार यह था की ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य देवों की यज्ञ में भुरी भुरी प्रसंशा करके जानवरों की बलि चढाकर मदिरा के साथ माँस की दावतें देते रहेंगे। दूसरे अधिकार के रुप में देवों को आर्यो की स्त्रियों को भोगने का प्रथम अधिकार था। देव शक्तिशाली ही नही बल्कि विलासी वृत्ति के भी थे। देव समुदाय ने आर्य स्त्रियों पर आरंभ से ही अपनी मिल्कीयत स्थापित की थी। आर्यो के लिये यह बडे ही गर्व की बात थी कि उनकी स्त्रियों को किसी देव ने रख्खैल बनाया है तथा उसे गर्भवती बना दिया है।

ऋग्वेद के मुताबिक आर्य स्त्री पर पहला अधिकार सोमा का, दुसरा गंधर्व का, तीसरा अग्नी इ॰ और सबसे अंत में खुद आर्यो का अधिकार माना गया है। किसी भी आर्य पुरुष को आर्य स्त्री से शादी करने के लिये देवों को उचित भुगतान करके उनसे उनका अधिकार खरीदना पडता था। प्रत्येक हिन्दू विवाह में किया जाने वाला लाज होम जिसके बिना हिन्दू विवाह अवैध माना जाता है, देवों से उनके अधिकार खरीदने का प्रतिक है। हिन्दू विवाह की सप्तपदी प्रथा के अनुसार वर वधु को सात कदम इसलिये चलना होता है क्योंकि सातवा कदम उठाने के बाद देवों का आर्य स्त्री पर से अधिकार समाप्त माना जाता है। (Dr. Babasaheb Ambedkar ,Vol. 4 , P. 302, vol. 3, P. 157)

इजिप्त में मासूम और भली लगने वाली सुनहरे बालों वाली कन्याओं को खतरनाक दुष्ट ताकतें माना गया है। इजिप्त की लोककथाओं में दो भाईयों की कथा है जिसमें ऐसी ही रुपवति कन्या ने अपनी धूर्त बुध्दी से दो भाईयों को मोहीत कर उन्हे नष्ट कर दिया था। जेनेसिस के मुताबिक धरती पर इन्सान बढने लगे तब उन्हे बेटियां पैदा हुई। देवों के बेटों ने उन्हे देखा कि वे बडी सूंदर है और उन्होने उन्हे अपनी बिबियां बना लिया।(http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm) आर्य अपनी कन्याओं को न

सिर्फ अपने लाभ के संभोग के लिये प्रस्तुत करते थे बल्कि उन्हे भारी कीमत पर बेचते भी थे। आर्य–ब्राह्मणों में लडकियाँ बेचने का प्रचलन बहुजन संत तुकाराम के समय तक जारी था जिसका जिक्र उन्होने अपने अभंगों में किया है। संत तुकाराम ने ब्राह्मणों की इस स्थिती का उल्लेख किया है। : ''अठरा यातीचे व्यापार। करती तसकराई विप्र।। अश्वाचीया परी। कुमारी विकती वेदवक्ते।। आवडी पंडीताची। मुसाफावरी बैसली।'' जिस तरह बाजारों में घोडे बेचे जाते है ब्राह्मण अपनी कुँआरी लडकियों को उसी तरह बाजार में बेचने लगे। भट-ब्राह्मण साहुकारी करने में भी आनन्द लेने लगे। (वि.भी. कोलते, p.58, 59, 62, 65,67,88) चितपावन ब्राह्मणों में लडकियाँ बेचने और उन्हे गीरवी रखने का पेशा था। (रामचंद्र नारायण लाड, p. 8, 11, 15) आर्य-ब्राह्मणों ने लैंगिकता से लाभ कमाने का शास्त्र कामशास्त्र विकसित किया है। वात्स्यायन के काम शास्त्र में कामबाला ने अपने प्रेमी से कैसे धन की उगाही करनी चाहिये इसे विस्तार से समझाया है।

शिव के अनुयायी नंदी ने काम शास्त्र को एक हजार अध्यायों में पेश किया। उन्हे उध्दवलका के पुत्र श्वेतकेतु ने पांच सौ अध्यायों में पुर्नप्रस्तुत किया। बाभ्रव्या ने एक सौ पचास अध्यायों में उसका संक्षेपिकरण किया। बाभ्रव्या की मूल रचना को उसकी लंबाई की वजह से ध्यान में रखना कठिन था इसलिये वात्स्यायन ने उसे तथा इसके पहले के लेखकों की कृतियों को साररुप में पेश किया है।(http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part I Introductory Chapter I. Preface.htm)

एक प्रेमी कामबाला पर प्रेम करता है, दूसरा उसके लिये भारी खर्च करता है। ऋषियों का कहना है कि उदारता से खर्च करने वाले को प्राथमिकता देनी चाहिये। वात्स्यायन का मानना है कि सचमुच के प्रेमी को प्राथमिकता देनी चाहिये क्योंकि उसे खर्च करने वाला बनाया जा सकता है। जो खर्च करने में सिर्फ उदार है वह उसे कभी भी छोड सकता है। एक गरीब है तो प्राथमिकता धनी व्यक्ति को ही देनी चाहिये।

जब कामबाला को आशंका है कि उसका प्रेमी उसे छोड कर वापस अपनी बिबी के पास चला जाएगा या अपने सारे पैसे खर्च कर देने के बाद कंगाल हो गया है, या उसका अभिभावक उसे अपने साथ ले जाने वाला है। या वह अपना पद खोने वाला है, या वह अत्यंत अस्थिर मन का है ऐसी हालत में ज्यादा से ज्यादा धन हडपने की कोशिश करनी चाहिये।(http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VI About Courtesans Chapter V. Of Different Kinds of Gain.htm) कोई कामबाला प्रेमी को इसतरह छोड देती है तब उसने पूर्व के धनी प्रेमी से संबंध कायम करना चाहिये अगर उसके पास दोबारा धन इकट्ठा हो गया है और वह उससे मिलने का इच्छुक है। (http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VI About Courtesans Chapter IV. About a Reunion with a Former Lover.htm) प्रेमी से पैसे 1) सामान्य वैध तरिकों से तथा 2) तिकडमों के जरिये उगाहे जा सकते है। ऋषियों का कहना है कि जब कामबाला को अपने प्रेमी से धन मिलता है तो तिकडमों का रास्ता नही अपनाना चाहिये। वात्स्यायन का मानना है की वैध तरिकों से उतना धन हासिल नही हो सकता जितना उसे विभिन्न तिकडमों से हासिल हो सकता है। इसलिये उसने बेझिझक बडी होशियारी से तिकडमों का सहारा लेना चाहिये। वात्स्यायन ने पैसे उगाही के सैकडों तरिके तथा बहाने अपनी किताब में बताये है।(http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VI About Courtesans Chapter III. Of the Means of getting Money.htm)

आर्य-यहूदियों में मोलेच पूजा का विकास !

ईसापूर्व आठवी से छठी शताब्दी में इजरायल यानि प्राचीन कॅनन की येरुशलेम के दक्षिण-पूर्व में स्थित हिन्नॉम घाटी में अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य अपने जन्में बच्चों की मेलोच नामक देवता के पेट में जलाई जाने वाली आग में बलि चढाते थे। मेलोच की प्रतिमा का सिर सांड का होता था। उसकी विशाल मूर्ति खोखली होती थी जिसके अंदर आग जलती रहती थी जिसकी वजह से वह लाल-सुर्ख नजर आती थी। जब उस मूर्ति के हाथों पर बच्चे को रखा जाता था। विशेष तकनिक से वह बच्चा मेलोच के मुँह से होता हुआ धधकती आग में चला जाता था। लोग ढोल-ताशों की आवाजों पर जोर जोर से नाचते गाते थे।(http://www.pantheon.org/ Moloch by Micha F. Lindemans) तलमुद के मुताबिक जो भी अपने बच्चों को मोलेच को अर्पण करता है वह सजा का हकदार नही है। ("He who gives his seed to Molech incurs no punishment." (Jewish Babylonian Talmud, Sanhedrin 64a)) इस प्रथा के निर्माण होने की वजह शायद अलबिनो निन्डरथॉल आर्यो की महिलाओं के एक हिस्से को ऐसा लगा कि नवजात बच्चे को ठिकाने लगाने से वे अपने लाभ के ''व्यवसाय'' में बनी रह सकती थी। दूसरी वजह शायद यह थी कि वे काले नाग-द्रविडों से नफरत करती थी और अपने यहूदी-आर्य वंश को शुध्द रखना चाहती थी। 1) बायबल के अब्राहम व्दारा ईश्वर के आदेश पर अपने बेटे इसाक की बलि चढाने के लिये तैयार होने 2) जेफताह तथा उसकी बेटी की कथा 3) तथा हीएल व बेथेलाईट (Hiel the Bethelite) की बलि (1 Ki 16:34) के उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि इजरायल में इन्सानी बलि चढाना मूल प्रथा थी। इसलिये बायबल का ईश्वर मोलेच ही था या फिर मिलता जुलता ईश्वर था। मेलोच तथा बाल (Baal) में समानताएं देखी जा सकती है। उनका उगम शायद फोईनिसिया में हुआ था क्योंकि वहां मोलेच पूजा अपने चरम सीमा पर पहुंची थी। मोलेच पूजा को गति मिलने की वजह अहाज (Ahaz (2 Ki 16:12 ff)) है। 'उसने अपने बेटे को आग से गुजरने दिया'।(2 Ki 16:3)। उसके नाती मानासेह (Manasseh) अपने पिता हेजेकियाह (Hezekiah) बाल के लिये बलि वेदी का निर्माण किया। हिन्नॉम (Hinnom) घाटी में टोपेथ (Topheth) नामक जगह पर स्थित पूजा का मूख्य स्थल उसकी देखरेख में था। इस घाटी को बच्चों की घाटी तथा हिन्नॉम का बेटा भी कहा जाता था।(see GEHENNA).

मोसेस ने अपने आदेशों (Levitical ordinances) में मोलेच पूजा के खिलाफ सख्त प्रतिबंध किये (Lev 18:21; 20:2-5)। इन प्रतिबंधों की भाँति ही Deuteronomic Code के प्रतिबंध है जिनमें अपने बेटे तथा बेटियों को आग में जलाने को धिक्कारते हुए उसे दुष्टता की पराकाष्ठा कहा गया है (Dt 12:31; 18:10-13)। जोसीया (Josiah) के सुध ारों में मोलेच पूजा का विरोध है (2 Ki 23:10)। लेकिन इन सुधारों का भी असर नही हुआ। तत्कालीन धर्मप्रमुखों के मुताबिक मोलेच पूजा जेरुसलेम के विध्वंस तक जारी रही। लोगों में इस पूजा के प्रति उत्साह था। उनका मानना था कि शरीर का फल अर्पण करने से उनकी आत्मा पापों से आजाद हो जाएगी।("Shall I give my firstborn for my transgression, the fruit of my body for the sin of my soul?" (Mic 6:6 ff)) मोलेच पूजा में बढौतरी होती रही। जेरेमिया (Jeremiah, 32:35; compare 7:31 ff; 19:5 ff) में अपने बेटों तथा बेटियों को मोलेच की आग में जलाने को हिन्नॉम घाटी में बाल के उंचे ध ार्मस्थल बनाने के समकक्ष रखा गया।(http://www.bible-history.com//MOLECH%3b MOLOCH in the Bible Encyclopedia - ISBE (Bible History Online).htm)

आर्यो के लैंगिक यज्ञों का नाग-द्रविड असूरों व्दारा विरोध !

जिनका नैतिक चरित्र बहुत उँचा था, जो सुरा यानि शराब या सोमरस नही पीते थे, जो ऐय्याशी नही करते थे ऐसे नाग-द्रविड देव असूर कहलाये गए। इसकी पुष्ठी ब्रह्मांड पुराण भी करता है। ब्रह्माण्ड पुराण के मुताबिक 'उस क्षीर सागर से वारुणी देवी उपस्थित हुई थी जिसके मद के कारण परम चंचल नेत्र थे। वह असूरों के आगे मुस्कुराती हुई संस्थीत हो गई थी। दैत्यों ने उनका ग्रहण नही किया था। तभी से वे असूर हो गए थे क्योंकि सुरा ग्रहण करने वाले नही हुए थे जिनके पास सुरा नही है उसी से वे असूर शब्द से कहे गए थे। इसके पश्चात वह समस्त देवों के सामने स्थित हो गई थी। परमेष्ठी के व्दारा संकेतित होकर उन देवों ने बडे ही आनंद के साथ उसको ग्रहण कर लिया था। सुरा के ही ग्रहण करने से ये लोग सुर शब्द से किर्तित हुए थे। (ब्रह्माण्ड पुराण व्दितीय खंड, संपादक डॉ. चमनलाल गौतम p. 163) वाल्मिकी ने रामायण बालकान्ड (सर्ग 45 श्लोक 37,38) में स्पष्ट किया है कि सुरा नामक शराब पीने वालों को सुर और सुरा नही पीने वाले को असुर कहा जाता है। (बहुजन संगठक 10 से 16 मई, 2000 पेज क्र. 2)

ऋग्वेद में देव संबोधन आर्यो ने न सिर्फ अपने देवताओं के लिये किया है बल्कि नाग-द्रविड असूरों के लिये भी यह संबोधन किया है। देवों को युवा देवता कहा गया है जबकि असूरों को बुजुर्ग देवता कहा गया है। बाद के वैदिक साहित्य में असूरों को खलनायक का स्थान दिया गया है। (http://en.wikipedia.org/History of Hinduism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सोम .....काम वर्षक इंद्र तुम्हे पी कर वृशभ की तरह आचरण करते है।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1352) कामवर्षक इंद्र की मत्तता के लिये ऋत्विक लोग सोम को मधुर रस (गोरस) के साथ मिलाते है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p.1356) ऋग्वेद के उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि युवा नाग-द्रविड देवों का आचरण आर्यो ने किस कदर भ्रष्ट किया था। कई आर्य कन्याओं ने नाग-द्रविड राजपरिवार में न सिर्फ प्रवेश प्राप्त किया बल्कि नाग-द्रविडों की मातृसत्ता पध्दति का फायदा उठाते हुए उन्होने सत्ता भी हासिल कर ली। उन्होने नाग-द्रविड राजाओं को सोमरस और ऐय्याशियों उलझाकर नाकारा बना दिया और अपनी आर्य-जाति के लिये तमाम सुविधाओं के रास्ते खोल दिये। इसलिये असूर यानि बुजुर्ग नाग-द्रविड देव अय्याश देवों से बहुत ज्यादा खफा थे।

ईरान के अवेस्टा में आंग्रा मेन्यु (Angra mainyu) का अर्थ दुष्ट मन, दुष्ट विचार होता है। आंग्रा मेन्यु शब्द {भ्रष्ट चरीत्रहीन} देवों के लिये इस्तेमाल किया गया है जो मानव समाज को तथा खुद को धोखा देते है। झोरोस्टर की नजर में ''गलत देवता'' करार दिये गए {ऐसे चरित्रहीन} देवों को नकार देना चाहिये। झुर्वानिजम झोरोस्टर धर्म की एक शाखा थी जो मानती थी कि अहुरा मझदा (MP: Ohrmuzd) तथा आंग्रा मॅन्यु (Ahriman) जुडवा भाई थे।(Angra Mainyu From Wikipedia, the free encyclopedia) ऋग्वेद में देवों और असूरों के बीच कोई भेद नही किया गया है। कुछ मामलों में इन दो खेमों को सहयोग करते हुए भी बताया है। अवेस्टा साहित्य में भले ही देवों को नकारा गया है लेकिन उन्हे गलत रास्ते पर चलने वाले देवता ही करार दिया गया है। (http://

en.wikipedia.org/Proto-Indo-European religion - Wikipedia, the free encyclopedia. html) झोरोस्टर का मानना था कि देव सिर्फ गलत या झूठे देवता है। उन्हे नकार दिया जाना चाहिये। देवों को आंग्रा मेन्यु की संतान नही बल्कि दुष्ट विचारों की संतान माना गया है।(http://hubpages.com/The Evolution of Satan - Part 1.html) वेदिक काल में देवों को दो खेमों 1) देवों तथा 2) असूरों में विभाजित पाया गया। ईरान में झोरोस्टर ने देवों को नकार दिया और दुष्ट कहकर उनको धिक्कारा। देवों के प्रति उनकी नफरत पर्शीयन लोकगीतों से उजागर होती है खासकर फिरदौसी का शाह नामा।(http://www. indianembassy-tehran.ir//Embassy of India, Tehran.htm) आर्यो के यज्ञ सोमरस नामक शराब और मांस के भोजन की पार्टियाँ होती थी जीसमें ऐय्याश नाग-द्रविड देवों को भोग विलास से संतुष्ट कर लाभ और सुविधाएं हासिल करने के लिये हर तरह से रिझाया जाता था। यज्ञों की अनैतिकता की वजह से नाग–द्रविड जनता यज्ञों को हिराकत की नजर से देखने लगी। बहादूर नाग–द्रविड यौध्दा आर्यो के यज्ञों को ध्वस्त कर देते थे जबकि अय्याश देव यज्ञों की रक्षा करते थे। दो खेमों में बँट चुके नाग-द्रविड देवों के बीच संघर्ष शुरु हुआ।

ऋग्वेद से स्पष्ट है कि आर्य अपनी सुरक्षा की भ्रष्ट ऐय्याश नागद्रविड देवों से गुहार लगाते थे :- हे स्तवनीय इन्द्र ! तूम सामर्थ्यवान हो। ऐसा करना की विरोधी हमारे शरीर पर आघात न कर सके। हमारा वध न होने देना। .. ऊधम मचाने वाले मनुष्यों की डाहभरी निन्दा हमें न छू सके। हे ब्रह्मणस्पति ! हमारी रक्षा करो। .. इन्द्र ! तुम्हारे व्दारा रक्षित होकर हम कठिन अस्त्र धारण करके डाह करने वाले शत्रु को पराजित करेंगे। ... हे अग्नि .... देवों के साथ तुम इस यज्ञ में आवो।

जो व्यक्ति देवशून्य मन से हमारी हिंसा करता है और जो उग्र आत्माभिमानी हमारा वध करने की इच्छा करता है, हे ब्रहस्पति उसका आयुध हमें न छु सके। हम वैसे बलवान और दुष्ट शत्रु का क्रोध नाश करने में समर्थ हों। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी 23 सुक्त 12) इन्द्र,..जैसे अग्नि अपनी ज्वाला से पात्र को जलाता है, वैसे ही तुम व्रत-रहित दस्यु को जलाओ। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, 175-3) सुर्यरुप इन्द्र.. तुम नौका व्दारा नब्बे नदियों के पार पहुंचकर वहां यज्ञविहिन असूरों या अनार्यो से कर्तव्य-कर्म कराओ।(हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी 121,13)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्य
कुटीलता से नाग-द्रविड सत्ता पर हावी हुए !

अपना अस्तित्व बचाने अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो की योजना !

यज्ञ को लेकर नाग-द्रविडों में दो फाड हो गए थे। यज्ञ विरोधी संघर्ष तीखा हो गया था। आश्रित आर्यो को अपनी सुरक्षा के लिये ऐय्याश देवों को अपना हमदर्द बनाये रखना जरुरी था। यह उनके अस्तित्व का सवाल था। आर्य चाहते थे कि 1) ज्यादा से

ज्यादा नाग-द्रविड देव सुरा, सोमरस और आर्य-सुंदरियों में फँसकर आर्यो के मददगारों की तादाद बढ जाये। 2) आर्यो के यज्ञों का विरोध करने वाले नाग-द्रविड असूरों के खिलाफ भ्रष्ट-अय्याश नाग-द्रविडों के बीच की तकरार दुश्मनी बन जाये ताकि वे हमेशा के लिये आर्यो के हमदर्द बने रह सके 3) भ्रष्ट-अय्याश नाग-द्रविडों को हर तरह से मदद पहुंचाकर उनके माध्यम से नैतिक सदाचारी नाग-द्रविडों की सत्ता को उखाड फेंका जाये। 4) भ्रष्ट-अय्याश नाग-द्रविड हुक्मरानों को अपने उपर पूरी तरह से निर्भर बनाया जाये तो आर्य पूरी तरह से सुरक्षित हो जाएंगे।

सोमरस बनाने से लेकर यज्ञों में महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण यह मसला अग्निहोत्री के अपने अस्तित्व का मसला बन चुका था। अग्निहोत्री की तांत्रिक के रुप में पहचान होने से उसका आर्य-परिवारों पर बडा रौब था। आर्य परिवारों से अग्निहोत्री का संपर्क होता था तथा वे उनकी समस्याएं सुलझाने का काम भी करते थे। आर्यो की खुबसुरत कन्याएं महत्वपूर्ण नाग-द्रविड परिवारों में बडी कुटीलता से प्रवेश पा चुकी थी। इन आर्य बालाओं ने नाग-द्रविडों के घरों में कैसे रहना चाहिये, आर्यो को फायदा पहुंचाने के लिये क्या करना चाहिये इ. की सलाह देकर उनका मार्गदर्शन करने से लेकर उनके मामलों पर पूरी नजर रखने का वे काम करते थे। अग्निहोत्री हर आर्य परिवार का सलाहकार और मार्गदर्शक था इसलिये उसे आर्य कन्याओं के जरिये महत्वपूर्ण नाग-द्रविड परिवारों के रहस्यों की जानकारियाँ हासिल थी। इसलिये अग्निहोत्री तथा आर्य-बालाओं की भूमिका पर ही नाग-द्रविडों पर आश्रित आर्यो का भविष्य निर्भर था।

आर्यो में ब्राह्मणों तथा अन्य वर्णो की उत्पत्ति !

रहस्यों की जानकारियों की बदौलत नाग-द्रविड परिवारों के किस सदस्य की क्या कमजोरी है, किस सदस्य की क्या महत्वाकांक्षा है, किसका किससे मनमुटाव, ईर्षा या दुश्मनी है, किसने अपना धन कहां छुपाया है, किसके कहां अनैतिक संबंध है, किसकी सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति कौनसा है, किसने किसके साथ कौनसा धोखा किया है इ. जानकारियों की मदद से नाग-द्रविडों में झगडे लगाना, एक की महत्वाकांक्षा को हवा देकर उसे दूसरों के खिलाफ इस्तेमाल करना, किसी को प्रिय व्यक्ति या वस्तु पर संभावित खतरा बता कर उसे किसी काम के लिये राजी कराना, कामुक नाग-द्रविड स्त्री के खास पुरुष से संबंध कायम करना और उस स्त्री का अपने मकसद से उपयोग करना जैसे विकल्प अग्निहोत्री के सामने मौजूद थे।

आर्य-बालाओं ने भ्रष्ट ऐय्याश नाग-द्रविडों को समस्याओं के समाधान के लिये अग्निहोत्री की सेवाएं लेने के लिये उकसाया। अग्निहोत्री ने तंत्र-मंत्र और अलौकिक ताकतों का ढोंग कर नाग-द्रविड परिवारों के रहस्यों की जानकारियों के बलबूते पर संबंधित नाग द्रविड को सलाह देने तथा भविष्य बताने शुरु किये। अलौकिक ताकतों और तंत्रमंत्र का ढोंग करने से रहस्यों के स्त्रोतों को गुप्त रखना संभव हुआ। इससे आर्य-बालाओं पर आंच आने की संभावना खत्म हुई। उपरोक्त जानकारियों के बल पर भ्रष्ट नाग-द्रविड देवों को फायदा पहुंचाया जाने लगा। अग्निहोत्री को नाग-द्रविड परिवारों तथा राजा के खास सलाहकारों की हैसियत प्राप्त होने लगी। वह खास गुप्तचर बनाया गया तथा उसकी निगरानी में विशेष षडयंत्रकारी गोपनीय जासूसी तंत्र काम करने लगा। आध्यात्मिकता, चमत्कार का ढोंग रचाया गया ताकि उनकी असलियत छूपी रहे। वे ''साधू '' ''साधक'' यानी अपना मतलब सीधा करने वाले भी कहलाये गए। अक्सर अग्निहोत्री के जासूस

साधुओं का ढोंग कर पहाडी पर निवास करते थे और वहां से सब तरफ नजर रखते थे। पीरॅमिड यह शब्द ग्रीक शब्द 'pyra' जिसका अर्थ आग या प्रकाश यानि जानकारी तथा 'midos' जिसका अर्थ साधन है से मिलकर बना है। इसतरह पीरॅमिड शब्द का अर्थ निगरानी रखकर जानकारियां हासिल करने का साधन ऐसा होता है। इसी वजह से पीरॅमिड पर सबकुछ देखने वाली आँख यानि ''pyramid and all seeing eye''की कल्पना की गयी है। इसपर नेट पर भरपुर सामग्री उपलब्ध है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इन षडयंत्रों के वर्णन है। उसके मुताबिक जो इन्सान सीर मुंडाकर या सीर के बाल बढाकर जासूसी करता है वह साधूओं के भेस में जासूस है। ऐसे जासूस-साधू को जासूसों की टोली शिष्यों के रुप में मुहैय्या कराई जाती है। वे नगर में घूमकर प्रचारित करते है कि साधू बहुत पहुंचे हुए है, कई महिनों तक खाना नही खाते (जबकि वास्तव में वह चुपके से अपनी पसंद का खाना खा-पी लेता है) इ.। शिष्य उसकी पूजा कर बताते है कि उसमें अलौकिक ताकतें है। कुछ प्रतिष्ठित लोगों को साधू से मिलने भेजाजाता है ताकि दिगर लोगों का विश्वास उस पर हो जाये। साधू को नगर के लोगों की जानकारी पहले से ही पहुंचाई गई होती है इसलिये वह आसानी से लोगों का भविष्य बताकर उन्हे प्रभावित करता है। वह पूर्वनियोजित राजनीतिक भविष्यवाणियां भी करता है कि अमुक व्यक्ति की नियुक्ति कहां होगी या किस पर कैसा संकट आएगा। इन भविष्यवाणियों को राजा तथा उनके अधिकारियों व्दारा या जासूसी तंत्र की मदद से जानबूझकर पूरी कराया जाता है ताकि लोगों का विश्वास साधू पर दृढ़ हो जाये। अब साधू से तरह तरह के लोग मिलकर अपनी समस्याएं और इच्छाएं बताता है और उसे सबके राज मालूम होने लगते है। (Kautilya's Arthashashtra) राजाओं को सर्वशक्तिमान कहा जाता था। जब साधूओं से उन्हे हर भेद पता होने लगे तो राजाओं को ''अंर्तयामी'' भी कहा जाने लगा। अग्निहोत्री के पास गोपनीय जानकारी होती थी इसलिये उन्हे विव्दान, प्रकाश धारण करने वाले कहा गया। उनका पेशा जानकारी 'बताने' का था। इसलिये ब्राह्मण धर्मग्रंथों में कहा गया है कि ब्राह्मण ''मूंह'' से पैदा हुए। जो आर्य स्वर्ग में प्रवेश हासिल करने में असमर्थ रहे और सबके चरणों में ही पडे रहे वे शुद्र कहलाये गए। इसलिये ब्राह्मण धर्मग्रंथों में उनकी उत्पत्ति पैर बताई गई है। डॉ. अम्बेडकर अपनी किताब ''शुद्र कौन थे'' (Who were Shudras) में पहले ही स्पष्ट कर चुके है कि शुद्र आर्यो का ही एक हिस्सा थे।

बाहरी आर्यो ने मंगोल प्रजाति से घोडों की सवारी करना तथा हमले के लिये उसका इस्तेमाल करना सीखा। घास के मैदानी क्षेत्रों से सवारी लायक घोडे हासिल हुए। (http://www.oldandsold.com/Aryan Speaking Peoples In Prehistoric Times.htm) घोडों की मदद से ज्यादा बडे जानवरों के झुंड पर नियंत्रण किया जा सकता था। घोडा युध्द के लिये कारगर वाहन था। जिस भी टोली के पास घोडे होते थे युध्द में हमेशा उनकी जीत होती थी। इसलिये दक्षिणी सायबेरिया के घास के मैदानों में हमलावर घुडसवारों की टोलियां बनती चली गई जो जानवरों को लूटने का काम करती थी। जिन आर्यो ने खेती करना शुरु किया था वे भी खेती छोडकर हमलावर टोलियां बनाने लगे। वे दूध और मांस पर जीवनयापन करते थे।(http://www.weavingartmuseum.org/A Brief Outline to the Archaeological Pre-History of Turkmenistan.htm) अल्बीनो-निन्डरथॉल वंश के होने से आर्यो को कॅलशियम के लिये दूध की ज्यादा जरुरत होती थी। ब्राह्मण-आर्यो ने नाग-द्रविडों के क्षेत्रों के बाहर रहने वाले अपने इन लडाकू टोलियों से संपर्क किया

जो दूसरी टोलियों के जानवर छीनने के लिये एक-दूसरे पर हमले करते थे। ब्राह्मण ों ने उन्हे उचित दाम देकर अपने मददगार भ्रष्ट नाग-द्रविड राजाओं के हक में लडने के लिये राजी किया। ब्राह्मणों ने एक नाग द्रविड राजा को दूसरे राजा के खिलाफ लडने के लिये आर्य यौध्दा उपलब्ध कराये। ये आर्य क्षत्रिय कहलाये गए। इनका काम शस्त्र लेकर लडना था इसलिये उनकी उत्पत्ति हाथ से हुई ऐसा ब्राह्मणों के धर्म-ग्रंथों में कहा गया है। ब्राह्मण धर्मग्रंथों में क्षत्रियों को ब्राह्मणों का सेवक कहा गया है क्योंकि उन्हे नियुक्त करने तथा तयशुदा मुआवजा अदा करने का काम ब्राह्मणों के मार्फत होता था।

जो आर्य सुरा तथा सोमरस बेचते थे, अपनी महिलाओं के माध्यम से लैंगिक कार्यकलापों से नाग-द्रविडों से धन तथा अन्य लाभ हासिल करते थे उन्हे वैश्य कहा गया है। वैश्यों की उत्पती ''जंघाओं'' से हुई मान ली गई। वैश्य और वेश्या शब्द की समानता कुछ खास संकेत देती है। नाग द्रविडों से हासिल वस्तूओं, प्राणियों इ. को बेचने का काम भी वे करते थे। उपरोक्त वर्णो के काम पूरी तरह से अलग थे इसलिये वे स्वतंत्र वर्ण कहलाए गए। इसके पहले आर्यो में वर्ण कभी इतने स्पष्ट रुप से अलग अलग नही थे।

ब्राह्मणों ने अपने व्यवसाय के मुताबिक जो शब्दावली अपनाई गई उसके भी कुछ खास अर्थ है। विपक्षी का वह भेद और दुर्बलता जिसे जान लेने से शत्रु पर विजय पायी जा सकती है, उस भेद को ब्राह्मण जासूस ''ईश्वर'' कहते थे। आर्य जासूसों का काम ''ईश्वर'' को हासिल करना था। अपने उद्देश्य की सफलता को वे पुण्य और असफलता को वे पाप कहते थे। अनिष्ट, अत्याचारों की कल्पना से मन पर पडने वाले प्रभाव को ''आकाशवाणी'' कहा जाता था। राजनीतिक भेदों को ''मंत्र'' तथा ऐसे खतरनाक भेद जो राजा को अपने प्रभुत्व में रखने के लिये इस्तेमाल किया जाता था उसे वे ''महामंत्र'' कहते थे। साजीश की बातों को मंत्रणा कहते थे। प्रजा को अपने काबू में रखने के लिये ब्राह्मणों की मदद से जो प्रयास किये गए उसे धर्म तथा इसके लिये जिन तिकडमों और सिधान्तों का इस्तेमाल किया गया उसे धर्मशास्त्र कहा गया।

वेदों का चिकित्सात्मक रुप से अध्ययन करने वाले जानते है कि वास्तव में दो ही मूल वेद है : 1) ऋग्वेद और 2) अथर्व वेद । साम वेद और यजुर वेद यह ऋग्वेद के ही भाग है। (Dr. Babasaheb Ambedkar, Vol. 7, p. 87) आर्य दो सांस्कृतीक खेमों में बँटे हुये थे। पहला खेमा ऋग्वेदीक आर्य तथा दूसरा खेमा अथर्ववेदिक आर्यो का था। ऋग्वेद के आर्य यज्ञ में जबकि अथर्ववेदिक आर्य जादुटोने में भरोसा करते थे। ऋग्वेदिक आर्य ब्राम्हण मॅजी पूजारियों व्दारा झोरोस्टुरा के धर्म में पैदा किये हुये बिगाड से पैदा हुवा समुह है। अथर्ववेदिक आर्य पूराने मॅजी पूजारियों के धर्म-समुह का प्रतिनिधित्व करते है।

इरान के मॅगी टोने-टोटके करने वाले तांत्रिक, जादूई ताकतों से युक्त माना जाता रहा है। मॅजी शब्द से ही अंग्रेजी का मॅजीक तथा मॅजिशियन शब्द निर्माण हुए है। आरंभ में उनको 'magoi' यानि तोहफा लाने वाला कहा जाता था। {जाहीर है कि यह तोहफा महत्वपूर्ण जानकारी होती थी।} मॅगी अक्सर राजदरबार में पाये जाते थे। उन्हे राज्य की नौकरशाही में नियुक्त किया जाता था, वे अग्नि बलि इ. देने तथा दिगर समारोहों को अंजाम देते थे। वे हर अभियान में राजाओं के साथ रहते थे तथा स्वप्न का अर्थ बताते थे व अन्य भविष्यवाणियां करते थे।(http://www.livius.org/home.html Magians)

अलबिनो-निन्डरथॉल आर्यो ने धूर्तता से
नाग-द्रविडों से वैवाहिक संबंध कायम किये !

आर्यो ने अपने ''घुसपैठ करो और कब्जा करो'' की नीति से तरह तरह की तिकडमें लगाकर मुलनिवासी नाग-द्रविड राजाओं को अपनी रुपवती कन्यायें देकर उनका अनुग्रह हासिल किया। विष्णु ने भी नागों का संरक्षण प्राप्त किया। विष्णु को सपत्नि नाग की शय्या पर सोते हुये दर्शाया गया है। शंकर नाग-द्रविड थे। पार्वती नामक ब्राह्मण कन्या ने बडी खुबी, (तपस्या ?) से अपना ब्याह नाग जाति के शिव शंकर से कराया और आर्यो की रक्षा करने में सहयोग हासिल किया। ऋग्वेद में शिव का कोई उल्लेख नही है। शिव का संबंध नाग-द्रविड श्रमण संस्कृति से था। बाद में रुद्र को ही शिव जताया गया। शिव वेदिक आर्यो का दुश्मन था इसलिये उसे विध्वंस की देवता कहा जाता था।(http://hubpages.com//The Origin of Shiv and Shaivism.htm) आर्य-ब्राह्मण वास्तव में शिव से बेहद नफरत करते थे। आर्य-ब्राह्मण किसी शुद्र के छु लेने पर घृणा से ''शिव शिव'' कहते थे। मराठी में शिवी माने गाली, शिवराळ माने गाली-गलौच होता है। इससे विदेशी आर्य-ब्राह्मणों की शिव-शंभुओं के प्रति घृणा स्पष्ट होती है। अपने मतलब के लिये आर्यो ने शिव को अपनी कन्याएं ब्याहकर उनका संरक्षण हासिल करने के लिये प्रयत्नों की पराकाष्ठा कर दी। निश्चित योजना के तहत आर्यकन्या उमा (पार्वती) का ब्याह शिव से रचाया गया।

ब्रह्मपुराण के मुताबिक 'उमा ने तपस्या से शंकर को पाना चाहा। उमा का ब्याह ब्रह्मा ने अपनी पुरोहिती में संपन्न किया।' (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 76) इसके पहले ब्राह्मण दक्ष ने अपनी बेटी सति का विवाह शिव से कराया था।

डॉ. अम्बेदकर के अनुसार महादेव मूलतः वेदों के विरोधी थे। महादेव ने अपने ससुर दक्षा के यज्ञ को बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया। (Dr. Ambedkar, Vol. 4 , P. 87) शिव ने अपने व्दारा निर्मित वीरभद्र को भेजकर दक्ष के यज्ञ को तहसनहस कर दिया। यज्ञप्रात्र तोड दिये, यज्ञकुंड में पेशाब कर दिया। शिव को अपमानित करने वालों से भयंकर बदला लिया गया। वीरभद्र ने भृगु की दाढीमुंछे नोंच ली क्योंकि इन्होने प्रजापतियों की सभा में मुंछे ऐंठते हुए शिवजी का उपहास किया था। उन्होने भग देवता को जमीन पर पटक दिया और उनकी आंखें निकाल ली क्योंकि जब दक्ष देवसभा में श्रीमहादेवजी को भलाबुरा कहते हुए शाप दे रहे थे उस समय इन्होने दक्ष को सैन देकर उकसाया था। उन्होने पुषा के दांत तोड दिये क्योंकि जब दक्ष ने महादेवजी को गालियां दी थी, उस समय ये दांत दिखाकर हँसे थे। जिस तरह यज्ञवेदी पर पशु के सीर को धड से अलग किया जाता है, उसी प्रकार उन्होने दक्ष के सीर को उसके धड से अलग कर दिया। वीरभद्र ने कुपित होकर दक्ष के सीर को यज्ञ की दक्षिणाग्नि में डाल दिया और उस यज्ञशाला में आग लगाकर यज्ञ का विध्वंस करके वे कैलास पर्वत लौट गए। याचनाएं करते देवताओं को ब्रह्मा ने कहा कि तुम लोगों ने तो भगवान शंकर का यज्ञ में प्राप्य भाग न देकर उनका बडा भारी अपराध किया है। दक्ष के र्दुवचन रुपी बाणों से उनका हृदय तो पहले से ही बिंध रहा था, उसपर उनकी प्रिया सतिजी का वियोग हो गया। इसलिये यदि तुम लोग चाहते हो कि वह यज्ञ फिर से आरंभ होकर पूर्ण हो, तो पहले जल्दी जाकर उनसे अपने अपराधों के लिये क्षमा मांगो। नही तो, उनके कुपित होने पर लोकपालों के सहित इस समस्त लोकों का भी बचना असंभव है। भगवान रुद्र परम स्वतंत्र है, उनके तत्व और शक्ति-सामर्थ को न तो कोई ऋषी मुनी, यज्ञस्वरुप देवराज इन्द्र ही जानते है और न मै स्वँय ही जानता हुं; फिर दूसरों की तो बात ही क्या है।(भागवत पुराण p.197-198) अंततः तमाम देवताओं के साथ ब्रह्मा ने कैलाश पर्वत जाकर स्वँय शिव की भूरी भूरी

प्रसंशा कर शिव को प्रसन्न कर दिया और शिव से याचनाएं कर शिव को यज्ञ में उनका बडा भाग देने की बात कहकर यज्ञ को दोबारा शुरु करने की अनुमति हासिल की। (भागवत पुराण p.200) पार्वती ने शंकर को भांग, चरस इ॰ नशे का आदी बना दिया। आर्य -ब्राह्मणों की मक्कारियाँ समुद्र मंथन के किस्से से पुरी तरह से स्पष्ट है।

परशुराम ने शीव की तपस्या कर उन्हे प्रसन्न कर उनसे परशु प्राप्त किया और उस परशु से असूरों का संहार किया। (ब्रह्माण्ड पुराण प्रथम खंड p. 164-65) परशुराम ने शीव से कई दिव्य अस्त्र प्राप्त किये और अपराजेय रहने का वर प्राप्त किया। (ब्रह्माण्ड पुराण प्रथम खंड p. 172) अपने पिता जमदग्नी की मौत के बदले में 21 बार पृथ्वी को निक्षत्रिय करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिये परशुराम ने शीव को प्रसन्न कर उनसे उनका तिनों लोकों पर विजय प्राप्त करने वाला दिव्य कवच, सुदुर्लभ मंत्र और अस्त्र प्राप्त किये।(ब्रह्माण्ड पुराण प्रथम खंड p. 251) कार्त्तवीर्य के दिव्य शुल की चोट से परशुराम गीर पडा तो तमाम देवगण महान भय से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को आगे कर समागत हो गए थे। तब शंकर ने संजीवनी से परशुराम को दोबारा जिवित कर दिया। (ब्रह्माण्ड पुराण प्रथम खंड p. 323-24) दैत्यराज भण्ड का संहार कराने के लिये देवताओं ने गैरआर्य देवता ललीता नामक मूलनिवासी देवी को प्रसन्न किया। ललीता ने शीव से विवाह किया और उसके बाद दैत्यराज भण्ड से युध्द कर उनका संहार कर देवताओं का साम्राज्य पूर्नप्रस्थापित किया।(ब्रह्माण्ड पुराण व्दितीय खंड, संपादक डॉ. चमनलाल गौतम p. 414)

प्रजापति दक्ष के साठ कन्याएं हुई, जो श्रेष्ठ और सुंदर थी। उनके नाम अदिति, दिती, दनु और विनता आदि थे। दिति से दैत्य और दनु से बलाभिमानी भयंकर दानव उत्पन्न हुए। विनता आदि अन्य स्त्रियों ने भी स्थावर-जंगम भूतों को जन्म दिया। (संक्षिप्त ब्रह्म पुराण p. 65) अर्जून ने नाग राजकुमारी उलुपी से ब्याह रचाया (Kosare, p. 270) महाभारत के मुताबिक कद्रु और विनता नामक दो बहनों का विवाह कश्यप से हुआ। बडी बहन कद्रू ने 1000 नागों को जन्म दिया। इनमें शेष, वासुकी, ऐरावत, तक्षक, कार्कोटक, कालिया, अैला (Elaapatra) निला, अनिला, नाहुशा इ. प्रमुख है। छोटी बहन ने गरुड को जन्म दिया। (Fergusson, p. 59) अर्जून ने मणीपूर के चित्रवाहन नाम के नाग राजा की कन्या चित्रांगदा से भी ब्याह रचाया। आर्य-ब्राह्मणों ने अपने फायदे के लिये नागों से विवाह किये। वह परंपरा निरंतर जारी है। गुप्त राजा (Chandragupta I) ने लिच्छवी की मूलनिवासी राजकन्या कुमार देवी से शादी करने के बाद दहेज में प्राप्त भूभाग के बल पर अपना साम्राज्य खडा किया था। अलाहाबाद के स्तंभालेख के मुताबिक चंद्रगुप्त व्दीतिय ने नाग राजकुमारी कुवेरनागा से शादी की थी। (Mahajan, Ancient India, p. 406 ff.)

यहूदी बाला इस्थर (Esther) बडी खुबी से अपनी यहूदी पहचान छुपाकर पर्शिया के राजा Ahasuerus (or Xerxes) को रिझाकर पर्शिया की रानी बनी। इसके बाद उसने उसे इस बात पर राजी किया कि उसके चाचा को पर्शिया का प्रधान मंत्री बनाया जाये। इस तरह पर्शिया यहूदियों के नियंत्रण में आया। हिब्रु भाषा में इस्थर का मतलब 'छुपा हुआ' होता है। यहूदियों के लिये यह अनिवार्य है कि वे इस्थर की कहानी को पढे, समझे और अपनी मूल पहचान छुपाते हुए दुनियां को यहुदियों के नियंत्रण में लाने की शपथ ले। (Itsvan Bakony2 : Chinese communism and Chinese Jews)

इस्थर का आदर्श अपने सामने रखते हुए यहूदियों ने दुनियां भर के राजघरानों में शिरकत हासिल की है। चीन में यहूदी 18 वी शताब्दी में आये। इस्थर के आदेशों पर

चलते हुए उन्होने अपनी महिलाओं का इस्तेमाल उंचे पदों तक पहुंचने के लिये किया। चीनी यहूदी तायाओ कियु का ब्रिटिश तथा यहुदियों की मदद से शंघाई तथा हांगकांग में अफीम का व्यापार था। चीन में तायाओ कियाओयु के सँग परिवार ने जबर्दस्त असर पैदा किया। एक सँग बहन ने चीनी राष्ट्र के क्रांतिकारी पितामह डॉ. सुन यात सेन जिन्होने मांचु शासकों को उखाड कर फेंका था और चीनी गणतंत्र के पहले अध्यक्ष बने थे से शादी की। दूसरी सँग बहन ने प्रतिक्रांतिकारी चांग काई शेक से शादी की।(Itsvan Bakony2 : Chinese communism and Chinese Jews) लार्ड रिर्डीग (Ridding) का यहूदी नाम Rulfs Danius Essac था जो रानी विक्टोरिया का सलाहकार बना। सन् 1917 को अर्ल नामक राज उपाधि से उसे अलंकृत किया गया। इंग्लंड यहूदियों के उपनिवेश में तब्दिल हुआ क्योंकि वे ब्रिटिश सत्ता को अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करते रहे। ब्रिटिश सत्ता के बल पर वे यहूदी फायदे के लिये एशिया तथा अफ्रिका की सरकारें बदलते रहे।(Itsvan Bakony2 : The Jewish fifth column in India)

ब्राह्मणों ने अपनी कन्या देवला देवी का ब्याह गुलाम वंश के राजा मोहोम्मद कुसरु से किया जो इस्लाम कबुल करने से पहले चमार जाति से थे। सम्राट अकबर ने आर्य-ब्राह्मण कन्याओं से शादी की। उनके प्रभाव में उसने घोर इस्लाम विरोधी कदम उठाये ।

भारत के जस्टीस हिदायतुल्ला की बिवी ब्राह्मण थी। अपने बिवी के प्रभाव से वह ब्राह्मणवाद का कट्टर समर्थक बन गया था। अपनी अंतिम इच्छा में उसने लिखा कि मरने के बाद उसे जलाया जाये। ब्राह्मण अभिनेत्री शर्मिला टॅगोर ने मुस्लिम नवाब पतौडी से शादी की। उसके बेटे सैफ अली खान ने आर्य-ब्राह्मण लडकी से शादी की। क्रिकेटर अजहरुद्दिन, अभिनेता शाहरुख खान, आमीर खान, अरबाज खान, तथा अनगिनत मुस्लिमों ने ब्राह्मण कन्याओं से शादी की है। ब्राह्मण बालाएं धूर्तता से होनहार उच्च पदस्त दलित युवकों से ब्याह रचाती रही है। दलित संगठनों के नेता रामदास आठवले, प्रकाश अम्बेडकर, रामविलास पासवान, उदीतराज इ. की बिवीयां ब्राह्मण है। दलित नेता सुशिल कुमार शिंदे, गोपिनाथ मुंडे इ. के ब्राह्मणों से रक्त संबंध कायम हुए है। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री वसंतराव नाईक की बिवी ब्राह्मण थी। मुरासोली मारन तथा करुणानिधि के बेटों की ब्राह्मण बिवीयां है। दलित वॉयस के मुताबिक डॉ. योगेन्द्र यादव ने एक बंगाली ब्राह्मण से शादी की है। (Dalit Voice, 1-15 August 2006)

शिव-लिंग शिव और पार्वती के संभोग में लिप्त यौन अंगों को दर्शाते है। आर्य-बालाओं ने नाग-द्रविड देव शिव-शंकर सहीत नाग-द्रविड देवों को सोमरस, अफीम तथा दिगर नशीली दवाओं का आदी बनाकर उन्हे पूरी तरह से अपनी गिरफ्त में कर लिया। आर्यो व्दारा शिव लिंग की पूजा करने का महत्व यह है कि लैंगिकता की वजह से ही आर्यो को बेशुमार दौलत और नाग-द्रविड राजसत्ता में महत्वपूर्ण ओहदे हासिल हुए है।

झोरोस्टर के धर्म पर मॅजी-ब्राह्मणों का कब्जा !

मॅजी जादूई ताकत, रसायन तथा ग्रहशास्त्र के में विख्यात थे। असीरिया के अध्ययन के लिये प्रख्यात स्कॉलर लेनोरमांट के मुताबिक मॅजियों ने अचाईमेनिड (Achaemenid) साम्राज्य के अंत तक झोरोस्टर के धर्म को भ्रष्ट बनाकर उसे बुतपरस्त धर्म में बदला गया। झोरोस्टर एकईश्वरवादी थे लेकिन मॅजियों ने अनेक ताकतों की संकल्पना को दोबारा स्थापित किया। शैतानी ताकतों की पूजा करना या उन्हे बुलाना झोरोस्टर ने प्रतिबंधित किया था। झोरोस्टर की किताबों में मॅजियों की कठोर शब्दों में भर्सना की गई है।

ग्रीक दर्शनशास्त्री हेराक्लिटस ने ईसापूर्व छटवी शताब्दी में लैंगिकता से भरपूर बॅचॅन्टस् (Bacchants) विधियों के लिये मॅजियों को जिम्मेदार ठहराया है। मॅजि इस समारोह में लैंगिकता के देवता डीओनिसस (Dionysus) की प्रसंशा में लिंग से संबंधित श्लोक गाते है। वे गुप्त समारोह आयोजित कर गंदे तरह से मनाते है। झोरोस्टर के धर्म ग्रंथ यसना के मुताबिक झोरोस्टर ने यम के बैल बलिप्रथा की भर्सना की है जिसमें मादक पेय होमा पी कर लोग लैंगिक गतिविधियां करते थे।(http://www.thedyinggod.com/The Chaldean Magi A Library of Ancient Sources _ The Dying God.htm)

ईसापूर्व छटवी शताब्दी में इफेसस (Ephesus) के ग्रीक दर्शनकार हेराक्लिटस (Heraclitus) ने 'रात में भटकते रहने वालों' 'मॅजियों, Maenads and initiates धिक्कारते हुए धमकाया कि मौत के बाद उन्हे भयानक यातनाएं सहनी पडेगी। वे नर्क की आग में जलते रहेंगे क्योंकि वे अपवित्र दुष्ट विधियों में लिप्त रहते है।(Clement of Alexandria, Protrepticus) बाद के लेखकों ने मॅजियों का उल्लेख शैतान उपासक और तांत्रिकों के तौर पर किया है। मॅजीयों का उल्लेख कभी भी गैर-आर्यो के देवताओं के संदर्भ में कभी भी नही किया गया है। हेरोडोटस् मॅजीयों को बलि चढाने वाले कहते है। मॅजीयों, ब्राह्मणों तथा चाल्डीयन पूजारियों के बीच का फर्क नगण्य था। मूलतः वे सभी सरीखे थे। हालांकि वे अलग अलग देशों पर्शिया, भारत तथा बॅबिलॉन से थे। लेकिन उनकी गतिविधियां समान थी।(http://orthodoxzoroastrianism.wordpress.com/Orthodox Zoroastrianism _ Page 3.html) हेरोडोटस के मुताबिक मॅजी शुभ और अशुभ संकेतों का स्पष्टीकरण करने वाले (7.37), स्वप्नों का अर्थ बताने वाले (1.107, 1.108, 1.120, 1.128, 7.19) तांत्रिक थे। दुष्ट ताकतों का भय दिखाकर तथा उनसे बचने के रास्ते के ढोंग से प्रभावित नाग-द्रविड राजा मॅजी-ब्राह्मणों के नियंत्रण में पूरी तरह से चले गए। रोमन फिलासॉफर प्लिनी (Pliny) के मुताबिक पायथॅगोरस, इम्पेडोकल्स डेमोक्रिटस्, हेराक्लिटस तथा प्लॅटो इ. दार्शनिक विदेश आकर मॅजियों के साथ पढे। इरान में भ्रष्ट नाग–द्रविड देवों की वजह से ही मॅगी ब्राह्मण ताकतवर हुए और नाग-द्रविडों की अवनती हुई इसलिये मॅजी-ब्राह्मणों तथा ''ऐय्याश'' देवों के खिलाफ झोरोस्टर धर्म पैदा हुआ। झोरोस्टर के सामाजीक सुधार को उनके जीवनकाल में ही ऐय्याश देवों तथा मॅजी ब्राह्मणों व्दारा विरोध किया गया। झारोस्टर ने इन विरोधियों को दुष्ट ताकतें ऐसा अवेष्टा में उल्लेख किया है।

बॅक्ट्रिया में झोरोस्टुरा के अनुयायियों का जीवन मरण का संघर्ष देवों से हुवा। (P. 25, E.G.Browne) मॅगी (Mithraic magi) के आदेश पर झोरोस्टर धर्म संस्थापक झोरोस्टर स्पिटामा (Zoroaster Spitama) की हत्या कर दी गई। मॅजी झोरोस्टर धर्म के अनुयायी कतई नही थे लेकिन झोरोस्टर स्पीटामा की हत्या के बाद उन्होने खुद ही झोरोस्टर के नाम पर धर्म कायम किया और घोषित किया कि यह झोरोस्टर के सिध्दान्तों के मुताबिक है। इस धर्म के प्रमुख मॅजी-ब्राह्मण बन बैठे। (http://www.farvardyn.com/ THE MAGI - A SHORT HISTORY By Shelagh McKenna; http://ldolphin.org/asstbib.shtml Who Were the Magi? By Chuck Missler)

ब्राह्मणों ने उच्च पद और लाभ हासिल करने के लिये इस्लाम तथा इसाई धर्म कबुल किया है। जार्ज फर्नांडिस तथा अब्दूल रहमान अंतुले ब्राह्मण था। संगीतकार रहमान ब्राह्मण था। तमाम उच्च पदस्त मुसलमान धर्मांतर किये हुए ब्राह्मण है। दक्षिण भारत के सिरियन क्रिश्चीयन ब्राह्मण है तथा उंचे पदों पर आरूढ़ है। चाहे वह कोई भी धर्म

क्यों ना हो आर्यो ने उसमें घुसपैठ की है और उसे ब्राह्मणों के हक में तब्दिल किया है।

यहूदियों का पांचवा स्थंभ न सिर्फ इसाई धर्म में है बल्कि मुसलमानों के बीच भी है। वे खुद को सबसे ज्यादा समर्पित मुसलमान जताते है जबकि हकीकत में तलमूद के आदर्शो के प्रति पूरी तरह से समर्पित है। इस पांचवे स्तंभ ने मुस्लिमों के बीच विवाद पैदा किये और मुस्लिमों को कभी एक होने नही दिया है। ये यहूदी दिगर धर्मो में छुपे बैठे अपने यहूदियों से पूरा तालमेल बनाते हुए यहूदियों की ताकत को मजबूत करने का काम करते है।(Itsvan Bakony : The Jewish fifth column in Islam)

ब्राह्मणों की जासूसी भाषा संस्कृत का विकास !

लोगों की हत्याएं कराने, षडयंत्र करने के लिये गुप्त भाषा की सख्त जरुरत थी। मूलनिवासियों की भाषा के शब्दों को जटिल बनाकर ब्राह्मणों ने अपनी ''जासूसों की भाषा संस्कृत'' बनाई। संस्कृत जासूसों की भाषा होने से उसे औरों के सामने नही बोला जाता था। मूलनिवासियों की भाषाएं संस्कृत से कैसे पैदा हो सकती है जबकि संस्कृत मूलनिवासियों के लिये प्रतिबंधित थी ? संस्कृत भाषा के जरिये ब्राह्मणों के तीन मकसद पूरे होते थे। 1) रहस्यों का आदान प्रदान करना, 2) ब्राह्मणों के हित में धार्मिक आध ार पैदा करना क्योंकि धार्मिक ग्रंथ संस्कृत में ब्राह्मणो व्दारा लिखे जाते थे। 3) संस्कृत सिर्फ ब्राह्मणों के लिये सुरक्षित भाषा होने से तमाम धार्मिक समारोहों को अंजाम देने पर ब्राह्मणों का एकाधिकार हो गया। संस्कृत जासूसों की भाषा थी इसलिये उसे पूरा राजाश्रय हासिल था। किसी और व्यक्ति के संस्कृत सीखने का मतलब राज-रहस्यों को जानने की कोशिश करना समझा जाता था इसलिये ब्राह्मण-परस्त नाग-द्रविड राजाओं ने मान्यता दे दी कि अगर कोई उसे सूनने की या बोलने की कोशिश करें तो उसके कान में पिघला हुआ सीसा डाला जाये या उसकी जीभ काट दी जाये। यह उनकी राजसत्ता की रक्षा का सवाल जो था।

ब्राह्मणों ने प्रचार किया कि देव सिर्फ संस्कृत ही समझते है, अन्य भाषा नही समझते। सिर्फ ब्राह्मणों के मंत्र ही उन तक पहुंच सकते है। उनके इस प्रचार से धर्म पूरी तरह से ब्राह्मणों के नियंत्रण में आ गया। दूसरों को संस्कृत भाषा सीखने से प्रतिबंधित करने का दूसरा मकसद धर्म के व्यापार पर ब्राह्मणों के कब्जे को अबाधित रखना था।(http://hubpages.com//Is Sanskrit The Language of Gods.htm)

मॅजी-ब्राह्मणों की राजनीतिक अप्सराएं !

अप्सराएं इंद्र के निर्देश में काम करती है। इंद्र सिर्फ जो टोली या टोलियों के प्रमुख के पद का नाम है। ब्राह्मण किसी भी राजा या मुख्य व्यक्ति को इंद्र कहते थे। मॅजी ब्राह्मणों की अप्सराओं का काम विरोधियों को अपने रुप के जाल में फाँसकर उन्हे ऐय्याशी में उलझाकर रखना, उन्हे नशे का आदी बनाना, उनके गोपनीय रहस्यों की जानकारी हासिल करना, उन्हे गुमराह करना, उनकी हत्या करना इ. था। ब्राह्मणों के पुराणों में अप्सराओं के कारनामों का वर्णन है :- ब्रह्मा ने तपस्या करते राजा आग्निन्ध को अपनी सभा की पूर्वचित्ति नाम की गायिका अप्सरा भेजी। राजा ने उसके गर्भ से नाभि, किम्पुरुष, हरवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्यमय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल नाम के नौ पुत्र उत्पन्न किये। इसके बाद पूर्वचित्ति ब्रह्मा के पास लौट गई। (भागवत पुराण p.270-72) दैत्यराज भण्ड तथा उसके साथियों को मोहिनी तथा उसके साथ आई अन्य

अप्सराओं ने रिझाकर काम क्रिडा में मग्न करा दिया जिससे उनके शीव इ. मान्यवरों से संबंध भी लगभग खत्म करा दिये। हितचिंतकों का अपमान कराया।(ब्रह्माण्ड पुराण व्दितीय खंड, संपादक डॉ. चमनलाल गौतम p. 191-92) विश्वामित्र को उसके रास्ते से भटकाने का काम मेनका ने किया था। मेनका को विश्वामित्र से एक कन्या प्राप्त हुई थी।

मोहीनी अत्यंत रुपवति अप्सरा थी। ब्रह्मांड पुराण (4:10:41-77) के मुताबिक विष्ण J कई बार मोहिनी का रुप धारण कर दुश्मनों को मुर्ख बनाकर उनसे सोमा छीनने का काम किया था। (http://www.mombu.com/religion//MORE Forbidden Verses in Hindu Scriptures exposed. (wise demons ritual order birth) - Mombu the Religion Forum. htm) रंभा नाम की अप्सरा को अप्सराओं की रानी माना जाता है।

अप्सराओं के कुछ नाम आगे दिये मुताबिक है :- अलमवुशा, अंबिका, अनावद्या, अनुचना, अरुणा, अर्जुनी, बुदबुदा, बुधा, चंद्रजोत्सना, चित्रसेना, चित्रलेखा, दंदागौरी, देवदत्ता, देवसेना, देवी, धृति, ग्रिताची, गोपाली, गुनामुख्या, गुणुवरा, हर्षा, इन्द्रलक्ष्मी, कलभा, काम्या, कर्निका, केशिनी, केरला, क्शेमा, कुंभयोनी, लता, लक्ष्मणा, मधूरस्वाना, मगधी, मनोरमा, मंजूकेशी, मारीची, मेनका, मिश्रस्थला, मिश्रकेशी, नाभीदर्शना, नंदा, प्रजगरा, पुर्वाचीत्ती, पुष्पदेहा, रक्षिता, रंभा, रितुशाला, सहा, संताली, सरला, सौदामिनी, सहजन्या, समिची, सौरभेदी, शरदवति,सुदाति, सुकेसी, सुनंदा, सुंदरी, सुलोचना, सुमला, सुमुखी,सुपुस्कला, सुपुस्पमला, स्वयंप्रभा, तिलोत्तमा, उमलोचा, उर्वर्षि, वापु, वर्गा, वरुथीनी, विद्युतपर्णा, विगग्धा, विश्वची, विविधा। इनके अलावा हजरों अप्सराएं थी।(http://in.answers.yahoo.com/Hindus Are Apsaras divine Nymphs - Yahoo! Answers India.htm; http://www.newworldencyclopedia.org/Apsara - New World Encyclopedia.htm)

आर्यो का जासूसी वेश्याजाल !

आर्यो ने न सिर्फ प्रशिक्षित वेश्याओं की यंत्रणा कायम की थी बल्कि संपूर्ण काम शास्त्र को विकसित किया है। ब्राह्मण-धर्म में कामशास्त्र धर्मशास्त्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ब्राह्मणों का मानना है कि धर्म, अर्थ तथा काम लोगों को मोक्ष तथा आत्मा को मुक्ति प्राप्त कराता है। काम शास्त्र को मोक्षशास्त्र का दर्जा है। इसका अध्ययन न सिर्फ विव्दान करते है बल्कि साधू और सन्यासी तक करते रहे है। वे काम शास्त्र के गहरे जानकार रहे है।(http://www.martinrai.com/english/astrology_sexuality_intro.htm) संभवतः आरंभ से ही आर्यकन्याओं व्दारा नाग-द्रविड देवों को फाँसने, उन्हे भ्रष्ट बनाने तथा उन्हे नशे इ. का आदी बनाकर अपने वश में कर उनसे तरह तरह के लाभ हासिल करने के अनुभवों के संकलन से कामशास्त्र का विकास हुआ है। ब्राह्मणों ने कामशास्त्र को झूठमुठ शिव की उत्पत्ति कहा है। वात्स्यायन ने भी कामशास्त्र को शिव की बताया है। शायद उन्होने यह इसलिये कहा है कि शिव को वश में करने के बाद ही आर्यो की रक्षा हो सकी थी। वात्स्यायन की कामसुत्र किताब प्राचीन कामशास्त्र की किताबों पर आधारित थी।

वात्स्यायन के अलावा कामविज्ञान पर निम्नलिखित ग्रंथ लिखे गए थे। 1) रतिरहस्य 2) पंचसाक्या (पांच तीर) 3) स्मर प्रदीप (light of love) 4) रतिमंजरी (garland of love) 5) रसमंजरी 6) अनुंग रंगा (the stage of love) इ. है। रति रहस्य का लेखक कुक्कोका पंडित है। प्रत्येक अध्याय के अंत में वह अपने नाम के आगे सिध्द पंडित लिखता है। हिन्दी में भाषांतरित उसकी रचना को कोकशास्त्र के नाम से जाना गया है।(http://www.

sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Preface.htm)

राजवेश्याओं को नाच, गाने, संगीत के वाद्य बजाने, अभिनय, संभाषणकला, लिखने, चित्रकला इ. का प्रशिक्षण राज्य के खर्चे से दिया जाता था। उन्हे सुगंधी द्रव्य बनाना, फुलों की कलाकारी, लोगों की भावभंगीमा से मन की बात जानना तथा प्रेम करने की कला में माहीर बनाया जाता था। (2.27.28) चाणक्य के अर्थशास्त्र में विशेष रुप से कहा गया है कि कोई भी खुबसुरत तथा अक्लमंद लडकी राजवेश्या का स्थान हासिल कर सकती है, चाहे फिर वह राजवेश्या के परिवार से आई हो या न हो। (2.27.1)। वह रानी की खास निजी सेविका बन सकती थी।(1.20.20, 2.27.4) उसकी तनख्वाह राज्य के बडे पांच अधिकारियों जीतनी होती थी।(2.27.6) इसलिये उसके साथ संपर्क बेहद उच्च स्तर के व्यक्ति ही कर सकते थे। उसका काम राज्य के धनी लोगों को राजा के हक में विभाजित रखना तथा दुश्मन के सेना अधिकारियों को कमजोर करना था।(11.1.34) अभिनेताओं इ. की बिबीयों को संकेतों में संभाषण की कला सीखाई जाती थी। उनका काम दुष्टों की हत्या करना होता था। (2.27.30) (http://sabhlokcity.com//Chanakya's well regulated system of prostitution in ancient India.htm)

अनुंग रंगा (The Stage of Love) यह दक्षिण भारतीय काम विज्ञान की किताब है। उसके अध्यायों में 1) पुरुष व्दारा लंबे समय तक संभोग कैसे जारी रखा जाये 2) कामोत्तेजक अन्न तथा अन्य खाद्य पदार्थ और रसायन, 3) पुरुष लींग को मोटा और लंबा बनाने के तरिके, 4) पुरुष लींग को मजबुत, सख्त और उत्तेजना से भरपुर बनाने के तरिके, 5) स्त्री की योनि को सिकोडकर छोटा बनाने के तरिके, 6) स्त्री योनी को सुगंधित बनाने के तरिके, 7) बच्चों की तादाद कम रखने के तरिके, 8) औरतों के स्तन बडे बनाने के तरिके, 9) लटक रहे स्त्री के स्तनों को कठिन और सख्त बनाने के तरिके, 10) त्वचा को सुगंधित बनाने के तरिके, 11) स्त्रियों अथवा पुरुषों को मोहित करने, अपने अधिन करने की औषधियां तथा टोटके 12) ऐसी विधियां जिससे स्त्री पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित कर उसके प्रेम को जीत सकती है 13) टोटके जिसकी मदद से लोगों को अपने अधिन किया जा सकता है 14) प्रेम पैदा करने वाले रसायन, 15) लोगों को मोहित कर देने वाले इत्र तथा गॅसेस, 16) लोगों को मोहित करने वाले जादूई मंत्र। किताब में विभिन्न 130 तरिके है। (http://www.sacred-texts.com/The Kama Sutra of Vatsyayana Part VII On The Means of Attracting Others to One's Self Concluding Remarks.htm)

आर्य-ब्राह्मणों की विषकन्याएं !

विष-कन्यांए अत्यंत रुपवति बालाएं होती थी। विष-कन्याओं का उपयोग खास तौर पर दुश्मनों की हत्या के लिये होता था। उन्हे बचपन से ही थोडा सा जहर खिलाया जाता था। जहर की मात्रा धीरे धीरे बढाई जाती थी। उनका शरीर जहर का आदी और जहरीला हो जाता था। उनके साथ यौन संबंध कायम करने वाले की मौत हो जाती थी। उनका खून भी जहरिला होता था। कालकी पुराण ने तो यहांतक दावा किया है कि उनके देखने भर से इन्सान की मौत हो सकती है। {हालांकि ऐसा होना नामुमकिन है} सुलोचना नामक विषकन्या का उल्लेख किया गया है। इनका उपयोग दुश्मनों को मारने के लिये किया जाता था। Chanakya's Chant नामक किताब में विषकन्याओं का जिक्र किया गया है। (http://en.wikipedia.org/Visha Kanya - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

नाग-द्रविडों के धन पर मॅजी-ब्राह्मणों का कब्जा !

राहुल सांस्कृत्यायन ने स्वीकार किया है कि मूलनिवासी नाग-द्रविड आर्यो से ज्यादा बुध्दीमान है, उनके जैसे नगर आर्य नही बना सकते। (पेज 63) उनके वृषभ-रथ देखकर ही मधवा इन्द्र ने अश्व-रथ बनाये। असूरों से कवच, गदा, शक्ति, तथा समुद्र यात्रा जैसी कई बातें आर्यो ने असूरों से सीखी है। (राहुल सांस्कृत्यायन, पेज 65) विदेशी आर्य-ब्राह्मण अनपढ ही नही बल्कि शहर निर्माण कला से अनजान थे। कौरव-पांडवों के हस्तीनापुर शहर का निर्माण दानवों ने किया। माया दानव इस सिलसिले में प्रसिध्द है। (Swapan K. Biswas,P.122) इसलिये जासूस-प्रमुख मॅजी-ब्राह्मणों ने नाग-द्रविड राजाओं से विनती की कि खास आर्यो को महल इ. के निर्माण का और खास तौर से गुप्त कक्ष तथा गुप्त रास्ते इ. बनाने का प्रशिक्षण दिया जाय ताकि वे दुश्मन राजाओं के महलों में आसानी से प्रवेश कर उनके खिलाफ गुप्त कार्रवाईयां कर सके, उनके रहस्यों का पता लगा सके। इसतरह आर्यो में 'मॅसन' नामक खास प्रशिक्षित तबका पैदा हुआ। इसकी मदद से मॅजी-ब्राह्मणों ने न सिर्फ दुश्मन नाग-द्रविड राजाओं के गुप्त कक्षों तक में प्रवेश किया और महत्वपूर्ण राज चुराये बल्कि इन राजाओं का गुप्त धन भी चुराने का काम किया। बाद में जो भी महल या इमारतें बनाई गई इन आर्य-मॅसन्स ने नाग-द्रविड राजाओं की जानकारी के बिना उनमें गुप्त रास्ते रखे। मूलनिवासी राजाओं के खिलाफ षडयंत्रों को अंजाम दिया।

नाग-द्रविड राजा शुरु से ही गुप्त षडयंत्रकारी कामों के लिये भारी रकम मॅजी-ब्राह्मण ों के पास रखते थे। मॅजी-ब्राह्मणों ने नाग-द्रविड राजाओं को राजी किया कि वे अपने खजाने का हिस्सा उनके पास सुरक्षित रखे। इसका जिक्र मनुस्मृति तक में आया है :- ब्राह्मणों से न ही चोर उसका धन ले सकते है और न ही उनसे धन खो सकता है। ब्राह्मण के पास रखा जाने वाला धन नष्ट नही होता इसलिए राजा ने संग्रह के लिए ध ान को ब्राह्मणों के पास रखना चाहिये।

बायबल के अध्याय जेनेसिस के मुताबिक निमरोड (Nimrod) नोह के पोते कुश का पुत्र था। वह पूजारी राजा था। उसके मंदिर के अति मजबूत कक्ष में धन सुरक्षित रखा जा सकता था। धनी लोग तथा व्यापारी अपने धन को उसके पास रखते थे जिसकी ऐवज में वह उनको रसीद के तौर पर मिट्टी से बनी उतनी कीमत अंकित मुहर अदा करता था। उसने पाया कि लोग सारा का सारा धन कभी भी वापस नही मांगते बल्कि हर समय एक निश्चित मात्रा में धन उसके पास पडा ही रहता है। तब उसने उस मात्रा में व्यापारियों को 20% के ब्याज पर देना शुरु किया। बेशुमार दौलत इकट्ठी होनी शुरु हुई।

राजा तथा दिगर मालदार लोगों व्दारा गुप्त रुप से स्थानांतरित की हुई संपत्ति को हडपने के लिये उनकी हत्याएं करने के षडयंत्र मॅगी-ब्राह्मणों ने अंजाम दिये। इसकी जीती जागती आधुनिक मिसालें 1) सन् 1806 में नेपोलियन ने ऐलान किया कि उसका मकसद ''हाउस ऑफ हेसकॅसेल'' (house of Hess-Cassel) की सत्ता को उखाड फेंकना है। यह सुनते ही हेसस हनाउ के नौवे राजकुमार विलियम ने जर्मनी से भाग कर डेन्मार्क पहुंचकर अपनी $3,000,000 कीमत की दौलत मेयर अमस्चेल रोथचाईल्ड (Mayer Amschel Rothschild) के पास सुरक्षित रखी। लेकिन यह धन राजकुमार को कभी वापस नही किया गया। 2) सन् 1917 में रोथचाईल्ड ने झार निकोलस व्दीतीय के पूरे परिवार महिलाओं और बच्चों सहित का जनसंहार करा दिया क्योंकि जार ने अरबों का धन रोथचाईल्ड व्दारा नियंत्रित युरोप के बँकों में जमा किया हुआ था। रुस के जार

के पूरे परिवार की हत्या होने से इस धन का कोई वारीस ही नही बचा। 3) हिटलर ने अपना बेशुमार गुप्त धन स्वीस बँकों में जमा किया था। हिटलर की कथित मौत के बाद कभी जर्मनी को वापस नही किया गया। 4) स्विस बँकों में पूरी दुनियां के राजनीतिज्ञों का विशाल धन जमा है। कोई राजनेता धन के बारे किसी को बताये बिना मर जाता है तो यह धन इन बँकों का हो जाता है। मॅगी-ब्राह्मणों ने धन हडपने के लिये हत्याएं कराई । उनका दोष मृतकों के दुश्मनों पर मढ़ दिया। मॅजी-ब्राह्मणों ने बेशुमार दौलत हासिल की। वे नाग-द्रविड राजाओं को कर्जा तक देने लगे।

मॅजी-ब्राह्मणों की षडयंत्र तकनीकें !

कौटिल्य के मुताबिक जिन्हे षडयंत्र का शिकार बनाना होता है उनके खिलाफ आगे बताई हुई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाये।

डॉक्टर-वैद्य का व्यवसाय करने वाला जासूस स्वस्थ व्यक्ति के बारे में घोषणा करता है कि वास्तव में वह व्यक्ति गहरी गंभीर बीमारी से ग्रस्त है। वह दवाई के नाम पर ऐसा जहर देता है जिससे कुछ ही दिनों में वह व्यक्ति अचानक मर जाता है।

शिकार व्यक्ति के घर में नौकरी कर रहा जासूस यह तोहमत लगाता है कि उसके मालीक के घर में दुश्मन राज्य के जासूसों के खत इ. वस्तूएं है। इसकी सबब पर उस व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई की जाती है।

भारव्दाज के मुताबिक मरणासन्न राजा के मंत्री ने राज्य के एक उत्तराधिकारी को दूसरे उत्तराधिकारी के खिलाफ कार्रवाई के लिये उकसाना चाहिये। जो भी विद्रोह करता है उसे मौत के घाट उतार देना चाहिये। दूसरे का यही हश्र करना चाहिये। इस सबब पर कि परिवार के सदस्य एक दूसरे के दुश्मन है, खुद राजगद्दी काबिज करना चाहिये।

विरोधियों की आपसी नफरत, ईर्षा तथा उनके बीच संघर्ष के दिगर संभावित कारण ों का पता लगाकर उनके बीच संघर्षो को उकसाना चाहिये और अंत में उनमें से किसी की हत्या कर दूसरे को आरोपित कर उसे बंदी बना लेना चाहिये।

किसी मंत्री के महत्वाकांक्षी पुत्र को विश्वास में लेकर बताना चाहिये कि वह वास्तव में अमुक राजा का पुत्र है। उसे शत्रुओं की नजर से बचाने के लिये यहां रखा गया था। उसको इस बात पर पूरा भरोसा होने पर उसे मंत्रियों के खिलाफ इस्तेमाल करें। जब वह काम को पूरा करता है तो उसी षडयंत्र के आरोप में उसे भी बंदी बनाया जाये।

व्यापारी के भेस में कार्यरत जासूस रानी की नौकरानी पर तोहफों का वर्षाव करता है। फिर अचानक तोहफे देना और उससे मिलना बंद कर देता है। दूसरा जासूस जो नौकर के रुप में कार्यरत है नौकरानी को जादूई पेय देकर कहता है कि इसे व्यापारी को पिलाने से वह फिर से तुम्हारे प्रेम में पड जाएगा। वह वैसा ही करती है और उनमें दोबारा प्रेम और तोफहों का सिलसिला शुरु हो जाता है। नौकर जासूस नौकरानी को उकसाता है कि रानी यह पेय राजा को देकर उसके प्रेम की वह सिर्फ इकलौति अधि ाकार बने। रानी के राजी होने पर पेय को खास जहर में बदल दिया जाये।

विशेष धार्मिक विधि को प्रतिष्ठित कराने के लिये खुद राजा इस विधि को बडे गाजे बाजे के साथ अंजाम दे और उसकी परिणामकारकता को प्रचारित करें ताकि दूसरे भी यह विधि करने को लालायित हो जाये। जोतिषी के भेस में जासूस शिकार को इस विशेष विधि करने के लिये कहते है जिससे उसके आने वाले संकट टल जाये। जब

शिकार लगातार सात रातों तक विशेष मंत्रोच्चारण से यह विधि करने के दौरान चुपके से उसकी हत्या कर दी जाती है और दोष दुष्ट ताकतों पर मढा जाता है। राजा या अधिकारी किसी खास धर्मस्थलों, धर्मगुरु इ. के पास जाने की आदत रखता हो तो वहां हत्यारे छुपा कर रखने का इन्तेजाम कर उसकी हत्या कर दी जाये।

शिकार मंत्री या अधिकारी की दौलत का वारीस बनाने का प्रलोभन उसके किसी रिश्तेदार को देकर उसकी राजा या उच्च अधिकारी से बात कराई जाये ताकि उसे इस बात का पूरा पूरा भरोसा हो जाये। उसके हाथों शिकार व्यक्ति की हत्या कराकर बाद में इसी हत्या के जुर्म में उसे भी मार डाला जाये।

जासूस के उकसावे में जब शिकार मंत्री या अधिकारी का रिश्तेदार संपत्ति में अपना अधिकार मांगता है और उसके घर के आगे बैठ जाता है तो रात को उसकी हत्या करा दी जाये और शिकार मंत्री या अधिकारी को उसकी हत्या के जुर्म में बंदी बनाया जाये।

जब भी दो शिकार खेमों के बीच संघर्ष होता है तो एक खेमे के लोगों के खिलाफ हिंसात्मक कार्रवाईयों को अंजाम देकर उसका दोष दूसरे खेमे पर मढकर उनको दंडित किया जाये। उपरोक्त सिर्फ चंद उदाहरण मात्र है।

ब्राह्मणों के पुराणों में भी ऐसी ही बातों का वर्णन किया गया है :- साम, दान, दंड, भेद, उपेक्षा, इन्द्रजाल और माया - ये सात उपाय है; इनका शत्रु के प्रति प्रयोग करना चाहिये। जो सब लोगों को व्देषप्राप्त हो, ऐसे दुष्टों का प्रकट रुप से वध करना चाहिये; किन्तु जिनके मारे जाने से लोग उदिग्न हो उठे, जो राजा के प्रिय हो तथा अधि ाक बलशाली हो, वे यदि राजा के हित में बाधा पहुंचाते है तो उनका गुप्त रुप से वध करना उत्तम कहा गया है। गुप्त रुप से वध विष देकर, एकांत में आग आदि लगाकर, गुप्त मणुष्यों व्दारा शस्त्र का प्रयोग कराकर अथवा शरीर में फोडा पैदा करने वाले उबटन लगवाकर राज्य के शत्रु को नष्ट करें। जो जातिमात्र से भी ब्राह्मण हो उसे प्राणदंड न दे। उसपर सामनीति का प्रयोग कर उसको वश में लाने की चेष्टा करें। (अग्नि पुराण p.464-65) देवताओं की प्रतिमाओं तथा जिनमें देवताओं की मूर्ति खुदी हो, ऐसे खंबों के बडे बडे छिद्रों में छिपकर खडे हुए मणुष्य 'माणुषी माया' है। इच्छानुसार रुप धारण करना, शस्त्र, अग्नि, पत्थर और जल की वर्षा करना तथा अंधकार, आंधी, पर्वत और मेघों की सृष्टी कर देना - यह अमानुषी माया है। अन्याय, व्यसन तथा बडे के साथ युध्द में प्रवृत हुए आत्मीय जन को न रोकना उपेक्षा है। मेघ, अंधकार, वर्ष, अग्नि, पर्वत तथा अन्य अदभुत वस्तुओं को दिखाना, दूर खडी हुई ध्वजशालीनी सेनाओं का दर्शन कराना, शत्रु पक्ष के सैनिकों को कटे, फाडे तथा विदीर्ण किये गए और अंगों से रक्त की धारा बहाते हुए दिखाना - यह सब इन्द्रजाल है। शत्रुओं को डराने के लिये इस इन्द्रजाल की कल्पना करनी चाहिये।(अग्नि पुराण p.466) जैसे वायू बांसों के संघर्ष से दानावल पैदा करके उन्हे जला देता है, वैसे ही पृथ्वी के भारभूत और शक्तिशाली राजाओं में फूट डालकर बिना शस्त्र ग्रहण किये ही भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हे कई अक्षौहीनी सेनाओं सहित एकदूसरे से मरवा डाला और उसके बाद आप भी उपराम हो गये।(भागवत पुराण p. 52) वे सोचने लगे - यदि द्रोण, भिष्म, अर्जुन भीमसेन के व्दारा इस अट्ठारह अक्षौयीनी सेना का विपुल संहार हो भी गया, तो इससे पृथ्वी का कितना भार हल्का हुआ। अभी तो मेरे अंशरुप प्रद्युम्र आदि के बल से बढे हुए यादवों का दुसःह्य दल बना ही हुआ है। जब ये मधुपान से मतवाले हो लाल लाल आँखें कर आपस में लडने लगेंगे, तब उससे ही इनका नाश होगा। इसके सिवा और कोई उपाय नही है।(भागवत पुराण p.110)

जब भगवान श्रीकृष्ण ने देखा कि समस्त यदुवर्शीयों का संहार हो चुका, तो उन्होने यही सोचकर संतोष की सांस ली कि पृथ्वी का बचाखुचा भार भी उतर गया। (भागवत पुराण p. 922) दैत्यों की वजह से पृथ्वी का भार बढ गया है इसलिये देवताओं की ओर से अब उनके वध की तैयारी की जा रही है। (भागवत पुराण p. 540)

मॅजी ब्राह्मणों ने नाग-द्रविडों को आपस में लडाकर कमजोर किया !

जो नाग-द्रविड राजा आर्य-ब्राह्मणों के अनुकुल नही होता था उसे तमाम षडयंत्रों से अपदस्त किया जाता था या फिर उसकी हत्या की जाती थी।

श्रीलंका की रानी अनुला (47 BC – 42 BC) श्रीलंका के इतिहास की पहली रानी है जिसके हाथ में सत्ता तथा तमाम अधिकार केन्द्रित थे। वह एशिया के किसी राज्य की सबसे पहली प्रमुख थी। अनुला ने सत्ता तक पहुंचने के लिये राजा चोरेनाग (also known as 'Coranaga' and 'Mahanaga') जो अनुराधापुरा के राजा वलगामबाहु के पुत्र थे से शादी की। अपने पांच वर्ष के शासन काल में उसने कम से कम अपने चार पतियों को जहर देकर मार डाला और खुद ही राजसत्ता पर हावी रही। [Wikipedia](Anula of Anuradhapura – Sri Lankan Black Widow Serial Killer of 5 Husbands - 42 BC (http://unknownmisandry.blogspot.in) चाणक्य ने राजाओं की किस तरह से हत्याएं की जाती रही है इसके उदाहरण दिये है :- तले हुए चावल में शहद की तरह जहर मिलाकर राजा की रानी ने अपने पति कासीराजा की हत्या कर दी। अपने पैर की पाजेब में जहर लगाकर रानी ने अपने पति राजा वैरान्त्या की हत्या कर दी। राजा की रानी ने अपने हीरे पर जहर लगाकर राजा सौवीरा की हत्या की। चेहरा देखने वाले शिशें में जहर लगाकर रानी ने अपने पति राजा जलुथा की हत्या की। रानी ने अपनी चोटी के भीतर हथियार छुपाकर राजा विदुरथ की हत्या कर दी। रानी के कमरे में छुपे हुए राजा के भाई ने ही राजा भद्रसेन की हत्या कर दी। अपनी मां के पलंग के नीचे छुपकर राजा के बेटे ने अपने बाप राजा कुरुसा की हत्या कर दी। (Kautilya's Arthashashtra)

राजाओं के गुप्त रहस्य को ब्राह्मण मंत्र कहते थे। राजाओं पर नियंत्रण किया जा सके ऐसे रहस्यों को वे महामंत्र कहते थे। ऐसे रहस्यों की मदद एक राजा को दूसरे राजा पर हमला करने पर बाध्य कर सकते थे, सेना में विद्रोह करा सकते थे, राज्य में सत्ता-संघर्ष पैदा कर सकते थे। इन तिकडमों से मॅजी-ब्राह्मणों ने नाग-द्रविडों को आपस में लडाकर उन्हे कमजोर करना शुरु किया। युध्द का नतिजा वे अपने मतलब के मुताबिक खुद तय करते थे ताकि ब्राह्मणों की ताकत और ज्यादा बढ जाये और राजा उनकी कठपुतलियों से ज्यादा की हैसियत ना रखे। इसलिये ब्राह्मणों का दावा था कि वे अपने महामंत्रों की बदौलत किसी के भी राज्य का विनाश कर सकते है, देव उनके मंत्रों के गुलाम है।

ग्रीक सुत्रों के मुताबिक जब 331/330 की सर्दियों में मेसोडेनिया के सम्राट अलेक्झांडर ने पर्शिया पर हमला किया और Achaemenid साम्राज्य का अंत किया तो अलेक्झांडर के कोर्ट में मॅजी मौजूद थे। इससे मॅजियों तथा अलेक्झांडर के बीच की सांठगांठ का पता चलता है।(http://www.livius.org/home.html Magians) सासानियन राजा अर्डासीर ने मॅजी-ब्राह्मणों को बेशुमार सुविधाएं दी। उसके राज्य में मॅजी न्यायाधीश तथा टॅक्स वसूल करने वाले अधिकारी हुआ करते थे। वे सरकारी उच्च सदन काउंसिल ऑफ मेजिस्टेन्स (Megistanes) हुआ करते थे। उसी से मॅजिस्ट्रेट यह शब्द बना है। मॅजीयों को यह पूरा

अधिकार था कि वह राजा का चयन करें। फ्रॅटेसेस (Phraataces) अपने पिता Phraates IV की हत्या कर राजा बना था। मॅजियों ने ही उसे पार्थिया का हुक्मरान करार दिया था। राज्य की हालत चाहे जैसी क्यों ना हो मॅजियों के धार्मिक प्रभुत्व में कभी कमी नही आई।(http://www.farvardyn.com/ THE MAGI - A SHORT HISTORY By Shelagh McKenna; http://ldolphin.org/asstbib.shtml Who Were the Magi? By Chuck Missler) मॅजी-ब्राह्मणों ने नाग-द्रविड राजाओं को पूरी तरह अपने उपर निर्भर बना लिया था।

भारत में भी क्षत्रिय राजा ब्राह्मणों की सलाह से राज करते रहे है। ऐसे ब्राह्मणों को राजऋषि कहा जाता था। राज्य के मूल कानून पूजारियों व्दारा निर्धारित प्रजा पर लादे गए नियम थे। राजा सिर्फ राज्य के व्यवस्थापन का काम करते थे। राज्य के असली सत्ताधीश ब्राह्मण होते थे। पूरी दुनियां में पूजारी राजाओं पर हावी थे। कई देशों में धार्मिक राजसत्ता (theocracy) कायम थी। (https://sites.google.com/site/colonialconsciousness/mantrasofantibrahmanism - Colonial Consciousness.htm)

पुरोहित पद के लिये क्षत्रीय तथा ब्राह्मण आर्यो के बीच संघर्ष !

पुरोहित बनने के लिये ब्राह्मणों का अपने ही क्षत्रिय आर्यो से संघर्ष हुआ। शुद्र आर्य-क्षत्रियों का हिस्सा थे और उन्हे उपनयन का अधिकार था। वे ब्राह्मणों की चातुवर्ण व्यवस्था के सवर्ण-शुद्र थे। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार ब्राह्मणों ने वैश्य तथा क्षत्रियों पर निम्नलिखित मांगे सख्ती से मनवाने का प्रयत्न किया।

1) ब्राह्मण को सभी वर्णो ने अपने गुरु के रुप में स्वीकार करना चाहिये। 2) ब्राह्मणों को ही सभी वर्णो के अधिकार तय करने, तथा उनके अपनी उपजिविका के साधन तय करने का अधिकार होगा। सभी वर्णो ने ब्राह्मण के बताए हुए नियमों का पालन करना चाहिये। राजा का कर्तव्य ब्राह्मण व्दारा बताए नियमों निर्देशों के अनुसार राज चलाना है। 3) राजा का ब्राह्मण पर कोई अधिपत्य नही होगा। राजा को बाह्मणों के अलावा सब पर राज करने का अधिकार होगा। 4) कोडे मारना, बेडीयाँ डालना, आर्थिक दंड, देश निकाला, दोष लगाना, टीका टिप्पणी करना, कैद करना इ॰ बातें ब्राह्मणों पर लागू नही होगी। 5) वेदों का अध्ययन किये हुए ब्राह्मण करों की अदायगी से मुक्त रहेंगे। 6) किसी ब्राह्मण ने खजाना खोज निकाला है तो सारे खजाने पर उस ब्राह्मण का अधिकार होगा। कोई खजाना राजा ने ढुंढा है तो राजा को आधा खजाना ब्राह्मणों में वितरित करना होगा। 7) बिना किसी उत्तराधिकारी के मरने वाले बाह्मण की सारी संपत्ति का वितरण ब्राह्मणों में किया जायेगा। 8) रास्ते में राजा को कोई ब्राह्मण मिले तो राजा ने ब्राह्मण के लिए रास्ता छोडना अनिवार्य है। 9) सबने पहले खुद होकर ब्राह्मण को सलाम करना चाहिये। 10) ब्राह्मण ने किसी की हत्या की है तो भी ब्राह्मणों को पवित्र मानकर उसे सजाये ए मौत नही दी जाए। 11) ब्राह्मण को मारने की धमकी देना, हमला करना गंभीर अपराध है। 12) ब्राह्मण को दी जाने वाली सजा औरों को दी जाने वाली सजा की तुलना में अत्यंत कम होनी चाहिये। 13) जिस मुकदमे का आरोपी या फरियादी ब्राह्मण न हो ऐसे किसी भी मुकदमे में ब्राह्मण को साक्षी के तौर पर नही बुलाया जाये। 14) किसी औरत के गैरब्राह्मण दस पति क्यों ना हो, ब्राह्मण ने शादी करते ही उस स्त्री पर उसके पूर्व पतियों का अधिकार समाप्त होगा। भिक्षा माँगने किसी भी घर में प्रवेश का अधिकार, बिना चोरी के आरोप के इंधन, फुल, पानी लेने का अधिकार, अन्यों की बीवीयों से बे रोकटोक बातें करने का अधिकार, तथा बिना किराया दिये नदी पार कराए जाने इ॰ अधिकार ब्राह्मणों ने शामिल किये। (Dr. Ambedkar, Vol. 7, p. 189-190)

ब्राह्मणों की मांगे शुद्र क्षत्रिय आर्य राजाओं को अपमान जनक अनुभव हुई। सोलर पट्टे में रहने वाले शुद्र क्षत्रिय आर्य राजा ब्राह्मणों से अधिक विव्दान थे। वे वेदों के कई काव्यों के रचयिता होने से राजर्षि के नाम से जाने जाते थे। शुद्र क्षत्रिय विश्वामित्र ऋषी ने गायत्री मंत्र की रचना की जिसे ब्राह्मणों के वेद में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। वह राज-पूरोहित बनकर पूजा-अर्चना इ॰ सभी विधि भी करता था। अपने वर्चस्व की रक्षा के लिए ब्राह्मणों और सोलर क्षेत्र के शुद्र क्षत्रियों के बीच कडा संघर्ष हुआ यह ऋग्वेद की ऋचाओं से स्पष्ट है। 1) ''ओ इन्द्र, तुमने हमारे दोनों दास तथा आर्य दुश्मनों की हत्या कर दी '' 2) ''इन्द्र और अग्नि यह दो अच्छाई तथा सच्चाई के संरक्षकों ने दासों तथा हमें नुकसान पहुँचाने वाले आर्यो का दमन किया। 3) ''ओ इन्द्र, तुने हमें क्रूर राक्षसों तथा इन्दु के किनारे रहने वाले आर्यो से हमें बचाया, अब दासों को उनके हथियारों से वंचित कर दे। 4) '' ओ पूजनीय इन्द्र, हमारे दुश्मन धर्मविरोधी दासों तथा आर्यो का दमन करना आसान बना दो। तुम्हारी सहायता से हम उनको कत्ल कर देंगे। 5) ''ओ मामेयु, तुम्हारी पूजा करने वाले को तुम शक्तियाँ देते हो। तुम्हारी सहायता से हम अपने शत्रु आर्यो और दस्युओं को ध्वस्त कर देंगे।''(Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 7, P. 86, 190-192,189).

शुद्र क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को बडी बेरहमी से जवाब दिया। वेणा ने ब्राह्मणों को अपनी पूजा करने के लिए मजबूर किया। पुर्वरा ने ब्राह्मणों की संपत्ति लूटी। नाहुशा ने ब्राह्मणों से बैलों की तरह घोडागाडी खिंचवाई। निमी ने ब्राह्मणों के पारिवारिक पूजारी बनने के अधिकार का मखौल उडाया। शुद्र क्षत्रियों ने वशिष्ट मुनि के बेटे को आग में जिंदा जला दिया जो पारिवारिक पूरोहित था। वशिष्ट को राजपूरोहित के पद से हटाकर विश्वामित्र को राज पूरोहित बनाया। इन्द्र को भी नाहुशा के डर से भागना पडा। उसने इन्द्राणी पर अधिकार करना चाहा।(Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 7, P. 86, 190-192,189).

ब्राह्मणों ने कुट-नीति से शुद्र क्षत्रियों को 'उपनयन' के लिए अपात्र घोषित किया। उपनयन प्रथा में जनेउ नामक धागे को प्रस्तुत करके शुद्र क्षत्रियों की पहचान सबसे अलग कर दी। पूर्व मिमांसा के अनुसार धन सिर्फ यज्ञ करने के लिए अर्जित किया जाता है। जिनका उपनयन विधि होकर जिन्हे जनेउ पहनाया गया है, वेदों की शिक्षा और यज्ञ करने का अधिकार उन्ही लोगों को है। ऋग्वेद में पुरुष-सुक्त की रचना कर शुद्र को नीच घोषित किया गया। ब्राह्मणों ने शुद्र क्षत्रियों के खिलाफ निम्नलिखीत धार्मिक प्रतिबंध लगायें :-- 1) समाज में शुद्रों का दर्जा अंतिम होगा। 2) शुद्र अपवित्र है इसलिए हर पवित्र कार्य इस तरह से करने चाहिये की शुद्र उसे न ही देख सके और न ही सुन सके। 3) शुद्रों को अन्य व्यक्तियों की तरह सम्मान नही देना चाहिये। 4) शुद्रों के जान की कोई कीमत नही है। कोई भी बिना मुआवजा दिये उनकी हत्या कर सकता है। कभी मुआवजा देना ही पडा तो उसका मूल्य अन्य वर्णो के लोगों की हत्या के मुआवजे से अत्यंत अल्प होगा। 5) शुद्रों को शिक्षा का अधिकार नही है। शुद्र को शिक्षित करना पाप और अपराध है। 6) शुद्र को संपत्ति रखने का अधिकार नही है। ब्राह्मण को यह अधिकार है कि वह जब चाहे शुद्रों की संपत्ति छीन सकता है। 7) शुद्र को राज्य में कोई पद नही दिया जायेगा। 8) शुद्रों का उध्दार उच्च वर्णो की सेवा में है। 9) उंचे वर्ण के किसी व्यक्ति ने शुद्र से विवाह नही करना चाहिये। वे शुद्र स्त्री से अनैतिक संबंध रख सकते है। कोई शुद्र उच्च वर्ण की स्त्री को छु भी लेता है तो वह कडी से कडी सजा

का भागीदार बनेगा। 10) शुद्र का जन्म गुलाम के रुप में हुआ है इसलिए उसे गुलाम बनाकर रखना चाहिये। (Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 7, P. 158,157) उस समय कुछ आर्य द्रविडों से लड रहे थे तो कुछ अपने ही आर्यो के शुद्र-क्षत्रियों से लड रहे थे। कुछ आर्यो ने आर्यो के खिलाफ द्रविडों से मदद ली। इसतरह आर्यो और नाग-द्रविडों के राजकीय संबंधों में जटिलताएं निर्माण हुई।

मॅजी-ब्राह्मणों के खिलाफ जन-प्रतिरोध !

ब्राह्मण को 'रहस्यों, जानकारियों यानि प्रकाश लाने वाला लुसिफर कहा गया। लुसिफर का अर्थ प्रकाश यानि जानकारियों को लाने वाला होता है। एन्जल यानि देवदूत शब्द से ही एजन्ट शब्द विकसित हुआ है। लुसिफर 'Angel' यानि एजन्टों का प्रमुख था। शैतान 'satan' शब्द का हिब्रु में मतलब 'प्रतिव्दंदी' या 'दुश्मन' है। यहूदी धार्मिक ग्रंथों के मुताबिक शैतान का काम देवों की सहमति से लोगों के विश्वास की जांच करना था। इसलिये शैतान का स्थान स्वर्ग था।(http://hubpages.com/The Evolution of Satan - Part 1.html)

नाग-द्रविड ओहदेदार अपने राजा के प्रति समर्पित और इमानदार है या नही इसकी ल्युसिफर जांच करता था। असंतुष्ट तथा विद्रोही किस्म के व्यक्ति का इस्तेमाल अपरोक्ष रुप से अपने फायदे के लिये जैसे कि उसके रहस्य जानकर उसे अपने किसी हस्तक के जरिये ब्लेकमेल करना, उसका राज राजा को बताना साथ ही उसे भी राजा की संभावित कार्रवाई की खबर पहले ही पहुंचाकर गुप्त रुप से उसे बचने के उपाय उपलब्ध कराकर विशेष व्यक्ति की शरण में भेजना इ. तमाम तिकडमें ल्युसिफर अपना सकता था। ल्युसिफर शब्द शैतान शब्द का समानार्थी बन गया। अर्थ का यह बदलाव इसलिये हुआ क्योंकि नाग-द्रविडों के इस सेवक ने इतनी ताकत हासिल कर ली थी कि वह नाग-द्रविडों का तख्ता पलट कर खुद सत्तानशीन होना चाहता था। उसकी योजना नाकाम हो गई, उसे नाग-द्रविडों के देव यानि ईश्वर के राज्य से निष्काषित किया गया। ब्राह्मण ल्युसीफर ईरान में मॅजी, मध्य-पूर्व में रॅबी, तथा तिब्बत में लामा कहलाए गए।

राबर्ट चार्ल्स झाईहनेर (Robert Charles Zaehner) के मुताबिक पर्शिया, पार्थिया, बॅक्ट्रिया, चोरास्मिया, अरिया, मिडीया, सकों तथा गैर इरानी देशों रामारिया, इथिओपिया तथा इजिप्त में भी मॅजी देखे जा सकते थे। उनका प्रभाव पूरे एशिया मायनर में था। आरंभिक ग्रीक लिखाणों में मॅजियों को धोखेबाज ढोंगी के तौर पर नफरत से देखा जाता था। कुरआन The Qu'ran 22:17 में मॅगी शब्द का एक बार इस्तेमाल गैर ईमान वालों के तौर पर हुआ है।(http://en.wikipedia.org/Magi - Wikipedia, the free encyclopedia. htm) इतिहास की एक अधिकारिक शख्सियत Hillebrandt के अनुसार देवदासा के बीच हुवा संघर्ष वास्तव में Arachosia में हुवा है। देवदासा से संघर्ष करने वाली पहली ब्रीस्य जाति क्षत्रप बारसेटस तथा दूसरी जाति परवटाज गेडरोसिया अथवा एरिया की पुरुएटा जाति है। सरस्वती भारत की नही बल्कि ईरान की हरहवती नदी है।(Page 77-78, The Cambridge History of India, Vol. I) झारास्टुरा को अपनी जन्मभूमि ''आर्यानो वेजो'' जो अजरबैजान के अट्रोपेटिन (Atropatene) में स्थित है में सफलता हासिल नही हुयी बल्कि यह सफलता उसे बल्ख (बॅक्ट्रीया) में मिली। (E.G.Browne, P. 19,20, 36,24, 26)

हेरोडोटस पर्शिया के कॅलेंडर में ''लाल-अक्षरों वाले दिन'' मॅगोफोनिया यानि मॅगियों की हत्या करने के उत्सव का जिक्र है। उस दिन मॅजी को अपना चेहरा दिखाने की

अनुमति नही होती थी। सभी मॅगी घर के अंदर उत्सव खत्म होते तक बंद रहते थे। (http://orthodoxzoroastrianism.wordpress.com/Orthodox Zoroastrianism _ Page 3.html) ईरान में मॅगोफोनिया यानी मॅगी पूजारियों की हत्या की प्रथा अस्तित्व में थी। बाद में यह प्रथा प्रत्यक्ष में मॅजी पूजारियों की हत्या करने के बदले उनका मखौल उडाने इ॰ तक सिमित हो गयी। (Ramprasad Chanda, p.210) सम्राट डेरियस (Dariush) ने मॅजियों की हत्याएं करने का अभियान चलाया गया था। मिथ्रा समारोह डेरियस की विजय के बाद मोघ हत्या का समारोह बन गया। हेरेडोटस् ने मॅगी हत्याओं को Magophonie कहा है। (Mitra, Christmass and Pir Shaliyar Ceremony By Siamak R. Durroei) अलेक्झांडर ने झोरोस्टर के धार्मिक स्थलों को नष्ट किया पूजारियों को प्रताडित किया तथा धार्मिक साहित्य को नष्ट किया।(http://orthodoxzoroastrianism.wordpress.com/ Orthodox Zoroastrianism _ Page 3.html) लोगों के गुस्से से बचने के लिये ईसापूर्व 18 वी शताब्दी में मॅगियों को पलायन कर अपनी जान बचानी पडी। मॅगी आर्यो का एक समूह भारतीय महाव्दीप में तथा दूसरा सेमिटिक भूमि में किराये के यौध्दाओं के रुप में विस्थापित हुवा। इजिप्शियन ग्रंथों, हिट्टी ग्रंथों में तथा ईसापूर्व 16 वी शताब्दी के दस्तावेजों में उनका जिक्र मरियानी (Marianni) यानि यौध्दाओं के रुप में किया है। मेसोपोटेमिया तथा सीरीया में उनके इरानी नाम उजागर होते है। भारतीय तथा इरानियन समूह करिबी संबंधों को कायम रखे हुए है। (The Aryan Descent) यहूदी भी भागने पर मजबूर हुई आर्यो की टोलियाँ है। आर्य जो सेमिटिक प्रदेशों में पलायन कर गए वे यहूदी बन गए तथा रॅबी कहलाये गए। यहूदी रॅबियों के धर्मग्रंथ तलमूद तथा आर्य ब्राह्मणों के मनुस्मृति में पूरी समानता है। अथर्वन तथा रातेश्वर्स (Rateshvars) को पर्शिया से फरावहार (Faravahar) के लोगों ने बाहर कर दिया। वे पर्शिया से मध्य-एशिया तथा मध्य-एशिया से अफगानीस्तान आये। अफगानीस्तान से उन्होने भारत पर हमला किया। इन अथर्वन्स तथा रातेश्वर्स ने भारत में खुद को ब्राह्मण और क्षत्रिय नाम दिया।

यहूदी-रॅबी तथा ब्राह्मण आर्यो के विभक्त हुए समूह है !

यहूदी रॅबी तथा ब्राह्मणों के धार्मिक विश्वासों की समानता !

काबालिस्ट (Kabbalist) प्राचीन यहूदी है। काबाल्लाह (Kabbalah) यहूदियों की प्राचीन मान्यताएं है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाई जाती रही। मोजेस को उनके उगम के तौर पर माना जाता है। जोहार (Zohar) 5 ग्रंथों में लिखा है। तोराह (Torah) तथा यहूदी धार्मिक विश्वासों, कथाओं को रहस्यवादी ढंग से जोहार में समझा गया है। उसे काबाल्लाह का दिल माना जाता है। { काबाल्लाह क्या काबा तथा अल्लाह शब्दों से बना है ?} तलमूद (Talmud) यहूदी धार्मिक कानून है। तलमूद तथा मनुस्मृति लगभग समान है :- यहूदी जीता-जागता ईश्वर है, धरती पर ईश्वर का अवतार है। यहूदी स्वर्गीय इन्सान है। बाकि लोग कमतर लोग है। उनका अस्तित्व यहूदियों की सेवा

के लिये है। गोयीम (Goyim) यानि गैर यहूदी जानवरों के बच्चे है। (Jewish Cabala) गैर-यहूदियों को यहूदियों की गुलामी करने पैदा किया गया है। (Midrasch Talpioth 225) यहूदी इन्सान है लेकिन गैर-यहूदी इन्सान नही है, वे गाय-बैलों की तरह है। (Kerithuth 6b, page 78, Jebhammoth 61) गैर-यहूदियों से लैंगिक संबंध जानवरों से लैंगिक संबंध करने जैसा है। (Kethuboth 3b). गुम हो चुकी गायों और गधों की पूर्ति दूसरी गायों व गधों से की जाती है, वैसे ही गैर-यहूदियों के साथ करना चाहिये। (Lore Dea 377,1)

बोस्टन तलमूद सोसायटी व्दारा प्रकाशित यहूदियों की बॅबिलॉन तलमूद के कुछ अंश प्रस्तुत है :- ईश्वर ने भले ही गैर यहूदियों को पैदा किया, फिर भी वे इन्सानी रुप में जानवर है। यहूदियों की सेवा जानवर नही कर सकते इसलिये गैर यहूदी जानवरों को इन्सानी रुप में यहूदियों की सेवा के लिये बनाया गया है (Midrasch Talpioth, p. 255, Warsaw 1855)। कोई गर्भवति गैर यहूदी स्त्री किसी गर्भवति जानवर से बेहतर नही है (Coschen hamischpat 405)। गैर यहूदियों की आत्माएं अपवित्र है जिन्हे सुवर कहा जाता है (Jalkut Rubeni gadol 12b)। हालांकि गैर यहूदियों के शरीर का आकार भी यहूदियों की तरह ही है उनकी यहूदियों से तुलना करना बंदर और इन्सान के बीच तुलना करने जैसा है (Schene luchoth haberith, p. 250 b)। अगर आप गैर यहूदी के साथ बैठकर खाना खाते है तो वह वैसा ही है कि कोई कुत्ते के साथ बैठकर खाना खाये (Tosapoth, Jebamoth 94b)। अकुम यानि गैर यहूदी कुत्ते की तरह है। हमारा धर्मग्रंथ हमें गैरयहूदियों से ज्यादा सम्मान कुत्ते को देने को कहता है (Ereget Raschi Erod)

गैर यहूदी वंशों से हम वैसे ही अलग है जिस तरह वे बाकी कीडों-मकौडों से अलग है। गैर यहूदी वंश मानव के मलमूत्र की तरह है। यहूदी वंश हुक्मरान वंश है। हम इस ग्रह के पवित्र देवता है। हमारी नियति इन बदतर वंशों पर राज करना है। इस दुनियां पर हमारा नेता लोहे के दंड के बल पर राज करेगा। गैर यहूदी हमारे तलुए चाटेंगें और गुलामों की तरह हमारी सेवा करेंगे (Menachem Begin - Israeli Prime Minister 1977–1983 in a speech to the Knesset (Israeli Parliament) quoted by Amnon Kapeliouk New Statesman June 25 1982) यहूदी अपने स्त्रोत तथा अपने सार में पूर्णतः अच्छा है। लेकिन गैर यहूदी अपने स्त्रोत तथा अपने सार में पूरी तरह से दुष्ट है। यह कोई धार्मिक फर्क नही है, यह मामला दो अलग अलग प्रजातियों का है। (Rabbi Saady Grama) यहूदियों का खून गैर यहूदियों जैसा नही है। (Rabbi Yitzhak Ginsburg)

वास्तव में यहूदी चुने हुए लोग है ..... उनका इतना अधिक सम्मान है कि कोई भी यहां तक कि देवदूत भी उसके बराबर स्थान नही रखता। वे ईश्वर के समकक्ष है।(Pranaitis, I.B., The Talmud Unmasked, Imperial Academy of Sciences, St. Petersburg, Russia, 1892, p. 60) जेहोवाह (Jehovah) स्वर्ग में खडे रहकर तलमूद का अध्ययन करता है क्योंकि वह तलमूद को सम्मान देता है।(Tr. Mechilla) तलमूद की शिक्षा सभी कानूनों से उपर है। तलमूद के कानून मोजेस तथा तोराह के कानूनों से भी बडे है। (Miszna, Sanhedryn XI, 3) रॅबी के आदेश बायबल के आदेशों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। जो भी रॅबी के आदेशों का उल्लंघन करता है वह मौत का हकदार है। नर्क में उसे खौलते हुए मल में उबाला जायेगा।(Auburn 21b p. 149-150) रॅबी बहस में ईश्वर को परास्त कर देता है। ईश्वर मान लेता है कि वह बहस हार गया है। (Baba Mezia 59b. (p. 353) {इससे स्पष्ट है कि ईश्वर नाग-द्रविड राजा यानि देव है।} ईश्वर की पूरी संकल्पना ही दकियानुसी (outdated) है, यहूदी-धर्म ईश्वर के बिना भली भाँति कार्यरत रह सकता है।

(Rabbi Sherwin Wine) {स्पष्ट है कि नाग-द्रविड राजाओं को कठपुतली बनाया गया था।}

हम यहूदी अपने वंश को तमाम मानवता से श्रेष्ठ समझते है और बाकि वंशों के लोगों पर अंतिम जीत हासिल करना चाहते है। (Goldwin Smith - Oxford University Modern History Professor - October 1981) यहूदी वंश हाकीम वंश है, धरती के जीते जागते ईश्वर है। बाकि वंश जानवर, या गाय बैलों, मानवी मल की हैसियत रखते है। हमारी नियति उनपर राज करना है। हमारी इस धरती के राज्य में हमारा नेता उनपर लोहे की सलाख हाथों में लेकर उनपर राज करेगा। गैर यहूदी हमारे पैरों को चाटेंगे और गुलामों की तरह हमारी सेवा करेंगे।(Menachem Begin - Israeli Prime Minister 1977–1983)

तमाम राष्ट्रों की संपत्ति यहूदियों की है। उन्हे हक है कि वे बिना किसी हिचक या शक के इसपर कब्जा करें। एक परंपरावादी यहूदी बाकी वंश के लोगों से नैतिक नियमों का पालन करने के लिये बाध्य नही है। यहूदियों के हित में किसी भी अनैतिक काम को करने के लिये वह स्वतंत्र है।(Schulchan Aruch, Choszen Hamiszpat 348) इजरायल के लोग जिन्हे ईश्वर ने आर्शिवाद दिया है खुश रहेंगे। वह इस दुनियां के गैर-यहूदियों का जनसंहार करेगा, सिर्फ इजरायल बचा रहेगा। उस दिन ईश्वर महान नजर आयेगा।(Zohar, section Schemoth, folio 7 and 9b; section Beschalah, folio 58b)

ऐसी ही भावनाएं Deuteronomic दावों में है : ईश्वर ने तुम्हे विशेष लोगों के तौर पर चुना है। धरती पर तुम्हे सब लोगों पर वरीयता हासिल है। तुम सबपर राज करोगे। तुम्हारी आंखों में उनके लिये जरा भी दया नही होगी। ईश्वर उनके राजाओं को तुम्हारे हवाले कर देगा। तुम उनके नामों को तबाह बर्बाद कर दोगे, कोई भी इन्सान आपके सामने नही ठहर सकेगा, जबतक तुम उनका पूरी तरह से खात्मा न कर दो।

तुम अपने पडौसी को नुकसान नही पहुंचाओगे, लेकिन ऐसा नही कहा गया है कि तुम किसी गैर-यहुदी को नुकसान नही पहुंचाओगे।(Mishna Sanhedryn 57) जो गैर-यहूदी का खून बहाता है, वह ईश्वर को बलि चढा रहा होता है। (Talmud - Jalqut Simeoni) गैर यहूदियों की जन्म दर बडे पैमाने पर कम करनी जरुरी है। (Zohar 11, 4b) इसकी इजाजत है कि हम गैरयहूदियों को धोखा दें।(Babha Kama 113b) गैर-यहूदियों के प्रति कोई दयाभाव न रखे (Deuter. Vii,2) : कोई गैर-यहूदी किसी परेशानी में या डूबता हुआ नजर आता है, तो उसकी कतई मदद ना करें।(Hilkoth Akum X,1) गैर-यहूदियों में जो सबसे श्रेष्ठ है उसे भी हमने मार डालना चाहिये।(Abhodah Zarah 26b, Tosephoth)

तलमूद का सुनहरा नियम यह है कि गैर-यहूदियों का भरपूर शोषण करो लेकिन पकडे न जाओ। जब किसी यहूदी के शिकंजे में कोई गैर-यहूदी फँसा होता है, दूसरे यहूदी ने उसी गैर-यहूदी के पास जाकर उसे कर्जा देना चाहिये और उसे धोखा देना चाहिये ताकि उस गैर यहूदी को तबाह बर्बाद किया जा सके। गैर यहूदी की संपत्ति पर किसी का भी हक नही है इसलिये जीस यहूदी को वह पहले नजर आती है उस संपत्ति पर कब्जा करने का उसे पूरा अधिकार है। (Schulchan Aruk, Law 24) यहूदी किसी गैर यहूदी को लूट सकता है - वह उसे धोखा दे सकता है अगर वह पकडा ना जाये।(Schulchan ARUCH, Choszen Hamiszpat 28, Art. 3 and 4) यहूदियों ने हमेशा ईसाईयों को धोखा देने की कोशिश करनी चाहिये। (Kohar I 160a) जो लोग ईसाईयों के साथ अच्छा करते है उन्हे मौत की नींद से कभी नही जगाया जाएगा।(Zohar I 25b); यहूदियों के लिये यह बात पूरी तरह से तलमूद के कानून के मुताबिक है कि वे ईसाईयों

को धोखा दे और उनकी शिक्षा पर ईमान जताये, साथ ही उनको अंदर से ध्वस्त करने के काम में जुटे रहे। तलमुद में कोल-निड्रे (Kol-nidre) की सुविधा है ताकि यहूदी झूठी प्रतिज्ञाएं लेकर दिगर धर्मो में घुसपैठ कर यहूदियों को फायदा पहुंचा सके। कोल-निड्रे (Kol-nidre) के तहत यहूदी नये साल पर यह प्रतिज्ञा करता है कि भविष्य में मै जो भी प्रतिज्ञा लुंगा वह बेमतलब (null) होगी।(Jewish Babylonian Talmud, Nedarim 23a-23b)

जब आपको युध्द में जाना पडे तो आप पहले आगे न जाये ताकि आप सबसे पहले वापस आ सके। कॅन्नान ने अपने बेटों को पांच बातों की सिफारीश की है : एक दूसरे से प्रेम करो, डकैति से प्रेम करो, अपने मालिक से नफरत करो और कभी सच न बोलो।(Pesachim F. 113-B) इसकी इजाजत है कि गैर यहूदी की जान ली जाये (Sepher ikkarim III c 25)। जो भी तोराह को नकारता है उसकी हत्या की जाये। ईसाईयों का शुमार तोराह को नकारते वालों में होता है (Coschen hamischpat 425 Hagah 425. 5)। तोराह को न मानने वाले गैर यहूदीयों का अपने हाँथों से फौरन कत्ल करना चाहिये (Abodah Zara, 4b)। जो लोग तोराह और उसके नबियों पर भरोसा कायम नही करते उन्हे खत्म कर देना चाहिये। जिनके पास उन्हे मारने की ताकत है उन्होने उन्हे खुलेआम मारना चाहिये। वर्ना तिकडमों का इस्तेमाल तबतक करना चाहिये जबतक उन्हे खत्म नही कर दिया जाता।(Schulchan Aruch, Choszen Hamiszpat 424, 5) ईसाईयों के बच्चों का महत्व जानवरों के बच्चों से ज्यादा नही है। (Talmud and its supplement, the Cabala : Kethoboth 3b) ईसाईयों को कभी नही बचाना चाहिये।(Hikkoth Akum X 1) ईसाईयों का जनसंहार करना जरुरी बलि विधि है।(Zohar II 43a) ईसाईयों की जन्मदर को कम करना चाहिये। (Zohar II 64b) Rzeichorn ईश्वर का अनुग्रह आप पर है, क्योंकि उसने आपसे वादा किया है। तुम कई देशों को कर्जा दोगे लेकिन किसी से कर्जा नही लोगे। आप कई देशों पर राज करोगे लेकिन वे आप पर राज न कर सकेंगे।(Deuteronomy 15:6) जो भी राष्ट्र आप के इर्दगीर्द है उनके आदमी-औरतों को आप अपने गुलाम बनाओगे .. (Leviticus 25:44-45) और मै उन राष्ट्रों को बूरी तरह से हिला दुंगा जिससे उन देशों की संपत्ति तुम्हे हासिल होगी और तुम्हारे घरों को गौरव हासिल होगा ऐसा ईश्वर का कहना है।(Tanach - Twelve Prophets - Chagai / Hagai Chapter 2:7-8)

यहूदी तलमूद की उपरोक्त शिक्षा पर भरोसा करते है इसलिये उनपर यह आरोप लगाया जाता है कि वे किसी भी देश के वफादार नही रहे है। वे कभी दूसरी जमातों के साथ एकताबध्द नही हो सके। उन्होने औरों को उपेक्षा के भाव से देखा और गैर यहूदी धर्मो को कमतर माना है। जिस भी देश में वे काफी तादाद में रहे उन्होने उस देश के मनोबल को कमजोर करने का काम किया। उन देशों की आर्थिक एकता को नुकसान पहुंचाया। देश के भीतर दूसरे देश का निर्माण किया। जब किसी राष्ट्र ने विरोध किया तो उन्होने उस देश की आर्थिक रुप से हत्या करने की कोशिश की है जैसे कि उन्होने स्पेन और पोर्तुगाल के साथ किया। यहूदियों के साथ जो भी बर्ताव हुआ है वह उनकी झाओनिस्ट सोच और सूदखोरी के जरिये लोगों की लूटखसोट की वजह से ही था।

वैद्यकीय सबूत (**medical Evidences**)

डी.एन.ए. अध्ययनों से साबित हो चुका है कि ब्राह्मण तथा यहूदी एक ही वंश के है। यहूदियों का मूल धर्म ब्राह्मण-धर्म है। मान. वेणू पासवान के मुताबिक यहूदी तथा ब्राह्मण निन्डरथॉल वंशी है। इसलिये उनमें कई शारीरिक और मानसिक विकृतियां पाई

जाती है। सायक्रिएट्रीक न्यूज, द जर्नल ऑफ अमेरिकन सायकिएट्रिक असोसिएशन के मुताबिक यहूदियों को स्चिझोफ्रेनिया नामक मनोविकृति की संभावना होती है। डॉ. जे. एस. गोटलिब के मुताबिक यहूदियों में स्चीझोफ्रेनिया मनोविकृति की संभावना अधिक होने की वजह प्रोटिन विकृति अल्फा-2 है जो यहदियों से वैवाहिक संबंध बनाने के बाद गैर यहूदियों में भी आ जाती है। अमेरिका में मानिसिक विकृतियों में बढौतरी होने की मात्रा अमेरिका में यहूदियों की बढती जनसंख्या के मुताबिक है। सन् 1900 में अमेरिका में 1058135 यहूदी तथा 62112 मानसिक रोगी थे। सन् 1970 में यहूदियों की तादाद 5868555 यानि 454.8% गुना बढी। मानसिक रुग्नों की तादाद उसी दर में बढकर 339027 हुई। यहूदी सही और गलत में भेद करने में असमर्थ होते है। उनमें आक्रमक वृत्ति तथा अप्रामाणिकता होती है। इसलिये इजरायल सबसे बूरा वंशवादी देश है। खुद ब्राह्मण डाक्टरों का कहना है कि ब्राह्मणों में ज्यादा मानसिक रुग्न होते है। नेपाल के काठमांडू मेडिकल कॉलेज में 37% ब्राह्मण रोगी है जबकि उनकी जनसंख्या मात्र 5% है।(Dalit voice, 16-30 April, 2004 p.8-9) सन् 2001 में थ्रीसुर के ज्युबिली मिशन मेडिकल कॉलेज की अनाटामी व जेनेटिक्स की प्रो. डॉ. मीनी करिअप्पा ने हैदराबाद केन्द्र में सैंकडों लोगों के रक्त के नमुने डी.एन.ए. शोध के लिये हासिल किये। इन शोधों से यह पता चलता है कि चितपावन ब्राह्मण, तुलु ब्राह्मण, नंबुद्री ब्राह्मण तथा सीरीयन इसाई इन सभी में यहूदी डी.एन.ए. मौजूद है।(http://www.nazraney.com/Web Pages/ nazraney_com.htm)

ऐतिहासिक सबूत (Historical Evidences)

ब्राह्मणों की तरह यहूदी निर्जिव वस्तूओं में आत्मा होती है यह मानते थे। यहूदी जानवर और इन्सानों की बलि चढाते थे। एक्सोडस (Exodus, xxxii,25-28) में हम पढते है कि किस तरह यहूदी सुनहरे बछडे के आगे नंगे होकर नाचा करते थे। वेणू पासवान के मुताबिक ब्रह्मा और अब्राहम एक ही है। यहूदियों के तोराह धर्मग्रंथ में सारा अब्राहम की बहन तथा बिवी भी है। बायबल में सारा अब्राहम की बीवी तथा बहन है। वेदों में सरस्वती ब्रह्मा की बिवी और बेटी है। कई समुदाय अपने पूरखों को ईश्वर या परिवारिक देवता का दर्जा देते है। इसलिये शायद ब्राह्मणों ने ब्रह्मा यानि अब्राहम की पूजा शुरु की।

कई अध्ययनों का मानना है कि भारत के ब्राह्मण यहूदियों की दस जनजातियां है जिन्हे असिरियन लोगों {Asuras} ने भगा दिया था। गौड ब्राह्मण यहूदियों की गाड (Gad) जनजाति है। सरस्वती या सारा के नाम से सारस्वत ब्राह्मण हुए है। कान्य-कुब्ज ब्राह्मण यहूदियों की काहाने (Kahane) जनजाति है। आचार्य ब्राह्मण यहूदी इसाचीअर (Essachear) जनजाति है। पाराशर ब्राह्मण यहूदियों की अशर (Asher) जनजाति है। मानस् ब्राह्मण यहूदी मानासेह (Manasseh) जनजाति है। शर्मा ब्राह्मण यहूदी सीओन (Sieon) जनजाति है। मिश्रा उपनाम यहूदियों के मिशना (Mishna) नामक कानून से आया है। कौल उपनाम चाल्डीयन (Chaldean) से बना है। समर्थ ब्राह्मण शायद सामारियन (Samarian) यहूदी है, दोनों हर वस्तु में ईश्वर मानते है। यमूना यह नाम यमन के नाम पर रखा गया है। परंपरावादी यहूदियों में खोपडी के हिस्से (kippot) से बनी टोपी पहनने की परंपरा है। यह परंपरा कपर्डा प्रथा (Kaparda) में दिखती है। इसमें सीर में पीछे छोटे घेरे को छोडकर बाकी सीर मुंडाया जाता है। घेरे में छोटे बाल तथा बीच में लंबी चोटी होती है। गुप्त राजा इजिप्त के कोप्टिक यहूदी थे। वे ब्रह्मा के भक्त थे।

(Dalit voice, 16-30 April, 2004 p.8-9)

सन् 1979 में बरोडा की ओरिएन्टल इंस्टिटयुट में 'हिब्रू लोग वेदिक आर्यो की एक शाखा है' नामक शोध लेख प्रो. मदन मोहन शुक्ला ने अपने पिछले लेख (1976) को विस्तृत बनाते हुए छापा। ब्राह्मण तथा यहूदी एक ही प्रजाति होने का सबूत यह है कि ज्यू तथा ब्राह्मण दोनों को ही असूरों की ऋणात्मक यादें है। असिरियन लोगों ने यहूदियों को भागने पर मजबूर किया था। अप्रैल 1997 की यहूदी मॅगजिन में भारत में भारी यहूदी आबादी के होने की बात कही गई थी। मध्य-पूर्व के लोगों की परंपरा रही है कि वे अपनी जगहों के नाम अपने देवताओं के नामों पर रखते है। मोसोपोटॅमिया के धर्म में ईश्वर अशुर है, देश का नाम असिरिया तथा राजधानी का नाम भी अशुर है। सत्रहवी तथा अठारहवी शब्दाब्दी में भारत में जगहों के नाम हिब्रू जैसे थे। नाशिक का हिब्रू में मतलब ''राजकुमार'' है। महमूद गजनी ने लाहौर पर हमला किया तो हिंदु राजा दाउद या डेविड ने शहर की रक्षा की कोशिश की। पठान लोग खुद को राजा साउल (Saul) के वंशज मानते है। उनकी भाषा में बायबल की हिब्रू भाषा के अवशेष है। शुक्रवार को मोमबत्तियां जलाना, चौकोनी प्रार्थना कपडे को पहनना तथा आठवे दिन बच्चे का खतना (circumcision) कराना इ. 21 यहूदी रितियों का पालन पठान करते है। (http://www.vnn.org/index.html July 14, 2003 VNN8222 Hebrews And Vedic Brahmins BY DR. SAMAR ABBAS, ALIGARH, INDIA EDITORIAL, Jul 14 (VNN) — A Review; Mitra, Christmass and Pir Shaliyar Ceremony By Siamak R. Durroei; "Anacalypsis", Vol.I, p.771, cited in Matlock 2000, p.70; http://www.viewzone.com/VIEW.ZONE.html;http://www.vnn.org/index.html Jews: A Branch Of The Vedic Family BY VRINDAVAN PARKER) कश्मीर की घाटी में एक तालाब से लगकर सोलोमन के मंदिर के अवशेष होने का दावा किया गया है। बर्नियर के मुताबिक मोजेस की मौत कश्मीर में हुई और लोग उनके मकबरे के अवशेष गांव के निकट दिखाते है। जबकि पश्चिमी सीरिया के यहूदी नही जानते कि मोजेस को कहां दफनाया गया था। स्थानीय लोगों में मूसा या मोजेस यह नाम बहुत सामान्य है। काबुल इजरायल में एक नगर है, काबुल अफगानिस्तान की राजधानी है। मानेसेह (Manesseh) इजरायल की जनजाति तथा क्षेत्र का नाम है। हिमालय के माउंट मेरु में मानस नामक तालाब है; यह नाग-देवता का भी नाम है। लैश (Laish) कॅनन यानि इजरायल में एक शहर है। अफगानीस्तान में भी लैश नाम का नगर है। येमेन अरब देश का नाम है जबकि यमुना भारत की नदी का नाम है। तलमुद यहूदियों की लिखित शिक्षा है। पाल्म (palm) के पत्तों पर लिखी इबारत को ताल-मूद्रा कहते है। यहूदी बाल (Baal) नामक सोने के बछडे की पूजा करते थे। भारत में पवित्र सांड बालेश्वर की पूजा की जाती है। अब्दूल अहद आजाद लिखते है कि कश्मीर की भाषा का विकास हिब्रू भाषा से हुआ है। प्राचीन काल में यहां यहूदी लोग बसते थे जिनकी भाषा आज की कश्मीरी भाषा में तब्दिल हो गई।(pp. 68-69) इल शद्दाई परमेश्वर को कहते है। जो सदा (शीव) के समान शब्द है। एम.एम. शुक्ला ने हिब्रू तथा संस्कृत में समान शब्दों की लंबी सूची देने की कोशिश की है। उपासना शब्द का मूल अर्थ संस्कृत में खाना, व मजा करना होता है। इसलिये उपासना का अर्थ 'ईश्वर के सामने खाना, या मजा करना होगा। (Shukla 1976, p.46) शुक्ला के मुताबिक ब्रह्मा, सरस्वति, मनु तथा बाली को बायबल के अब्राहम, सारा, नोह व पेलेग (Peleg) जताने की कोशिश की गई है। (Shukla 1979, p.53) यहूदी लबान (Laban) और ब्राह्मणों के लावाना (Lavana) समान है। लावाना की बहन बायबल में लबान की बहन हो गई है। मेरी शब्द संस्कृत का मात्री यानि मां शब्द है। जल्दी जल्दी

या जादा खाने वाले इन्सान को अवधी हिन्दी में होबुरु कहते है। हिब्रू तथा होबुरु शब्द समान है। सामाजिक तथा धार्मिक समारोह में यहूदियों की तरह ब्राह्मण भी जल्दी जल्दी खाना खाते है।(Shukla 1976, p.46-47) नौजात (Naujat), उपनयन, व बार/बात मितवाह (Bar/Bat Mitzvah) समारोह को पर्शियन्स, आर्य-ब्राह्मण तथा यहूदी समान रुप से मनाते है। पर्शियन्स तथा यहूदियों में यह विधि लडके तथा लडकियों दोनों के लिये है जबकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों में यह लडकों तक सिमित है।(http://www.vepachedu.org/Recommendations to Brahmin Community.htm)

यहूदी स्कालर Flavius Josephus (37 - 100 A.D.) ने अपनी किताब 'History of the Jews' में लिखा है कि ग्रीक फिलॉसाफर ॲरिस्टाटल ने कहा कि 'यहूदी भारत के दार्शनिकों से निकले है। भारतीय उन्हे कालानी (Calani) कहते थे। (Book I:22)(http://www.abovetopsecret.com/index.php The Jews and all modern religious traditions originated in ancient India, page 1.htm)

कश्मीरियों के कुल के नाम माग्रे, दंड, पारे, रैना, किचलु, हपतु, वारिकु, नेहरु इ. नाम यहूदी शीर्षकों से मिलते है। नगरों के नाम युदा पूर (Yuda-poor), इओद पुर (Iod-pore) इ. यहूदी चरित्र के है। कश्मीर की कई जगहों के नाम बाल तथा होम शब्द से खत्म होते है। वे इजरायल के गन्डेरबाल, मानसबाल, गार्गीबाल, दुदारहोम, बुर्जाहोम, डोपाहोम, बालाहोम इ. से मिलते है।(http://www.viewzone.com/VIEW.ZONE.html ; http://www.vnn.org/index.html Jews: A Branch Of The Vedic Family BY VRINDAVAN PARKER) बायबल में मोरिया नाम के पर्वत पर अब्राहम ने अपने बेटे इसाक की बलि ईश्वर को चढाई थी।(Moriah From Wikipedia, the free encyclopedia) इसाक को बाद में जीवित किया गया। ब्राह्मण पार्वती के बेटे गणेश का सीर भी मूलनिवासी शिव ने काट दिया था। बाद में गणेश को हाथी का सीर लगाकर जीवित किया गया। जब शीव घर से लंबे समय तक बाहर थे तब पार्वती के 'मैल' से गणेश की उत्पत्ति हुई बताई गई है। {पाप को भी मैल कहा जाता है} सीर काटने का वास्तविक अर्थ शिव व्दारा गणपति को पदविहीन कर देना है। पार्वती के रुठने के बाद मजबूरन उसे गणपति का उच्च पद दिया गया जिसका प्रतिक हाथी चिन्ह था। भारत के ब्राह्मण इन घटनाओं को आपस में जोडकर ही ''गणपति बाप्पा मोरया पुढच्या वर्षि लवकर या'' यानि माउंट मोरया के पिता गणेश अगले साल जल्दी आओ का घोष करते है। मोरया का मतलब येहवेह (YHWH) व्दारा नियुक्त होता है। गणेश को भी शीव ने गणपति यानि गणों का प्रमुख नियुक्त किया था जिसका प्रतिक चिन्ह हाथी था। शुक्ला गॉडफ्रे हीगीन्स (Godfrey Higgins,1772-1833) के शब्दों में कहता है कि 'इन सब सबूतों से मै क्या निष्कर्ष निकालु ? ज्यू ब्राह्मण थे या ब्राह्मण ज्यू थे ?

आर्यो की वसाहतों का विस्तार !

मारीजा गीम्बुटास (Marija Gimbutas) ने कुर्गान सिधान्त का विकास किया। यह नाम उन्होने युरेशियन घास के मैदानों में पाई कब्रों के नाम पर रखा है। इस सिधान्त

के मुताबिक इंडो-युरोपियन लोग पांटिक-कॅस्पियन घास के मैदानों की घुमन्तु टोलियां है। (http://en.wikipedia.org/Proto-Indo-Europeans - Wikipedia, the free encyclopedia. htm) सभी मानवी विस्थापन आसान और सुविधाजनक रास्तों से हुये है। विस्थापन के दौरान उन्होने कठिन और दुर्धर रास्तों को टाला है। अधिकतर विस्थापन नदियों तथा पानी के स्त्रोतों से लगकर होते रहे है। अबतक हुए भौगोलिक परिवर्तनों को ध्यान में रखे तो उनके विस्थापन के रास्तों को रेखांकित कर सकते है। कभी उनके विस्थापन की गति तेज रही होगी, कभी उन्हे दूसरों से लडना पडा होगा, कभी वे खास जगहों पर रुके होंगे। सर्दी में जमी नदियों को आसानी से पार किया जा सकता था। प्रोटो इंडो-युरोपियन भाषा का विस्तार पूरे पांटीक-कॅस्पियन घास के मैदानों व कजाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों तक था। (indo-european-migrations. scienceontheweb.net/A Map of Indo-European Migration. The Expansion of Indo-European Languages.htm) प्रोटो-इंडो-युरोपियन लोगों के डी.एन.ए. का अध्ययन कर अनुवंश वैज्ञानिकों ने यह नतीजा निकाला है कि घास के मैदानों में पाई हुई 5000 साल पुरानी कुर्गान कब्रों (steppe kurgan graves) में दफ्न लोगों का वंश आधुनिक पश्चिमी तथा उत्तरी युरोपियन नार्डीक वंश से मिलता है। उनमें से 60 फीसदी लोगों में भूरे बाल तथा नीली और हरी आँखें थी। यानि इंडो-युरोपियन उत्तरी तथा पश्चिमी युरोप वासियों के वंशज है। डी.एन.ए. परिण ाम स्पष्ट करते है कि आधुनिक स्लाव तथा बाल्टिक लोग अनुवांशिक रुप से प्राचीन इंडो-युरोपियन लोगों के वंशज थे। (www.stormfront.org/New Light on the Aryans DNA Studies Confirm Aryan_Indo-European Theory of History - Stormfront.htm) अस्थियों के डी.एन.ए. परिक्षणों से स्पष्ट हुआ कि इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आँखे नीली अथवा हरी, रंग गोरा तथा लाल-सुनहरे बाल थे। पूर्वी तुर्कस्तान में आज भी गोरी त्वचा, निली या हरी आँखों वाली नार्डिक जनजातियाँ रहती है लेकिन अब वे मंगोल भाषा बोलती है। जब वे भारत आये तो आर्य के नाम से जाने गए। इलम में उन्हे पर्नी, पार्थियन सीथीअन्स कहा गया। चीन में इन्हे झोउ कहा गया। अनातोलिया में इन्हे डोरियन, आयोनियन तथा टर्क कहा गया। युरोप में उन्हे हेलेन्स, लातिनी, स्लाव, जर्मन इ. नामों से जाना गया। (http://www.bartleby.com/19. The Primitive Aryans. Wells, H.G. 1922. A Short History of the World.htm; http://en.wikipedia.org/Pontic-Caspian steppe - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/ Kurgan hypothesis - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://realhistoryww. com/The Aegean fall of the Black Civilizations.htm) विस्थापन के दौरान कायम हुई आर्यो की इतिहासपूर्व संस्कृतियां आगे दिये मुताबिक है :- Cucuteni-Trypillian culture 5300-2600 BC, Sredny Stog culture 4500–3500 BC, Yamna/Kurgan culture 3500–2300 BC, Catacomb culture 3000–2200 BC, Srubna culture 1600–1200 BC, Novocherkassk culture 900–650 BC. (http://en.wikipedia.org/Pontic-Caspian steppe - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

मध्य एशिया के घास के मैदानों में रहने वाले लोगों को इंडो-युरोपियन नाम दिया गया है। लगभग 5000-4000 BC में ये लोग दक्षिण तथा पश्चिम की ओर बेहतर तापमान वाले क्षेत्रों की ओर विस्थापित होने शुरु हुए। पश्चिम की ओर विस्थापित हुई टोलियां जर्मन, स्लाव, ग्रीक, लॅटीन तथा सेल्ट लोगों के पूर्वज थे। दक्षिण का रुख करने वाले आर्य इंडो-ईरानियन कहलाये गए। एक छोटे समुदाय ने खुद का विस्थापन नही किया। वे सिथियन्स (Scythians) व सारमाटियन्स (Sarmatians) कहलाये गए। उन्हे भी नोमॅडिक

इंडो-इरानियन कहा जाता है क्योंकि उनकी भाषा तथा रिवाज प्राचिन पर्शियन लोगों से मिलते जुलते है। (The Original Black Cultures of Eastern Europe and Asia http://realhistoryww.com/index.htm) इंडो-युरोपियन लोगों यानि आर्यो की अन्य शाखाएं ग्रीस तथा पश्चिमी एशिया में हिट्टी, कासाईटस् तथा मिटानी लोगों के रुप में जानी गई।(Vedas and Upanishads http://www.san.beck.org/index.html) आरंभिक आर्यो की भाषा पूर्व तथा पश्चिम में फैलती रही तथा उसमें प्रांतों के हिसाब से परिवर्तन होता गया।(http://www.oldandsold.com/Aryan Speaking Peoples In Prehistoric Times.htm)

आरंभिक आर्य अर्ध घुमन्तु लोग थे। उनके पास काफी तादाद में जानवर होते थे। जब वे गांवों में बसने लगे तो किसान बने। उनके राजा यौध्दा होते थे। अपने जानवरों तथा खेतों की रक्षा के लिये तथा गायों पर कब्जा करने के युध्द में जीत के लिये वे पूजारियों के धार्मिक अनुष्ठानों पर निर्भर करते थे। आरंभिक वेदिक धर्म निसर्ग की ताकतों को देवता मानते थे। इसलिये उनके मंदिर या देवि-देवताओं की मूर्तियाँ नही होती थी। वरुण, अग्नि, यम, सोमा ऋग्वेद के देवता थे। वे इन्हे प्रसन्न करने के लिये जानवरों की बलि चढाया करते थे। प्रार्थनाओं का माध्यम मंत्रोच्चार था। उनके परिवार पितृसत्ता पध्दति के थे। उन्हे पुत्र की चाह होती थी। परिवार बेटे, पोते, भाई तथा उनके बेटों की बडी ईकाई वाला होता था। राष्ट्र या राज्य का अस्तित्व नही था। उनके अधिकतर युध्द दूसरी टोली के जानवर छीनने के लिये होते थे। ऋग्वेद में युध्द के लिये गविशथी (Gavishthi) शब्द है। दुहीत्री बेटी को कहते थे जो गायों का दूध निकालती थी। टोली के राजा इलाके के लिये नही बल्कि जानवरों पर कब्जे के लिये युध्द करते थे। मेहमान को गोघना कहा जाता था क्योंकि मेहमान के स्वागत में गाय काटी जाती थी। पूजारी को अक्सर गायें तथा महिला गुलाम भेंट में दिये जाते थे।(Ancient India www.jeywin.com)

जानवरों के साथ भटकने वाली टोलियों तथा खेती करने वाले समुदाय के बीच आपसी संबंध विकसित होता है। जब फसल काट ली जाती है तो फसल के लगभग 6 इंच के खुंटे मौजूद होते है जो जानवरों का भोजन है। ये टोलियां अपने जानवर खेतों में चरने के लिये छोड देती है। जानवरों को भोजन मिलता है और जानवरों के मल-मुत्र से खेतों को खाद मिलती है। किसान दुध, दही, घी इ. के बदले उन्हे अनाज देते है। आज भी राजस्थान की कई टोलियाँ फसल काटने के मौसम में अपने जानवरों के साथ गांव गांव भटकती है। (THE ARYAN QUESTION REVISITED Romila Thapar Transcript of lecture delivered on 11th October 1999, at the Academic Staff College, JNU http://members.tripod.com/THE ARYAN QUESTION REVISITED.htm)

दक्षिणी सायबेरिया में भटकने वाली टोलियों का प्रचलन बदस्तूर जारी रहा। जबकि अल्टाई में लोग गांवों में खेती करने लगे थे। अपने जानवरों, खेतों तथा गांव की रक्षा के लिये उन्होने बाड़ लगाई थी। इन बसे हुए गांवों को घुमन्तु टोलियां ध्वस्त कर देती थी तथा लोगों को बंधक बनाकर ले जाती थी। उन्हे या तो बेचा जाता था या गुलाम बनाकर रखा जाता था। (http://www.weavingartmuseum.org/A Brief Outline to the Archaeological Pre-History of Turkmenistan.htm)

इंडो-युरोपियन लोगों ने 1) ईसापूर्व 8000 में खेती करना जान लिया था। 2) ईसापूर्व 4000-2500 के बीच उन्होने घोडे की सवारी करना सीख लिया। 3) भारी भरकम चक्के वाले वाहन लगभग ईसापूर्व 3000 साल पहले इजाद किये। 4) हलके स्पोक वाले चक्के के तेज वाहन उन्होने लगभग 2100-1700 ईसापूर्व में तैयार किये। इंडो-ईरानियन विस्तार का केन्द्रबिंदू पश्चिमी पामीर पर्वत तथा ओक्सस (Oxus, Amu Darya) नदी के किनारों से हुआ। ऑक्सस नदी उस वक्त कॅस्पीयन सागर से मिलती थी। इन्डो ईरानियन लोग पामिर पहुंचने के बाद में दो समूहों में बँट गए और 1) प्रोटो-इरानियन समूह ऑक्सस तथा उझबॉय (Oxus and the Uzboy) नदी के किनारों में बसा रहा, 2) प्रोटो छार्डो नुरिस्थानो इंडो आर्यन समूह पश्चिमी पामीर में एक हजार साल रहकर अंततः भारत पहुंचा। (indo-european-migrations.scienceontheweb.net/A Map of Indo-European Migration. The Expansion of Indo-European Languages.htm)

इंडो-इरानियन विस्तार से संबंधित पुरातत्विय संस्कृतियाँ आगे दिये मुताबिक है :- Central Asia Poltavka culture (2700-2100 BC), Andronovo horizon (2200-1000 BC), Sintashta-Petrovka-Arkaim (2200-1600 BC), Alakul (2100-1400 BC), Fedorovo (1400-1200 BC), Alekseyevka (1200-1000 BC), Bactria-Margiana Archaeological Complex (2200-1700 BC), Srubna culture (2000-1100 BC), Abashevo culture (1700-1500 BC), Yaz culture (1500-1100 BC), Iran :- Early West Iranian Grey Ware (1500-1000 BC), Late West Iranian Buff Ware (900-700 BC), Indo-Pak sub-continent :- Swat culture (1600-500 BC) Cemetery H culture (1900-1300 BC) (http://en.wikipedia.org/Indo-Iranians - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) इनमें से कुछ पुरातत्वीय संस्कृतियाँ आगे दिये मुताबिक है।

अर्केम (Arkaim) पुरातत्वीय वसाहत (Complex)

प्रोटो-अर्केम-सीन्तश्ता(Proto-Arkaim-Sintashta or Proto-Andronovo) प्रोटो-इंडो युरोपियन लोगों की शाखा है। उसने उराल पर्वतों के पीछे लगभग ईसापूर्व 1800 में सीन्तश्ता पुरातत्वीय वसाहत तथा ईसापूर्व 1600 में दक्षिण उराल के दक्षिण-पश्चिम में अर्केम वसाहत कायम की।

दक्षिण उराल के घास के मैदानों में अर्केम पुरातत्वीय संरचना पायी गई जो लगभग इसापूर्व सत्रह शताब्दी की है। ITAR-TASS के हवाले से गेन्नाडी झडानोविच (Gennady Zdanovich) ने कहा कि उय (Uy) नदी घास के मैदानों और जंगल के बीच की स्वाभाविक सीमारेखा है। यहीं से आर्यो की भूमि शुरु होती है। आर्य पश्चिम दीशा से शायद वोल्गा क्षेत्र से यहां आये। आर्यो का मादक पेय सोमा कॅनबिज (cannabis) तथा इफेड्रा को मिलाकर दूध में उबालकर तैयार किया जाता था। ऋग्वेद तथा अवेस्टा में उन जगहों का वर्णन है जहां से आर्य आये है। उसमें बीर्च (birch) पेडों का तथा जिस वातावरण का उल्लेख किया गया है वह हमारे ही जमीन का जिक्र है। उनके मूर्दो को दफ्न करने का तरिका सरीखा है और उनके कंकालों का प्रकार इंडो-युरोपियन है। एक खास बात यह है की आर्य उस समय रथ का उपयोग करते थे। उसके बाद वे मध्य एशिया की ओर बढे। (http://rbth.ru/Arkaim Prehistory on the steppe _ Russia Beyond The Headlines.htm) अन्थोनी तथा विनोग्राडोव (1995) ने क्रिवोये (Krivoye) तालाब के निकट दफ्न रथ मिले जो लगभग ईसापूर्व 2000 साल पहले के थे। यह खोज सबसे पहले निर्मित स्पोक-चक्के के रथों को दर्शाती है। सिन्तश्ता-पेट्रोवका संस्कृति

के पश्चिम सायबेरिया में विस्तार को अन्ड्रोनोवो संस्कृति (2300-1600 BC) कहते है।

अन्ड्रोनोवो पुरातत्वीय वसाहत !

सायबेरिया के गांव अन्डोनोवो में सन् 1914 में कई कब्रों में कंकाल पाये गये। जिस अवस्था में भ्रुण गर्भाशय में रहता है, पैरों को मोडकर ऐसी अवस्था में उन्हे दफनाया गया था। लाशों के साथ चित्रकारी किये हुए बर्तन दफनाये गए थे। इसी गांव के नाम पर इस पुरातत्वीय वसाहत को अंड्रोनोवो नाम दिया गया है। वह कास्य संस्कृति है। इस संस्कृति का काल लगभग ईसापूर्व 2300-1000 वर्ष आंका गया है। इस संस्कृति का विस्तार कझाखस्तान के पश्चिमी एशियाई घास के मैदानों तक है। इस संस्कृति के लोग गाय-बैल, घोडे, बकरियाँ इ. जानवर पालते थे। एन्ड्रोनोवो वसाहत वांशीक-सांस्कृतिक दृष्टी से बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स (BMAC) के लोगों से जुडे है। अंड्रोनोवो तथा बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स संस्कृति के लोग आर्य है।(http://www.heritageinstitute.com/Gonur, Mouru, Murgab, Merv, Margiana Page 3. Turkmenistan Region & Zoroastrianism.htm)

अन्ड्रोनोवो संस्कृति के लोग 10-20 घरों के समूहों में रहते थे। उनके घर भूमिगत होते थे। उपजाउ जमीन की वजह से उन्होने खेती करनी शुरु की थी। (http://www.weavingartmuseum.org/A Brief Outline to the Archaeological Pre-History of Turkmenistan.htm) साराडीनी के मुताबिक बॅक्ट्रिया तथा मर्जियाना से उपलब्ध प्रत्यक्ष पुरातत्वीय जानकारियों से स्पष्ट है कि अंड्रोनोवो टोलियों ने बॅक्ट्रिया तथा मार्जियाना के पानी से लथपथ उपजाउ क्षेत्र के भीतर तक प्रवेश किया।(indo-european-migrations.scienceontheweb.net/A Map of Indo-European Migration. The Expansion of Indo-European Languages.htm)

बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स (BMAC) के लोगों से उत्तरी युरेशियन घास के मैदानों के लोगों से संपर्क ईसापूर्व 2000 साल पहले हुआ। घुमन्तु टोलियों ने इस संपर्क के बाद खेती कर एक जगह स्थायी होना शुरु किया।(Bactria–Margiana Archaeological Complex - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

प्रोटो इंडो-इरानी लोग प्रोटो इंडो-युरोपियन है जो सिन्तश्ता तथा उससे विस्तारित अन्ड्रोनोवो संस्कृति से संबंधित है। इसलिये इनकी जन्मभूमि युरेशियन घास के मैदान है पश्चिम में उराल नदी तथा पूर्व में टीएन शान (Tian Shan) है। इन्डो इरानियन भाषाएं कम से कम ईसापूर्व 2000 साल पहले आर्य ईरानियन तथा वेदिक संस्कृति में विभाजित होने से पहले बदलने लगी थी।(http://en.wikipedia.org/Indo-Iranians - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स (BMAC)

बॅक्ट्रिया मर्जियाना आर्किलॉजिकल कॉम्प्लेक्स (BMAC) को ऑक्सस (Oxus) संस्कृति भी कहते है। वह मध्य एशिया की पुरातत्वीय वसाहत है जो कास्य संस्कृति दर्शाती है। इसका काल ईसापूर्व 2300-1700 वर्ष आंका गया है। इसका विस्तार आधुनिक उत्तरी अफगानिस्तान, पूर्वी तुर्कमेनिस्तान, दक्षिणी उझबेकिस्तान तथा पश्चिमी ताजीकिस्तान के अमु दरिया (Oxus River) के उपरी क्षेत्र तक है। इस संस्कृति के पुरातत्वीय स्थल (Sites) अफगानीस्तान में दाश्ली, जोवझजान, खुश टेपे है। तुर्कमेनिस्तान में यह स्थल अलिटनडेपे, गुनार टेपे, जैतुननमाझगाह टेपे, टोगोलोक 21 है। उझबेकिस्तान में ये क्षेत्र

अयाज कला, दजारकुतान कोई, करिलगान कला, सप्पालितेपा, टोप्राक कला है। इन क्षेत्रों की खोज करने का श्रेय सोवियत पुरातत्व वैज्ञानिक विक्टर सारीयानिडी (Viktor Sarianidi, 1976) को जाता है। सारियानिडी के मुताबिक संपूर्ण कास्ययुग में इस संस्कृति का मार्जियाना में गोनुर केन्द्रस्थल रहा है। उत्तरी गोनुर के महल का क्षेत्रफल 150 मीटर बाय 140 मीटर का है। टोगोलोक का मंदिर ? 140 बाय 100 मीटर का है। केल्लेली-3 का किला 125 बाय 125 मीटर का है। स्थानीय शासक का अडजी कुई में घर 25 बाय 25 मीटर का है। ये क्षेत्र मजबूत दीवारों, दरवाजों इ. से सुरक्षित किये गये। यह स्पष्ट नही है कि एक निर्माण को मंदिर तथा दूसरे को महल क्यों कहा गया। माल्लोरी (Mallory) के मुताबिक BMAC की दीवारों से सुरक्षित बनाई गई गोनुर तथा तोगोलोक वसाहतें ''qala'' नामक किले जैसी है जो इस क्षेत्र में पहले से पाये जाते रहे है। वे गोल या आयताकार होते है। उन्हे तीन दीवारों तक से घेरा जाता है। इन किलों के भीतर लोगों के रहने के घर, वर्कशाप, तथा पूजास्थल होते थे। गेआक्सीअर जलथल क्षेत्रों (Geoksiur Oasis) में व्यापक सींचाई व्यवस्था पाई गई। अल्टीन डेपे में दो चक्कों वाली गाडियां लगभग ईसापूर्व 3000 साल से पाई गई है। यह गाडियां बैल या सांड खेंचते थे। हालांकि BMAC क्षेत्र में उँट को भी पालतु बनाया गया था। उंट व्दारा खेचे जाने वाली गाडी की प्रतिकृति अल्टिन डेपे में प्राप्त हुई है। गोनुर डेपे में एक सीलींड्राकृति ईलामाईट प्रकार (Elamite-type) की मुद्रा तथा हरप्पा की मुद्रा मिली है जिसपर एक हाथी खुदा हुआ है। BMAC की वस्तुएं इंडस संस्कृति, ईरानियन मैदानी क्षेत्रों तथा ईरान की खाडी में भी पाई गई है। इससे उनके व्यापारिक संबंधों का पता चलता है। सींधु घाटी संस्कृति तथा अल्टिन डेपे के बीच संबंध ज्यादा स्पष्ट है। यहां दो हरप्पा की मुद्राएं तथा हाँथी दांत की वस्तुएं मिली है। अमु दरिया के किनारे उत्तरी अफगानिस्तान का शोर्टगाई (Shortugai) नामक हरप्पा की वसाहत शायद व्यापार का केन्द्र था। लगभग ईसापूर्व 1800 वर्ष में BMAC के दीवारों व्दारा सुरक्षित किये गए क्षेत्रों का आकार बेहद कम रह गया।

मायकल विटझेल तथा अलेक्झांडर लुबोटस्की (Michael Witzel and Alexander Lubotsky) के अनुसार BMAC की भाषा प्रोटो-इंडो-इरानियन भाषा का एक प्रकार है। लुबोटस्की के मुताबिक इस भाषा से बडी तादाद में शब्द लिये गए है जो इंडो-आर्यन भाषा में पाये जाते है। इसलिये भाषा का यह का प्रकार वेदिक संस्कृत है। कुछ BMAC भाषा के शब्द टोचरियन भाषा में भी पाये जाते है। मायकल विटझेल के मुताबिक लिये गए शब्दों में खेती, गांव, नागरी जीवन, प्राणी, वनस्पति, कर्मकांड और धर्म संबंधी शब्द है। इससे स्पष्ट है कि इंडो ईरानियन भाषा को बोलने वाले लोगों का संपर्क नागरी जीवन से होने लगा है। इंडो-इरानियन भाषा बोलने वाले अंड्रोनोवो संस्कृति के लोगों ने आकर एक मिश्र किस्म की संस्कृति को विकसित किया। इस दृष्टीकोण के मुताबिक भारतीय उपमहाव्दीप में आने से पहले प्रोटो-इंडो-आर्य इसी मिश्र संस्कृति का हिस्सा थे।(http://en.wikipedia.org/Bactria–Margiana Archaeological Complex - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) मुर्गाब डेल्टा क्षेत्र की अत्यंत आरंभिक वसाहतों के अवशेष जो इसापूर्व दूसरे तथा तिसरे मिलेनियम वर्ष के है काफी मात्रा में डेल्टा क्षेत्र के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में पाये गए है। यह क्षेत्र पहले हराभरा और उपजाउ था। आज इस क्षेत्र में काराकुम रेगिस्तान विस्तारित हुआ है। उत्तरी डेल्टा वसाहतों में केल्लेली, टडजी कुई, टेईप, गोनुर तोगोलुक अवशेषों का समावेश होता है। मुर्गाब डेल्टा क्षेत्र कास्य युग (2500-1700 BCE) का है जिसका विस्तार 3000 वर्ग कीलोमीटर है तथा इसमें 78 जलथल वाले क्षेत्र (oases) है।

मुर्गाब डेल्टा क्षेत्र में पाई गई प्राचीन वसाहतों में गोनुर डेपे सबसे बडी वसाहत है। गोनुर डेपे एक बडा नगर था जिसमें कई हजार लोग रहते थे। लोग गेंहु, बार्ली, लेंटिल्स (lentils), अंगुर, तथा दिगर फलों की उपज लेते थे। गोनुर व्यापार का केन्द्र था। व्यापारी सोना, हाथी दांत की वस्तुएं, चांदी इ. की चिजों का व्यापार करते थे। वे अपने मूर्दो को गाडी के साथ दफनाते थे। प्राचीन झोरोस्टर धर्म के लोग न ही अपने मूर्दो को गाडते थे और न ही मंदिर में पूजा करते थे।(Gonur _ Gonor_ Gunar, Mouru, Murgab, Merv, Margiana. Turkmenistan Region & Zoroastrianism.htm)

गोनुर में प्राप्त वस्तुओं की कला कईयों को आश्चर्यचकित करती है। वे सोने, चांदी, तथा मौल्यवान स्फटिकों (lapis lazuli, and carnelian) के गहने बनाते थे। गोनुर के धातु कारागीर इजिप्त, मेसोपोटेमिया तथा सींधु संस्कृति के कारागिरों की तरह की कुशलता रखते थे। इस क्षेत्र में सोना तथा दिगर धातु प्राप्त नही है इसलिये चीजें दिगर क्षेत्रों से लाई जाती रही होगी। उन्होने बनाई कृतियों में विभिन्न ज्यामितिय आकृतियां, काल्पनिक दैत्य तथा हिंसक जानवर इ. पाये गए है। उन्होने घोडे, शेर, सांप, बिच्छु तथा मानव की आकृतियां बनाई है।(Gonur, Mouru, Murgab, Merv, Margiana Page 2. Turkmenistan Region & Zoroastrianism.htm) इस संस्कृति के अवशेषों में से मात्र पांच फीसदी का ही अध्ययन हो पाया है। फीलहाल यह प्रश्न है कि इन क्षेत्रों में से प्राप्त होने वाली सोने तथा चांदी की वस्तूओं को सुरक्षित रखा जाये। (Archeological dig in remote Turkmenistan reveals rare advanced civilization and Bronze Age treasures _ The Raw Story.htm) डॉ. सारियानिडी को कई बर्तनों में कॅनबीज (cannabis), पॉपी (poppy) तथा इफेड्राईन (ephedrine) के अंश प्राप्त हुए है। उनके मुताबिक सोमा नाम का पेय इन्ही मादक वनस्पतियों से मिलकर बनता था।(http://www.gigalresearch.com/The Great Many Secrets of the forgotten city of Gonur.htm) गोनुर की तरह केल्लेली भी कास्य युग (2500-1200 BCE) की संस्कृति है जो गोनुर से 40 कीलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। दूसरी कास्य युगीन वसाहत (2500-1200 BCE) अडजी कुई है जो गोनुर से 13 कीलोमीटर दूर है। अडजी कुई -8 का विस्तार 8.5 हेक्टर का है। गोनुर को या तो युध्द से या फिर मुर्गाब नदी में पानी की भारी कमी की वजह से त्याग दिया गया था। लोगों ने मर्व (Merv) तथा उसके इर्दगीर्द की पहाडियों में विस्थापन किया था।

अवेस्टा के वेंडिडाड में मोउरु (Mouru) के लोगों की विशेषता उनका बहादूर तथा धार्मिक होना बताया गया है। वे लूट और खूनखराबा करते थे। यह स्पष्ट नही है कि मोउरु के लोग खुद विध्वंस और खून-खराबे में शामिल थे या फिर वे हमलावर टोलियों के शिकार बने थे। गोनुर में बांधी गई सुरक्षा दीवारें बहुत ज्यादा मजबूत थी जबकि मेहरगढ तथा सींधु घाटी की सुरक्षा व्यवस्था न के बराबर थी। झोरोस्टर धार्मिक ग्रंथ अवेस्टा से पता चलता है कि अवेस्टा के लोग शहरी संस्कृति के लोग थे। उत्तरी दीशा से भारी तादाद में हमलावर आये जिन्होने नगर पर हमला कर उसका विध्वंस किया। वहां इस बात के भी सबूत है कि गोनुर के केन्द्रिय इमारतों को आग से ध्वस्त कर दिया गया था। जिसे दोबारा नही बनाया जा सका।(Gonur, Mouru, Murgab, Merv, Margiana Page 2. Turkmenistan Region & Zoroastrianism.htm)

सींधू घाटी की गौरवशाली नाग-द्रवीड सभ्यता (Civilization) !

मोहेंजोदारो हरप्पा में प्राप्त चित्र आदिवासियों के गोत्रों के नाम दर्शाते है। मोहेंजोदारो की मुद्राओं पर सीर पर सींगों का मुकुट धारण किये देवताओं की प्रतिमायें है। गोंड पूजारी, राजा, इ॰ महत्वपूर्ण व्यक्तियों व्दारा उत्सवों में सींगों का मुकुट धारण करने की प्रथा है। मान॰ देशमुख के अनुसार आदिवासी मुरीया गोंडों के देवताओं के सर पर सींग का मुकुट चढाने की प्रथा आज तक है। उनके अनुसार प्राचीन काल में संभु के सीर पर सींगों का ही मुकुट था जिसका रुपांतर चंद्रकोर में हुवा। (व्यंकटेश आत्राम, p.36) गोंडी भाषा में हर्रे शब्द का अर्थ बकरा होता है। गोंडों में बकरे को अत्याधिक महत्व दिया जाता है। वह कई गोत्रों की कुलदेवता मानी जाती है। हर्रेमडावी या एटीमडावी, हर्रेकुमरे या एटीकुमरे, हर्रेकोडापा या एटीकोडापा गोत्र के गोंड बकरे को कुलदेवता मानते है। शंकर महादेव को भी हर्रेकोडापा गोत्र का माना जाता है इसलिये उसे ''हर हर महादेव'' अथवा ''येटी शंकर'' कहा गया है। येटी शंकर का अपभ्रंष जटा शंकर है। हरप्पा में प्राप्त बकरे की मुद्रायें गोंड संस्कृति की प्रतिक है। गोंडों में ही वाघ की पूजा होती है, उनको लेकर कई आख्यायिकायें तथा काव्य है। वाघ पर गोंड गोत्रों के नाम है। मोहेंजोदारो में बाघ की कई मुद्रायें मिली है। मोहेंजोदारों हरप्पा में प्राप्त शिवलिंग गोंड संस्कृती से संबधित है। नंदी का भी गोंडों में अत्यंत महत्व है। (आत्राम, p.40,42)

मोहेंजोदारो हरप्पा में प्राप्त सभी मुद्राएं गोंड-संस्कृति और उसका व्यापक विस्तार दर्शाती है।

मान॰ लटारी कवडु मडावी के अनुसार मोहेंजोदारो हरप्पा इ॰ के उत्खनन में प्राप्त चिन्ह आदिवासियों के प्रतिकचिन्ह (Totem) है। वृषभ यानी बैल अथवा सांड यह प्रतिक चिन्ह शिव संस्कृती के वाहन के रुप मे प्रसिध्द है। कोयतुर भाषा में वृषभ को ''कोदा'' कहा जाता है। कोदा प्रतिक चिन्ह आदिवासियों के कोडापे, सहादेव इन समूहों की पहचान है। हरप्पा यह नाम आदिवासियों के गण का नाम होकर उसका प्रतिकचिन्ह ''बकरा'' है। हर हर इस शब्द का अर्थ कोयतुर भाषा मे बकरा ऐसा होता है। वृषभ गौतम बुध्द का प्रतिक-चिन्ह (Totem) माना गया है। उसी प्रकार पशुपति का अर्थ भी वृषभ ही है। (बहुजन नायक, नागपुर दि. 22 अप्रैल 2001)

नाग-द्रविड संस्कृति गण संस्कृति है। डॉ साहेबलाल चुडामणी, श्री ऋषी मसराम, इ॰ के अनुसार गण इस शब्द से ही गोन्ड शब्द की निर्मिती हुयी है। गण-राज्य का अर्थ गोंड राज्य के रुप में लिया गया। गोंड करार दिये गये लोग खुद को गोन्ड नही कहते। वे खुद को कोई या कोईतुर, परधान, कोरकु ,खोन्ड, कन्ध्र, ढोली, बुरड, थोटी, सरोती, पाळा, कोयता, माडिया, या मुरीया इ॰ जमातों का कहते है। राजुरकर के अनुसार गोन्ड इस नाम के अंर्तगत 200 से अधिक जमातों का समावेश होता है। (व्यंकटेश आत्राम, पेज 141,159,113,57)

गोंड समाज में निम्नलिखित गण प्राचिन काल से अस्तित्व में है :- 1) पाळा गण 2) कोया गण 3) ओझा गण 4) सरोत्या गण 5) डोरली गण 6) माना गण 7) मोरिया गण 8) असूर गण 9) धुलिया गण 10) गायता गण 11) कोपा गण 12) कांदरा गण 13) कलंगा गण 14) काटोळा गण 15) नांगरच्या गण 16) सोनझारी गण 17) झरेका गण 18) थेटया गण 19) बुल्डा गण 20) वाडे गण 21) पाटाळी गण 22) पारजा गण 23) भुमियो गण 24) ढोली गण 25) दळवी गण 26) घुर गण 27) कोर्का गण 28) परजा गण 29) भुमका गण 30) भतरा गण 31) झलरीया गण 32) पुरबीया गण 33) सुरजा गण, 34) कोंडया गण 35) दंडामा गण 36) नागांसी गण 37) आगांसी गण 38) भाटोला गण 39) भुतिला गण 40) भिमाल गण 41) कुम्माल गण 42) गट्टीला गण 43) कोला गण 44) कोलावार गण 45) कोलाटया गण 46) अरुखवा गण 47) भुपियाल गण इत्यादी गण आज भी अस्तित्व में है।(व्यंकटेश आत्राम, पेज 56,158) गोंड समुदाय भारत के अन्य मूलनिवासी भाईयों से अलग नही है। आर्यो से संघर्ष और प्रकृति के उतार-चढावों के कारण मूलनिवासी समुदाय विभिन्न नामों में बटँता चला गया।

मोहेंजोदारों में प्राप्त खोपडियों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि सिंधू संस्कृति के लोग मुख्यतः प्रोटो-आस्ट्रेलाईड समूह है। हरप्पा के लोगों में आस्ट्रेलाईड वंश के लोगों के बीच कुछ मंगोल, मेडिटेरॅनियन तथा अल्पीनाईड वंश के लोग भी है।

मौजूदा संथाल जनजाति के लोग सिंधू संस्कृति का मूल हिस्सा थे। डॉ. एन. के. वर्मा के मुताबिक संथाल लोगों की हरप्पा में अपनी खुद की लिपि थी। हरप्पा की मुद्राओं में सांथाली शब्द पाये जाते है। हरप्पा संस्कृति की जगहों के नाम भी संथाली शब्दों जैसे है; मोहनजोडारो यानि माजु दरहा (maju + darha), हरप्पा यानि होर तोपा (hor + topa), जुदीरदारो यानि जुदेर दरहा (jeder+darha), कान्हूदारो यानि कान्हू दरहा (kanhu+darha), झुकारदारो यानि सुक्रि दरहा (sukri+darha), कालीबंगा यानि काली बोंगा (kali+bonga), काथियावार यानि काथवा बारे (kathwa+bare) इ.। द्रविडों में पॅलिओ मेडिटेरिएनियन के तीन उपप्रकारों का, वास्तविक मेडिटेरिएनियन, तथा ओरिएंटल मेडिटेरिएनियन का समावेश होता है। इस समुह में उत्तरी भारत की अधिकांश अनुसूचित जातियों का समावेश होता है। मुंडा, हो, सांथाल तथा अन्य शांतिप्रिय आस्ट्रीक भाषी लोगों को आर्यो के आक्रमण से विस्थापित होना पडा। वे उत्तरपूर्व में छोटा नागपूर इ. में बढते गये। वहां उन्होने अपनी संस्कृति कायम की। किले तथा अन्य शिल्पों का निर्माण किया। उन्हे सिंधु घाटी की जगहों का नाम दिया। सांथाल छोटा नागपुर तथा हजारीबाग के मैदानों से आगे बढते गए। वे जहां बस गए है उसे संथाल परगना के नाम से जाना जाता है। कई सांथाल आसाम, ओरिसा नेपाल तथा आज के बंगला देश में बस गए।(http://srpbypst.blogspot.com/HISTORY OF SANTALS _ The Santals Resource Page by Peter Swapan Tudu.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता सबसे बडी और

दुनियां की सबसे पुरानी नागरी सभ्यता है !

मध्यप्रदेश के भीमटेकडा में 9000 साल पुराने आधे पक्के घर पाये गए। दक्षिण एशिया में आरंभिक निओलिथिक संस्कृति के अवशेष हरियाणा के भीर्राना (7500 BCE) में तथा पाकिस्तान में बलुचिस्तान के मेहरगढ में (7000 BCE onwards) पाये गए है। निओलिथिक खेतीहर संस्कृति सिंधु घाटी में लगभग ईसापूर्व 5000 साल पहले विकसित

हुई। गंगा की नीचली घाटी में यह ईसापूर्व 3000 साल पहले तथा इसके बाद दक्षिण में फैली। सबसे पहली नागरी संस्कृति सिंधु घाटी संस्कृति है।(http://en.wikipedia.org/ History of India - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) पूराने उरुक /अक्कॅडियन सुत्र हरप्पा को मेलुहा (Meluha) कहते थे। इसलिये सिंधु घाटी में लोगों का निवास ईसापूर्व 10,000 to BC 2500 वर्ष पहले से था। शायद उरुक संस्कृति तथा सिंधु घाटी संस्कृति एक जैसी थी। सिंधू घाटी की संस्कृति निश्चित रुप से गैर-वेदिक संस्कृति है। (http:// varnam.nationalinterest.in/Avesta and Rig Veda _ varnam.htm) आर्किऑलॉजिस्टों तथा इतिहासकारों के मुताबिक सिंधु घाटी सभ्यता 9000 साल से ज्यादा पुरानी तथा दुनियाँ की सबसे पूरानी नागरी सभ्यता है। (http://www.defence.pk/Pakistan The True Heir Of Indus Valley Civilization – Analysis.htm)

सिंधु घाटी संस्कृति का विस्तार 1,260,000 km² था। अपने समृध्दी के काल में वहां 50 लाख लोगों का निवास था। सन् 1999 तक 1056 से ज्यादा वसाहतें सिंधु घाटी में खोजी जा चुकी है। इनमें से 96 वसाहतों का अध्ययन हुआ है। इनमें हरप्पा, लोथल, मोहेन्जोदारो (युनेस्को विश्व हेरिटेज स्थल) ढोलवीरा, कालीबंगा तथा राखीगरही का समावेश है। सिंधु घाटी सभ्यता को पश्चिम में बलुचीस्तान के सुतकागान डोर में तथा उत्तर में अफगानीस्तान की अमु दरया (Oxus) पर स्थित शॉर्टुगाई (Shortugai) तक तथा पूर्व में भारत के आलमगीरपूर उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में सुरत जिले के मालवा तक पाया गया है। हाल ही में कुछ और वसाहतें पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ति क्षेत्र में भी पायी गई है। छोटी छोटी कॉलनियां तुर्कमेनिस्तान तथा गुजरात तक पायी गई है। सिंधु संस्कृति के स्थल उत्तर-पश्चीमी पाकिस्तान मांडा में गोमल नदी घाटी, जम्मू में बीस नदी (Beas River) इ. नदियों के किनारे पाये गए है। लेकिन यह स्थल बालाकोट जैसे प्राचीन समुद्र किनारे पर तथा ढोलवीरा व्दीप पर भी पाये गए है।(http:// en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज का संक्षिप्त इतिहास !

ब्रिटीश सेना छोडने वाले जेम्स लेविस ने हरप्पा को सन् 1826 में खोजा। आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के प्रमुख अलेक्झांडर कन्निंघम (Alexander Cunningham) ने इस जगह को सन् 1853 तथा 1856 में भेंट दी। उनका मकसद चीनी यात्रियों व्दारा भेंट दिये गए बौध्द स्थलों को खोजना था। सन् 1872 में हरप्पा की इंटों को बडे भारी पैमाने पर लूटा गया। इन इंटों का इस्तेमाल बडे पैमाने पर लाहौर मुलतान रेल्वे लाईन बिछाने के लिये इंटों से प्लॅटफार्म बनाया गया। जनरल अलेक्झांडर कन्निंघम ने 150 कीलोमीटर लंबी रेल्वे लाईन में इन इंटों के इस्तेमाल की इजाजत दे दी थी। इससे इस संस्कृति की उपरी सतहें पूरी तरह से खत्म हो गई। सिंध, पाकिस्तान में मोहेंजोदारो की खुदाई 1931 में की गई। पाकिस्तानी प्रांत बलुचिस्तान में मेहरगढ़ की खुदाई 1974 में की गई जो सन् 1986 तक जारी रही। वह दोबारा 1997 से 2000 तक जारी थी। खैबर पाखुनखवा (Khyber Pakhtunkhwa) में रेहमान ढेरी की खुदाई सन् 1976-1980 के दौरान हुई। सन् 1920 में आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डायरेक्टर जॉन मार्शल ने नये सीरे से हरप्पा की खोज शुरु की। लेकिन हरप्पा की मुख्य खोज का काम

सन् 1986 के पहले नही हो सका। कॅलिफोर्निया युनिवर्सिटी के जार्ज डेल्स ने बर्कले में हरप्पन आर्किआलॉजिकल रिसर्च प्रोजेक्ट (HARP) कायम किया। इसमें आर्किऑलॉजिस्ट, भाषाशात्रज्ञ, इतिहासकार, तथा फिजिकल एन्थ्रोपोलॉजिस्ट थे।(www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm; http://www.defence.pk/Pakistan The True Heir Of Indus Valley Civilization – Analysis.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर रचना उन्नत इंजिनियरिंग तकनिक से बनी है !

सिंधु घाटी सभ्यता की कुल 1052 शहर-वसाहतें इंदस नदी तथा उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में पाये गए। लगभग ईसापूर्व 2600 वर्ष पहले आरंभिक हरप्पन समुदाय बडे शहरी केन्द्रों में तब्दिल हुए। इन में हरप्पा, गानेरीवाला, मोहेनजोदारो, ढोलावीरा, कालीबंगान, राखीगरही, रुपर, तथा लोथल इ. का समावेश है।

हरप्पा, मोहेनजोदारो, राखीगरही शहरों के निर्माण की योजना में दुनियां की सबसे पहले जानी गई पानी तथा मलमूत्र निकासी की बेमिसाल व्यवस्था है। यह व्यवस्था भारत तथा पाकिस्तान के कई शहरों की मौजूदा व्यवस्था से भी बेहतर है। सभी घरों को पानी तथा उसकी निकासी की व्यवस्था उपलब्ध थी। निजी घर या कुछ घरों का समुह कुएं से पानी प्राप्त करता था। नहाने इ. के लिये घर में एक स्वतंत्र कमरा था। रास्तों के किनारों से उपर से बंद की गई पक्की नालियों से पानी निकासी होती थी। मलमूत्र बडी नालियों में मिलकर अंततः उसकी निकासी खाद बनाने में होती थी।

शहर के घर बहुमंजिला थे और पक्के इंटों से बने थे। नगर रचना एक निश्चित योजना के तहत थी। सडकें तथा बिल्डिंग्स भी निश्चित योजना के मुताबिक बने थे। निजी तथा सार्वजनिक जगहों को उचित रुप से ध्यान में रखकर सडकों का निर्माण किया गया था। सडकों की चौडाई 33 फीट थी। वे मुख्यतः उत्तर-दक्षिण दीशा में थी। उससे कम चौडी सडके पूर्व-पश्चिम दीशा में जाती थी और मुख्य सडकों को 90 डिग्री के कोण से मिलती थी। घरों के दरवाजे अंदर की ओर बनी हुई छोटी सडकों पर खुलते थे। मोहेनजोदारों के निर्माण में इंटें बिछाने का विशेष तरिका था जो इलम तथा सुमेर के तरिकों जैसा था। डी. वुले के मुताबिक ईसापूर्व 2000 वर्ष पहले उर की बिल्डिंग में तथा पर्शिया की सुसा में यही तरिका देखा गया। मोहेंजोदारों की यह विशेषता है की उनके घरों की बाहरी दीवारों को बेहतर या अंदरुनी उतार दिया हुआ था। यही विशेषता सुमेरीयन तथा इजिप्शियन इमारतों में पायी जाती है।

हरप्पा की उन्नत निर्माणकला का नमुना उनके बंदरगाह से, अनाज के गोदामों से, चिजों के गोदामों से, इंटों से बने चबुतरों से तथा शहर की सुरक्षा दीवारों से दिखाई देता है। इन चौडी दीवारों का मूल मकसद शहर की बाढ़ से हिफाजत करना था। बनाये गए बडे हॉल के मकसद के प्रति कोई एक राय नही है।

खेती की पैदावार के लिये नहरों का बिछा हुआ नेटवर्क H.P. Francfort इ. पुरातत्व वैज्ञानिकों को सिंधु घाटी में मिला है। सिंधु सभ्यता के द्रविड चावल उगाते थे। एक बडे अनाज के गोदाम में पक्की इंटों से बडे बडे चबुतरे बने थे। उनपर उपर से लकडे का आवरण था। उसके समांतर में दो कमरों के घरों की कतारें थी। इन घरों का इस्तेमाल वहां के कर्मचारी या गरीब लोग करते होंगे। कई खंबों से युक्त बडा हॉल पाया गया है। शायद इसका इस्तेमाल प्रशासनिक कामों के लिये किया जाता होगा।

दौलत का केन्द्रिकरण लगभग नही के बराबर था। इसलिये सामान्य लोगों को

पक्के घर, पक्की सडकें, भूमिगत मलमूत्र तथा पानी निकासी की व्यवस्था, हर घर में पानी तथा संडास जिसमें अंग्रेजी पध्दती की सीट का इस्तेमाल है, बाथरुम की व्यवस्था, रसोई घर, विस्तृत आंगण इ. की वे सारी नागरी सुविधाएं उपलब्ध थी जो आज भी बडे शहरों में एक बहुत बडी आबादी को उपलब्ध नही है। कुछ घर आम घरों से बडे थे। इन शहरों के निवासी मुख्यतः व्यापारी व कारीगर थे। समान व्यवसाय के कारीगर व व्यवसायी साथ रहते थे। सिंधु घाटी सभ्यता का आम आदमी समृध्द और सुखी था और सभी की भलाई में विश्वास रखता था। शहर में तरणताल जैसा बहुत बडा सार्वजनीक स्नान कुंड पाया गया। शायद उसका कोई धार्मिक महत्व होगा।(http://en.wikipedia.org/ Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm; http://www.lppindia.com/Founders of Indus Valley Civilisation and Their Later History, by Naval Viyogi - Low Price Publications(India).htm)

सिंधु घाटी सभ्यता सर्वोच्च स्तर की लोकतांत्रिक व्यवस्था थी !

मेसोपोटेमिया और इजिप्त की सभ्यताओं ने अतिविशाल महल और मंदिर बनाये। सिंधु घाटी सभ्यता में कोई महल या मंदिर नही पाया गया। किसी पूजारी का भी अस्तित्व नही देखा गया। वहां किसी राजा या उसकी सेना के सबूत नही पाये गए। शायद हरप्पा इ. सिंधु घाटी संस्कृति के नगर व्यापार तथा धार्मिक नैतिकता से नियंत्रित थे, न कि सैनिक ताकत के बल पर। समूची सिंधु घाटी में मिली वस्तूओं में ऐसा कोई शिल्प या चिज नही पायी गई जो शत्रु पर विजय के प्रतिक के तौर पर बनी हो। वहां युध्द या शत्रुओं पर विजय के कोई प्रतिक चिन्ह नही थे। ऐसी कोई कलाकृति नही थी जिसमें किसी को बंदी बनाते हुए, सैनिकी लिबास में, या हत्या करते हुए किसी को दिखाया गया हो।(http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm; http://www.pasthound.com/Indus Valley script - Pasthound.htm)

सिंधु घाटी शहरों में जटील किस्म के निर्णय लिये जाने, उनपर व्यापक तौर पर अमल किये जाने के सबूत है। हरप्पा की कलाकृतियों तथा बर्तन, मुद्राएं, वजन, इंटें इ. वस्तूओं में आश्चर्यजनक समानता है। नगरों की रचना में इस्तेमाल की गई इंटों का आकार पूरी घाटी में एक था, एक सरीखे वजन थे, कच्चे माल के स्त्रोतों के पास वसाहत बनाई गई थी। निश्चित ही ये सब एक राज्य होने का इशारा करते है। इसके बावजूद पुरातत्वीय रिकार्ड हरप्पा समाज के सत्ता केन्द्र की कोई जानकारी नही देते। यही माना जाता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के शहरों में समान आर्थिक व सामाजिक संरचना थी। शायद वहां सभी को समान दर्जा दिया गया था। (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm) सिंधु घाटी संस्कृति की इंटों का इस्तेमाल पैमाने पर नेपाल के कपीलवस्तु में बुध्द के महल बनाने में, लिच्छवी की राजधानी वैशाली तक हुआ है। लिच्छवी इ. में गणतंत्रीय व्यवस्था का पालन ईसापूर्व 6 वी शताब्दी तक किया जाता था। इंटें बनाने की तकनिक समान थी। तकनिक का विस्तार व्यापक और निरंतर था। (www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm) सिंधू घाटी सभ्यता ने महा जनपद नाम से विख्यात गणतंत्र देखे है।

सिंधु-घाटी सभ्यता के वजन तथा गिनने के साधन !

सिंधु घाटी सभ्यता सबसे पहली संस्कृति थी जिसने बेहद अचुक समान वजन तथा मापन की पध्दति का सबसे पहले विकास किया था। लोथल में प्राप्त उनकी हाथी दांत की स्केल पर सबसे छोटी ईकाई 1.704mm **इतनी थी जो कास्य युग में अन्य कहीं नही मिली थी। इंटों का आकार अचुकता लिये हुए** 4:2:1 **के** ratio **में था। वे दशांश पध्दति का इस्तेमाल करते थे। वजन की ईकाई** 0.05, 0.1, 0.2, 0.5, 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 200, **व** 500 **थी। प्रत्येक इकाई का वजन** 28 **ग्राम था। यह वजन अंग्रेजी औंस तथा ग्रीक के अन्सीया की तरह है। छोटी वस्तुओं को इन्ही गुणोत्तरों में** 0.871 **ग्राम की मात्रा से गिना जाता था। कुछ वजन इतने छोटे थे कि सिर्फ ज्वेलर्स कीमती धातुओं को गिनने के लिये उनका इस्तेमाल कर सकते है। उन्होने लंबाई, धनत्व तथा समय के मापण तथा गणना करने के अचुक साधन बनाये थे।**

एक उपकरण की मदद से पूरे क्षितिज के हिस्से तथा बंदरगाह पर समूद्र की लहरों (tidal dock) **को गिनना मुमकिन था।**(Unique Harappan inventions include an instrument which was used to measure whole sections of the horizon and the tidal dock.) **हरप्पा का इंजिनियरिंग का कौशल्य अप्रतिम था। वे समुद्र की लहरों का अध्ययन कर अपने बंदरगाहों का निर्माण करते थे। उन्होने धातु विज्ञान में नये तरिके इजाद किये। उन्होने तांबा, कास्य, सीसा, तथा टीन पैदा किया।** (http://us.sulekha.com/science in Indus valley civilization.htm; www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता का दंत व औषधी विज्ञान !

सन् 2001 **में पुरातत्व वैज्ञानिकों को मेहरगढ पाकिस्तान में मिले दो लोगों के अवशेषों का अध्ययन में यह पता चला कि आरंभीक हरप्पा के काल से सिंधु घाटी सभ्यता के लोग दंतविज्ञान तथा औषधी विज्ञान का ज्ञान रखते थे। जिन भौतिक मानवविकास वैज्ञानिक ने इनका परिक्षण किया वे युनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी कोलंबिया के प्रो. एन्ड्रिया कुसीना** (Andrea Cucina) **थे।**(http://us.sulekha.com/science in Indus valley civilization.htm) **अप्रैल** 2006 **में नेचर नामक विज्ञान के जर्नल में यह बात छपी कि इन्सानी दांतों में बारीक छेद करने की पध्दति का उन्हे पता था। मेहरगढ की कब्रों से हासिल अवशेषों में गॅरह छेद किये हुए दांतों के कॅप मिजे जो नौ वयस्कों के थे। ये कब्रे** 7,500-9,000 **वर्ष पूरानी है।** (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता के संगीत, खिलौने तथा दिगर कलाकृतियां !

सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों में प्राप्त बर्तनों इ. पर के चित्र, शिल्प, मूर्तियाँ इ. अफ्रिका में प्राप्त चित्रों शिल्पों इ. से मिलती है।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) **सिंधु घाटी में प्राप्त मुद्राओं में तथा लोथल में प्राप्त दो वस्तूओं पर हार्प नामक संगीत उपकरण के चित्र है। इससे स्पष्ट है कि वे तारों से बने हुए वाद्यों का इस्तेमाल करते थे। हरप्पा में तरह तरह के खिलौने तथा खेल के उपकरण जैसे कि छह सतहों वाले पांसे** (dice) **इ. प्राप्त हुए है।**(http://en.wikipedia.org/Indus Valley

Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) बडी तादाद में सोने, टेराकोटा तथा नृत्य करती हुई लडकियों की पत्थर की आकृतियां हासिल हुई है। (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सर जॉन मार्शल ने इस नृत्य मुद्रा वाली लंबी पतली लडकी की कांसे की मूर्ति को देखते ही कहा कि उसे इस बात पर विश्वास ही नही हो रहा था कि यह मूर्ति तीन हजार साल पहले बनी है। इस तरह की मॉडलिंग की कल्पना ग्रीस के हेलेनिस्ट युग तक में नही पायी जाती थी। इसलिये उन्हे लगा था कि कहीं कोई गलती हुई है।(http://www.ancient.eu.com/Religious Developments in Ancient India (Article) -- Ancient History Encyclopedia.htm)

हरप्पा के कारीगर बेहद ही कुशल थे। वे काँसे, सोने, चांदी, टेराकोटा, चमकिले चीनी मिट्टी तथा मुल्यवान पत्थरों से तरह तरह की वस्तूओं का निर्माण करते थे। कुछ कलाकृतियां तो बेहद सुक्ष्म थी जो बेहद कुशल कारीगरी का नमुना दर्शाती है। जोनाथन केनोयेर (Jonathan Kenoyer) ने सिंधु घाटी की सभ्यता के कारीगरों की तकनीकें खोजकर उनका फिर से इस्तेमाल किया है। उन्होने पता लगाया कि बनाने की प्रक्रिया में quartz को घीसा जाता था तथा 940 Celsius के उच्च तापमान पर कुछ हद तक पिघलाया भी जाता था। केनोयेर ने ठिक वैसी ही वस्तूएं बनाई जैसी सिंधू घाटी के कारीगर बनाते थे। (www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm) सभी कारीगर शहर में अपने अपने कार्यस्थलों के पास ही रहते थे।(http://www.lppindia.com/Founders of Indus Valley Civilisation and Their Later History, by Naval Viyogi - Low Price Publications(India).htm)

सोने के निशान पाये गए सोने की कसौटी का पत्थर बानावली में प्राप्त हुआ। इसका उपयोग सोने की शुध्दता परखने के लिये किया जाता था। अन्य आकृतियों में गाये, भालू, बंदर, तथा कुत्ते पाए गए। सांड तथा झेब्रा के गुणों वाले सिंगों वाले काल्पनिक प्राणि की आकृति मिली है। चेहरे के मेकअप का साहित्य, विशेष कंघे, तथा मांग में सिंदूर वाली औरत का चीत्र मिला है।(http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता में व्यापार का स्वरुप व विस्तार !

फ्रेंच पुरातत्व वैज्ञानिकों को ईरान के सुसा में मोहेंजोदारो की वस्तूएं प्राप्त हुई है क्योंकि ऐसी वस्तूएं सुसा में नही पायी जाती थी। यह संभव है कि विशेष किस्म के बर्तनों का निर्यात किया जाता था। Mackay के मुताबिक सिंधु घाटी की कुल्हाडियां, तथा adzes तांबे या कांसे की बनी होती थी। ऐसी ही बनावट की कुल्हाडियां सुसा तथा आरंभिक इजिप्त में भी देखी गयी है। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) ईसापूर्व 4300–3200 BCE के कास्य युग में सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्रों में निर्मित चीनी मिट्टी के बर्तन इ. दक्षिण तुर्कमेनिस्तान तथा उत्तरी ईरान जैसे है। इससे सिंधु घाटी के व्यापार के विस्तार का पता चलता है। हरप्पा के आरंभिक काल (about 3200–2600 BCE) के बर्तनों, मुद्राओं, आकृतियों, जेवर इ. मध्य एशिया तथा ईरान के

मैदानों में पाये जाने से इसके व्यापार का पता चलता है। यह व्यापार अफगानिस्तान, मेसोपोटेमिया, क्रीट (Crete), इजिप्त, उत्तरी तथा पश्चिमी भारत तक चलता था। हरप्पा तथा मेसोपोटेमिया के बीच समूद्र से व्यापार का आदान प्रदान दिलमुन (आधुनिक बहरैन तथा फैलाका) के मध्यस्त व्यापारियों के जरिये होता था। मजबूत जहाजों की निर्मिति से समुद्र के लंबी दूरी का व्यापार संभव हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता ने व्यापार के लिये चक्के की गाडियों का इस्तेमाल सबसे पहले किया। इनमें मुख्यता बैलगाडियों का समावेश होता था। (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

पुरातत्व वैज्ञानिकों को चौडी और बडी गहरी नहर तथा उसके किनारों पर जहाज यातायात के लिये बना बंदगाह लोथल में मिला है।

सुमेरियन दस्तावेजों के मुताबिक सिंधु घाटी का प्राचीन नाम मेलुहा था। वे दिलमुन यानि बहरैन तथा मक्रन (मक्रन समुद्र किनारा) का उल्लेख करते है। मुद्राओं पर तथा बुने गए कपडे पर भारतीय जहाज बने पाये गए। विदेशी व्यापार मुख्यतः बहरैन और मेसोपोटेमिया के बीच था। भारत तथा सुमेर के बीच जमीन तथा पानी दोनों से ही व्यापार होता था। देश में राजस्तान, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत, उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ हिस्सों तक व्यापार होता था।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

सिंधु घाटी की मुद्राएं ईरान के कीश, सुसा तथा उर में पाई गई। हरप्पा के लोग शायद पर्शिया तथा अफगानिस्तान से चांदी, तांबा तथा कीमती पत्थरों का आयात करते थे। ईरान से उन्हे सोना, चांदी, सीसा, जस्ता, तथा कीमती पत्थर हासिल होते थे।(http://www.indianembassy-tehran.ir//Embassy of India, Tehran.htm) विदेशों से कच्चा माल जैसे कि carnelian, steatite, and lapis lazuli इ. को कलात्मक वस्तुओं के अलावा जानवर, अनाज, शहद, घी इ. के बदले में प्राप्त किया जाता था।(www. archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm) हरप्पा की मुद्राएं तथा जेवर इ. मेसोपोटेमिया में पाये गये है।

सिंधु घाटी सभ्यता की मुद्राएं !

मुद्राओं को काटने तथा चमकदार पॉलिश का हरप्पा के कारीगरों का तरिका उनकी विशेष खोज थी। अधिकांश मुद्राओं पर जानवरों की आकृतियां है तथा एक छोटी इबारत लिखी है। युनिकार्न नामक जानवर अधिकांश मुद्राओं में पाया गया है। मुख्यतः चौकोर मुद्राएं पाई गई। आयताकार मुद्राएं कम तादाद में पायी गई। सभी मूद्राओं पर एक जानवर तथा छोटी इबारत है।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans. htm) मेसोपोटेमिया में हजारो सिलेंड्रिकल (cylindrical) मुद्राएं प्राप्त हुई है। इनके कुल प्रकार मात्र 17 है। यह मुद्राएं मेसोपोटेमिया की नही है। इनका कालावधी ईसापूर्व 2300 व 2000 है। कईयों पर सिंधु घाटी की भाषा अंकित है। तीन मुद्राएं मोहेंजोदारो में मिली है जो मोहेंजोदारों की नही है। मोहेंजोदारों की मुद्राएं बडे आकार की तथा चौकोर है। गोल मुद्राएं बहरैन की थी जो भारत तथा मेसोपोटॅमिया दोनों से व्यापार करते थे।(http:// arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) सिंधु घाटी की मुद्राओं के चिन्ह कई वस्तुओं पर, तथा प्रथा संबंधी चीजों पर बडे पैमाने पर बनाये जाते थे। चिन्हों को बडे पैमाने पर बनाने का उदाहरण और किसी प्राचीन सभ्यता में नही है। (http://

en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सिंधु घाटी की लिपि !

आर्थिक लेनदेन के रिकार्ड रखने के लिये, साहित्य निर्माण में लिपि की जरुरत होती है। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग सांस्कृतिक रुप से उन्नत थे व व्यापार करते थे इसलिये उनकी अपनी लिपि थी। हरप्पा की लिपि चित्रलिपि है क्योंकि उनके चिन्हों में पक्षी, मछली, तथा मानवी आकृतियां है। हरप्पा लिपि में 400 से 600 के बीच चीन्ह पाये गए है। कई मुद्राओं पर कुछ शब्द लिखे है। लिपि को दाहिनी ओर से बाई ओर लिखा जाता था। (www.archaeologyonline.ne/The Harappan Civilization by Tarini J_ Carr.htm) केनोयेर के मुताबिक सिंधु घाटी की लिपि को कम से कम ईसापूर्व 3300 वर्ष पहले तक देखा जा सकता है जो सुमेरिया के लिखित दस्तावेजों से भी पूराने है। सन् 2001 में केनोयेर को एक वर्कशॉप मिली जिसमें सिंधु घाटी की मुद्राओं को बनाकर उनपर आकृतियां तथा इबारतें बनाई जाती थी। मुद्राओं को उनके काल के मुताबिक रखकर समझने की कोशिश की जा सकती है। शायद कई वर्षो के कालावधी में इनकी लिपि में कुछ बदलाव हुआ हो। (http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm) Cheik Tidiane तथा N'Diaye के मुताबिक सिंधु घाटी भाषा के कई शब्द तथा अभिव्यक्तियां द्रविड तथा सेनेगल की वोलोफ व पुलार भाषाओं से संबंधित है।(http://arutkural.tripod.com/Dravidians and Africans.htm)

सिंधु घाटी की लिपि को जानने-समझने की कोशिशें !

भाषाओं को लिखने का काम लगभग ईसापूर्व 3500 वर्ष पहले हुआ है।(http://www.hinduwebsite.com/Sanskrit, Hittite Armenian and Albanian Languages.htm) लिपि का विकास राजनीतिक विस्तार के साथ हुआ है। नये क्षेत्रों की बातों को समझने, आर्थिक तथा ऐतिहासिक रिकार्ड रखने, संदेशों को अचुकता से पहुंचाने इ. गतिविधियों के लिये लिपि की जरुरत होती है। आरंभिक इलामाईट (Proto-Elamite) लिपि (ca. 3200 – 2900 BC) सबसे पूरानी लिपि समझी जाती है। सिंधु घाटी की लिपि को ईसापूर्व 2600–1900 के दौरान की माना जाता है जो हरप्पा का विकसित कालखंड है। यह लिपि कुछ चिन्हों से विकसित हुई है जो ईसापूर्व 3500 वर्ष पहले से आरंभिक हरप्पा में पाये गए है। हरप्पा की लिपि को logographic लिपि तथा syllabic लिपि के मध्य की माना गया है। logographic लिपि में शब्द इ. को किसी चिन्ह से व्यक्त किया जाता है। इसलिये चिन्हों की तादाद बहुत होती है। syllabic लिपि में उच्चार के मुताबिक कम से कम अक्षरों का प्रयोग होता है। सिंधु घाटी की लिपि को logo-syllabic यानि दोनों का मिश्रण माना गया है। कुछ भाषा विशेषज्ञों का मानना है कि सिंधु घाटी लिपि में शब्दों को मिलाकर जटील कल्पना को व्यक्त किया गया है इसलिये यह agglutinative लिपि भी है।(http://en.wikipedia.org/Writing - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

द्रविड लोगों का समावेश नुबिया की C-Group संस्कृति में होता है। द्रविड लोक आरंभिक सहारा (Proto-Saharan) के लोग थे। प्रोटो सहारन लोग द्रविडों, इलामाईट तथा सुमेरियन लोगों के पूरखे थे। वे एक सामान्य लिपि का उपयोग करते थे जो पहले बर्तनों पर तथा बाद में अक्षरों की लिपि में तब्दिल हुई। हरप्पा की लिपि को समझने के लिये प्रोटो सहारन लोगों की Libyco-Berber लिपि को समझना जरुरी है। ईसापूर्व चौथे

व तीसरे मिलेनियम वर्ष पहले रिकार्ड रखने के लिये सहारा अफ्रिका से लेकर इरान, चीन, तथा सिंघु घाटी में सामान्य लिपि का इस्तेमाल किया जाता था। (Dravidian is the language of the Indus writing Clyde Winters) इस सामान्य लिपि के बेहतर उदाहरण Linear A script, Proto- Elamite, Uruk script, Indus Valley लिपि व Libyco-Berber लिपि है। इलामाईट व सुमेरियन लोगों ने इस लिपि को त्याग दिया और cuneiform लिपि अपना ली। द्रविडों मिनोअन्स (Minoans) तथा मांडे (Mande) लोग प्रोटो सहारन लिपि का इस्तेमाल करते रहे। सुमेरियन, इलामाईट, द्रविड तथा मान्डींग भाषाएं अनुवांशिक रुप से संबंधित है।(Dravidian is the language of the Indus writing Clyde Winters)

इंटरनेट पर कई वेब साइटस् दावा करती है कि सिंधु घाटी के लोग प्रोटो द्रविडन भाषा का इस्तेमाल करते थे। हाल के शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि हरप्पा के लोग तमिल भाषा से मिलती जुलती भाषा का इस्तेमाल करते थे।(http://en.wikipedia.org/Talk Proto-Dravidian language - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) श्री महादेवन की विशेषता सिंधु घाटी लिपि व तमिल-ब्राह्मी इबारतों का अध्ययन (eminent epigraphist) है। उनके मुताबिक सिंधु घाटी लिपि द्रविडन व पुराने तामिल समाज से संबंधित है। श्री महादेवन ने सिंधु लिपि इबारतों के संबंध में तथा पूरानी तमिल कविताओं के 40 साल के अध्ययन में जो सबूत इकट्ठा किये है उससे उन्होने यह निष्कर्ष निकाला है। उनके मुताबिक द्रविडन ब्राहुई भाषा आज भी सिंधु घाटी क्षेत्र में बोली जाती है। सिंधु घाटी की इबारतों के कंम्प्युटर विश्लेषण में यह तथ्य उजागर हुआ है कि सिंधु घाटी लिपि में तमिल की तरह सिर्फ suffixes पाये जाते है जबकि इंडो-आर्यन भाषाओं में सिर्फ prefixes पाये जाते है।(www.indiadivine.org/Indus script linguistically Dravidian Expert- Iravatham Mahadevan.htm) स्कालर्स का मानना है कि सिंधु घाटी लिपि-रचना के अध्ययन (structural analysis) से पता चलता है कि यह भाषा द्रविडन भाषाओं की तरह agglutinative है। रशियन स्कालर युरी क्नोरोझोव (Yuri Knorozov) को लगता है कि यह लिपि logosyllabic लिपि है, कम्प्युटर विश्लेषण से यह संभावना सबसे ज्यादा है कि यह एक द्रविडन भाषा है। हेनरी हेरास के मुताबिक कई चिन्ह प्रोटो द्रविडन सोच पर आधारित है। (http://en.wikipedia.org/Indus script - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) वाल्टर ए. फ्रांसिस ल्युनियर (1986) का निष्कर्ष है कि हरप्पा की भाषा द्रविडन भाषा है। J.V.Kinnier Wilson (1986) का दावा है कि हरप्पन तथा सुमेरियन वास्तव में एक ही लोग है। सुमेरियन वास्तव में इंडो-सुमेरियन है जो हरप्पा से विस्थापित होकर सुमेरिया में बस गये थे। सन् 1975 में सुमेरियन भाषा और द्रविड भाषाएं खासकर दक्षिण भारत की द्रविड भाषाओं से 200 शब्द है।(http://arutkural.tripod.com/Sumero Dravidian Studies.htm) भाषा वैज्ञानिकों की एक राय है कि हरप्पा की लिपि आधुनिक द्रविड भाषाओं से संबंधित है। आर्कालॉजिस्ट मार्शल पहले वैज्ञानिक थे जिन्होने हरप्पा की भाषा के साथ द्रविड भाषाओं का संबंध कायम किया। कई भाषा वैज्ञानिकों के मुताबिक प्राकृत भाषा प्रकृति के अवलोकन से विकसित हुई है।(Banerji, Sures Chadra, 1987 Folklore in Buddhist and Jaina Literatures, pg. 1-2)

सन् 1992 में पाठक तथा वर्मा ने दावा किया कि संथाल जनजाति सिंधु घाटी की लिपि का उपयोग करती है। संथाल सबसे अलग रहते थे इसलिये उन्होने सिंधु घाटी की लिपि का इस्तेमाल जारी रखा। श्री वर्मा संथाल जनजाति के सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत पर अध्ययन करने लगे थे। तभी उनके अध्ययन की शुरुआत सन् 1978 में हुई। सांथाल लोगों की धार्मिक विधियों तथा समारोह की प्रार्थनाओं में बनाई

गई आकृतियों में तथा हरप्पा की इबारतों में बडी समानता है। कुछ सालों में उन्होने ऐसी लगभग 2000 आकृतियां इकट्ठा की। उनके चित्र बनाकर दो किताबों में सुरक्षित कर लिये। संथाल जनजाति के लोगों से हुए संवाद से पता चला कि इन आकृतियों का ध्वनि मुल्य है। आकृतियां तथा उनका ध्वनि मुल्य सामने रखकर श्री वर्मा ने कई अक्षरों तथा उनके ध्वनी मुल्यों की श्रंखला तैयार की। इसके आधार पर उन्होने हरप्पा की कई इबारतों को कलकत्ता तथा बंबई के स्कॉलर्स की मदद से समझा (deciphered)। अपने लोक गीतों में संथाल लोग सिंधु घाटी लिपि के शब्दों का उच्चारण करते है जिनमें सिंघु घाटी से उनके विस्थापन का भी उल्लेख है। श्री वर्मा का दावा है कि उन्होने मोहेन्जोदारों की इबारतों को समझ लिया है। लेकिन वे उनका अर्थ नही जानते। उनके मुताबिक शब्दों का अर्थ जानने का काम भाषा वैज्ञानिकों का है। (https://groups.google.com/Deciphering of the script of the ancient Harappan civilization - Google Groups.htm#!overview)

प्रसिध्द मूलनिवासी भाषाविद मान. डॉ. एम. सी. कंगाली के मुताबिक कॉल्डवेल, ज्युल ब्लांख, गियर्सन, आदि भाषाविदों ने गोंडी भाषा का अध्ययन कर यह प्रतिपादन किया है कि गोंडी द्रविड परिवार की भाषा होने के बावजूद भी उसमें जो स्वरभेद, प्रत्यय और मूल रुपग्राम पाये जाते है, वे अन्य द्रविडन भाषाओं से भिन्न है। गोंडी सभी द्रविडन भाषाओं की जननी है, ऐसा न्यायमूर्ति रानडे और कॉल्डवेल का मत है। हरप्पन लिपि की दायी से बायी दीशा गोंड समुदाय के सांस्कृतिक मुल्यों के अनुरुप है। गोंड समुदाय में किसी भी कार्य को आरंभ कर दायें से बायें की ओर ही बढने की परंपरा है। एक कतार में बैठे लोगों को खाना परोसना हो तो दायें से बाये बढते हुए खाना परोसा जाता है। अपने इस्ट शक्तिस्थल के फेरे भी दायें से बाये यानि घडी के विरुध्द दीशा में लिये जाते है। खेत में हल चलाने तथा आरती घुमाने की दीशा दायें से बांये है।

अबतक हरप्पा लिपि को हल करने के जितने भी राष्ट्रीय तथा अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास हुए है उनका अध्ययन करने के बाद प्रसिध्द भाषाविद मान. डॉ. एम. सी. कंगाली ने हरप्पा के प्रत्येक चिन्ह का गोंडी समुदाय में जो विशेष अर्थ है उसे ध्यान में रखकर प्रत्येक इबारत के अर्थ स्पष्ट किये है। भाषाविदों ने अबतक प्राप्त सभी इबारतों को विशेष क्रम दिया हुआ है। डॉ. कंगाली ने मुद्रा क्रमांक एम- 304 का अर्थ 'आल कोया पारी पहांदी मुठवा पोय आन्द' यानि यह कोया पारी पहांदी गुरु मुखिया है' ऐसा दायें से बाये अंकित है। मुद्रा क्रमांक एम 1186 का अर्थ 'कोया पारीपहांदी मुठवापोय आंद आल' यानि कोया पारी पहांदी गुरुमुखिया है ऐसा इस मुद्रा का शीर्षक है। मुहर क्रमांक M-75 का अर्थ 'आटूम कवार ता मुठवा पोय आर' यानि 'सगा बंधन का संरक्षक गुरु मुखिया शक्ति' ऐसा है। इसतरह प्रत्येक मुद्रा एक विशेष संदेश देती है। (एम. सी. कंगाली, सैंधवी लिपि का गोंडी में उद्वाचन; 48 उज्वल सोसायटी, जयताला रोड नागपुर -22)

अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो का सिंधु घाटी पर आक्रमण और विध्वंस !

आर्य विदेशी भूमि से आये थे !

{बहुजन-व्देषी} तिलक ने ऋग्वेद, अवेस्टा तथा अन्य देशों के धर्मग्रंथों का हवाला देकर साबित किया है कि आर्यो की जन्मभूमि उत्तरी ध्रुव के प्रदेश (Arctic regions) थे। भारत आने के पहले वे ईसापूर्व 5000 या 6000 साल पहले मध्यपूर्व में घास के मैदानों में बस गए। ब्राह्मणवादी विवेकानंद भी आर्यो को विदेशी मानता था।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) तिलक व्दारा दी हुई ठोस दलिलों का संक्षिप्त वर्णन पहले ही पेज क्रमांक 48-49 पर किया जा चुका है।

कॅस्पियन शब्द ट्रांसकॉकेशिया में समुद्र के दक्षिण पश्चिम के कॅस्पी लोगों के नाम से बना है। इतिहासपूर्व काल में ग्रीक तथा पर्शियन लोगों व्दारा कॅस्पियन समुद्र को हिरकॅनियन (Hyrcanian) समुद्र के नाम से जाना जाता था। प्राचीन पर्शिया में उसे माझानदारान (Mazandaran) समुद्र भी कहा गया। ईरान में इसे दरया ए खाजार (Darya--i Xazar) भी कहा गया। तुर्की भाषा वाले प्रातों में इसे खाझार समुद्र के नाम से जाना जाता था। पुराने रशियन सुत्र उसे Khvalyn or Khvalis समुद्र कहते थे। प्राचीन अरब सुत्र उसे बहर गीलान यानि गीलान समुद्र कहते थे। भारतीय उसे कश्यप समुद्र के कहते थे।(http://en.wikipedia.org/Caspian Sea - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

भरत को कश्यप का वंशज माना जाता है, कश्यप नाम कॅस्पियन समुद्र के नाम पर पडा है। कॅस्पियन समुद्र के क्षेत्र में आर्य निवास करते थे। भरत के आदीम पुरखे कॅस्पियन समुद्र के क्षेत्र में मध्य एशिया में रहते थे।(http://india.indymedia.org/IMC India - Bharat was Not an Indian King.htm) झडानोविच (Zdanovich) के मुताबिक उय नदी (Uy River) जंगल के मैदान और घास के मैदानों के बीच की नैसर्गिक सीमारेखा थे। यहीं से आर्य भूमि की सीमारेखा शुरु होती थी। पश्चिम दीशा से वोल्गा की ओर से आर्य इस क्षेत्र में आये थे। उनका विश्वास है कि कथित सोमा को कॅनबिज (cannabis) और इफेड्रा (ephedra) को दूध में उबालकर बनाया जाता था। ऋग्वेद तथा अवेस्टा में उन जगहों का वर्णन है जहां से आर्य आये थे। उसमें बीर्च (birch) नामक पेडों तथा जिस वातावरण का वर्णन है वह हमारे भूमि के वर्णन से मिलता है। मृतकों को दफनाने का तरिका भी समान है। उनके कंकाल इंडो-युरोपियन है। वे रथ का उपयोग करते थे ।(http://rbth.ru/Arkaim Prehistory on the steppe _ Russia Beyond The Headlines. htm)

कुर्गान सिधान्त के मुताबिक इंडो युरोपियन लोग मध्य-एशिया के घास के मैदानों के निवासी थे। महाभारत में कुरु राजवंश का उल्लेख है। उत्तरा कुरु (Uttara Kuru) महाभारत के समय का रशियन देश है। महाभारत में रशिया, तुर्की, जार्जीया इ. काले समुद्र के निकट के क्षेत्रों का उल्लेख है। कश्यप ऋषि कॅस्पियन क्षेत्र से संबंधित था। इसलिये आश्चर्य नही है कि अझरबैजान, इरान, कजाखस्तान, रशिया, तुर्कमेनिस्तान इ. कॅस्पियन बेसिन क्षेत्र के राजाओं का वहां जिक्र मिलता है।(http://varnam.nationalinterest. in/Avesta and Rig Veda _ varnam.htm) ऋग्वेद में कुछ नदियों का उल्लेख है जैसे कि कुभा यानि काबुल नदी, सुवस्तु (Suvastu) यानि स्वात (Swat) नदी।(Linguistic Evidence for Cultural Exchange in PrehistoricWestern Central Asia By Michael

Witzel) अट्रेक (also Atrak and Etrek) नदी उत्तर-पूर्वी ईरान से निकलकर तुर्कमेनिस्थान में कॅस्पियन समुद्र में मिलती है। (http://en.wikipedia.org/Atrek River - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) संभव है कि ऋषि अत्री का संबंध अट्रेक नदी हो ?

पाश्तो भाषा में रुद का मतलब नदी है। हरिरुद (Harirud) यानि हरी नदी मध्य अफगानीस्तान के पर्वत से निकलकर तुर्कमेनिस्तान के काराकुम रेगीस्तान में गुम होती है। तुर्कमेनिस्तान में उसे तेजेन (Tejen) या तेडझहेन (Tedzhen) के नाम से जाना जाता है। ऋग्वेद में हरीरुद नदी को सरयु कहा गया है। {शायद ईरान की तरह यहां भी 'ह' को 'स' कहा गया है और हररुद का सररुद और अंत में सरयु हो गया है} अवेस्टा में भी होरायु (Horayu) नदी का उल्लेख है।(http://en.wikipedia.org/Hari River, Afghanistan - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अफगानीस्तान की हेलमंड (Helmand) नदी ऐतिहासिक तौर से सरस्वती है। आर्यो ने विस्थापन के बाद घग्गर नदी को सरस्वती नाम दे दिया। कई नदियों को बाद में सरस्वती माना गया। भारत में सरस्वती नदी को घग्गर नदी स्थापित करने के पहले वोल्गा, अमु दरिया, स्ता आर्या (Sta Arya) तथा कॅस्पियन क्षेत्र में खोजबीन करनी चाहिये।(http://en.wikipedia.org/Talk Sarasvati River - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) गोमल नदी अफगानीस्तान और पाकिस्तान में बहती है। इस नदी के नाम का उल्लेख ऋग्वेद में गोमती के रुप में हुआ है। (http://en.wikipedia.org/Gomal River - Wikipedia, the free encyclopedia. htm) रामायण, महाभारत में उल्लेखित प्रांत अफगानीस्तान में है। डॉ. कोचर का मानना है कि इंडो-आर्यन लोग पहले अफगानीस्तान आये और उसके बाद ईसापूर्व 1700 से 900 में भारत आये।(www.outlookindia.com/Web Pages/Locating Questions Of National Origin _ Romila Thapar.htm) श्री सरकार का मानना है कि ऋग्वेद के आरंभीक हिस्से भारत के बाहर से संबंधित है। ऋग्वेद अथवा किसी भी वेद में सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में कुछ भी उल्लेख नही है।(http://www.integralworld.net/Tantra and Veda The Untold Story, Roar Bjonnes.htm) ऋग्वेद का क्षेत्र सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र की तुलना में बेहद छोटा है। ऋग्वेद में बाघ अथवा चावल का उल्लेख नही है जो सिंधु घाटी की विशेषता है। ऋग्वेद में लोहे का भी जिक्र नही है। लोहे के लिये कृष्ण-अयास शब्द का उल्लेख ऋग्वेद के बाद के साहित्य में है।(http://en.wikipedia.org/Rigveda - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सिंधु घाटी सभ्यता में हाथी का विशेष महत्व था। हाथी हरप्पा इ. की मुद्राओं पर अंकित है। आर्यो के लिये हाथी अनजान जानवर था। इसलिये आर्यो ने हाथी को मृग हस्तीन (mrga hastin) यानि हाथ वाला जानवर कहा। हरप्पा की मुद्राओं में सिंह कतई नही है। हरप्पा की मुद्राओं में सिर्फ बाघ है। ऋग्वेद में सिर्फ सिंह का उल्लेख है, बाघ का उल्लेख नही है। ऋग्वेद में सिंहगर्जना का उल्लेख कई बार हुआा है। आर्य बाघ के प्रति अनजान है क्योंकि बाघ सिंधु घाटी का प्राणी है। आर्यो को उसका पता होता अगर आर्य भारत के होते।(THE ARYAN QUESTION REVISITED Romila Thapar Transcript of lecture delivered on 11th October 1999, at the Academic Staff College, JNU http://members.tripod.com/THE ARYAN QUESTION REVISITED.htm) भारतीय उपमहाव्दीप में ईसापूर्व 1500 के दौरान इंडो-युरोपियन लोगों ने कई लहरों में भारी तादाद में प्रवेश किया। इसकी बदौलत भारत के एस्ट्रो-एशियाटीक (Austro-Asiatic) मूलनिवासी जनजातियों को जो द्रविड भाषाएं बोलती थी दक्षिण की ओर विस्थापित होना पडा।(http://en.wikipedia.org/Indo-Aryan migration - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

वांशीक रुप से आर्य सिंधु घाटी मूलनिवासियों से भिन्न है !

डी.एन.ए. अध्ययनों से स्पष्ट है कि भारतीय उपमहाव्दीप के मूलनिवासी तामिलनाडू के विरुमांडी (Virumandi) समूह के लोग है। वे तमिल भाषा बोलते है। वे इस क्षेत्र के मूल लोग है। इंडो-युरोपियन भाषाओं को बोलने वाले भटकती जंगली आर्य जातियों के भारत आने के पहले से द्रविड लोग समुचे भारतीय महाव्दीप में फैले थे। आर्यो के आक्रमण की वजह से वे दक्षिण में विस्थापित हुए। डी.एन.ए. शोधों से स्पष्ट है कि उच्च जातियों की अनुवांशिकता मध्य-एशिया के समुदायों से मिलती है। वांशीक दक्षिण भारतीय (ASI) द्रविड भाषा बोलने वाले दक्षिण भारत के समूह है जबकि वांशीक उत्तर भारतीय (ANI) उत्तर भारत के इंडो-आर्यन भाषाओं को बोलने वाले लोग है। दक्षिण भारतीय लोगों की अनुवांशिकता कथित उच्च जातियों से अलग है। रेच तथा उनके साथियों (Reich et al.) ने भारत के वांशीक उत्तर भारतीयों (Ancestral North Indians (ANI)) तथा वांशीक दक्षिण भारतीयों (Ancestral South Indians (ASI)) के पांच लाख biallelic autosomal markers का इस्तेमाल करते हुए यह निष्कर्ष हासिल किया कि ये दो समूदाय एकदूसरे से वांशीक तौर पर भिन्न है। यह अध्ययन सन् 2009 में प्रकाशित हुआ था। (http://en.wikipedia.org/Indian people - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) ब्राह्मणों की अनुवांशीकता नाग-द्रविडों से भिन्न है। भारत की उच्च जातियों में J2a पाया जाता है जबकि इसकी मात्रा पीछडी जातियों में कम से कम है। J2a इंडो-युरोपियन लोगों की विशेषता है।(http://www.eupedia.com/forum/Genetics and Anthropology of Indian Brahmins- presenting a theory.htm) अधिकतर अनुवंश संबंधी शोध इस सिध्ाान्त का समर्थन करते है कि आर्य विदेशी है। सन् 2009 में प्रकाशित अध्ययन ने यह स्पष्ट रुप से साबित हुआ है कि उत्तर भारतीय लोगों के जीन (gene pool) में मध्य एशियाई Y-chromosomal lineages है जिनमें R1 तथा R2 दोनों ही का समावेश है। उत्तर भारतीयों का पितृत्व मध्य एशिया के इंडो-युरोपियन है।(http://en.wikipedia.org/Indigenous Aryans - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अनुवांशिक उत्तर भारतीय (Ancestral North Indians, ANI) अनुवांशिक रुप से मध्यपूर्व, मध्य-एशिया तथा युरोपियन लोगों के करीब है। वांशीक दक्षिण भारतीय (Ancestral South Indians, ASI) वांशीक उत्तर भारतियों से तथा पूर्व एशिया के लोगों से भिन्न है। वांशीक उत्तर भारतीयों की उच्च जातियों में इंडो युरोपियन जीन्स की मात्रा बहुत ज्यादा है। (http://sepiamutiny.com/blog//The genetic origin of Indians _ Sepia Mutiny.htm) वांशीक उत्तर भारतीय (ANI) कॉकॅसाईड तथा युरेशियन, युरोपियन्स तथा मध्य-एशिया के लोगों के करीब है। आपसी संकरण की बदौलत युरोपियन समूह तथा भारतीय समूहों में अनुवांशीक फर्क कुछ कम हुआ है। भारतीय मीडिया ने इसी बात पर जोर देकर गुमराह करने की कोशिश की है कि सारे भारतीय समान है और उन्हे आर्य और द्रविड श्रेणियों में विभाजित नही किया जा सकता। यह बात सिर्फ उन्ही लोगों पर लागु है जो द्रविड और इंडो-युरोपियन लोगों के बीच बहुत अधिक पैमाने पर संकरित हुए है। हकीकत यह है कि भारत की दलित-पीछडी जातियों तथा ब्राह्मण-क्षत्रिय जातियों के बीच संकरण (cross-breeding) न के बराबर हुआ है इसलिये भारत की उच्च जातियों तथा नीचली जातियों के बीच स्पष्ट आनुवांशिक फर्क है। भारत की उच्च जातियां इंडो-युरोपियन समूहों से जबकि भारत की दलित और नीचली जातियां द्रविड वांशिकता की है। शोध के इस हिस्से को भारतीय

मीडिया ने पूरी तरह से नजरंदाज कर दिया।(http://suvratk.blogspot.in/Rapid Uplift Genetic Ancestry of Indians. A New Paper Is Creating a Ruckus.htm) साल्ट लेक सीटी की युनिवर्सिटी ऑफ उटाह (Utah) के मायकल बामशाड (Michael Bamshad) के नेतृत्व में शोधकर्ताओं के दल ने किये शोधों के निष्कर्ष भी ऐसे ही है। उन्होने 265 भारतीय विभिन्न जातियों के डी.एन.ए. की तुलना 750 अफ्रिकन, युरोपियन, एशियन तथा दिगर भारतीयों से की। सबसे पहले उन्होने मायटोकॉन्ड्रियल (mitochondrial) डी.एन.ए. का विश्लेषण किया जिसे व्यक्ति अपनी माँ से हासिल करता है। उन्होने पाया कि 20-30 फीसदी भारतीय सेटस् युरोपियन लोगों से मिलते है। भारत की उच्च जातियों के पुरुषों में यह प्रमाण काफी ज्यादा था। स्पष्ट है कि आर्य ब्राह्मण और क्षत्रिय आरंभिक विस्थापित थे। अनुवंश वैज्ञानिक लीन जोर्डे (Lynn Jorde) के मुताबिक आर्यो के पुरुषों के समूह ने भारत पर आक्रमण किया था। इस आक्रमण में औरतें शामिल होती तो मायटोकॉन्ड्रियल डी.एन.ए. के जीन्स में यह बात स्पष्ट हो जाती, लेकिन ऐसा नही पाया गया।(http://www. integralworld.net/Tantra and Veda The Untold Story, Roar Bjonnes.htm) सन् 2001 में प्रकाशित मायकल बॅमशाड की टीम के अध्ययन के मुताबिक भारतीयों तथा युरोपियन लोगों के बीच वांशिक समानता भारत में जातियों के स्तर के मुताबिक है। यानि उच्च जातियां वांशिक रुप से युरोपियन लोगों के करीब है। जबकि नीचली जातियां वांशिक तौर से एशियाई {द्रविड} लोगों के समान है। इंडो-युरोपियन लोगों ने भारत में उत्तर-पश्चिम दीशा से प्रवेश किया और भारत के प्रोटो-द्रविडन मूलनिवासियों को विस्थापित किया। सन् 2009 में 'Nature' पत्रिका में प्रकाशित एक शोध लेख के मुताबिक वांशीक उत्तर भारतीय (ANI) मिडल इस्ट के लोगों, मध्य-एशिया के लोगों, तथा युरोपियन लोगों के करीब है। जबकि वांशीक दक्षिण भारतीय (ASI) वांशीक उत्तर भारतीय (ANI) तथा पूर्व एशिया के लोगों से भिन्न है। वांशीक उत्तर भारतीय (ANI) लोगों में युरोपियन लोगों से वांशिक (genetic) समानता 39–71% इतनी है। इंडो-युरोपियन समूह भाषी उच्च जातियों में यह समानता और ज्यादा है।(http://en.wikipedia.org/History of the Indian caste system - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ब्राह्मण धर्मग्रंथों में मूलनिवासियों का उल्लेख 'अनासा' यानि जिन्हे नाक नही है यानि चपटी नाकों वाला किया गया है। इसलिये हबर्ट रीसले (Herbert Risley) तथा कई ब्रिटीश वैज्ञानिकों (ethnographers) ने भारतीय लोगों की नाक की लंबाई चौडाई का गुणोत्तर (nasal index) निकालकर दावा किया है कि जिनकी नाक उंची है वे आर्य है। (THE ARYAN QUESTION REVISITED Romila Thapar Transcript of lecture delivered on 11th October 1999, at the Academic Staff College, JNU http://members. tripod.com/THE ARYAN QUESTION REVISITED.htm) यह बात ठोस सबूतों के आधार पर निर्विवाद रुप से साबित की जा चुकी है कि नासल इंडेक्स (nasal index) तथा रक्त गट 'B' द्रविड जाति-समूहों की खासियत है। यह वैज्ञानिक ढंग से साबित हो चुका है कि भारत के द्रविड तथा नीचली जातियां एक ही वंश के है।(http://www. lppindia.com/Founders of Indus Valley Civilisation and Their Later History, by Naval Viyogi - Low Price Publications(India).htm) ऋग्वेद भारतीय लोगों को काले लोग कहकर संबोधीत करता है।

आर्यो की भाषा और संस्कृति मूलनिवासी नाग-द्रविडों से अलग है !

वेदिक लोग खुद को आर्य कहते थे। जर्मन में उसे 'Arier' ऐसा लिखा जाता था।

लगभग सभी भाषातज्ञ मानते है कि प्रोटो-इंडो-युरोपियन लोगों की जन्मभूमि भारत के बाहर है। वेदीक संस्कृति का संबंध ईरान तथा अफगानिस्तान से है। मॅक्स म्युलर ने ऋग्वेद का गलत भाषांतर नही किया है। एक भी उदाहरण नही है कि किस जगह उन्होने गलत भाषांतर किया है। द्रविड भाषाएं इंडो-इरानियन भाषाओं से एकदम अलग है।

इराक में प्राप्त ईसापूर्व लगभग 1600 वर्ष पूर्व की कासाईट (Kassite) इबारतें तथा ईसापूर्व लगभग 1400 वर्ष पूर्व की मिट्टानी (Mittani) इबारतों में आर्य देवताओं के नाम है। इससे स्पष्ट है कि ईरान से आर्यो की एक शाखा पश्चिम दीशा में विस्थापित हुई।(Ancient India www.jeywin.com) सायरस (Cyrus) एक महान अचाईमेनियन (Achaemenian) सम्राट था। इबारतों के मुताबिक उसका नाम कुरुस (Kurus) था। कुरु का उल्लेख अैतरेया ब्राह्मणा तथा महाभारत में किया गया है। (http://www.indianembassy-tehran.ir//Embassy of India, Tehran.htm) कॉकेसॉएडस् (Caucasoids) मुख्यतः उत्तरी भारत में पाये जाते है। वे इंडो-युरोपियन भाषाएं बोलते है। जबकि आस्ट्रेलाईडस् (Australoids) मुख्यतः दक्षिण में पाये जाते है तथा वे द्रविड भाषाओं का इस्तेमाल करते है। मंगोलाईड लोग भारत के उत्तर-पूर्वीय क्षेत्रों में पाये जाते है तथा वे तिबेटो-बर्मन भाषाओं का इस्तेमाल करते है। निग्रीटोस (Negritos) अंदमान व्दीप में पाये जाते है और अपनी विशेष भाषा का इस्तेमाल करते है। अस्ट्रोएसिएटीक भाषाओं का इस्तेमाल सिर्फ भारत के आदिवासी करते है।(Indian people - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

प्रोटो-डार्डीक का काल लगभग ईसापूर्व 1700 वर्ष माना गया है। पार्पोला (Parpola) के मुताबिक प्रोटो-डार्डीक भाषा प्रोटो-ऋग्वेदीक भाषा है। शब्दों की संख्या के मुताबिक डार्डीक (Dardic) भाषा को इंडो-आर्यन भाषाओं का पूरातन केन्द्रिय हिस्सा (archaic core) माना जाता है। प्रोटो-डार्डीक भाषा के काल का संबंध भारत में इंडो-आर्यन भाषा के विकास से है। (indo-european-migrations.scienceontheweb.net/A Map of Indo-European Migration. The Expansion of Indo-European Languages.htm) ऋग्वेद में स्थानीय पामीर भाषा के कई शब्द पाये जाते है। वह हिंदुकुश / पामीर क्षेत्र था जहां वेदों का विशेष स्वरउच्चार (phonetic feature of retroflexation) कायम हुआ था।(Witzel 1999 a,b) भाषा की यह विशेषता मिट्टानी इंडो आर्यन (Mitanni-IA) तथा पूरानी इरानी भाषा में नही पायी जाती। यह सिर्फ हिंदुकुश पामिर क्षेत्र के भाषाओं की विशेषता है चाहे वह बुरुशास्की (Burushaski), पूर्व ईरान की, उत्तरी इरानी (Saka), नुरीस्तानी (Nuristani) या इंडो-आर्यन भाषा हो सबमें यह विशेषता है।(Linguistic Evidence for Cultural Exchange in PrehistoricWestern Central Asia By Michael Witzel) हरप्पा का विध्वंस लगभग ईसापूर्व 1600 वर्ष, मोहेन्जोदारो का इसापूर्व 1900 वर्ष, तथा BMAC का विध्वंस ईसापूर्व 1700 वर्ष पहले माना गया है। इससे आर्यो के प्रवेश के काल का पता चलता है। प्रोटो-इंडो-आर्यन भाषा का आखरी काल ईसापूर्व 1900 से 1200 वर्ष के बीच का है। (indo-european-migrations.scienceontheweb.net/A Map of Indo-European Migration. The Expansion of Indo-European Languages.htm) आर्यो का ईरान तथा भारत में विस्थापन ईसापूर्व 2000 वर्ष पहले हुआ। आर्यो के वेद तथा इरानियों के अवेस्टा दोनों ही मानते है कि उन्हे अपनी आर्य-जन्मभूमि आर्याना वैजो (Airyana Vaejo in Avesta) को छोडना पडा। वेदों में इसकी वजह भयानक बाढ है जबकि अवेस्टा में बर्फिले तुफान की बाढ़ विस्थापन की वजह है। इस प्रलयकारी बाढ से नोह (Noah) बच सका है। अरेबिक में वह नुह (Nuh) है जो मनुह (Manuh, Manu) का संक्षिप्त रुप है। वेदिक तथा इरानियन दोनों में ही वह विवस्वात या विवनघाट (Vivasvat or Vivanghat)

का बेटा है।(http://www.indianembassy-tehran.ir//Embassy of India, Tehran.htm) यह विश्वास है कि इंडो-आर्यन पश्चिम में असिरिया तथा पूरब में पंजाब ईसापूर्व 1500 साल पहले पहुंचे। इंडो-आर्यन से प्रभावित हुर्राईट भाषा बोलने वाले मिट्टानी शासक इसापूर्व 1500 से उत्तरी मेसोपोटॅमिया आये, गांधारा कब्र संस्कृति ईसापूर्व 1600 से परिलक्षित हुई। इससे यह सुचित होता है कि दक्षिण तुर्कमेनिस्तान / उत्तर अफगानिस्तान में स्थित बॅक्ट्रिया-मार्जियाना आर्कियालॉजिकल कॉम्प्लेक्स (Bactria-Margiana Archaeological Complex) में आर्यो की उपस्थिति ईसापूर्व 1700 से थी जो इस संस्कृति के नष्ट होने का कालावधी भी है। सिंधु घाटी सभ्यता के क्षय होने का कालावधी तथा आर्यो के भारत आने का कालावधी समान है यह बात भाषिक सबूतों को स्वतंत्र रुप से और दृढ करती है। (http://en.wikipedia.org/Indo-Aryan migration - Wikipedia, the free encyclopedia. htm) आर्य मूलनिवासियों को राक्षस इ. कहते थे। उसका शब्दशः वही अर्थ था। उन्होने अच्छे और बूरे के बीच के सांकेतिक संघर्ष की बात नही की। उनके श्लोक इ. प्रत्यक्ष अर्थ दर्शाते है न की कोई गुढ़ अर्थ। सांकेतिक तथा गुढ़ अर्थ डालने का काम बाद के लिखित वेदों में जानबुझकर किया गया।(History of Tantra: http://spiritonthebrain. com/Spirit on the Brain.htm) अथर्व वेद मध्य रशिया की संस्कृति का वर्णन करता है। बाद में यह इरानीयन (झोरोस्टरीयन, पर्शियन-मीडियन-पार्थियन), तथा संभवतः असिरियन संस्कृती का वर्णन करता है। अथर्व वेद में खास तौर पर बाल्टिक तथा बॅक्टीयन संस्कृति का वर्णन है।(http://varnam.nationalinterest.in/Avesta and Rig Veda _ varnam.htm)

भाषाशास्त्र (Philological and linguistics) के सबूतों से यह स्पष्ट है कि ऋग्वेद भारतीय उपमहाव्दीप के उत्तर-पश्चीमी क्षेत्रों में ईसापूर्व लगभग 1700–1100 BC वर्ष पहले (the early Vedic period) बनना शुरु हुआ था। ऋग्वेद की ईरान के आरंभिक अवेस्टा के बीच भाषा तथा सांस्कृतिक समानता गहरी है जो आरंभीक इंडो-इरानियन (Proto-Indo-Iranian) समय से चली आ रही है। वह अंड्रोनोवो तथा सिंताश्ता - पेट्रोवका संस्कृतियों से ईसापूर्व लगभग 2200 से 1600 वर्ष से संबंधित है। (http://en.wikipedia. org/Rigveda - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

अंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के 'पिपल ऑफ इंडिया' के प्रोजेक्ट में 4,635 जाति समुदायों के भारत भर में 25,000 लोगों पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि भारत में चार भाषा समूह है। यह भाषा समूह 1) आस्ट्रीक (Austric), 2) द्रविड, 3) इंडो-युरोपियन, तथा 4) सायनो-तिबेटन (Sino-Tibetan) है। ये भाषाएं क्रमशः ऑस्ट्रीक, द्रविड, आर्य तथा मंगोलियन लोगों की भाषाएं है। इससे स्पष्ट है कि वेदिक आर्यो ने मध्य एशिया से भारत में वेदिक भाषा लायी है।(http://www.integralworld.net/ Tantra and Veda The Untold Story, Roar Bjonnes.htm) ऋग्वेद में 10 मंडल (books) है। इन मंडलों की भाषा तथा पध्दति में बहुत ज्यादा फर्क है। पूराने मंडल इंडो-इरानियन धर्म के कई पहलुओं में समान है। इससे समान आरंभिक इंडो-युरोपियन परंपराओं का पता चलता है। खासतौर से ऋग्वेद मंडल 8 आश्चर्यजनक रुप से अवेस्टा जैसा है। इसमें अफगानिस्तान के पेड-पौधे, प्राणी इ. का वर्णन है जैसे कि उंट। वेदीक संस्कृत में कई केन्द्रिय धार्मिक शब्दों के मूल इंडो-युरोपियन भाषाओं में है। देव शब्द लॅटिन में deus कहलाता है। असुर को जर्मनी में ansuz कहा गया है। ब्राह्मण को नार्स में ब्रागी कहा गया है।(http://en.wikipedia.org/History of Hinduism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) गॉड (god) शब्द के लिये deiwos शब्द है। हिट्टी भाषा में यह sius है। लॅटीन में deus है। संस्कृत में deva है। अवेस्टा में daeva है। बाद की पर्शियन में

यह divs है। वेल्श में duw, आयरीश में dia, लिथुआनियन में Dievas, तथा लाटवियन में यह Dievs है।(http://en.wikipedia.org/Proto-Indo-European religion - Wikipedia, the free encyclopedia.html) अवेस्टा का गाथा नामक हिस्सा सबसे आरंभिक हिस्सा है। वेंडिडाड नामक हिस्सा बाद में लिखा हिस्सा है। इसका काल इसापूर्व 1400 है इसलिये वह ऋग्वेद के समकालीन है। उनकी भाषा तथा शब्दों में बहुत अधिक समानता है। उनके बीच 'H' तथा 'S' को आपस में बदला जा सकता है। वेदिक संस्कृत में जो 'S' से शुरु होता है वह पूरानी इरानी भाषा में 'H' में तब्दिल हो जाता है। इसतरह अवेस्टा की अफगानीस्तान की हरहवति वास्तव में वेदिक सरस्वती है। अफगानीस्तान की हरयु नदी वातव में सरयु नदी है। हप्ताहिंदु वास्तव में सप्तसिंधु है। अवेस्टा में जिक्र किया गया है कि आर्य पूर्व दीशा में विस्थापित हुए। अवेस्टा में ऐसी 16 जगहों का जिक्र है, हप्तहिंदु विस्थापन का आखरी स्थान है। अवेस्टा में अरिया और दाहा का उल्लेख है। दाहा (Daha) दासा (Dasa) तथा दहयु (Dahyu) दस्यु (Dasyu) है। अवेस्टा में होतार (hotar) जबकि ऋग्वेद में होत्र (hotr) है। z तथा h आपस में बदले जा सकते है इसलिये वेद का हिरण्य ईरान में झरन्य बन जाता है। अवेस्टा का अथर्वन वेद में भी अथर्वन ही है। अवेस्टा का मिथ्रा (Mithra) वेद में मित्रा (Mitra) है। अवेस्टा का यिमा (Yima) वेदों में यम (Yama) है। आरंभिक इरानी तथा इंडो-आर्यन दोनों ही सोमा मादक रस का सेवन करते थे। अवेस्टा में इसे हाओमा (haoma) जबकि वेदों में इसे सोमा (soma) कहा गया है।

सिंधु घाटी की भाषा प्रोटो द्रविडन व एस्ट्रो एसिएटीक भाषाएं जैसे कि मुंडारी इ. भाषाएं थी। इंडो-आर्यन तथा प्रोटो-द्रविडन भाषाएं एकदूसरे से पूरी तरह से अलग है। इंडो आर्यन भाषा inflectional है जबकि द्रविडन भाषा agglutinative है। आर्यो की भाषा में खेती से संबंधित जो शब्द आये है वे द्रविड भाषाओं के है। इंडो-आर्यन भाषा प्रोटो द्रविडन भाषाओं के गुणधर्म व्यक्त करती है, जैसे कि retroflexive व्यंजन त, थ, द, ध, ण इंडो युरोपियन नही है। ये प्रोटो द्रविडन है। ये सिर्फ वेदिक संस्कृत में पाये जाते है। वे किसी भी इंडो युरोपियन भाषा में नही है। यही वजह है कि युरोपियन लोगों को भारतीय शब्दों के उच्चारण में तकलीफ होती है क्योंकि उनकी जीभ retroflexive consonants के उच्चारण की आदी नही है। इति नामक शब्द संस्कृत का नही है वह द्रविडन भाषा से आया है।(THE ARYAN QUESTION REVISITED Romila Thapar Transcript of lecture delivered on 11th October 1999, at the Academic Staff College, JNU http://members.tripod.com/THE ARYAN QUESTION REVISITED.htm)

आर्यो का धार्मिक विश्वास नाग-द्रविडों से पूरी तरह से अलग है !

जतिद्र मोहन चटर्जी के मुताबिक अथर्व वेद के अथर्व तथा अंगीरस ऐसे दो भाग है। इनका असली नाम ''अथर्व-अंगीरस वेद'' है। भारत में अंगीरस वेद हिस्सा अथर्ववेद के नाम से मशहूर है। अथर्व वेद हिस्सा झेंड अवेस्टा है। चटर्जी अपनी बात को असंख्य दलीलों तथा अध्ययन से साबित करते है।(http://varnam.nationalinterest.in/Avesta and Rig Veda _ varnam.htm)बोगझ कोई (Boghaz Koi) में प्राप्त पत्थर की इबारत जो ईसापूर्व 1400 वर्ष पूरानी है, में मिट्टानी तथा हिट्टी लोगों के बीच हुए समझौते का विवरण है जिसमें आर्यो के देवता मित्रा, वरुण, इंद्र, व नासात्या (Ashvins) का आवाहन किया गया है।(Vedas and Upanishads http://www.san.beck.org/index.html) वेदीक तथा बाल्टिक संस्कृति अश्वीन को मानने वाले है।(http://varnam.nationalinterest.in/

Avesta and Rig Veda _ varnam.htm) इंडो-युरोपियन लोगों के धार्मिक विश्वास ग्रीक तथा रोमन मायथॉलॉजी में भी देखे जा सकते है। मिट्टानी लोग वेदिक परंपरा से जुडे रहे। वे झोरोस्टर धर्म पैदा होने के पहले वाले वेदिक ईरान के पडौसी थे। (Vedic Elements in the Ancient Iranian Religion of Zarathushtra Subhash Kak) भाषाविज्ञान, पुरातत्व शास्त्र तथा अनुवंशशास्त्र के सबूत इस बात को मानते है कि ड्रईडस् (Druids) तथा ब्राह्मण एक ही वंश के है। उनके विश्वासों, रितिरिवाजों, आख्यायिकाओं, चिन्हों, कानून, परंपराओं, छुट्टीयों के दिनों, तथा नक्षत्रशास्त्र में समानता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इंडो-युरोपियन लोग ईसापूर्व 5000 साल पहले विभिन्न दीशाओं में विस्थापित हुए थे।(CONNECTIONS BETWEEN ANCIENT DRUIDS AND HINDUS Parallels and Possible Ancestral Connections of the Ancient Druids and Hindus Renu K. Aldrich)

रोमन इतिहासकार टैसिटस (Tacitus) के मुताबिक सुबह की कीरण निकलते ही जर्मन लोग ढीले कपडे पहनकर रोज पवित्र नदी के थंडे पानी में मंत्रोच्चार करते हुए उतरते है। उनके बालों में बांधी गई गांठ भारत के ब्राह्मणों की याद दिलाती है। स्लाव अपनी शादी में सप्तपदी प्रथा का यानि आग के सात फेरे लेने की प्रथा का पालन करते थे। आग में बलि देने की धार्मिक विधि सेल्टीक मुख्य धार्मिक विधि थी। इसमें होमकुंड की आग में वनस्पति, मादक पेय, आटे की रोटी, इ. विधिपूर्वक ड्रईड (Druids) पूजारियों व्दारा डाले जाते थे। वेदों की मुख्य धार्मिक विधि आग में दी जाने वाली बलि है। वे होमकुंड की आग में घी, मसाले, चावल, इ. मंत्रोच्चारण करते हुए डालते रहते है। वेदिक लोगों की तरह सेल्टस् (Celts) भी आठ प्रकार के विवाहों को मान्यता देते थे जिसमें प्रेम विवाह से लेकर अपहरण से किया जाने वाला विवाह भी शामिल है। इनके आध्यात्मिक सांस्कृतिक संबंधों का क्षेत्र आईसलँड, आयरलँड, युरोप का पश्चिमी समुद्र किनारा, दक्षिण रशिया, काकॅसस पर्वत से लेकर अफगानिस्तान तथा बाद में भारत के अंदर तक विस्तारित हुआ है।(http://www.centrostudilaruna.it/Common Ground of European Celts & Indian Vedic Hindus _ Hinduism Today2.html) शिला, लीला, विद्या इ. हिंदू नाम आज भी वेल्स के इलाकों में होते है। वेल्स का ड्रईड (Druids) पूजारी वर्ग भारत के ब्राह्मण पंडितों का ही विस्तार है। ऋग्वेद में लगातार पांसे, जुंआघर, तथा जुंआरियों व्दारा हेराफेरी करने की बातों का जिक्र है। पश्चिमी देशों में कॅसिनो इ. जुआंघरों का चलन, हिंदुओं में दिवाली, होली इ. त्योहारों पर जुंआ खेलने की व्यापक परंपरा इनकी सांस्कृतिक निरंतरता दर्शाती है। (India in Europe by Anwar Shaikh/Anwar Sheikh.htm)

तिब्बत का बॉन धर्म शामानों (shamans) का प्राचीन एनिमिस्ट धर्म है जो मध्य एशिया तथा सायबेरिया के शामानिस्टीक (shamanistic) संस्कृति जैसा है। तमाम तिब्बतियों में चाहे वे बौध्द या दिगर धर्मपंथों के हो, चाहे वे कहीं भी विस्थापित हुए हो उनकी समान संस्कृति है। इसमें तंत्रमंत्र, काला-जादू, जानवर इ. की बलि देना शामिल है। बॉन धर्म को मानने वालों का दावा है कि उनके धर्म की ये परंपराएं मध्य-एशिया तथा उत्तर पश्चिम के इरानी भाषा बोलने वाले लोगों व्दारा सत्रहवी शताब्दी में लायी गई है।(http://www.angelfire.lycos.com//bondzog_html.htm) घोडे की बलि देने का विश्वास किसी न किसी रुप में हिट्टियों में, आयरीश लोगों में, सुमेरियन तथा बॅबिलॉन के लोगों में वेदिक आर्यो में, पर्शियनों में सायबेरिया के मंगोलों में, ग्रीक लोगों तथा दिगर जगहों में पाया जाता है।(http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm) हिंदुओं के अश्वमेध यज्ञ का एक रुप आयरीश लोगों की राज्याभिषेक प्रथा में है। इसमें राजसिंहासन पर आरुढ़ होने के

पहले राजा को विधि पूर्वक एक घोडी के साथ संभोग करना होता है। इसके बाद घोडी की बलि दी जाती है। उसे पकाकर समारोह पूर्ण तरिके से खाया जाता है। इस प्रथा का उदगम वेदों में है। वेदों के सरन्यु (Saranyu) व विवस्वात (Vivasvat) घोडों के रुप में संभोग कर अश्विनों को जन्म देते है। यह धार्मिक विधि उसी का प्रतिक है। तैतिरिया संहिता (V:5:9) तथा अपस्तंभ श्राउता सुत्रा (Apastamba Shrauta Sutra, 21:17:18, etc.) में विशेष वेदिक विधियों में एक ब्राह्मण पूजारी मंदिर में छुपाई गई पम्चाली (pumchali, hierodule) के साथ मंदिर के गर्भगृह (altar) में संभोग करता है। यह प्रथा सुमेर तथा बॅबिलॉन की प्रथा जैसी है जिसमें नये साल के उत्सव (Akitu) में राजा पवित्र मानी जाने वाली वेश्या के साथ सीढीयों जैसे पीरॅमिड (stepped pyramid) के उंचे चबुतरे (ziggurat) पर संभोग करता है।(http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm)

अलबिनो-निन्डरथाल आर्यो तथा नाग-द्रविडों की संस्कृति परस्पर विरोधी है !

ऋग्वेद में जानवरों के साथ भटकने वाले घुमन्तु समुदाय का वर्णन है। उसमें शहर, नगर, नगर रचना की योजनाएं, सार्वजनिक नहाने का कुंड, समुद्र का सफर तथा व्यापार, कलात्मक वस्तुओं के निर्माण की कला, उनका व्यवसाय इ. सिंधु घाटी सभ्यता के किसी भी पहलु की जानकारी नही है। ऋग्वेद को सिंधु घाटी संस्कृति के शहरोंमें मौजूद विभिन्न सुविधाओं का कुछ भी पता नही है। ऋग्वेद को सिंघु घाटी सभ्यता के शहरों की पानी तथा मल-मूत्र निकासी व्यवस्था का व जलाशयों का पता नही है। ऋग्वेद के लोगों को कपास का भी पता नही था। हरप्पा के लोगों का दूर देशों से व्यापार था। अनाज को बडे बडे गोदामों में सुरक्षित रखा जाता था। इनका ऋग्वेद में कोई उल्लेख नही है। ऋग्वेद में इंद्र, अग्नि, इ. की प्रसंशा की गई प्रार्थनाओं में औरों पर हमला कर उनके जानवर छीनकर इन्हे देने, की याचनाएं है। ऋग्वेद में संपत्ति की गणना जानवरों की तादाद से की जाती थी। 'दानास्तुति' (danastuti) प्रार्थनाओं में साठ हजार घोडों इ. का जो उल्लेख है वह काल्पनिक अतिशयोक्ति है। आर्यो ने सौ पालों वाली नौकाओं की अतिरंजित कल्पनाएं की है जबकि ऐसी नौकाओं के इस्तेमाल की उन्हे गुंजाईश ही नही है। (THE ARYAN QUESTION REVISITED Romila Thapar Transcript of lecture delivered on 11th October 1999, at the Academic Staff College, JNU http://members.tripod.com/THE ARYAN QUESTION REVISITED.htm) ऋग्वेद में खेती का उल्लेख नही है। सुर्य की उपयोगिता तथा उसके प्रत्यक्ष रुप से सामने मौजूद होने की वजह से आर्य उसे ईश्वर मानकर उसकी पूजा करते थे। इसमें आध्यात्मिकता जैसी कोई बात नही है।(History of Tantra: http://spiritonthebrain.com/Spirit on the Brain.htm)

भारत में आर्यो का विस्थापन और आक्रमण भी हुआ !

भारत में आर्य मध्य एशिया से आये यह ऋग्वेद में वर्णित वहां के प्राणी, वनस्पति तथा भौगोलिक वातावरण के उल्लेख से स्पष्ट है। जिन देवताओं का ऋग्वेद में उल्लेख है जैसे कि मित्रा और वरुण इ. वे देवता इंडो-इरानीयन मूल के है।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira) आरंभिक ऋग्वेद तथा बाद में लिखे गए ऋग्वेद में जो भौगोलिक वर्णन है वह उत्तर-पश्चिम दीशा से आर्यो के विस्थापन को दर्शाता है। लगभग तीन से चार हजार साल पहले आर्यो की अलग अलग किस्म की इंडो-इरानियन भाषा बोलने वाली तथा खुद को आर्य कहने वाली टोलियां अफगानिस्तान में दाखिल हुई। यहां

कुछ काल रहने के बाद वे इंडो-आर्यन तथा ईरानियन शाखाओं में बँट गई। इंडो-आर्यन शाखा भारतीय उपमहाव्दीप में जबकि दूसरी ईरान के मैदानी प्रदेशों में विस्थापित हुई। जब आर्य भारतीय उपमहाव्दीप में आये तो उनका यहां के नाग-द्रविड मूलनिवासी लोगों से संपर्क तथा संघर्ष हुआ। इस संपर्क व संघर्ष के दौरान आर्यो ने नाग-द्रविडों से कई बातें सीखी जिससे उनकी संस्कृति में कुछ बदलाव आया। यही सब आर्यो की इरानियन शाखा के साथ ईरान तथा अन्य क्षेत्रों में हुआ। यही मेसोपोटामिया में अरबों के साथ हुआ, फ्रांस तथा स्पेन में रोमन्स के साथ हुआ, मेक्सिको तथा तमाम लॅटिन अमेरिका में स्पानिआर्डस् (Spaniards) के साथ हुआ, पुर्तगीज व कॅरेबियन का युरोपियन लोगों के साथ हुआ। इतिहास का घटनाक्रम ऐसा ही रहा है। अनुवांशिक अध्ययनों से साबित हुआ है कि कॉकेशिया की टोलियों का लगभग 3000 साल पहले भारत में प्रवेश हुआ। कुछ संघर्षो के बाद वे स्थानीय लोगों के साथ बस गए। उत्तर भारत की उच्च जातियों में उनका डी.एन.ए. अधिक मात्रा में है।(Afghan Historian 21:52, 9 January 2006 (UTC))

जब BMAC तथा अन्य वसाहतें इसापूर्व 1650/1500 के दौरान त्याग दी गई तब जानवरों के साथ घुमने वाली टोलियों ने संपूर्ण ईरान की ओर रुख किया और वेदपूर्व इंडो-आर्यन भाषा बोलने वाले इस क्षेत्र में फैलने लगे। मिट्टानी-पूराने इंडो-आर्यन उत्तरी इराक तथा सीरीया में इसापूर्व 1400 में आये। लोहयुग के पहले ऋग्वेदीक आर्य अराचोसिया (सरस्वति अवेस्टा में हरहवति), स्वात (सुवस्तु), तथा पंजाब (सप्त सिंधु) में इसापूर्व लगभग 1200/1000 में आये। हालांकि यह काल स्थानीय क्षेत्र में लोहे का इस्तेमाल कब हुआ इसपर निर्भर है। ऋग्वेद में लोहे का कोई उल्लेख नही है। बाद के वेदिक साहित्य में है।(Linguistic Evidence for Cultural Exchange in PrehistoricWestern Central Asia By Michael Witzel) विट्झेल (Witzel) के मुताबिक बाद के बोधायना श्राउता सुत्र (Baudhayana Shrauta Sutra 18.44:397.9 sqq) में आर्यो के विस्थापन के प्रत्यक्ष उल्लेख को नजरंदाज किया गया है। यह उल्लेख है कि 'अयु पूरब की ओर गए। उसके लोग कुरु पांचाला और कासी-विदेहा है। यह अयावा (migration) है। उसके बाकी लोग घर में ही रुक गए। उसके लोग गांधारी (Gandhari), परसु (Parsu) व अरात्ता (Aratta) है। यह अमावसवा (group) है।'(Witzel 1989a: 235) बोधायन श्राउतासुत्र का उपरोक्त कथन आर्यो का भारत में प्रत्यक्ष विस्थापन दर्शाता है।(http://www.slideshare.net/Vedic evidence for Aryan Migration (AMT) puratattva.htm) आर्य सूर्य, उषा, वरुण इ. की पूजा करते थे। झोरोस्टर धर्म के लोग सुर्य तथा अग्नि की पूजा करते थे। दोनों ही खुद को आर्य कहलाते है। झोरोस्टर धर्म की किताब झेंड अवेस्टा में आर्यो की जन्मभूमि को सायबेरिया के ध्रुवीय प्रदेश माना गया है। वहां का वातावरण असहनीय हो जाने की वजह से उन्हे वहां से विस्थापित होना पडा था। आर्यो का एक लडाकु समूह हिट्टी है। भारत के आर्य हिट्टी लोगों से उत्पन्न हुए है। जोशुआ के नेतृत्व में जब कॅनन पर हमला किया गया तब हिट्टीयों को मजबूरन विस्थापित होना पडा। यह समय ईसापूर्व लगभग 1300 वर्ष का है। उसी वक्त आर्यो ने भारत में प्रवेश किया था।(http://www.abovetopsecret.com/ The Emergence of Hinduism from Christianity , page 2.htm) पी.बी.एस. टेलिविजन कार्यक्रम जर्नी ऑफ मॅन में डॉ. स्पेंसर वेल्स (Dr. Spencer Wells) ने सबूत पेश किये है कि आर्य पूर्वी रुस से भारत में आये। यही दावा पी.आर. सरकार, ललन प्रसाद सिंह तथा अन्य कई भारतीय लेखक कर चुके है। डॉ. वेल्स के मुताबिक आर्य दक्षिण रुस के घास के मैदानों तथा उक्रेन में 5-10 हजार वर्ष पूर्व आये। वहां से वे मध्य एशिया से दक्षिण तथा पूरब की ओर विस्थापित हुए और भारी तादाद में भारत पहुंचे। (http://

www.integralworld.net/Tantra and Veda The Untold Story, Roar Bjonnes.htm)

सिंधु-घाटी में युध्द और विध्वंस के सबूत है !

ऋग्वेद में गोंड आद्य-पुरुषों को कुयव कहा गया है। उसी प्रकार वरशिखा नामक असूर राक्षस गोंडगोवारी (कोईकोपा) जमात का है। वह गोंडों के परचाका, वरचाका गोत्रों का आद्य-पुरुष था। उसकी राजधानी ''हरियुपिया'' नगरी यानी उत्खनन में प्राप्त हरप्पा शहर है ऐसा मत ऋग्वेद के भाष्यकार तथा प्रसिध्द इतिहासतज्ञ ॲड. पी. आर. देशमुख ने व्यक्त किया है। ऋग्वेद में वर्णन किये अनुसार उनके अति-प्राचीन पत्थरों के तटों से युक्त नगर-किलों की राजधानी-शहरों को आर्यो ने जलाकर नष्ट किया। ऋग्वेद में उल्लेखित आर्यो के शत्रु धुनि, वल, करंज, पिप्रु, नमुचि, चमुरी, पर्णय, शुष्ण, इ॰ क्रमशः धनाम, वलकाम, कुंजराम, प्रश्राम (पुराम), नुर्माची, पुरकु (पुर्काम), मसरे (मचरे) अथवा मसराम, पर्णायकाल अथवा पारण्याल, सोनाम इत्यादी लोग गोंडों के आद्य-पुरुष माने जाते है। उनके शहर जलाकर नष्ट करने के उध्दरण ऋग्वेद की रिचाओं में जगह-जगह मिलते है। (व्यंकटेश आत्राम, पेज 14,15,16) ऋग्वेद में स्पष्ट उल्लेख है कि वे नाग-द्रविड पानियों (Tradesmen) से सख्त नफरत करते थे। आर्यो की इंद्र को की गई प्रार्थनाएं पानियों के शहरों का विध्वंस करने के लिये की गई है। (http://hubpages.com/What was original language of Rig Veda.htm) .... जल-वर्शक और नगर विदारक इंद्र, तुम्हारी स्तुति करते है ..... हम दिवोदास के गोत्रज है; तुम्हारी स्तुति करते है .... (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी p.130&10) अभिष्ट-वर्षी अश्विनिकुमारों, सोमरस से बलवान होकर तुम हमारी तृप्ती करो और पणियों का समूल नाश करो। ... ... (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 184-2) पी. आर. देशमुख के अनुसार मोहेंजोदारो के उत्खनन में उपरी सतह पर कत्ल किये गये लोगों के अवशेष प्राप्त हुये है। ऋग्वेद के दस्युहत्ते तथा पुरभीद्यै : संग्राम में वर्णित कत्लेआम तथा विध्वंस इस उत्खनन से पूरी तरह से स्पष्ट होता है। (व्यंकटेश आत्राम, पेज 143) पुरातत्व विशेषज्ञ मार्टिमर व्हिलर के मुताबिक मोहेंजोदारों की उपरी सतह पर बिना दफनाये गए कई मृतदेह मिले है। वे युध्द के शिकार हुए थे। सिंधु घाटी की सभ्यता के इस विध्वंस के लिये इंद्र जिम्मेदार था।(http://en.wikipedia.org/Indo-Aryan migration - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सिंधु घाटी के कई शहरों की उपरी सतहों में मोटी राख की पर्ते मिली है। नाल (Nal) में आखरी प्रक्रिया के झोबवेअर (Zhob-ware) को इतना ज्यादा जला दिया गया था कि जल ढेर को सोहर डॅम्ब (Sohr Damb) यानि लाल ढेर कहा जाता है क्योंकि आग से वह जगह लाल हो गई है। डाबार कोट (Dabar Kot) में उपरी छह फीट का हिस्सा यह दर्शाता है कि वहां राख की चार पर्ते है। यानि उसका कई बार आग से विध्वंस किया गया। राना घुंडाई नामक ढेर में बुनियाद में कई जगह राख के ढेर है। मोहेन्जोदारो, हरप्पा व चान्हु दारो में कंकाल तथा कंकालों के तुकडे यह दर्शाते है कि वहां जर्बदस्त हिंसा और जनसंहार हुआ है। सडक पर प्राप्त लोगों के कंकालों के ढेर से यह स्पष्ट है कि वे जबर्दस्त हिंसा का शिकार हुए थे।(Piggott 214, 215, 145) आर्यो के हथियार तांबे की विशेष कुल्हाडियां (axe-adzes) हरप्पा क्षेत्रों (हरप्पा, शाही-टुंप व चान्हु दारो) की नही थी। वह आर्यो के पर्शिया के क्षेत्रों (Hissar III, Shah Tepe, Turang Tepe) तथा अक्काडियन क्षेत्रों (Assur, Sialk B cemetary) में पाई जाती थी।(Piggott p.228) ऐसी तलवारें जो देढ़ फीट लंबी है और बीच से सीधी है हरप्पा की नही है। ये जो तलवारें मोहेंजोदारों में पाई गई है उनकी मुट्ठी की बनावट

इ. ठिक फिलिस्तीन में बनने वाली तलवारों जैसी है। ये हिस्को (Hyksos) लोगों के पास इसापूर्व 1800 से 1500 के बीच पाई जाती थी। (Piggott p. 229) सिंधु घाटी में जो हारपुन (harpoons) पाये गए वैसे हारपुन युरोप तथा एशिया के दिगर हिस्सों में पाये जाते थे। (http://vedic-truth.blogspot.in/Vedic Truth Vedic Aryans Destroyed Indus Valley Civilization I.htm) सर मोर्टीमर व्हिलर के मुताबिक मोहेंजोदारो के विभिन्न हिस्सों से 37 कंकाल मिले है। किलों में युध्द होने के वेदों में उल्लेख है। कहा जाता है कि भारी तादाद में आर्यो का सिंधु घाटी में आना, जंगल का कम होना, बाढ आना, नदी का पात्र बदल जाना इ. कारणों से सिंधु घाटी सभ्यता का खात्मा हो गया। (http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) हरप्पा के आर-37 कब्रगाह (cemetery R-37) से प्राप्त कंकालों से स्पष्ट है कि हरप्पा के लोग लंबे सीर वाले द्रविड तथा गोल चेहरे वाले अल्पाईन्स थे। हरप्पा और हरप्पा के उत्तर में स्थित नगर आर्यो के हमलों के शिकार बने। दक्षिण हरप्पा के नगरों को बाढ ने ध्वस्त कर दिया था। (http://www.lppindia.com/Founders of Indus Valley Civilisation and Their Later History, by Naval Viyogi - Low Price Publications(India).htm) सिंधु घाटी के शहरों में रेत, मिट्टी इ. जमा होने से बाढ के लक्षण जरुर दिखाई दिये है। अब इस सच्चाई को मान लिया गया है कि आर्यो व्दारा यह बाढ सिंधु घाटी के बांधों को तथा सिंचाई व्यवस्था को तोडकर बाढ़ पैदा की गई थी जो इस जनसंहार का दूसरा पहलु है। संस्कृत में व्रत्रा (vrtra) अवरोध, रुकावट को कहा जाता है।(ISISH 70-71) यह बांध का समानार्थी शब्द है। आर्यो ने सिंधु घाटी के बांधों को तोड दिया जिससे बाढ आई और रेत तथा मिट्टी शहर में जमा हुई। ऋग्वेद के मुताबिक जब उसने (इंद्र ने) बडे पर्वत को खोला, पानी की तेज धारा को छोडा और दानवों का संहार किया। उसने रोके गए झरने खोल दिये।(RgV V.32.1-2) उसने दानवों का संहार किया, बडे पर्वत को चूर चूर किया, कुंए को तोडकर खोल दिया और रोके पानी को आजाद किया। (RgV I.57.6; V.33.1) उसने धाराओं को ऐसे आजाद किया जैसे कैद की हुई गाएं आजाद होती है।(RgV I.61.10) उसने गौएं और सोमा जीत लिया और 7 नदियों को बहने लगाया।(RgV I.32.12; II.12.12) उसने कैद किये हुए पानी को आजाद किया। (RgV I.57.6; I.103.2) उसने अपने अस्त्र से पानी के लिये रास्ता खोदा।(RgV II.15.3), और पानी को समुद्र में जाने दिया।(RgV II.19.3) बांध की वजह से रोके गए पानी को उसने खोल कर बहने दिया।(RgV III.26.6; IV.17.1) ऋग्वेद के verse स्पष्ट रुप से इन्द्र को बांधों को नष्ट करने वाला कहते है :- रिनाग रोधामसी कृत्रिमानी (rinag rodhamsi krtrimani) यानि उसने कृत्रिम अवरोध हटा दिये। (RgV 2.15.8) रोधास (rodhas) का अर्थ बांध होता है। उपरोक्त सबूत ऋग्वेद से लिया गया है न कि किसी अन्य स्त्रोत से। इसके आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता के बांध तथा सिंचाई तंत्र को ध्वस्त करने के लिये आर्य जिम्मेदार थे।(http://vedic-truth.blogspot.in/Vedic Truth Vedic Aryans Destroyed Indus Valley Civilization I.htm) वेदों में असूरों, दासों तथा दस्युओं के खिलाफ किये गए संघर्ष का और क्या स्पष्टिकरण है ? इंद्र ने हरयुपीय (haryupiy) शहर को ध्वस्त किया। असूर इरावति की घाटी में स्थायी थे। देव मेरु पर्वत के उपर रहते थे। यह सारी बातें जो वेदों में बताई गई है उन्हे किस तरह से नकारा जा सकता है ? अंग्रेजों ने आर्यो के आक्रमण के सिधान्त को साबित करने के लिये वेद थोडे ही लिखे है।

वांशीक उत्तर भारतीयों में ज्यादा मात्रा के युरेशियन जिन्स भारत में इंडो-युरोपियन

भाषा बोलने वालों के आगमन के काल से मेल खाती है। यह काल हरप्पा इ. शहरों के नष्ट होने का काल है जो ईसापूर्व 1800 से 1600 के बीच का है। इस बात को बडे पैमाने पर आर्यो के आक्रमण के सबूत के तौर पर लिया जाता है जिससे सिधु घाटी पर आर्य स्थापित हुए।(http://suvratk.blogspot.in/Rapid Uplift Genetic Ancestry of Indians. A New Paper Is Creating a Ruckus.htm)

पाखंडी आर्य-ब्राह्मणों का भारत के मूलनिवासी होने का झूठा प्रलाप !

{अंग्रेजों से अपनी रिहाई के लिये माफी मांगने वाले 'संडासवीर' जैसे नाम से अलंकृत} ब्राह्मणवादियों का दावा है कि मुस्लिम तथा ईसाई भारत में किसी भी लाभ के हिस्सेदार नही हो सकते क्योंकि उनके धर्म के संस्थापक भारत में नही जन्में है। भारत न ही उनकी पितृभूमि है और न ही पुण्यभूमि इसलिये वे किसी भी सुविधा के हकदार नही है। ऐसे आर्य-ब्राह्मण संडासवीरों के उपरोक्त सिधान्त की धज्जियाँ उड जाती है जब यह साबित हो जाता है कि आर्य-ब्राह्मण भारत के मूलनिवासी नही बल्कि विदेशी आक्रमण ाकारी है। इसलिये तमाम आर्य-ब्राह्मण तार्किक दिवालियेपन की हद तक आक्रमकता से खुद को भारत के मूलनिवासी बताते है।(http://inpec.in//The Aryan Debate in the Indian Context _ InPEC - International Politics, Energy & Culture.htm)

सिंधु घाटी सभ्यता के खोजे जाने से पहले (सन् 1920) तक विदेशी आक्रमणकारी आर्य-ब्राह्मण खुद को श्रेष्ठ, सुसंस्कृत तथा भारत के द्रविड मूलनिवासियों को आदिम बर्बर मानते रहे है। जैसे ही सिंधु घाटी सभ्यता का सच सामने आया तो साबित हुआ कि वास्तव में भारत के नाग-द्रविड मूलनिवासी समृध्द शहरी सभ्यता-संस्कृति से युक्त थे। जबकि आक्रमणकारी विदेशी आर्य-ब्राह्मण जानवरों को चराने घुमने वाली जंगली बर्बर टोलियां थी। यह सच आर्य-ब्राह्मणों को मुस्लिमों तथा इसाईयों से भी बदतर हालत में खडा करता है। ब्राह्मणवादियों को इस संभावित खतरे से बचाने के लिये इल्युमिनॅटी के मोहरे के रुप में काम करने वाले थिऑसाफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल आलकॉट तथा हेलेना पेट्रोवना ब्लावटस्की ने यह राग अलापना शुरु किया कि आर्य भारत के मूलनिवासी है। इसे दोहराने का काम एनी बेसंट, आर.एस.एस. के संस्थापकों सहित तमाम ब्राह्मणवादियों ने किया। आर्यो को झूठमूठ भारत के मूलनिवासी प्रचारित करना जरुरी था। वर्ना आर्य-ब्राह्मण अपनी ही दलीलों की बदौलत नाग-द्रविड मूलनिवासियों के निशाने पर आ सकते है।

ब्राह्मणवाद से ग्रसित आर्यो की दलील है कि ना ही आर्यो का भारत में विस्थापन हुआ और ना ही आर्यो का भारत पर कोई आक्रमण हुआ था। संस्कृत मानवों की सबसे पहली भाषा है जिसका उदगम भारत में हुआ। भारत से आर्यो की संस्कृति पश्चिम एशिया तथा युरोप गई। वेदिक संस्कृति को हरप्पा के पहले की संस्कृति दिखाने व आर्यो को भारत का मूलनिवासी जताने के लिये ऋग्वेद के कालखंड को ईसापूर्व 4500 के पहले तक ले जाने की कोशिश की जा रही है। इस झूठ को सच साबित करने के लिये पूरातत्वीय सबूत गढे जा रहे है। आर्य-ब्राह्मण सिंधु घाटी संस्कृति को इंदस-सरस्वति संस्कृति के रुप में प्रचारित कर रहे है। यह दलील दी जा रही है कि भारत पर आर्यो के आक्रमण का सिधान्त युरोपियन शासकों, इसाईयों तथा मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अपने मन से गढा है। सन् 2002 में बिजेपी सरकार की अगुवाई में छापी गई स्कूल किताबों ने भारत पर आर्यो के आक्रमण को मनगढंत करार दिया है। NCERT प्रायोजित समाज विज्ञान की कक्षा नौवी की किताब में लिखा है कि मॅक्स मुलर ने भारत पर आर्यो के आक्रमण

को प्रचारित करने का काम किया। भारत पर आर्यो के आक्रमण के सिधान्त को अंग्रेजों ने अपनी प्रसिध्द फूट डालो और राज करो की नीति के एक बौध्दिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

आर्य-ब्राह्मणवादियों की झूठी दलितों का पर्दाफाश !

1) आर्य-ब्राह्मणवादियों की दलील है कि संस्कृत साहीत्य के मुताबिक सुदयुम्मा (Sudyumma), तुर्वासा (Turvasa), द्रुहया (Drhuya) इ. इंडो-आर्यन राजाओं ने सरस्वती के किनारे अपने अपने तीन स्वतंत्र राज्य कायम किये थे। संकृत साहित्य में कई शहरों के नाम दिये गए है जो अबतक खोजे नही गए है। 2) ऋग्वेद भारत के भौगालिक गुणधर्मो का विस्तृत रुप से वर्णन करता है। भारत पर आर्यो व्दारा आक्रमण करने का सिधान्त इसका स्पष्टीकरण कैसे करेगा ? 3) इसे कैसे स्पष्ट किया जाएगा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य इ. शब्दों का प्रचलन इंडो-आर्यन राजा ययाति के समय से चल रहा था जब ईसापूर्व 1900 से पहले सरस्वती नदी बहती थी, लुप्त नही हुई थी। 4) आर्य-ब्राह्मणों की दलील है कि भारत के लोग अलाहाबाद जिले में प्रयाग के संगम को त्रिवेणी संगम कहते है जो कि गंगा, यमूना और सरस्वती के मिलने से बना है। सरस्वती नदी को भूमिगत नदी है जो वहां इन दो नदियों से मिलती है। यह सोच वास्तविकता पर आधारित है।

आर्य-ब्राह्मणवादियों की उपरोक्त दलीलें पूरी तरह से बेबुनियाद है क्योंकि जिस सरस्वती नदी के किनारे यह राज्य होने की बात कही गई है वह नदी भारत की नदी न होकर अफगानिस्तान की हरहवति नदी है। ब्राह्मणों ने अपने वेद, पुराण, रामायण महाभारत इ. सभी धर्मग्रंथों में सतत रुप से बदलती हुई हालातों के मुताबिक बदलाव करने का काम किया है। गुप्त साम्राज्य के दौरान उनमें भारी बदलाव किये गए। उन्होने अपने समर्थन में नये धर्मग्रंथ तैयार किये। इसलिये यह दावा कि भारत की भौगोलिक स्थिती का विस्तृत वर्णन ऋग्वेद में है यह दलील कोई माईने नही रखती।

बहुजनव्देषी तिलक खुद इस बात को स्पष्ट कर चुका है कि विस्थापित समुदाय जिस भी नई जगह पर जाकर बस जाते है वहां की जगहों, नदी-पर्वतों इ. को वे अपनी मातृभूमि की जगहों, नदी-पर्वतों का नाम देते है। अंग्रेजों ने अपनी मात्रभूमि की जगहों इ. के नाम अपने उपनिवेशीक प्रदेशों को दिये है। बर्मा (मॅनमार) में अयोध्या, मिथिला, इ. कई नाम है जो वहां बसे भारतीयों ने वहां की जगहों को दिये है। वारेना, हेतुमंत, रंघा तथा हरहवती झेंड अवेस्टा की वरुणा, सेतुमत, रसा और सरस्वती के समकक्ष है। स्वाभाविक है कि आर्यो ने अपने mythological नामों को याद रखा और ये नाम अपनी नई जगहों को दिये। अफगानिस्तान की हरहवति यानि सरस्वती का नाम भारत की नदी को दिया गया। अफगानिस्तान की हरयु यानि सरयु नदी का नाम भारत में उ.प्र. की नदी को दिया गया। अफगानिस्तान की गोमल यानि गोमती नदी का नाम उ.प्र. की नदी को दिया गया। इसलिये जिस सरस्वती नदी की बात की जा रही है वह नदी भारत की नदी है ही नही। {बहुजन-व्देषी} तिलक के मुताबिक आर्य जहां पहले बसे थे वहां की नदी पर्वतों के नाम भारत की नदी-पर्वतों तथा जगहों को दिये है। यही बात हप्ता हिन्दू (सप्त सिंध ु) के बारे में है। ब्राह्मण धर्म से ग्रसित लोग प्रयाग में त्रिवेणी संगम होने की झूठी बात पर इसलिये विश्वास करते है क्योंकि वे ब्राह्मण धर्म को मानने वाले है। ब्राह्मण धर्म की झूठी बातों की तरह इसे भी वे सच मानते है क्योंकि ब्राह्मणों ने उन्हे यह बात बताई है।

5) आर्य रथों के साथ दुर्गम प्रदेश लांघकर भारत कैसे आ सकते थे ? बर्बर

जंगलियों के पास रथ कहां से आये ? इसलिये आर्यो ने भारत पर आक्रमण नही किया।

इस दलील में भी कोई दम नही है क्योंकि आर्य रथ बनाना जानते थे और दुर्गम इलाकों को पार करने के लिये उन्होने घोडों का ही इस्तेमाल किया था। भारत में प्रवेश करने के बाद उन्होने इन शहरों से दूर अपने पडाव डाले। आर्यो का यहां की आबादी से किस तरह के संबंध कायम हुए इसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। भारत में दोबारा रथ तैयार करना जरा भी मुश्किल नही था क्योंकि रथ बनाने के लिये जरुरी तमाम कच्चा माल यहां मौजूद था। पूरी तैयारी और योजनाओं से सिंधु घाटी के शहरों में खास जगहों पर आग लगाई गई तो बाकि जगहों पर बांध तोडकर बाढ से तबाही लाई गई।

6) आर्य-ब्राह्मणों की दलिल है कि खेतीहर लोगों की आबादी हमेशा ज्यादा होती है जबकि घुमन्तु टोलियों की आबादी कम होती है। भारत के मूलनिवासियों की आबादी करोडों में है जबकि आर्यो की तादाद बेहद कम है तब इतनी बडी आबादी पर इतनी कम तादाद के आर्य कैसे आक्रमण कर सकते है ? आर्य अगर बर्बर जंगली और तकनीकी रुप से अक्षम थे तो यह बात आर्यो के खिलाफ जाती है। नाग-द्रविड उन्नत थे तो यह बात उनके हक में जानी चाहिये। इसलिये कोई आक्रमण ही नही हुआ।

आर्य-ब्राह्मणवादियों की उपरोक्त दलिल बेतुकी है क्योंकि किसी भी देश की सारी आबादी सीमा पर नही रहती। विस्थापित आर्यो की टोलियों में मुख्यतः पुरुष थे और वे लडाकु टोलियां थी। नागरी आबादी शांतिप्रिय परिवार होते है इसलिये गैर-सैनिक आबादी पर हथियारबंद छोटी सी टुकडी भी बडा विध्वंस मचा सकती है यह एक स्थापित सत्य है। यह सच्चाई भी बताई जा चुकी है है कि आर्यो ने फौरन हमला नही किया था बल्कि अपनी सुंदर महिलाओं के जरिये वे कई नाग-द्रविड राजाओं के बीच शिरकत कर अपनी हालत मजबूत कर चुके थे, और कईयों का समर्थन भी हासिल कर चुके थे। आर्यो ने ही सबसे पहले फूट डालो और राज करो, साम, दाम, दंड, भेद इ. नीतियों का विकास किया था। तमाम तैयारियों के बाद ही उन्होने आक्रमण किये थे।

7) मॅक्स म्युलर इसाई मिशनरियों के इशारों पर काम करने वाला अंग्रेजी साम्राज्य का एजन्ट था। उसने ब्राह्मण-धर्मग्रंथों का गलत भाषांतर किया ताकि ब्राह्मण-धर्म को कमतर जबकि ईसाई धर्म को बेहतर साबित कर ईसाईयत का प्रचार-प्रसार किया जा सके। वह अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति का बौध्दिक हथियार था।

उपरोक्त आरोप पूरी तरह से बेबुनियाद है क्योंकि किसी भी आर्य-ब्राह्मणवादी ने आज तक नही बताया कि मॅक्स म्युलर ने ब्राह्मण-धर्मग्रंथ के किस हिस्से का गलत भाषांतर किया है। मॅक्स म्युलर को आक्सफोर्ड में संस्कृत विषय में प्रोफेसर का पद इसलिये नही दिया गया क्योंकि वे मिशनरी नही थे। वे गैरइसाई धर्मो के प्रति, खासकर ब्राह्मण-धर्म के प्रति बेहद उदार थे। मॅक्स म्युलर के लेक्चर्स को बीशप ने 'ईसा मसीह के पवित्र ध ार्मिक संदेश के खिलाफ तथा ईसाईयत के खिलाफ धर्मयुध्द करार दिया था।' वे मॅक्स म्युलर ही थे जिन्होने पश्चिमी देशों में ब्राह्मण धर्म के प्रति लोगों में रुची जगाई। मॅक्स म्युलर के लिये नफरत की असल वजह यह है कि इन धर्मग्रंथों का भाषांतर कर ब्राह्मण ों के वेद इ. धर्मग्रंथों की महानता के ढोंग का सारी दूनियां में पर्दाफाश किया। इससे ब्राह्मण धर्म के ग्रंथों में ब्राह्मण हित में बदलाव करना भी मुमकिन न रहा। वेद इ. ध ार्मग्रंथों को पढने के बाद लोग पितामह ज्योतिराव फूले की बात से सहमत हो जाते है कि वेदों के अज्ञान की एक मामूली वेश्या तक धज्जियां उधेड सकती है।

8) आर्य-ब्राह्मणों की दलील है कि अगर आर्य विदेशी थे तो विष्णु, राम, क्रृष्ण, शिव इ. काले-निले रंग से दर्शाये गए देवताओं की गोरे आर्य क्यों पूजा करते है ? इन्हे तो इनसे नफरत होनी चाहिये थी। ऐसा नही है इसलिये आर्य-ब्राह्मण भारत के मूलनिवासी है।

ब्राह्मणों की यह दलील खोखली है। अपने मतलब के लिये आर्य-ब्राह्मण हर किसी की सेवा करते रहे है। नाग-द्रविड जनता को अपने अधिन रखने के लिये आर्य-ब्राह्मण ों ने उनके देवताओं को अपनाकर उनके धर्म-पंथों पर कब्जा किया और मूल शिक्षा में आर्य-ब्राह्मण हितों के मुताबिक बदलाव किया। ब्राह्मणों ने मुस्लिम शासकों को खुश करने अल्लाहउपनिषद लिख डाली। ब्राह्मणों ने लाभ की खातिर मुस्लिमों से वैवाहिक संबंध कायम किये, अपना धर्मांतर तक किया। दक्षिण भारत के ब्राह्मण इसी वजह से काले है। अंग्रेजों की भारतीय राजाओं के खिलाफ जीत के लिये ब्राह्मण मंदिरों में यज्ञ करते थे।

8) आर्य-ब्राह्मणों का सवाल है कि तमिल लोग अपनी भाषा के विकास के लिये ऋषि अगस्त को श्रेय देते है जो कि आर्यो के खेमे का है। इस पहेली का क्या जवाब है ?

वास्तव में यह कोई पहेली ही नही है। अगस्त ऋषि आर्य नही थे। दिगर नाग-द्रविड देवताओं की तरह आर्य-ब्राह्मणों ने उन्हे भी अपने खेमे में दिखाने का काम किया है क्योंकि धर्मग्रंथ लिखने का एकाधिकार सिर्फ ब्राह्मणों का था और मूलनिवासियों के साहित्य को आर्य-ब्राह्मणों ने नष्ट कर दिया। अगर अगस्त आर्य है तो जिस तरह ब्राह्मण ों ने ब्राह्मण संत रामदास को शिवाजी का गुरु प्रचारित कर किया, अगस्त को द्रविडों पर आर्य-ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिये जबदर्स्ती थोंप दिया। ऐसे असंख्य उदाहरण है।

9) आर्य-ब्राह्मणवादियों का कहना है कि आर्यो का विस्थापन उलटी दीशा में हुआ है यानि वे विदेशों से भारत की ओर नही आये बल्कि भारत से विदेशों में गए है। युरोप के सर्द मौसम में जाने के बाद उनका रंग गोरा हुआ है।

आर्य-ब्राह्मणों की उपरोक्त भद्दी दलील भारत के कम पढे लिखे लोगों को मूर्ख बनाने की कोशिश है। अफ्रिका के काले लोगों को कहीं भी रखा जाये तो वे गोरे नही बन सकते। अंदमान के काले अफ्रिकावंशी हजारों सालों से काले ही है जबकि सैंकडों वर्षो से उनके साथ रहने वाले पिले-मंगोलाईड लोग अफ्रिका वंशियों की तरह काले नही बने है। शरीर के रंग का निर्धारण अनुवंश करता है। वातावरण का त्वचा के रंग पर बहुत कम असर होता है। आर्यो व्दारा भारत से बाहर जाने की भद्दी दलील को दुनियां का कोई भी वैज्ञानिक मान्यता नही देता। ऐसी बचकानी दलीलों की ओर कोई ध्यान तक नही देता क्योंकि ये दलीले जवाब देने लायक ही नही है। अगर भारत से इंडो-युरोपियन भाषाएं बोलने वाले आर्य युरोप इ. देशों में गये तो युरोप के सभी लोग वांशिक बनावट में भारत के लोगों की तरह होने चाहिये लेकिन ऐसा नही है। यहां तक कि ईरान के लोग भी भारत के लोगों जैसे नही है। इंडो-युरोपियन भाषा बोलने वाले आर्य युरोप इ. देशों में गए तो उनपर मुंडा तथा दिगर द्रविडन भाषाओं का असर होना चाहिये लेकिन युरोपियन लोगों की बजाय सिर्फ इंडो आर्यन लोगों पर ही मुंडा इ. द्रविड भाषाओं का प्रभाव है इसलिये उनकी भाषा में मुंडा और द्रविड भाषा के शब्द आये है। ऐसा तभी हो सकता है जब आर्य भारत में प्रवेश करे और मुंडा तथा द्रविड भाषाओं के संपर्क में आये।

बिजेपी सरकार व्दारा प्रायोजित कुछ पुरातत्व शास्त्रीयों ने archeoastronomy जैसी शंशयास्पद पध्दति से आर्य भारत से बाहर जाने की बातों को साबित करने की नाकाम

कोशिश की है। इसे दुनिया में कोई भी वैज्ञानिक मान्यता नही देता। इन कथित पुरातत्व शास्त्रियों ने अपने कथित शोध को किसी भी वैज्ञानिक जर्नल में प्रकाशित करने तक की हिम्मत नही की। ब्राह्मणवादी पुरातत्व शास्त्रीयों का मकसद भारत के अशिक्षित हिन्दूओं को मूर्ख बनाना है। अगर इंडो-युरोपियन भाषाएं बोलने वाले आर्य भारत से विदेश गए तो भारत में संस्कृत इ. इंडो-आर्यन भाषाएं बोलने वाले लोग न के बराबर क्यों है ?

आर्य-ब्राह्मणों का दावा है कि संस्कृत सिंधु घाटी सभ्यता की भाषा थी। लेकिन यह दावा झूठा है क्योंकि सिंधु घाटी के मौजूदा लोगों में संस्कृत भाषा का इस्तेमाल करने वाले कोई नही है। द्रविडन तथा संस्कृत भाषा में कोई समानता नही है। संस्कृत तथा इंडो-इरानियन भाषाओं में भारी समानता है। अवेस्टन भाषा में द्रविड भाषाओं के शब्द नही है जबकि वेदिक आर्यो की संस्कृत में द्रविड भाषाओं के शब्द है। इससे स्पष्ट है कि आर्यो के विस्थापन की दीशा भारत से बाहर नही बल्कि भारत की ओर है।

वेदिक संस्कृत और अवेस्टन (पूरानी पर्शियन) में बहुत अधिक समानता है। अगर किसी को संस्कृत आती है तो वह अवेस्टा के धर्मग्रंथ आसानी से पढ सकता है। उसे मात्र s को h में बदलना होगा। वेदिक तथा अवेस्टा इन दोनों समूहों में अनगिनत समानताएं है। उस वक्त वेदिक तथा अवेस्टा समूहों में आर्य विभाजित नही हुए थे। संभवतः वेदों का वरुण पुराने पर्शियनों का अहुर मझदा था। यह संभव ही नही है कि संस्कृत ने इरानी लोगों को तो प्रभावित किया लेकिन हरप्पा सिंधु घाटी के लोगों को जरा भी प्रभावित नही किया जबकि इरानी सिंधु घाटी के लोगों से हजारों मील दूर थे। इससे यह स्पष्ट है कि आर्य-ब्राह्मण विदेशी-आक्रमणकारी थे।

वेदों में वर्णित आर्यो का पिछडापन सिंधु घाटी सभ्यता के बहुत पहले क जताने वे वेदों को ईसापूर्व 6000 साल पहले तक ले जाते है जो कि पाषाण युग है। लेकिन वेदीक संस्कृति पाषाण-युगीन संस्कृति नही है।(http://robertlindsay.wordpress.com/More Out of India Madness _ Beyond Highbrow - Robert Lindsay.htm)

10) आर्य-ब्राह्मणवादियों के मुताबिक ऋग्वेद में घोडों की 17 जोडी पसलियां होने की बात कही गई है जो भारत के घोडों के बारे ही सच है क्योंकि मध्य एशिया के घोडों में 18 जोडी पसलियां होती है। इसलिये आर्य भारत के मूलनिवासी है।

आर्य-ब्राह्मणवादियों की यह दलिल भी बेतुकी है जो अशिक्षित और अंधविश्वासी जनता के लिये है। उस वक्त भारत में घोडे थे ही नही। संपूर्ण दक्षिण एशिया के इतिहास में ईसापूर्व 1500 वर्ष पहले तक घोडे का उल्लेख ही नही है। रथ की खोज रशिया के उत्तरी कजाखीस्तान में ईसापूर्व 1500 वर्ष के लगभग हुई। घोडों को बाद में आयात किया गया। वेद इ. तमाम ब्राह्मण धर्म के ग्रंथों में ब्राह्मण हितों के मुताबिक बदलाव किये गए जो अंग्रेजों के काल तक होते रहे इसलिये ऋग्वेद में जो 17 जोडी पसलियों की बात की गई है वह शायद बहुत बाद में डाली गई है। बाद में डाली गई बातें पहले की है यह दावा करना धोखेबाजी है। वेदों में भारत के नदी-पर्वतों का वर्णन है इसलिये वे भारतीय नही हो जाते क्योंकि वेदों में विदेशी भूमि के नदियों, पर्वतों, पेड-पौधों और जानवरों का भी वर्णन है। भारत में बाद में लाये गये किसी घोडे की विशेषता ऋग्वेद में डाल देने से आर्य भारतीय नही हो जाते। झूठी और हास्यास्पद दलिलें देकर अपनी कमी को ढँकने की कोशिश करना आर्य-ब्राह्मणों की विशेषता है यह बात अश्वमेध यज्ञ के आगे दिये एक ब्राह्मणवादी के स्पष्टीकरण से साबित होती है :- अश्व का अर्थ घोडा अथवा राष्ट्र होता है; मेधा का मतलब त्याग, टॅक्स, तथा तीव्र बुध्दी होता है। इसलिये यज्ञ का

अर्थ ऐसा काम जो बिना किसी हिंसा के हो और सबके लिये अच्छा है ऐसा होता है। इसलिये अश्वमेध यज्ञ में घोडे की हत्या की जाती है यह कहना गलत है क्योंकि हत्या करना यज्ञ के खिलाफ है। इसलिये अश्वमेध यज्ञ का सही तार्किक स्पष्टीकरण 'राष्ट्र के अकलमंद लोगों का एक जगह (अच्छे काम के लिये) इकट्ठा होना है।' उपरोक्त ब्राह्मण ावादी दलील 'सजन रे झूठ मत बोलो' नामक टी.वी. सीरीयल के 'समधी जी' यानि कलाकार राजीव ठाकुर के प्रवचनों जैसी है जो 'मुन्नी बदनाम हुई डार्लीग तेरे लिये' इ. अनेक फिल्मी गानों में से गुढ आध्यात्मिक अर्थ निकालकर प्रवचन करता है। ब्राह्मण ावादियों की दलील पूरी तरह से झूठ है क्योंकि अश्वमेध यज्ञ का रामायण इ. ग्रंथों में भी विस्तृत वर्णन किया गया है कि कैसे राजा की मुख्य रानी मारे गए घोडे के साथ रात भर लैंगिक संभोग करती है।

11) आर्य-ब्राह्मणवादियों का सवाल है कि अगर इंडो-आर्यन लोगों की जन्मभूमि रशिया के घास के मैदान है तो ऋग्वेद में आर्यो की जन्मभूमि का उल्लेख क्यों नही है, क्यों ऋग्वेद आर्यो की अपनी जन्मभूमि से संबंधित कहानियां नही है ? इसलिये आर्यो की जन्मभूमि भारत ही है।

आर्य-ब्राह्मणों का उपरोक्त सवाल बेबुनियाद है क्योंकि {बहुजन-व्देषी} बाल गंगाधर तिलक के मुताबिक आर्यो की जन्मभूमि Paleolithic काल में उत्तरी ध्रुव के आर्क्टिक क्षेत्र में थी। बर्फिले तुफान इ. की वजह से जीने के हालात नामुमकिन होने पर ही आर्य वहां से युरोप तथा एशिया पहुंचे थे। ईरानियों के धर्मग्रंथ अवेस्टा में भी इन बातों का उल्लेख है। इसलिये वेदिक तथा ईरानी ही नही बल्कि ग्रीक तथा नार्स साहित्य में भी छह महिने के दिन और रातों का उल्लेख है क्योंकि वे सभी आर्क्टिक से विस्थापित हुए आर्य है। उषा वेदों में एक देवता है। उसकी प्रसंशा में ऋग्वेद में लगभग 20 ऋचाएं (hymns) है। उसका उल्लेख कभी एकवचनी तो कभी अनेकवचनी रुपों में 300 से ज्यादा बार है। अगर उषा चंद मिनटों के काल की होती तो आर्यो ने उसकी प्रसंशा में इतना कुछ नही कहा होता। ओल्ड टेस्टामेंट (यहूदी बायबल) में कहा गया है कि ईश्वर ने पहले दिन आकाश, धरती और प्रकाश (उषा) का निर्माण किया जबकि सूर्य को चौथे दिन बनाया। प्रकाश तीव्रता की अलग अलग छटाएं जो 24 घंटे या उससे काफी अधिक समय की होती थी, एक के बाद एक प्रकट होती थी इसलिये उन्हे अनेक उषाएं माना गया है। उषा का कालावधी इतना ज्यादा होता था कि क्षितीज पर प्रकाश होने तथा सुर्य के प्रकट होने के बीच कई कई {एशियाई} दिन बीत जाते थे (VII, 76, 3), या जैसे कि 11, 28, 9, ऋचाओं में बताया गया है एक के बाद एक कई उषाएं प्रकट होती थी तब कहीं सुर्य प्रकट होता था। उषाएं 30 की तादाद में महसूस की गई (I; 123, 8; VI, 59, 6; T.S., IV, 3, 11, 6)। ऋग्वेद में लिखा है कि कई उषाएं एकसाथ बडे प्रेम से नजर आती थी वे आपस में लडती नही थी (IV, 51, 7-9; VII, 76, 5; A.V. VII, 22, 2)। ये तीस उषाएं या एक उषा के 30 हिस्से एक चक्र की तरह अपने निश्चित क्रम से घुमते रहते थे (I, 123, 8, 9; III, 61, 3; T.S. IV, 3, 11, 6)। तिलक के मुताबिक यह सब गुणधर्म सिर्फ पृथ्वी के ध्रुव पर ही प्राप्त हो सकते है। इसलिये वेदिक देवता उषा ध्रुवीय देवता है।

अवेस्टन लोग खुद को आर्य कहते है तथा वेदिक आर्यो से अनगिनत समानताएं रखते है। वे इस बात को मानते है है कि ईरान उनकी मूल जन्मभूमि नही है। वे लगातार एक जगह से दूसरी जगह विस्थापित होते रहे है। अवेस्टा में ऐसी 16 जगहों के नाम गिनाये गए है। अवेस्टा में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि आर्यो की जन्मभूमि आधुनिक

उझबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान तथा उत्तरी अफगानिस्तान के क्षेत्र है।

12) आर्य-ब्राह्मण दलील देते है कि जब कोई एक समूदाय दूसरे समुदाय पर जीत हासिल करता है तो वे अपने साथ नई कल्पनाएं तथा नई सामाजिक रचना लाते है। अगर आर्यो ने सचमुच भारत पर हमला किया होता तब भारत में पूरी तरह से नया ध र्म, नये तरह की कलाएं, तथा सामाजिक रचना में विशेष बदलाव आये होते, लेकिन ऐसा कुछ नही हुआ है, इसलिये आर्य भारतीय है।

आर्य-ब्राह्मणों की उपरोक्त दलिल पूरी तरह से खोखली है क्योंकि अधिकतर आर्य टोलियाँ जानवरों के साथ चारागाहों में भटकने वाली जंगली टोलियाँ थी। जो आर्य एक जगह खेती करने लगे उनपर भी हमला कर दूसरी टोलियों ने उनके जानवर इ. छीन लिये और उन्हे गुलाम बनाकर बेचा। यह बात BMAC इ. संस्कृतियों के नष्ट हो जाने से स्पष्ट है। इसलिये कोई आर्य समुह एक जगह बसने की हिम्मत नही जुटा सका बल्कि हर आर्य टोली ने धुमन्तु लडाकू जीवनशैली अपना ली। इन टोलियों के पास न ही कोई कला थी और न ही कोई उन्नत संस्कृति जिसे ये किसी को दे सकते। आर्यो के पास कोई सभ्यता नही थी सिर्फ अ-सभ्यमा थी, वे सिर्फ विध्वंस और लूट करना जानते थे। इसलिये उन्होने सिर्फ विध्वंस ही दिया है। आर्यो ने कला, संस्कृति, शब्दभंडार, उच्च तकनीक इ. सभी कुछ हमेशा नाग-द्रविडों से लेकर उसे अपने नाम पर बताया है।

सिंधु घाटी की नाग-द्रविड श्रमण संस्कृति (Culture) !

{प्रस्तुत अध्याय के लिये सामग्री आगे बताये हुए स्त्रोतों से ली गई है :- Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Lal Mani Joshi Department of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151; http://en.wikipedia.org/Shramana - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://reference.indianetzone.com//Social & Religious Life of Harappa Civilization.htm; http://www.ancient.eu.com/Religious Developments in Ancient India (Article) -- Ancient History Encyclopedia.htm; http://www.ancient.eu.com/Religious Developments in Ancient India (Article) -- Ancient History Encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/History of Hinduism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Ancient Dravidian culture - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://reference.indianetzone.com//Social & Religious Life of Harappa Civilization.htm; http://creative.sulekha.com//Evolution of Shramanic Jain Religion in Indic Civilisation _ Sulekha Creative.htm }

श्रमण संस्कृति ब्राह्मण-धर्म विरोधी संस्कृति थी !

प्राचिन शिव संस्कृति से ही मोहेंजोदारो हरप्पा की श्रमण संस्कृति विकसित हुई है। नाग द्रविड संस्कृती के आध्यात्मिक विचारकों को श्रमण कहा जाता था। श्रमण शब्द का अर्थ सतत प्रयत्नशील व्यक्ति है। श्रमण अपने पूरे मन से आध्यात्मिक ज्ञान-प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होते थे। श्रमण शब्द का स्पष्टीकरण 'परिव्रजका' यानि घर-बार छोडकर आध्यात्मिक ज्ञान के लिये चिंतन करने वालों के लिये किया गया है। श्रमण खुद के श्रम से जीवन के अर्थ, उद्देशों पर चिन्तन करते थे। आदिवासी आद्यपुरुष लिंगो का अर्थ ''गाकर सत्य कहनेवाला'' होता है। आदिवासियों की अति-प्राचिन समय से आध्यात्मीक चिन्तन में रुची थी। श्रमणों में अनेक मत थे इन मतों का बुध्द साहित्य में ''दित्ती'' के नाम से उल्लेख किया है। श्रमण संस्कृति के लोग अहिंसा पर अत्याधिक भरोसा करते थे। प्राचीन भारत की श्रमण परंपरा नाग-द्रविड आध्यात्मिक परंपरा है।

श्रमण परंपरा में एक छोर पर चार्वाक है जो ऐश की जींदगी जीने की वकालत करते है तो दूसरे छोर पर जैन मुनी है जो खुद को कठोर पीड़ा देने में विश्वास करते है। इसमें मक्काली घोष का दर्शन भी है जो इन्सान की नियति को यकीनी मानते है, जहां इन्सान एक जन्म से दूसरे जन्म लेते रहता है जबतक वह अपने अंतिम नियत अंजाम तक नही पहुंच जाता। श्रमण संस्कृति में योग तत्वज्ञान भी शामिल है। योग सांख्य तत्वज्ञान को मानता है कि अपने निजी कोशिशों से प्रकृति के बंधन से मुक्त हुआ जा सकता है। तंत्र इ. शाखाएं श्रमण संस्कृति से विकसित हुई है।

श्रमण मानते है कि दुनियाँ में बेशुमार दुख है जिससे मुक्त होने के लिये अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना तथा एकांत का जीवन जीना जरुरी है। श्रमण अहिंसा का तथा कडे नियमों का पालन करते थे। वे कर्म और मोक्ष में विश्वास रखते थे। श्रमण संस्कृति में :- 1) ईश्वर या किसी निर्माता के अस्तित्व से इन्कार 2) जानवरों की बलि देने इ. प्रथाओं की विरोधी, 3) कर्म, पुर्नजन्म तथा व्यक्ति के मरने के बाद उसकी आत्मा व्दारा दूसरा जन्म लेने पर विश्वास 4) अहिंसा, गृहत्याग तथा कठोर जीवनशैली के माध्यम से मोक्ष प्राप्त होने पर भरोसा, 5) आत्मशुध्दी के लिये बलि देने या कर्मकांड करने की बातों को नकार देना, 6) जातिप्रथा को नकारना इ. बातें शामिल है।(http://en.wikipedia.org/Shramana - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सबसे आरंभिक उपनिषदों को प्राचीन श्रामणों, यति, मुनी तथा मुंडका इ. की उपस्थिति का अहसास था। उनमें munis, yatis, vaikhnasas and vstyas शब्दों का सरसरी तौर पर उल्लेख मात्र है। भिख्खु, तपस्या, निर्वाण, प्रतित्यासम्तपदा (pratityasamutpda) इ. शब्द आरंभिक वेदीक साहित्य के लिये अजनबी थे। परिवर्जका (parivrjaka) शब्द भी ईसापूर्व 400 वर्ष तक ब्राह्मण साहित्य में अनजान शब्द था। ऋग्वेद (X. 163. 2–4) में लंबे बालों, दाढी-मूंछों वाले श्रमण मुनी का उल्लेख है जो ध्यान इ. कर कठोर जीवन व्यतित करता था। श्रमण मुनी या तो नंगे रहते थे या फिर कोई छोटा सा कपडा कमर से बांध लेते थे। वे अपनी ही धुन में मग्न रहते थे। अथर्ववेद (VIL 74.a) में भी एक देविक मुनी का जिक्र है। तैतिरिया अरण्यका (I.23.3; IV.9.29) को Vaikhnasas मुनि पुरुहनमान की जानकारी थी। उपनिषदों के निर्माण के पहले बुध्द को महाश्रामणा कहा जाता था।

श्रमणों ने आर्यो की बलीप्रथा तथा कर्मकांडों को पूरी तरह से नकार दिया था इसलिये वेदिक ब्राह्मणों ने श्रमण दर्शन को 'नास्तिक दर्शन' (heterodox philosophy) कहा।(http://en.wikipedia.org/Shramana - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

चार्वाक के मुताबिक वेदों में असत्य, स्व-विरोधाभास तथा एक ही बात को अलग अलग शब्दों से बताने (tautology) जैसे तीन बदनुमा दाग है ... वेद बेईमान लोगों व्दारा अर्थहीन बातों को जोश खरोश से बताना (dhurtapralapa) भर है।(Sarva-darsaasangraha, tr. E.B. Cowell and A.E. Gough, London, 1914, p.4.) वेदों में मूलनिवासियों को यज्ञविरोधी, धर्मविरोधी, योगी, सत्यधर्मीय, इ. कहा गया है। (Swapan K. Biswas,P. 113,114)

श्रमण परंपरा ब्राह्मणों की वर्ण या जाति व्यवस्था को पूरी तरह से नकारता है। श्रमण परंपरा का मानना है कि सभी समान मानवी अधिकार रखते है और सर्वोच्च मानसिक स्तर तथा भौतिक खुशहाली हासिल करने की क्षमता रखते है। श्रमण परंपरा आदमी तथा औरतों को समान मानवाधिकार प्रदान करती है। श्रमण परंपरा ईश्वर में विश्वास नही करती इसलिये कोई भी चढावा चढाने तथा मन्नतें मांगने का विरोध करती है। प्राणियों की बलि देने को एक क्रूर प्रथा मानती है।(http://anitashah.com/jainism.htm)

ब्राह्मणों के बौध्याना में श्रमण कपीला को असूर कहा गया है। लोगों से उसकी शिक्षा को न मानने को कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि कपीला और उसकी सांख्य विचारधारा तथा सन्यास के रुप में चौथा आश्रम इ. मूल रुप से श्रमण परंपरा से है। ब्राह्मणों के बौध्याना में कपीला को इस बात के लिये कोसा गया है कि उसने सन्यास के रुप में चौथे आश्रम की व्यवस्था निर्माण की। कपीला का उल्लेख ऋग्वेद (X 27.16) में (dasnm ekam Kapilam samnam tam hinvanti kratave pryya) दस में से एक अंगिरस (angiras) के रुप में किया गया है। अंगिरस यति से संबंधित थे। बुध्द को भी कई बार अंगिरस कहा गया है। डॉ. झिम्मर के मुताबिक कपील वेदिक परंपरा से नही था। वह ईसापूर्व छटवी शताब्दी में हुआ था। सेंट पीटर्सबर्ग शब्दकोष में व्रत्या (vrtya) इस शब्द का अर्थ घर-बार छोड चुका आध्यात्मिक व्यक्ति जो आर्य नही है ऐसा बताया गया है। वेदिक पूजारियों की 'व्रत्या स्तोम' (vrtya stomas) विधि थी जिसे गैर आर्य को आर्य समूदाय में शामिल करने के लिये किया जाता था। केथ तथा मॅकडॉनेल (Keith and Macdonell) इस बात को स्वीकार करते है कि व्रत्या (vrtyas) लोगों के सिधान्त ब्राह्मणों के खिलाफ थे।

ब्राह्मण-धर्म का विरोधी मूलनिवासी नाग-द्रविडों का जैन धर्म !

जैन धर्म का दर्शन चौबीस जैन तीर्थकरों की शिक्षा तथा उनका जीवन है। इन तीर्थकरों में महावीर सबसे आखरी तीर्थकर है। जैन धर्म आत्मा के स्वतंत्र अस्तित्व को, कर्म सिधान्त को मानता है तथा ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है। वह इस बात पर विश्वास करता है कि यह कायनात किसी ने नही बनाई बल्कि वह पहले से ही अस्तित्व में है और रहेगी। जैन धर्म कठोर अहिंसा पर, नैतिक शिक्षा पर जोर देता है। उसका मानना है कि सदाचार के जीवन से व्यक्ति की आत्मा मुक्त हो जाती है। जैन धर्म सत्य के विभिन्न अंग होने पर भरोसा करता है। इसलिये वह मानता है कि किसी के भी पास पूरा सच नही है। जैन मुनियों को श्रमण तथा जैन धर्म के मानने वालों को श्रावक कहा जाता है। मुनियों के आचार नियमों को श्रमण-धर्म कहा जाता है।(http://en.wikipedia.org/Shramana - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) अहिंसा की संकल्पना जैन धर्म की नैतिक शिक्षा का केन्द्रबिंदु है। जैन धर्म की मान्यता है कि व्यक्ति के अच्छे बुरे कर्म के मुताबिक ही उनका पूर्नजन्म किसी भी प्राणी, पक्षि, जलचर, सरीसृप या इन्सान के रुप में होता है। जैन कठिन अहिंसा का पालन करते है क्योंकि कोई भी जीव उनका

पूर्नजन्मित पूरखा हो सकता है। जैन धर्म में अहिंसा परम धर्म है। (Evolution of the Shramanic Jainism, Religions in the Indic Civilisation By Bal Patil)

डॉ. गुसेवा (Dr. Guseva) का दो टूक कहना है कि कम से कम आठ बातें जैन ध र्म को वेदिक धर्म और ब्राह्मणवाद से अलग करती है :- 1) जैन धर्म वेदों को नकारता है 2) इस बात का विरोध कि ईश्वर पूजा करने की मुख्य चीज है। 3) वेदों की खूनी बलि विधियां तथा अन्य कर्मकांडों को नकारता है। 4) किसी तरह की जाति-व्यवस्था को नही मानता। 5) हर प्राणी के जीवन की रक्षा करने में विश्वास है। 6) अपनी इच्छाओं पर कठोर नियंत्रण कर कठीन जीवन जीने को प्रेरित करता है। 7) स्त्रियों को धार्मिक साहित्य पढने, धार्मिक विधियों की अगुवाई करने या साध्वी बनने पर कोई रोक नही है। 8) जैन धर्म इस कायनात को बनाने वाली किसी ताकत या ईश्वर पर भरोसा नही करता। जैन धर्म का मानना है कि यह कायनात आरंभ से है और हमेशा कायम रहेगी। जैन ध र्म का मानना है कि हर व्यक्ति जैन धर्म के सिधान्तों पर अमल कर बिना किसी देवता की मदद से मुक्ति हासिल कर सकता है। तीर्थकरों के सम्मान में मार्गदाता के रुप में मूर्तिपूजा तथा फुल चढाना जैन धर्म की विशेषता है। यह माना जाता है कि इससे वे जैन धर्म के उसूलों के प्रति सजग रहेंगे।(Jainism by Colette Caillat, Dr. A.N. Upadhye, Bal Patil , Macmillan, 1974) जिना की मूर्तियां तथा चित्र जैन धर्म के देवताओं के चित्र या मूर्तियों से ज्यादा तादाद में है। जिना हमेशा बैठी अथवा खडी अवस्था में ध्यानस्थ रहते है। जबकि बुध्द को अलग अलग मुद्राओं में जैसे कि अभय मुद्रा, वरद मुद्रा में दिखाया गया है जिसका मतलब उन्हे दुनियां के लोगों की फिक्र है। डॉ. हरमन जॅकोबी (Dr. Hermann Jacobi) को विश्वास है कि जैन धर्म बेहद पूराना है।

श्रमण परंपरा का शैववाद ! (Sramanic Shaivism)

ब्राह्मणों के पुराणों में दी गई जानकारी के मुताबिक लोग शैवीजम को जानते है। शैवीजम बहुत प्राचीन है जबकि पुराण बहुत बाद में लिखे गए है। इसलिये पुराणों की जानकारी प्रामाणिक नही है। रिखाब (संकृत में ऋषभ) यह जैन संस्कृति की सबसे पहली श्रमण परंपरा थी। रिखाब तथा शिव में कई समानताएं है। श्रमण संस्कृति सामाजिक समानता पर आधारित है। शैविजम भी सामाजिक समानता का कट्टर समर्थक है। श्रमण परंपरा में घरबार त्याग कर कठोर जीवनशैली का पालन करना अनिवार्य है। यही बात शैवीजम में भी है। श्रमन परंपरा में कई मुनि नग्न रहते थे। कई जैन श्रमण अत्यंत प्राचीन काल से इस परंपरा का पालन कर रहे है। श्रमण परंपरा के अजिविक (Ajivik) पंथ में भी नंगे रहने की परंपरा का पालन किया जाता था। जैनों तथा शैव पंथ में यह परंपरा आज तक जारी है। जैन धर्म में लगभग 1500 नग्न मूनि है जिन्हे दिगंबर पंथी माना जाता है। शैव पंथ के हजारों नागा साधू भी नंगे ही रहते है। खुद शिव भी नग्न योगी के नाम से जाने जाते है। शिव को भी दिगंबर कहा जाता है। जैन धार्मिक साहित्य तथा पुराणों के मुताबिक रिखाब नग्न श्रमण थे। जैन तथा शैव पंथी दोनों ही सिंधु घाटी में मिली नग्न मुनियों की मुद्राओं को अपने पंथ का बताते है। जैन साहित्य में शिव रिखाब का दूसरा नाम है। जैन तथा शैव पंथ दोनों में ही शिव व रिखाब को आदिनाथ कहा जाता है। जैन धर्म के मुताबिक रिखाब का निर्वाण स्थल तिब्बत का कैलाश पर्वत है। शैव पंथ के मुताबिक भी शिव का निवासस्थान कैलाश पर्वत है। शिव तथा रिखाब ज्ञान में पदमासन की मुद्रा में मूतियों है। इन मूतियों में दोनों की आँखें आधी खुली हुई है,

जो एक योगीक मुद्रा है। शिव तथा रिखाब की प्राचीन मूर्तियों में दोनों के ही बाल बढे हुए है। दोनों को ही जटाधारी के नाम से बुलाया जाता है। रिखाब और शिव दोनों का ही चिन्ह सांड है। रिखाब तथा शिव दोनों की ही पूजा में नारियल को तोडना तथा भेंट करना प्रतिबंधित है। दोनों को ही चावल चढाये जाते है। शिव को भोलानाथ, आशुतोष देव, केदार नाथ इ. नामों से पुकारा जाता है। महावीर को छोडकर जैन धर्म के तमाम तीर्थकर नाथ है। आदिनाथ को नाथ पंथ का निर्माता माना जाता है। नाथ पंथ आज भी भारत में मौजूद है।(http://hubpages.com//The Origin of Shiv and Shaivism.htm) शिव के अनुयायियों को गण कहते है। मुनियों का समूह जिसका निर्माण ऋषभ ने किया था उन्हे भी गण कहा जाता है तथा गण के प्रमुख मुनि को गणधारा (Ganadhara) कहा जाता है। गण तथा गणधारा की परंपरा आखरी तीर्थकर महावीर तक बिना खंडित हुए चली आयी है।(Jainism by Colette Caillat, Dr. A.N. Upadhye, Bal Patil , Macmillan, 1974)

पी.आर. देशमुख के मुताबिक पहले जैन तीर्थकर सिंधु घाटी सभ्यता के थे। (Evolution of the Shramanic Jainism, Religions in the Indic Civilisation By Bal Patil) सिंधु घाटी की पुरुष देवता पशुपति महादेव (proto-Siva) थे जो सिंधु घाटी की मुद्राओं में ध्यानस्थ है। उनके तिन चेहरे तथा सीर पर सिंगों का मुकुट है। आजूबाजु हाथी, बाघ, राईनो तथा भैस है। {भैस यह सिंघु घाटी की नाग-द्रविड सभ्यता का प्रतिक है।} पशुपति मुद्रा से स्पष्ट है कि लोग शिव की पूजा करते थे। वहां शिव की प्रतिमा तथा हाथी है। सिंधु घाटी की मुद्राओं में दिखाये गए प्राणी समुदायों, लोगों अथवा भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते है। बाघ शायद हिमालय क्षेत्र का, हाथी मध्य तथा पूर्वी भारत का, सांड तथा भैस दक्षिण भारत का तथा राईनोसेरोस सिंघु नदी के पश्चिम क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

श्रमण योग परंपरा !

मोहेंजोदाडो, हरप्पा में अनेक मुद्राओं में ध्यानस्त व्यक्ति है। डॉ. रामा प्रसाद चंदा के अनुसार ऐसी प्रतिमाएं भारत के अलावा कहीं भी नही है। जैन तथा बौध्द पूर्व श्रामण ों में ही ध्यान इ॰ का प्रचलन था। (Swapan K. Biswas,P. 113,114) बुध्दिस्ट स्कॉलर कौसम्बी के मुताबिक त्रिपीठक में निंग्रंथ-जिनाओं का जिक्र है। निंग्रंथ (Nirgrantha) परंपरा बुध्द के बहुत पहले से थी। निंग्रंथ जैन समुदाय का प्राचीन नाम है। हेनरीच झिम्मर (Heinrich Zimmer) के मुताबिक जैनमत सभी द्रविडन दर्शन तथा धर्मो से पूराना है। उन्होने साबित किया है कि आर्यो के भारत आने के पहले से जैन मुनि योग का अभ्यास करते थे।(http://creative.sulekha.com//Evolution of Shramanic Jain Religion in Indic Civilisation _ Sulekha Creative.htm) सिंधु घाटी में प्राप्त पशुपति मुद्रा में योगी शिव एक बहुतायत में पाई गई मुद्रा है। पुरातत्ववेत्ताओं को एक संगमरमर की मूर्ति मिली है जिसमें योगी की आंखे नाक की नोक पर केन्द्रित है। यह योग की तंद्रावस्था है। रामप्रसाद चंदा जिनकी निगरानी में सिंधू घाटी सभ्यता का उत्खनन हुआ वे कहते है कि बैठे हुए मुनि न सिर्फ योगमुद्रा में है बल्कि खडी योगमुद्रा में भी है जिसे कायोत्सर्ग (Kayotsarga) स्थिति के नाम से जाना जाता है। यह जैन परंपरा की खासियत है। आदि पुराण (Book XV III) में कायोत्सर्ग (Kayotsarga) का वर्णन ऋषभ व्दारा आत्म प्रताडना (penance) कहा गया है। कायोत्सर्ग (Kayotsarga) स्थिति, सांड के चिन्ह, सांप के चिन्ह वाले लोग इ. से स्पष्ट है कि सिंधू घाटी सभ्यता में नाग-द्रविड जैन धर्म

के श्रमणों की परंपरा कायम थी।

योग श्रमण संकृति का घटक है न कि वेदीक संस्कृति का। आरंभिक योग निरिश्वरवादी तथा खुद की इच्छाओं पर नियंत्रण करने के नियमों से संबंधित था। जो जैन धर्म की शिक्षा` मुताबिक है। श्रमण संस्कृति के यति तथा योगी ध्यान अथवा योग का अभ्यास करते थे। शिव का दूसरा नाम योगेश्वर है। योग परंपरा 300 इसवी तक वेदों की विरोध ी, निरिश्वरवादी, व्दीत्ववादी (dualistic) तथा खुद की इच्छाओं पर नियंत्रण करने के नियमों से संबंधित (ascetic) रही है।

मूलनिवासी श्रामणों की देखा देखी आर्य-ब्राह्मणों ने सृष्टी की उत्पती, ईश्वर, जन्म, मृत्यु इ॰ में रुची लेनी शुरु की। परिणाम स्वरुप ये लोग ''ब्राह्मण-श्रामण'' कहलाये गये। इनके काल्पनिक अनुभवों को अरण्यकाज के नाम से जाना जाता है। ईसापुर्व 800-500 के दौरान ब्राह्मण श्रामणों ने ईश्वर, धर्म, सृष्टी, आत्मा इ॰ के संबंध में जो विचार व्यक्त किये उन्हे उपनिषद कहा गया है। उपनिषदों के विचार संक्षेप में निम्न प्रकार से है :- सृष्टी को जिस रुप मे हम देख रहे है वह हमारे संवेदनाओं तथा विचारों की निर्मिती है इसलिये हमें दिखाई देने वाली सृष्टी माया है तथा हमारा ज्ञान अविद्या है। हम सब एक ही परमात्मा का अविभाज्य अंग है, लेकिन हमारे संवेदन की त्रुटियों, मर्यादाओं तथा बुध्दी की अविद्या के कारण हमें सभी व्यक्ती, वस्तुयें अलग अलग अनुभव होती है। इसलिये (1) सृष्टी के रहस्य को बुध्दी के माध्यम से जानने की कोशिश व्यर्थ है। ईश्वर सृष्टी का निर्माता या पालनहार नही है। न ही ईश्वर किसी को उसके कर्मो के लिये पुरस्कार देनेवाला या दंडित करने वाला है। ईश्वर मात्र एक ऐसी चिज है जिस पर व्यक्ति एकाग्रता हासिल करने के लिये अपना ध्यान केन्द्रित कर सके। (2) ईश्वर इ॰ इसी मायावी दुनिया की बात है तथा उनका वास्तविक सत्य से कोई नाता नही है। (3) सालों तक कठोर उपवास, गुरु का आज्ञापालन इ॰ करके ध्यान से प्राप्त होने वाली अनुभुती ही सत्य है। (4) साधना या योग में किसी एक वस्तु पर अपना ध्यान केन्द्रित करके अपने मन को शरीर की सारी भौतिक इच्छाओं के अवरोधों से मुक्त करके अंततः समाधी की अवस्था में परमात्मा से एकरुप होकर उसे अनुभव होता है कि वह परमात्मा है। (5) आत्मा का खुद की परमात्मा के रुप मे पहचान करना ही मोक्ष की अवस्था है। मोक्ष के साथ ही वह जन्म मृत्यु के चक्र से हमेशा के लिये मुक्त हो जाता है। ब्राम्हणों ने चालाकी से परमात्मा इस शब्द का पर्यायवाची शब्द ''ब्राह्मण'' बनाकर उपनिषद के विचार प्रस्तुत किये है।

श्रामणों की योग दर्शन शाखा को मानने वालों का यह झूठा विश्वास है कि इस तरह अवरोधों से मुक्त आत्मा अत्यंत शक्तीशाली तथा चमत्कारी होती है। एक जगह से हजारो मील दूर पहुँचना, उडना, दिवारों के आरपार गुजरना इ॰ कई अलौकिक करिश्में कर सकती है। (p.541-551, Will Durant) हकिकत तो यह है की ध्यान की अवस्था में आत्मा, परमात्मा इ॰ ''काल्पनिक अनुभुतियों'' से योग, उपनिषदों को मानने वाले ब्राम्हण-श्रामणों में तरह तरह के भ्रम-विभ्रम और मानसिक विकृतियाँ निर्माण हुयी है।

डॉ. अम्बेडकर के मुताबिक कई {गलत} दृष्टीकोनों में यह सोच भी है कि बुध्द धर्म का सार समाधी या विपस्यना या विशेष ज्ञान प्राप्ती है। {ब्राह्मण-धर्म की} समाध ी ऋणात्मक है क्योंकि वह अस्थायी तौर पर दिमाग से अवरोधों को हटाती है। इसमें मश्तिष्क को कोई प्रशिक्षण नही मिलता। {बौध्द धम्म की} सम्यकसमाधी धनात्मक है क्योंकि वह हमें अच्छे कामों तथा सोच पर विचार करने और गलत कामों तथा गलत

विचारों को दूर करने में मदद देती है। (Dr. B.R. Ambedkar, Vol. 11, p. 225, 127)

बुध्द ने बहुजनों के दुखों को दूर करने के लिये सम्यक समाधी में तर्कपूर्ण ढंग से चिंतन मनन कर दुखों के उगम का (लालसा, आसक्ति और आलस) तथा उन्हे दूर करने के उपायों (प्रज्ञा, शील, करुणा और अष्टांग मार्ग) की खोज की है। बौध्द धम्म की सम्यक समाधी की शुरुआत हमेशा ही किसी न किसी समस्या को सुलझाने के लिये होती है। बुध्द ने युध्द के दुखद परिणामों को दूर करने समस्या के संभावित आधार को खोजने के लिये चिंतन मनन करना, उठे प्रश्नों पर औरों से चर्चा करके चिंतन मनन कर उनका तार्किक विश्लेषण करना, अनसुलझे सवालों को लेकर सभी जरुरी साहित्य पढकर दोबारा तार्किक चिंतन-मनन कर हल तक पहुंचना ही बुध्द की सम्यक समाधी है। बुध्द की सम्यक समाधी सृजनात्मक बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के उद्देश्यो को पूरा करने में मददगार तर्कपूर्ण चिंतन प्रक्रिया है। अपने सांसों को आते जाते देखने की व्यर्थ आत्मघाति क्रिया नही है। डॉ. अम्बेडकर ने 22 प्रतीज्ञाओं में से एक प्रतिज्ञा मै प्रज्ञा शील, करुणा इन बौध्द धम्म के तीन तत्वों के मुताबिक अपना जीवनयापन करुंगा। ऐसी है न कि प्रज्ञा शील समाधी। डॉ. अम्बेडकर ने समाधी की जगह करुणा शब्द का इस्तेमाल जानबूझकर किया है ताकि लोग विपस्यना इ. ब्राह्मणवादी ध्यान-पध्दति के शिकार न हो जाये।

लैंगिक-तंत्रयान वेदिक ब्राह्मणों की पध्दति है !

लैंगिक-तंत्रयान मूलतः वेदिक आर्यो की पध्दति है। वेदों में अश्वमेध यज्ञ करने, यज्ञ के दौरान खूलेआम लैंगिक संबंध कायम करने इ. बातों का प्रचलन था। आर्य स्त्री-पुरुष जानवरों के साथ लैगिक संबंध कायम करते थे। यहूदी भी आर्यो की ही शाखा है।

नीचे की ओर कोण वाले त्रिकोण को स्त्री योनि का प्रतिक माना जाता है और उसे शक्ति कहा जाता है। यहूदी शक्ति को शेकिना कहते है। जबकि उपर की ओर कोण वाले त्रिकोण को पूरुष लिंग का प्रतिक माना जाता है और उसे आग और शक्ता कहा जाता है। इन दोनों त्रिकोनों को मिलाकर छहकोणीय तारा बनता है जिसका इस्तेमाल तांत्रिकों व्दारा तांत्रिक ताकतों को जगाने के लिये किया जाता है।(Walker 1983, p.401-402) छह तारे का चिन्ह इजरायल के राष्ट्रध्वज पर है। लैंगिक तंत्रपूजा ब्राह्मणों तथा यहूदियों की देन है क्योंकि ब्राह्मण तथा यहूदी दोनों में ही अपनी महिलाओं के माध्यम से नाग-द्रविडों के राज-परिवारों में शिरकत करने की परंपरा है। आर्य-ब्राह्मणों ने अपने अथर्ववेद की घिनौनी तंत्रविद्या को मूलनिवासी नाग-द्रविडों की बताया है।

यज्ञ में भुने हुए माँस के साथ आर्य सोमा शराब पीते थे। यज्ञ के बाद जुँआ खेला जाता था और इसके साथ साथ ही सबके सामने खुले आम स्त्री पुरुष आपस में संभोग किया करते थे।(Dr,B.R. Ambedkar , Vol. 4 , P. 294, vol. 3, P. 174-175) राजवाडे के अनुसार यज्ञ का अर्थ एक जगह इकट्ठे होकर यभनक्रिया अथवा जनन क्रिया करना होता है। लोहयुग के पूर्व के आर्य रात को आग जलाकर इकट्ठा होकर मदिरा के नशे में उन्मत्त होकर यौनक्रिडायें करते थे। कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से संभोग कर सकता था, यही उस वक्त का धर्म माना जाता था। वे यौन संबंधी समस्याओं की चर्चा करते थे तथा वही गर्भधान करते थे इन सब बातों को ही यज्ञ कहा जाता था। (व्यंकटेश आत्राम, p. 153-154) सभी यज्ञ इस कल्पना पर आधारित है कि इस दौरान लैंगिक संबंध

(Maithunikarana) बनाने से आध्यात्मिक खुशी भी हासिल होती है। आर्थर अवॅलॉन (Arthur Avalon) ने शक्ति और शक्ता नामक तंत्रयान के ग्रंथ के हवाले से कहा है कि लैंगिक संबंध को अग्निहोत्रा यानि ठीक करने वाली अग्नि कहा गया है। यज्ञ के समय किये जाने वाले संभोग को पवित्र और अलौकिक माना गया है। इडा (औरत) कहती है कि अगर तुम यज्ञ के समय मेरे साथ संभोग करोगे तब मेरे जरिये जो भी कामनाएं तुम व्यक्त करोगे देवताओं व्दारा वे सब पूरी की जाएगी।(http://sacred-sex.org//Maithuna in Tantra Shastra and Veda.htm) चंदोग्या उपनिषद के अनुसार ऋषियों का नियम था कि संभोग की इच्छा करने वाली स्त्री के साथ यज्ञ स्थल पर सभी लोगों की उपस्थिती में खुले आम उस स्त्री से संभोग करते थे। इस नियम को धार्मिक मान्यता थी। पहले इस को 'वामदेव व्रत' के नाम से जाना जाता था। वामदेव व्रत 'वाम मार्ग' के नाम से जाना जाने लगा। (Dr B.R. Ambedkar, Vol. 4 , P. 298-299 ,300, 301)

अश्वमेध यज्ञ का एक रुप आयरीश लोगों की राज्याभिषेक प्रथा में है। इसमें राजसिंहासन पर आरुढ़ होने के पहले राजा को विधि पूर्वक एक घोडी के साथ संभोग करना होता है। इसके बाद उस घोडी की बलि देकर उसे पकाकर समारोह पूर्वक खाया जाता है। इस प्रथा का उदगम वेदों में है। वेदों के सरन्यु (Saranyu) व विवस्वात (Vivasvat) घोडों के रुप में संभोग कर अश्विनों को जन्म देते है। उपरोक्त धार्मिक विधि उसी का प्रतिक है। तैतिरिया संहिता (V:5:9) तथा अपस्तंभ श्राउता सुत्रा (Apastamba Shrauta Sutra, 21:17:18, etc.) में कुछ विशेष वेदिक विधियों में एक ब्राह्मण पूजारी मंदिर में छुपाई गई पम्चाली (pumchali, hierodule) के साथ मंदिर के गर्भगृह (altar) में संभोग करता है। यह प्रथा सुमेर तथा बॅबिलॉन की प्रथा जैसी प्रथा है जिसमें नये साल के उत्सव (Akitu) में राजा पवित्र वेश्या के साथ सीढीयों जैसे पीरॅमिड (stepped pyramid) के चबुतरे (ziggurat) पर संभोग करता है।(http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm)

ग्रीक दर्शनशास्त्री हेराक्लिटस ने ईसापूर्व छटवी शताब्दी में लैंगिकता से भरपूर बॅचॅन्टस् (Bacchants) विधियों के लिये मॅजियों को जिम्मेदार ठहराया है। मॅजि इस समारोह में लैंगिकता के देवता डीओनिसस (Dionysus) की प्रसंशा में लिंग से संबंधित श्लोक गाते है। वे गुप्तता से ऐसे समारोह आयोजित करते है और उसे गंदे तरह से मनाते है। उसे झोरोस्टर इन मॅजियों की कठोर शब्दों में भर्सना करते है। झोरोस्टर के धर्मग्रंथ यसना के मुताबिक झोरोस्टर ने यम के बैल बलिप्रथा की भर्सना की है जिसमें मादक पेय होमा पी कर लोग लैंगिक गतिविधियां करते थे।(http://www.thedyinggod.com/The Chaldean Magi A Library of Ancient Sources _ The Dying God.htm)

डॉ. डी. बी. स्पुनर (Dr. D. B. Spooner) के अनुसार शक्ति तंत्र-विद्या का उगम पर्शिया यानि ईरान में हुवा है। (चक्रवर्ती, p.47) तंत्रविद्या, जादुटोना मुख्यतः आर्य ब्राह्मण ों में थे। श्री चक्रवर्ती के अनुसार तांत्रिक कर्मकांड अथर्ववेद में है। वे सबसे पूराने माने गये ऋग्वेद में तथा अन्य वैदिक साहित्य में भी पाये जाते है। तंत्रविद्या का पुरस्कार करने वाले कई लेखकों ने तंत्रविद्या की हर विधि को वेदों में होने का दावा किया है। उनका मानना है कि तंत्रविद्या का उगम अथर्ववेद के सौभाग्यकांड से हुवा है। चक्रवर्ती के अनुसार यह मानना ही पडता है कि तंत्रविद्या के विकास की आधारशिला वेदों तथा वैदीक साहित्य में मौजूद है। अर्थहीन तथा विचित्र लगने वाले ''फट'' जैसे शब्द ऋग्वेद में बहुतायत में मौजूद है। धार्मिक कर्मकांडों से जुडी इन्द्रिय विलासिता भी वेदों में है।

सर्वमेध यज्ञ में मानव तथा सभी प्राणियों की बलि दी जाती थी। स्त्री देवताओं की पूजा (शक्ति-पंथ) भी वेदों में है। (चक्रवर्ती, p.10-13) आर्यो में स्त्री-पुरुष के जननेंद्रीयों को पूजने की प्रथा थी। अथर्व वेद के अनुसार ऐसा समुदाय उनके धर्म का ही धटक होकर उसे स्काम्भा के नाम से जाना जाता था। (Dr Babasaheb Ambedkar , Vol. 4 , P. 294-295) ब्राह्मणों ने तंत्रविद्या को पांचवे वेद के रुप मे स्वीकार करके तंत्रविद्या का विकास किया है। तंत्रविद्या में मदीरा, माँस, मछली, मुद्रा (गर्म भुने हुये अनाज के दाने), तथा मैथुन (संभोग) इन पांच ''म'' का पालन करना होता है। तांत्रिकों की नजर में वेदों का कोई महत्व नही था। उनकी नजर में वेद उस मामुली स्त्री की तरह है जो सभी को उपलब्ध है। तंत्र विद्या इज्जतदार स्त्री की तरह है। ब्राम्हणों ने तंत्रविद्या की कभी आलोचना नही की उल्टे तंत्रविद्या को पांचवे वेद के रुप में स्वीकार किया। मनुस्मृति के जाने माने समिक्षक (Commentator) कुलका भट का कहना है कि श्रृति दो प्रकार की है, एक वैदिक और दूसरी तांत्रिक। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol. 4, P. 115) एम. एस. भट के अनुसार ऋगविधान में ऋग्वेद के मंत्रोच्चार इ॰ कर्मकांडों व्दारा जादुई परिणाम कैसे प्राप्त किये जा सकते है इसका वर्णन ऋगविध ान में दिया गया है। उनके अनुसार ऋगविधान ईसापूर्व 500-400 में लिखे गये। (भट, p.120) ब्राह्मणों ने अथर्व-वेद की तंत्रविद्या को पहले महादेव तथा बाद में बुध्द के नाम से प्रचारित किया। ब्राह्मणों के मुताबिक शिव ने पार्वती को तंत्रविद्या समझायी जिसकी तंत्रक्रियाओं को विष्णु की मान्यता थी। कुछ अध्यायों में शिव-पार्वती को और कुछ में नारद को तंत्रविद्या समझाते हुए बताया गया है। (चक्रवर्ती, p.25) जबकि संभु-पार्वती सबसे आखरी संभु है और उसके पूर्व के संभुओं में तंत्रविद्या का उल्लेख ही नही मिलता क्योंकि मूलनिवासी गोंड इ॰ आदिवासियों में मात्र निसर्ग और पूरखों की पूजा की प्रथा है। मूलनिवासी नाग-द्रविडों के साहित्य में तंत्रविद्या से संबंधित कोई ग्रंथ नही है। आर्य ब्राह्मणों ने ही निश्चित योजना के तहत अपने अथर्ववेद, ऋग्वेद की तंत्रविद्या को अपने व्यवसायिक स्वार्थ तथा कूटनीतिक हथियार के रुप में तंत्रविद्या का मूलनिवासियों में प्रचार-प्रसार किया है। बुध्द के धम्म को विकृत बनाने के लिये वेदों की तंत्रविद्या को बुध्द के नाम पर प्रचारित किया।

शैविजम की मातृ-पितृ शक्ति ब्राह्मणों के तंत्रयान से एकदम विपरित है !

दक्षिण भारत के गांवों में माता की पूजा आम है। मातृ-देवता के प्रति विश्वास अत्यंत प्राचीन द्रविड विश्वास है। सिंधु घाटी में प्राप्त कई मुद्राओं से यह स्पष्ट है कि हरप्पा के लोग देवी की पूजा में भी विश्वास रखते थे। बर्तनों पर मातृ-देवता की असंख्य आकृतियां है। वहां सीर पर सिंगो के मुकुट धारी मातृ-देवता की मूर्ति मिली है जिसके आगे सिंग का मुकुटधारी देवता घुटनों के बल बैठा है। चबुतरे पर जानवर भी है।

जगदीश नारायण तिवारी तथा दिलिप चक्रवर्ती के मुताबिक आरंभिक सिंधु संस्कृति में मातृकाएं पूजी जाती थी। ऐसे सिक्के मिले है जिन पर सात देवियां यानि सप्त मातृकाएं (seven divine mothers) है। महाभारत में उनका वर्णन काले रंग की, अजनबी भाषा बोलने वाली, सीमावर्ति क्षेत्र में स्कंद तथा उसके पिता शिव इ. गैर आर्य देवताओं के साथ रहने वाली ऐसा किया गया है। भट्टाचार्य के मुताबिक मातृसिधान्त सिंधु घाटी सभ्यता का महत्वपूर्ण अंग था। मातृशक्ति की संकल्पना नाग-द्रविड धर्म का अविभाज्य हिस्सा था।(http://en.wikipedia.org/Matrikas - Wikipedia, the free encyclopedia. htm)

सिंधु घाटी के लोग मातृ-देवता की पूजा करते थे जो उत्पादकता (fertility) का प्रतिक है। शिवलिंग से मिलते जुलते चिन्ह हरप्पा के अवशेषों से प्राप्त हुए है।(http://www.ancient.eu.com/Religious Developments in Ancient India (Article) -- Ancient History Encyclopedia.htm) सिंधु घाटी में असंख्य पुरुष और स्त्री लिंग की आकृतियां प्राप्त हुई जिनको शायद पूजा जाता था।(http://www.historytuition.com/Religion in the Indus Valley Civilization.htm) सिंधु घाटी में एक पूर्व शिव (proto-Shiva) जानवरों से घिरे पशुपति की ध्यानस्थ बैठी आकृति मिली है जिसका लिंग उत्तेजना की मुद्रा में (ithyphallic) सीधा खडा है जिससे ध्यानस्थ योगी के अंडकोष स्पष्ट नजर आते है। इस मुद्रा (M420) को सर जॉन मार्शल (Sir John Marshall) तथा उसके साथियों व्दारा हासिल किया गया है। इस तांत्रिक योग की मुद्रा से लैंगिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति में बदला जाता है।(http://www.ancient.eu.com/Religious Developments in Ancient India (Article) -- Ancient History Encyclopedia.htm)

ब्राह्मण-ग्रंथों में शिव का उल्लेख अलग अलग कालखंडों में किया गया है। ब्राम्हण देवता विष्णु के कई अवतारों के कालखंडों में भी शिव का उल्लेख है। इस से स्पष्ट है कि शिव यह संस्कृति तथा पदवी दोनों का प्रतिक रहा है। मुजीब के अनुसार मोहेंजोदारो तथा हरप्पा में मातृशक्ती (Mother God) तथा शिव के प्राचिन स्वरुप की पूजा होती थी। (p.42,48, M.Mujeeb, 1960) शिव संस्कृती के संरक्षक नंदी जमात के गण होते थे।

मान॰ शीतल मरकाम के अनुसार आदिवासियों की अत्यंत प्राचिन ''शिव'' संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था थी। शिव संस्कृति गणतंत्रीय व्यवस्था थी। आदिवासी-धर्म के आद्यपुरुष पारिकुपार लिंगो ने सल्ला गांगरा (मातृशक्ति और पितृ शक्ति) पूजा कायम की। मूलनिवासियों को सम और विषम गोत्रों में विवाह करने की व्यवस्था दी। परिकुपार लिंगो ने आदिवासियों के बीच शिव की जनतांत्रिक गण प्रणाली को मजबूत करने का काम किया। शिव संस्कृति के गणप्रमुख राजा ''शंभु'' (शंभुशेक) यह पदवी धारण करते थे। शंभु पदवी धारण करने वाले गण-प्रमुख हजारों हुये है। पचमेढी गणराज्य में ही 88 शंभु हुये। मान॰ चंद्रलेखा कंगाली के अनुसार सभी संभु अपनी पत्नी के नामों से जाने जाते है। सबसे पहले संभु ने मेलकोट की कन्या मुलादाई से विवाह किया इसलिये उसे संभु-मुला कहते है। संभुओं में संभु-मुला, संभु-गोंदा, संभु-मुरा, संभु-सय्या, संभु-रमला, संभु-बीरों, संभु-रय्या, संभु-अनेदी, संभु-ठम्मा, संभु-गवरा, संभु-बेला, संभु-तुलसा, संभु-उमा, संभु-सती, संभु-आमा, संभु-गीरजा, संभु-सनी, संभु-पार्वती इ॰ अनेक संभु हुये है। (चंद्रलेखा कंगाली, p.33) ऋग्वेद में वर्णित ''शंबर'' यह गोंड गणों के आद्य अधिपती तथा मूल सेनापति, कैलासपति ''संभु'' है। (व्यंकटेश आत्राम, p.20) संभु-पार्वती अंतिम संभु है।

ब्राह्मणों का वेदिक धर्म श्रमण परंपरा का दूश्मन रहा है !

मॅकडॉनेल तथा केथ के मुताबिक वेदिक काल में श्रमण मुनियों को आर्य भली भांति जानते थे और उनसे नफरत करते थे। ब्राह्मणों के साहित्य में इंद्र को यतियों यानि श्रमणों का दुश्मन करार दिया गया है। सतपथ ब्राह्मणा (IX.5.2.15) में मुनियों का उल्लेख किया गया है। पंकविमसा ब्राह्मणा (XIV.4,7) में एक 'मुनि-मरण' (ascetic's death) नामक जगह का उल्लेख है जहां वैखनसा मुनियों की हत्याएं इंद्र के लोगों ने की थी। इंद्र व्दारा यतियों को मार डालने का उल्लेख है। ऋग्वेद (VIII.3.9) के मुताबिक इन्द्र यतियों-मुनियों के प्रति बडा हिंसक था। तैतरिया संहीता (II 4.9.2; VI.2, 7, 5) तथा अन्य

ग्रंथों में इंद्र ने यतियों को मार कर भेडियों इ. जंगली जानवरों के आगे फेंक दिया। श्रमण मुनियों के लिये वैखनासा शब्द का भी इस्तेमाल किया गया है। वैखनासा को मुनि कहा जाता था यह बात पंकविमसा ब्राह्मणा (XIV.4.7) से स्पष्ट है जो मुनियों के हत्याकांड के बारे में बताता है। यजुर्वेद (वजसानेयी संहीता, XXX.8) में पुरुषमेध यज्ञ में व्रत्या (vrtya) की बलि चढाये जाने का उल्लेख है। स्पष्ट है कि व्रत्या आर्य नही थे। (Brahmanism, Buddhism, and Hinduism.. by Lal Mani Joshi)

जैन और बौध्द धम्म सिंधु घाटी सभ्यता के मुख्य धर्म थे !

क्रिस्टोफर की चॅपेल (Christopher Key Chappel) के मुताबिक सिंधु घाटी सभ्यता में तीन या चार चेहरे वाले ध्यानस्थ लोगों की मुद्राएं मिली है। जैन प्रतिक चिन्हों में हमेशा तीर्थकरों को चार चेहरों वाले दर्शाया गया है जिसका मतलब उनका अस्तित्व चारों दीशाओं में है। काफी तादाद में सांड की आकृती सिंधु घाटी की वस्तूओं में मिली है। लॅनाय (Lannoy), थॉमस मॅकइविले (Thomas McEvilley), तथा पदमनाभ जैनी के मुताबिक भारी तादाद में सांड की आकृतियां मिलना जैन धर्म के ऋषभ से उनका संबंध दर्शाता है। ऋषभ का साथी जानवर भी सांड है।(http://en.wikipedia.org/Indus Valley Civilization - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सिंधु घाटी के मोहेंजोदारो और हरप्पा में मिले स्वस्तिक चिन्ह भी जैन धर्म में आम है। स्वस्तिक चिन्ह का अर्थ खुशहाली है। यह चिन्ह उन आठ पवित्र चिन्हों में से एक है जो Ayagapatas यानि प्राचीन जैन शिल्पों पर पाये जाते है। इन आठ पवित्र चिन्हों को अष्टमंगल कहा जाता है। सिंधु घाटी में जो नग्न खडे लोगों की तस्वीरें मिली है वे प्राचीन जैन शिल्पों से मिलती है।(Evolution of the Shramanic Jainism, Religions in the Indic Civilisation By Bal Patil)

सिंधु घाटी सभ्यता में ध्यानस्थ अपने सिर पर जो पहनते है वह बुध्दिस्ट चिन्ह त्रिरत्न जैसा है। यह चिन्ह ब्रहुत और सांची की कलाकृतियों में भी है। एक आकृति में ध्यानस्थ जटाधारी का कपडा बायें कंधे पर है, दायां कंधा और हाथ खुला रखा गया है जो बुध्दिस्ट भिख्खु की पध्दति है। शायद यह अत्यंत आरंभिक श्रमण भिख्खु का प्रकार है। नागों की आकृतियां भी है। नाग बौध्द परंपरा से संबंधित है।

बौध्द साहित्य में सीध्दार्थ गौतम बुध्द के पहले 28 बुध्द होने की बात कही गयी है तथा उनके नाम दिये गये है। ब्राम्हण लेखकों ने जानबुझकर इन बुध्द पुरुषों को सीध्दार्थ गौतम बुध्द के पूर्व-जन्मों के रुप में प्रस्तुत किया है। जैन धर्मग्रंथों में कुल 24 तिर्थकर है। (Swapan K. Biswas,P.35,39,42) बौध्द और जैन श्रमणों की भाषा व संस्कृति में बहुत अधिक समानता होने से जैन तिर्थकरों को भी पूर्व बुध्द माना गया है। भागचंद्र जैन के अनुसार पूर्व बुध्दों के नाम और उनकी संख्या पर जैन मत का प्रभाव पडा। मिसाल के लिये दूसरे तिर्थकर अजित का नाम पक्केकाबुध्द (paccekabudha) को दिया है जो 91 कल्प पहले रहता था। कस्यप बुध्द के काल के वेपुल्ला-पवत्ता (Vepulla-pavvata) को सातवे तिर्थकर सुपस्सा (पाली में) अथवा सुपर्सवा का नाम दिया गया। उस काल में राजगृह के लोगों को सुप्पीया (Suppiya) अथवा सुपस्सा के अनुयायी माना जाता था। छठवे तिर्थकर पदमा अथवा पदुमा (Padma or Paduma) का नाम आठवे बुध्द का है। भागचंद्र जैन ने बौध्द और जैनों के बीच की समानताओं के उदाहरण पेश किये है। (भागचंद्र जैन भास्कर, पेज 23) मौर्य काल में बौध्द धम्म ब्राह्मणों के कर्मकांडों, बलि प्रथा का सबसे बडा विरोधी था। उसने ब्राह्मणवाद को लगभग खत्म कर दिया था। उस

समय सिंधु घाटी के राज्य अपने विकास के चरम दौर में थे। सिंधु घाटी के उत्खनन से यह पता चलता है कि हर शहर में एक बौध्द स्तुप था। सिंधु घाटी में धम्मचक्र भी बडी तादाद में हासिल हुए है। एक शहर में सीर विहीन बुध्द की मूर्ति भी पायी गई। ऐसी मुद्राएं मिली है जिसमें पिपल के पेड की पूजा की जा रही है। संपूर्ण सिंधु घाटी बौध्द राज्य बन चुका था।(http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

बौध्द धम्म के प्रभाव से उपनिषदों में बलि इ॰ कर्मकांड का विरोध तथा ब्राम्हण पूजारियों की आलोचना है। उपनिषदों ने वेदों को अपने से हीन और वेदों का विरोधी माना है। ब्राह्मण जो पहले उपनिषदों के विरोधी थे अंततः बदरायन के जरिये उपनिषदों का वेदों के अनुकुल स्पष्टीकरण करके ''वेदान्त'' यह नाम देकर ब्राह्मणवादी धर्म-ग्रंथों के रुप में मान्यता दे दी। जबकी वेदान्त उपनिषदों को नही बल्कि कुछ अरण्यकाओं को कहा जाता था।(Dr. Babasaheb Ambedkar, Vol. 4, P. 63) वेद और ब्राह्मणाज का समावेश कर्मकांड में तथा अरण्यकाज और उपनिषदों का समावेश ज्ञानकांड में होता है।

वैदिक साहित्य का मनमाने ढंग से विकास होने से उनमें सूसुत्रता लाने के उद्देश्य से ''मीमांसाओं'' का निर्माण किया गया। जेमीनी ने कर्मकांड तथा बदरायन ने ज्ञानकांड की मीमांसा लिखी है। इनकी मीमांसा को ब्राम्हण प्रमाण मानते है। जेमीनी के सुत्रों को ''मीमांसा सुत्र'' तथा बदरायन के सुत्रों को वेदान्तसुत्र (वेदोंका सारांश) के नाम से जाना गया है। (P. 247, Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3,) वेदान्त सुत्र (ज्ञानकांड) को लिखने का काम बुध्दीजम के उदय के बाद ही हुवा है क्योंकि इनमें अप्रत्यक्ष रुप से बुध्दीजम का संबंध प्रदर्शित होता है। इनका मनु ने उल्लेख किया है इसलिये यह स्पष्ट है कि वेदान्तसुत्र मनु के पहले लिखे गये है। प्रोफेसर केथ (Keith) के अनुसार वेदान्त सुत्रों को लिखने का काम इसवी सन 200 के लगभग हुवा है। प्रोफेसर जॅकोबी के अनुसार वेदान्त सुत्र लिखने का काम 200 से 450 इसवी तक किया गया है। (P. 249, Dr. Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches Vol. 3)

भारत में नाग-द्रविडों के श्रमण परंपरा के साम्राज्य !

नाग-द्रविड भारत के मूलनिवासी है !

आर्य विदेशी आक्रमणकारी है जबकि नाग-द्रविड भारत के मूलनिवासी है। नाग बहुत प्राचीन समुदाय है। दास और नाग एक ही समुदाय है। दास यह नागों को दिया हुआ दूसरा नाम है। दास यह शब्द मूल इंडो-इरानियन शब्द 'दहाका' का संस्कृत में रुपांतरण है। दहाका नाग सम्राट का नाम था। 1) ऋग्वेद में नागों का उल्लेख है। 2) नाग विकसित सभ्यता के लोग थे। भारत के अधिकांश हिस्से पर उनका राज था। 3)

आंध्रदेश तथा उसके पडौसी प्रांत भी आरंभिक क्रिश्चन इरा में नाग साम्राज्य के मातहत थे। सम्राट सातवाहन तथा उसके उत्तराधिकारी चुतु कुलु सातकर्णीयों में नाग रक्त था। 4) द्रविड तथा नाग यह एक ही समुदाय के दो विभिन्न नाम है। 5) द्रविड यह शब्द तमिल शब्द का संस्कृत में हुआ अपभ्रंश है। तमिल शब्द संस्कृत में पहले दमिल तथा बाद में द्रविड बना। द्रविड भाषा का नाम है। 6) आर्यो के आने से पहले नाग लोगों की भाषा तमिल या द्रविड भाषा समूचे भारत भर कश्मीर से लेकर केप कॅमोरीन (Cape Camorin) तक में बोली जाती थी।(Dr. Ambedkar, "The Untouchables", pp. 56, 58, 59, 63, 66, 75)

हरप्पा के भी पहले अत्यंत प्राचिन काल में नाग संस्कृती का विस्तार ईरान तक था। नाग राजा अत्यंत शक्तीशाली और साहसी होते थे। उनके सिंहासन के पिछे नाग का फन होता था। इसी से यह कहावत बनी है कि जिसके सिर पर नाग का फन होता है वह अत्यंत पराक्रमी होता है उसे कोई परास्त नही कर सकता। नागों के एकछत्र वर्चस्व के कारण ही कहा गया है की सारी पृथ्वी नाग के फन पर टिकी है। बच्चों के सिर पर आर्शिर्वाद के रुप में हथेली रखने का अर्थ नागवंशीय सम्राट की तरह पराक्रमी होने की कामना दर्शाना है।

वैदिक आर्यो ने शांति प्रिय श्रमणों के क्षेत्रों पर अधिकार किया था जबकी बाकी मूलनिवासी नाग-द्रविडों के राज्य सही सलामत थे और आर्यो की हिंसा का जवाब प्रतिहिंसा से देने में माहिर थे। आदिवासी नाग शक्ति का आर्यो से कठोर संघर्ष हुवा। आर्य जहाँ भी गये नागों ने आक्रमणकारी आर्यो पर बदले की कार्यवाईयां जारी रखी।

मान॰ शीतल मरकाम के अनुसार वैदिक विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने आदिवासियों पर अपनी पुरोहिती प्रस्थापित करने की कोशीश की। इसलिये परिकुपारलिंगो ने पशु के बजाय ब्राह्मणों की बलि ''सल्लागांगरा'' शक्ति को चढाने का आदेश दिया। तबसे आदिवासी ''सल्ला गांगरा'' को ब्राह्मणों की बलि चढाते रहे है। मूलनिवासी नाग अपने पर हुये हमले का प्रतिशोध लेकर ही दम लेते थे। इसलिये ब्राह्मणों ने नागों के बारे जो कहावतें बनायी वे आज तक कायम है। आज भी यह विश्वास पाया जाता है कि नाग को छेडना ही नही चाहिये। उसे छेड दिया तो जीन्दा नही छोडना चाहिये अन्यथा वह अपना प्रतिशोध हर हाल में पूरा करता है। यह कहावत आर्य ब्राह्मणों ने साँपों के लिये नही बल्कि मूलनिवासी द्रविड-नागों के बारे में बनाई थी। जब भी ब्राह्मणों ने दक्षिण में बढना चाहा तब तब नागों के हाथों पराजय का सामना करना पडा और तरह तरह की मुसीबतें झेलनी पडी। इसी वजह से ब्राह्मण दक्षिण दीशा को अपवित्र तथा हानिकारक मानते है।

नागों के बढते प्रभाव के कारण ब्राह्मणों ने मजबुरन कई परिवर्तन किये जैसे ऋषियों, देवों की अनैतिकता का अनुकरण सामान्य लोगों ने नही करना चाहिये; दिर्घतमा ने बहूपति विवाह बन्द कराये, नियोग के नियमों को नैतिकता के अनुरुप बनाया। बाप–बेटी, भाई–बहन, माँ–बेटा, दादा–पोती इ॰ के विवाहों, लैंगीक संबंधो पर रोक लगायी गई। गुरु की बीबी से लैंगीक संबंध को घोर पाप माना गया। जुँयें पर नियंत्रण लगाया गया। (Dr. Babasaheb Ambedkar, Vol. 4, P. 304-306) कलियुग आम जनता के बेहतरी तथा

ब्राम्हणों की शोषण-व्यवस्था के लिये नुकसानदेह था। मनु के अनुसार धर्म की रक्षा करने में असमर्थ राजा कली है। आर्य ब्राह्मणों के राजा ब्राह्मणधर्म की रक्षा करने में असमर्थ थे क्योंकि नागों का राजनीतिक रुप से जबर्दस्त पुनरुत्थान हो रहा था। नाग समुदाय ने तक्षिला पर अपना अधिकार प्रस्थापित किया। नागों ने हस्तिनापुर पर आक्रमण करके पांडवों के पोते परिक्षीत दुसरे को मार डाला। परिक्षित के पुत्र तिसरे जनमेजय से भी नागों का युध्द हुवा लेकिन वह नागों को परास्त नही कर पाया। जनमेजय का काल 1150 इसापूर्व माना गया है। नागों के लगातार आक्रमणों के कारण तथा गंगा की प्रलयकारी बाढ के कारण कुरु हस्तिनापुर छोडकर अलाहाबाद के पास कौसान्द्री में चले गये। नागों ने काशी में अपने बलाढय साम्राज्यों की स्थापना की। काशी के राजा वैदिक धर्मप्रथाओं के विरोधी होने का उल्लेख शतपथ ब्राम्हणा में आया है। नागवंशीय पार्श्वनाथ का काल महावीर के 200 साल पहले का यानि इसापुर्व 9 वी शताब्दी का माना गया है। (एच. एल कोसारे, p.87-89) नाग-संस्कृति में स्त्रियाँ राज्य की प्रमुख होती थी।

इसापुर्व सातवे शतक तक लगभग सभी वैदीक आर्य राजाओं के साम्राज्यों का पतन होकर वे नष्ट हो चुके थे। प्राचिन काल में भारत ने जो गौरव हासिल किया उसका सारा श्रेय भारत के मूलनिवासी द्रविड-नागों को ही जाता है। मूलनिवासी नाग लोग ही वह लोग है जिन्होने दुनिया में भारत को महान और गौरवशाली बनाया है।

भारत के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना यानी मगध साम्राज्य का उदय होना है। इसापूर्व सातवी शताब्दी में राज्यक्रांती होकर काशी के नागवंशीय राजा शिशुनाग (शीशुनाक) को मगध के सिंहासन पर बिठाया गया। सीसुनाग (642 B.C.) को मगध राज्य के संस्थापक के रुप में जाना जाता है। शिशुनाग के पश्चात बुध्द के समकालिन बिंबीसार नागवंश के राजा हुये। नाग वंश के पाँचवे राजा बिंबीसार के शासन में वह विशाल साम्राज्य में बदल गया। उन्होने बौध्द धर्म अपनाया था।

बुध्द (इसापुर्व 563-483) के जन्म के पहले भारत कई छोटे बडे सोलह साम्राज्यों में विभाजित था। ये साम्राज्य थे अंग, मगध, काशी, कोसल, व्रिजी, माला, चेदी, वातसा, कुरु, पांचाल, मत्स्य, सौरसेना, अस्मका, अवंती, गांधार, तथा कम्बोज। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार इन संघों, गणों में या तो प्रजातंत्र था या फिर कुछ महत्वपुर्ण परिवार मिलकर राज्य को चलाते थे। सिध्दार्थ गौतम के जन्म के समय राजा बनने की बारी उनके पिता शुध्दोधन की थी। (Dr. Ambedkar, vol. 11 , p. 1) बुध्द जिस शाक्य कुल के थे उनकी भूमि गणभूमि थी। भूमि शाक्य गणों की सामुहिक भूमि मानी जाती थी इसलिये राजा होने के बावजुद भी उसे खेती के काम मे मदत करनी पडती थी। (एच. एल कोसारे, p.134])

श्री वर्णेकर तथा जगदिश कश्यप के अनुसार गौतम बुध्द मोरीय वंश के थे।(व्यंकटेश आत्राम, p.56) जे. एफ. हेविट के अनुसार गौतम बुध्द की माँ माया कपिलवस्तु के पूर्व का प्रदेश ''कोईया'' इस कोलारियाँ गांव की निवासी थी। कोई, कोया, कोईया, कोईतुर इनका अर्थ गोंड समाज होता है। इसलिये गौतम बुध्द की माता माया गोंड समाज की थी। गोंडो में साल वृक्ष को अपना कुलदेवता मानकर पूजा जाता है। गोंड स्त्री के प्रसुती में अडचण पैदा होने पर उसे साल वृक्ष का पानी पिलाया जाता है। माया व्दारा सालवृक्ष की डाल पकडकर गौतम बुध्द को जन्म देने की बात से भी उनके गोंड होने का संकेत मिलता है। गोंड समुदाय ही प्राचिन काल से ही पिपल वृक्ष को अत्यंत महत्व देता है। गोंडों के शहर मोहेंजोदारो हरप्पा में भी पिपल पत्तें के चित्र, मुद्रा इ॰ प्राप्त हुये है। गोंड चिंतक पिपल के नीचे साधना करते है। बुध्द को भी पिपल वृक्ष के नीचे ही ज्ञान-अंर्तदृष्टी

(insight) प्राप्त हुयी। शिल्प चाहे व्दार के हो या गुम्बदनुमा वे पिपल के पत्ते की कमान जैसे होना बौध्द धर्म की विशेषता है। बुजुर्ग, श्रध्देय पुरुषों के शरिर के अवशेषों पर बने शिल्प को चैत्य कहते है। बौध्द धर्म में पिपल की तरह चैत्यों के महत्व का मूल भी गोंडी संस्कृती से आया है। हंसमुख सांकलिया के अनुसार गोंड राजा रावण ने चैत्यों का निर्माण किया। व्यंकटेश आत्राम ने पाली साहित्य का हवाला देकर गौतम बुध्द को गोंड मोरिया समुदाय का सिध्द किया है। (व्यंकटेश आत्राम, p.69-88)

गोंड समाज में जीवित व्यक्ती वेण अवस्था तथा मृत व्यक्ति पेन अवस्था में माना जाता है। वेनगोदा (वैनगंगा), पेनगोदा (पैनगंगा) और पेन्कढोडा नदियाँ आदिवासी गोंड सभ्यता की प्रतिक है। मान॰ लटारी कवडु मडावी के अनुसार आदिवासियों में शिव, महादेव, मोठादेव, बडादेव, बुढापेन, फडापेन, बडापेन, पेरसापेन इ॰ पेन की पूजा होती है। पेन का संबंध गणों से है। बुढापेन, फडापेन यह आदिवासियों का आद्य गणपुरुष है। आदिवासी शेर के गले के बाल (आयाळ), लोहे की सलाख, घुंघरु इ॰ वस्तूओं को महुये अथवा साल वृक्ष पर रखते है। साल में एक बार उनकी पूजा करते है। आदिवासी संस्कृति में महुये तथा साल वृक्ष को अत्यंत महत्व है। लटारी मडावी के अनुसार पेड-पौध ों के नामपर आदिवासी परिवारों के नाम है : - सलामे (साल वृक्ष), तुमडाम (टेंबुर का पेड), कवरती (करवंद का पेड), आहके (ककडी), अटराम (धव वृक्ष) इरपाची (महुआ वृक्ष), गेडाम (वृक्ष का तना), रा (ताड) घोडाम (कढी-पत्तेका पेड) जुग्गाम (जुगई पेडों कि झाडी), कुसराम (कुसर घास), कटराम (कटहल वृक्ष), लवाटी (लवाटी घास), मरसकोले (कुल्हाडी का दंडा), पुंगाम (फुल), पुसाळी (मुंब का पेड), सलाम (साल वृक्ष), सित्ताम (सीताफल का पेड), सुरपाम (ताड वृक्ष का पत्ता), ताडाम (ताड वृक्ष), तुमडाम (तुमडी टेंबुर), तुलाबी (तुलसी, तेलसी (तुलसी), ताराम (तुरास-सर्प), उईके (साजावृक्ष), उर्याम (उंचा अशोका वृक्ष), येवनाती (येन का पेड), मरकाम (आम का पेड), पोयाम (पोय का पेड), वेलादी (वाल का पौधा), कुमडा (कुमडा), उसीप्रकार पक्षी-प्राणीयों के आधार पर बने नाम है :- कोडाम (कोंदा या बैल), कुलसंगे (हिरण), कोडवते (बैल), कुरपाची (कुर-कांबडी), केवा, कोवे, कावाची (लाल बंदर), मलगाम (मोर), मिनगाम (मछली), नेताम (कुत्ता), पिट्टो (गोरैया), पेन्दाम, पेन्दोर (सुअर), सयाम (सारसकृ, वाडीवा (कठफोडा), येरमे, येडमी (भैंस), कोल्हीया 7 देवे (लोमडी), अल्लाम (चुहा), कोडापे (बैल), सिराम (बिल्ली), तोतला (तोता), ताराम (तरास-सर्प), वरखडे (जंगली बील्ली) (बहुजन नायक, नागपुर दि. 22 एप्रेल 2001) गोंडवाना मुक्ति सैनिक दल के सरसेनापती मान॰ शितल मरकाम के अनुसार आदिवासियों को उपरोक्त वृक्षों ओर पशु-पक्षियों के संरक्षण की जीम्मेदारी होने के कारण ही उनके ये पारिवारिक नाम पडे है। जैसे मरकाम इनका नाम आम का पेड दर्शाता है। मरकाम समुह को आम खाना मना है। वे आम की लकडी का भी उपयोग नही कर सकते। गण-व्यवस्था के अंतर्गत जीस गण को जीस चिज की रक्षा या पैदावार का काम दिया गया था वे उस चिज का उपभोग नही कर सकते थे। यह आदिवासियों की गण-व्यवस्था की कर्तव्य-निष्ठा को दर्शाती है।

बुध्द के काल में नागों की मातृसत्ता पध्दती कितनी सशक्त थी इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है की ब्राम्हण भी अपने नाम माँ के नामपर ही रखने लगे थे जैसे बुध्द का शिष्य रुपसारी का पुत्र सारिपुत्त ब्राम्हण, मोगली का पुत्र मोगलिपुत्त इ॰।

कई आर्य-ब्राह्मणों ने खुद को श्रमण विचारों का जतलाकर श्रमण मत में भ्रम निर्माण करने की पुरजोर कोशिश की है। ऐसे ब्राम्हणों और उनके मतों को बुध्द साहित्य में

''ब्राह्मण-श्रमण'' तथा मिथ्यादित्ती कहा गया है। बुध्द ने ऐसे 62 मतों को मिथ्यादित्ती यानी गलत-मत करार दिया है। ब्राह्मणों को श्रमणों के भेस में मूलनिवासियों की टोह लेकर उनकी जासूसी करना आसान था। ब्राम्हणों को यह डर बना रहता था कि मूलनिवासी उनपर आक्रमण न कर दे। इसलिये शायद आर्य अपनी हथेली को नाग के फन की तरह उँचा करके जाहिर करते थे कि वे शक्तिशाली नाग जाति के मित्र है। ताकि नाग जाति उन्हे अपना शत्रु समझ कर हमला न कर दे। उस काल में हथेली को नाग की तरह फैलाने का मतलब खुद को आदिवासी द्रविड-नाग जाति का समर्थक दर्शाना था यही तर्कसंगत है। बाद में इसे ब्राह्मणवादियों ने आशिर्वाद के रुप में प्रचारित किया।

ईसापूर्व सातवी शताब्दी में बुध्द के पहले महाभारत की तमाम क्षत्रिय वांशीक साम्राज्य तबाह, बर्बाद और नष्ट हो चुके थे। नागों ने तक्षिला, पातालपुरी, उद्यानपुरी, पदमावति, भोगपुरी, नागपुर, अंग या चांपा, क्षेत्रों में तथा लिच्छवी, माला, मोरीया इ. अपने गणराज्य राज्य कायम किये थे। ब्राह्मणों के साहित्य में लिच्छवी, माला, मोरिया इ. व्रत्या लोगों के यानि मूलनिवासी नाग-द्रविडों के साम्राज्यों का उल्लेख है। उनकी सांस्कृतिक तथा व्यवहारिक भाषा प्राकृत थी। वे ब्राह्मणों का सम्मान नही करते थे, बल्कि वे अरहंतों का सम्मान करते थे और चैत्यों की पूजा करते थे।(http://histhink.wordpress.com/ Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) ईसापूर्व 1000 वर्ष पहले की कलाकृतियों में भी नाग समुदाय के आदमी-औरतों को उनके सीर अथवा कमर पर फन वाले नागों को दिखाया गया है। ईसापूर्व 500 वर्ष पहले नाग द्रविडों के 16 गणराज्य थे जिन्हे महा जनपद कहा जाता था। इन गणतंत्रों का विस्तार संपूर्ण गंगा के क्षेत्र, अफगानिस्तान, बंगाल तथा महाराष्ट्र तक था। आर्यो के आने के पहले भारत नाग-भूमि था। उसकी संस्कृति नाग संस्कृति थी। जब नागवंश के राजा अज्ञातशत्रु मगध में राज करते थे उस वक्त ईसापूर्व 623 में बुध्द का जन्म हुआ। बुध्द खुद भी नागवंशी थे। कश्मीर में नाग लोग बसे थे जो बाद में बौध्द बने।(Kashmir Problem Has Origin In Fall Of Buddhism Dr. K. Jamanadas, /Kashmir Problem Has Origin In Fall Of Buddhism.htm)

फर्ग्युसन के मुताबिक सर्प पूजा तुरानियन लोगों की विशेषता है। सर्प-पूजा वेद तथा बायबल के तत्वों से पूरी तरह से विपरित है। भारतीय परिपेक्ष में तुरानियन से उनका तात्पर्य नाग-द्रविड लोग है। वेदों की तरह झेंड अवेस्टा में भी जिक्र है कि आर्य कभी भी कहीं भी सर्प पूजक नही रहे है। फर्ग्युसन के मुताबिक प्राचीन समय से ही कश्मीर सर्पपूजा का केन्द्र रहा है। चीनी प्रवासी ह्यूएन त्सांग के मुताबिक काबुल से कश्मीर तक सर्पपूजा होती थी। नाग लोग बाद में बुध्दीस्ट बने। अबुल फजल की आईने अकबरी के मुताबिक कश्मीर में सन 1556-1605 के दौरान 45 शिव के मंदिर, 65 विष्णु के मंदिर, 3 ब्रह्मा के मंदिर, 22 दुर्गा के मंदिर थे जबकि नाग के मंदिरों की तादाद 700 थी।(Fergusson, p. 47; http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) कश्मीर में कई जगहों के नामों के बाद नाग यह शब्द लगाया जाता है जैसे कि अनंतनाग, शेषनाग, नीलनाग, नागाबाल, कोकरानाग, सुखनाग इ.।

वृक्षों को नाग देवता के नाम से पूजा जाता रहा है। वेदों में वृक्षपूजा का कहीं भी उल्लेख नही है। दिध्घ निकाय में किसी भी वृक्ष देवता का नाम नही है क्योंकि वृक्ष को सर्प देवता माना जाता था। वृक्षों की खोह में सांप पाया जाता है। कहा जाता है कि वे अपनी इच्छा से कोई भी रुप धारण कर सकते है। रीस डेविस के मुताबिक बौध्द धम्म

के विकास के वक्त सर्पपूजा का उत्तरी भारत में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।(Rhys Davids, "Buddhist India", p. 232) मार्शल, मॅके (Mackay), पिगॉट (Piggot) तथा व्हिलर के मुताबित भारत के प्राचीन धार्मिक विश्वासों तथा परंपराओं का मूलाधार सिंधु घाटी सभ्यता में है। मसलन हिरण, बाघ, हाथी, सांड, तथा राइनोसेरोस तथा सांप इ. महत्वपूर्ण जीव जो मोहेन्जोदारो और हरप्पा की कला वस्तुओं में दिखाई देते है उनका बौध्द कला में महत्वपूर्ण स्थान है। पवित्र माने गए वृक्ष जैसे कि Ficus religiosa तथा पिपल वृक्ष का धार्मिक महत्व है। बौध्दों में यह बोधी वृक्ष का प्रतिक है।

त्रिशुल में बीच की नोंक बडी होती है क्योंकि उसका इस्तेमाल हथियार के तौर पर किया जाता है। इसलिये त्रिशुल का दंडा लाठी की तरह लंबा होता है। लेकिन बौध्द चिन्ह त्रिरत्न जो बुध्द, धम्म तथा संघ है में गोलाकार होता है। बीच की नोक छोटी होती है। इस चिन्ह में कोई हँडल नही होता। यह चिन्ह बुध्द मूर्ति या बुध्द तस्वीर की छाती पर भी अंकित होता है। इस चिन्ह को ब्राह्मणों ने विष्णु की तस्वीरों में लगाना शुरु किया।

डॉ. अम्बेडकर ने सन् 1956 में लाखों दलितों को बौध्द धम्म की दीक्षा नागपुर में दी क्योंकि नागपुर नागों की भूमि है। नाग हमेशा से ही बौध्द धम्म के है। बौध्द भिख्खु को सम्मान से 'नाग' संबोधित किया जाता था।(http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) बुध्द खुद नागवंशी थे। ब्राह्मण उन्हे व्रत्या क्षत्रिय कहते थे। नालंदा नाम नालंदा नाम के नाग पर पडा है। तक्षक इतिहास में प्रसिध्द नागवंश है।

नागों में सामाजिक समानता को महत्पूर्ण स्थान था। बाशाम (Basham) के मुताबिक प्राचीन तमिल साहित्य में कहीं भी जाति शब्द का उल्लेख नही है। इससे स्पष्ट है कि सातवहन के राज में कोई जाति-व्यवस्था नही थी। संगम साहित्य का काल तीसरी शताब्दी है। दक्षिण भारत में कई छोटे-बडे राज्यों ने एक आकर अपना संघराज्य (federal republic) कायम किया था। नाग लोगों के इस गणतांत्रिक संघराज्य को फनीमंडल या नागमंडल कहा जाता था।(Kosare, p. 179, 251; http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) सम्राट शिशुनाग के बाद नंद वंश ने मगध पर राज्य किया। नंद वंश में नौ नंद उत्तराधिकारी है। उनका वंश नाग वंश था। ब्राह्मण उन्हे नीच जाति का कहकर उनसे नफरत करते थे। महा पदमा और नंदा ये दो नाम ही हमें ज्ञात है। यह नाम सांप के भी नाम है। सम्राट अशोक तथा उनके उत्तराधिकारी भी नाग वंश के थे।(Fergusson, p. 64; (http://histhink.wordpress.com/ Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm)

जैन सम्राट अजातशत्रु (c.492 BC – c. 460 BC)

अजातशत्रु राजा बिंबीसार के पुत्र थे। उन्होने मगध साम्राज्य पर लगभग ईसापूर्व 492 से 460 तक राज किया। वे महावीर तथा बुध्द के समकालीन थे। मथुरा म्युजियम के शीलालेख में अजातशत्रु को वैदेहीपुत्र अजातशत्रु कुनिका कहा गया है। अजातशत्रु

की कथाएं बौध्द त्रिपीठकों तथा जैन अगमों (Agamas) में है। जैन परंपरा के मुताबिक अजातशत्रु राजा बिंबीसार व रानी चेलना के पुत्र थे। बौध्द परंपरा में उनको राजा बिंबीसार व रानी कोसला देवी का पुत्र कहा गया है। दोनों परंपराओं में इन रानियों को वैदेही कहा गया है। दिध्धनिकाय के मुताबिक रानी कोसलादेवी महाकोसल राजा की बेटी तथा प्रसेनजीत की बहन थी। महाकोसल राजा व्दारा कासी शहर बिंबीसार को शादी में भेंट के रुप में दिया गया था। अजातशत्रु देवदत्त का अनुयायी था। अजातशत्रु ने देवदत्त के कहने पर अपने पिता बिंबिसार को जेल की कोठरी में कैद किया। देवदत्त को तबतक चैन नही मिला जबतक बिंबिसार जो बुध्द का अनुयायी था उसे मार नही डाला गया। बिंबिसार की मौत के बाद राजा प्रसेनजीत ने कासी शहर को वापस अपने कब्जे में किया। अजातशत्रु तथा प्रसेनजीत में युध्द हुआ। शांति समझौते के मुताबिक प्रसेनजीत ने अपनी बेटी वजीरा से उसकी शादी कर दी। अजातशत्रु को उससे उदयभद्र नाम से बेटा हुआ।

अजातशत्रु ने वैशाली, कासी तथा कोसल जीतने के बाद अपने राज्य के पडौसी 36 गणतंत्रों को अपने कब्जे में किया। अजातशत्रु के राज्य में बिहार, चंदीगढ़, हरियाण ा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा लगभग एक चौथाई मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, झारखंड का कुछ भाग, प. बंगाल और नेपाल का समावेश होता था।

अजातशत्रु की बर्बर हत्या उसी के बेटे उदयभद्र ने ईसापूर्व लगभग 461 में की। यह प्रमाण है कि अज्ञातशत्रु जैन धर्म को मानने वाला था।(http://en.wikipedia.org/Ajatasatru - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) आर्कलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने एक उत्खनन में इंटों से बनाये गए एक बौध्द स्तुप की खोज की। ऐसा माना जाता है कि इस स्तुप का निर्माण अजातशत्रु ने बुध्द के अवशेष पर किया था। (Bihar Times 29 May 2000)

जैन सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य

चंद्रगुप्त मौर्य के सत्ता में आने की कहानी स्पष्ट नही है। (http://en.wikipedia.org/Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) चंद्रगुप्त मौर्य के वंश के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। कुछ लोगों का मानना है कि वे नंद राजा के दासी से उत्पन्न पुत्र थे तो दिगर लोगों का मानना है कि वे मोरों को साधने वाले समुदाय से ताल्लुक रखते थे।(http://indiafirsthand.com//Story of Alexander the Great and Chandragupta Maurya _ India First-Hand.htm) कुछ लोगों का मानना है कि चंद्रगुप्त मौर्य अलेक्झांडर के क्षत्रप थे। अलेक्झांडर तक्षिला शहर पर कब्जा करने के बाद अपने एक क्षत्रप ससीगुप्त के हवाले कर वापस चला गया। ससीगुप्त को ग्रीक में ससीकोट्टोस के नाम से जाना गया है। ससी और चंद्र दोनों समानार्थी शब्द है।(http://indiafirsthand.com//Story of Alexander the Great and Chandragupta Maurya _ India First-Hand.htm)

मान. व्यंकटेश आत्राम के मुताबिक चंद्रगुप्त के पिता मोरीय जमात के प्रमुख थे। वे युध्द में मारे गये। मरा, मुरा, मोरी, मोरीया इ॰ शब्द वृक्ष निर्देशक है। ''मोरीय गण'' का अर्थ ''वृक्ष गण'' होता है। मान॰ पि. आर. देशमुख के अनुसार मुरा यह ''मारीया

गोंड'' या ''मुरीया गोंड'' जमात है जो वर्तमान गोरखपुर-क्षेत्र में थे। ''मोरीय'' जमात तथाकथित ''मुरा'' नामक स्त्री के पहले से अस्तित्व में थी इसलिए इस स्त्री से मौर्य वंश के उगम होने का सवाल ही पैदा नही होता।(व्यंकटेश आत्राम, p.56, 57)

चंद्र गुप्त मौर्य ने लगभग ईसापूर्व 322 में अलेक्झांडर ने उत्तर-पश्चीमी भारत के जीते हुए सभी क्षेत्र दोबारा अपने कब्जे में कर लिये। उन्होने ग्रीक तथा ईरान से अच्छे संबंध बनाये रखे। सिलेउसिड (Seleucid) राजा सीलेउसस प्रथम (Seleucus I) के साथ उन्होने शांति समझौता कर उनसे वैवाहीक संबंध कायम किया। चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में ग्रिक इतिहासकार मेगास्थेनेस (Megasthenes) थे। सम्राट चंद्रगुप्त ने जैन ध र्म को स्वीकार किया था तथा वृध्दावस्था में अपने अपने बेटे बींदूसार को राजगद्दी पर बिठाकर खुद जैन धर्म की शिक्षा के मुताबिक श्रमण मुनी बन गए थे।

अजिविक पंथी सम्राट बिंदुसार

बिंदुसार चंद्रगुप्त मौर्य के बेटे थे। उनकी मां का नाम दुर्धरा था। 22 साल की उम्र में उन्हे राज्य की बागडौर दी गई। अजिविक पंथ की स्थापना मक्काली घोषाल ने की थी। इस पंथ का मानना था कि दुनियां में सब कुछ पूर्वनिर्धारित है। यानि जैसा जो कुछ हो रहा है उसे अपनी नियति मान कर कबूल कर लो। बिंदुसार ने अमित्रघाथा (Amitraghatha) यानि दुश्मनों का विनाशक उपाधी धारण कर अजिविक पंथ कबुल किया। जैन या बौध्द धम्म इसलिये कबुल नही किया क्योंकि ये धर्म अहिंसक थे और उसकी साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा के अनुरुप नही थे। उनके राज्य में भारत के उत्तरी, पूर्वी, मध्य भाग थे। साथ ही अफगानीस्तान और बलुचीस्थान के भी कुछ हिस्से थे। राज्य का विस्तार दक्षिण के कर्नाटक तक था। बिंदुसार ने मित्र देश चोला, पांडया तथा चेरा के राज्यों पर कब्जा नही किया। इन दक्षिणी राज्यों के अलावा कलिंग यानि आध ुनिक ओरिसा भी बिंदुसार के राज्य का हिस्सा नही था। उसका राज्य भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश मिलाकर भी बने राज्य से बडा था। उनका कार्यकाल इसापूर्व 298 से 272 वर्ष का रहा है। उनके दरबार में ग्रीक राजदूत Deimachus (Strabo 1–70) थे। उसके दो बेटे सुसीमा और अशोक क्रमशः तक्षिला और उजैन के वाईसरॉय थे। उसके शासन में तक्षिला में दो बार बगावत हुई। पहली बगावत का कारण बडे बेटे सुसीमा का कुप्रसाशन था। दूसरी बगावत की वजह नामालुम है जिसे बिंदुसार अपने जीवनकाल में नही दबा सका। बिंदुसार की मौत (ईसापूर्व 272) के बाद इस विद्रोह को अशोक ने दबा दिया।(http://en.wikipedia.org/Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia. htm; http://en.wikipedia.org/Bindusara - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http:// nirmukta.com//The Great Nastik Revolt _ Nirmukta.htm; http://en.wikipedia.org/ Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.indianetzone. com/Bindusara, King of Maurya Kingdom.htm)

महान बौध्द सम्राट अशोक

[Information on Ashoka is synthesized from the articles given in following web pages :- http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great.htm; (http://in.answers.yahoo.com/Emperor Ashoka - Ashoka the Great - Do you know this great emperor an Ideal ruler - Yahoo! Answers India.htm; http://en.wikipedia.org/Edicts of Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; (http://www.porchlight.ca/EMPEROR ASHOKA.htm; EMPEROR ASOKA : MESSENGER OF PEACE & CULTURAL REVOLUTION IN INDIA By Sona Kanti Barua; http://www.about.com/Ashoka the Great Biography.htm; http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; KING ASHOKA His Edicts and His Times.htm; http://timesofindia.indiatimes.com/'Trade, not invasion brought Islam to India' - Times Of India.htm; The Edicts of King Asoka An English rendering By Ven. S. Dhammika]

अशोक का अर्थ जिसे कोई शोक या गम नही है। अशोक के पिता सम्राट बिंदुसार तथा माता शुभद्रांगी थी जो तेलंगाना के चांपा की बेटी थी। अपने युवाकाल से ही अशोक को युध्द का प्रशिक्षण हासिल हुआ। वह बहुत ही कुशल योध्दा तथा कुशल शिकारी भी था। प्रचलीत किस्से के मुताबिक एक बार अशोक ने मात्र लाठी की मदद से एक शेर को खत्म कर दिया था। युवा अवस्था में ही उसने अपने पिता के राज्य के विद्रोहों को दबा दिया था। उसकी ख्याती क्रूर योध्दा की थी।(http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great.htm)

अपनी किताब 'द आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में विन्सेन्ट स्मिथ (Vincent Smith) लिखते है कि सिलोन के बौध्द भिख्खुओं व्दारा अशोक के बारे में लिखा कि उन्होने राजगद्दी पर काबिज होने के लिये अपने 99 भाईयों की हत्या कर दी। यह कहानी बेतुकी और मनगढंत है क्योंकि इसका मकसद यह जताना है कि बौध्द धम्म में आने से पहले अशोक कितना ज्यादा क्रूर था। विन्सेन्ट स्मिथ के मुताबिक सम्राट अशोक ने अपने भाईयों का ठिक से खयाल रखा है इस बात का सबूत खुद सम्राट अशोक के शिलालेखों से मिलता है। लाहीरी के मुताबिक बिंदुसार की मौत के बाद अशोक को राजगद्दी हासिल करने में चार साल लग गए इसलिये उनके राजगद्दी के लिये कुछ विरोध अवश्य ही हुआ था।(http://timesofindia.indiatimes.com/'Trade, not invasion brought Islam to India' - Times Of India.htm)

चार्लस ड्रेकमेयर (Charles Drekmeier) के मुताबिक बुध्दिस्ट कथाओं में धर्मांतरण के पहले अशोक को 'चंड-अशोक' यानि क्रूर अशोक कहने के पीछे का इकलौता मकसद यही है कि यह जताया जाये कि बौध्द धम्म कबुल करने के बाद अशोक में कितना बडा परिवर्तन हुआ है। इसलिये धर्मांतरण के पहले अशोक को अतिरंजित रुप से बहुत ज्यादा क्रूर जबकि धर्मांतरण के बाद बहुत ज्यादा धार्मिक जताया गया है।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

अशोक की कलिंग में काउरवाकी नाम की मछुआरन से मुलाकात हुई। अशोक ने उसे अपनी दूसरी या तीसरी बिवी बनाया।(http://www.culturalindia.net/Ashoka - Ashoka the Great, Emperor Asoka, Ashoka Biography, Ashoka Life History.htm)

सम्राट अशोक ने मौर्य साम्राज्य पर 37 साल तक यानि ईसापूर्व 268 से लेकर ईसापूर्व 232 तक अपनी मृत्यु तक राज किया। उनका साम्राज्य पश्चिम में पाकिस्तान तथा अफगानीस्तान का बडा हिस्सा शामिल था। उत्तर दीशा में हिमालय पर्वत उनके साम्राज्य की नैसर्गिक सीमारेखा थी। पूरब में उनका साम्राज्य आसाम तक था। सम्राट अशोक ने कलिंग को भी अपने साम्राज्य में शामिल किया।(http://en.wikipedia.org/History of India - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) कलिंग में राजाओं की पार्लिमेंटरी लोकशाही कायम थी। कलिंग ऐसा राज्य था जिसे अपने सार्वभौमित्व, स्वतंत्रता और गणतंत्र व्यवस्था पर फक्र था। अशोक के 13 वे शिलालेख से पता चलता है कि इस युध्द में 1 लाख से ज्यादा सिपाही मारे गए। प्रतिरोध में लडने वाले लोग आम लोग भी भारी तादाद में मारे गए। देढ लाख से ज्यादा लोग विस्थापित हुए। जब अशोक अपनी जीत के बाद कलिंग का मुआईना कर रहा था तो उसे हर तरफ लाशें नजर आयी जिसपर उनके परिजन मातम मना रहे थे। इस दृष्य ने उनके मन को दहला दिया। वह सोचने लगा कि यह कौनसी जीत है। अगर यह जीत है तो फिर हार क्या है ? यह न्याय है या अन्याय है ? मैने यह क्या कर दिया ? लाशों पर मंडरा रहे गीदड, कौवे इ. क्या मेरी जीत के प्रतिक है या हार के ? कर्लीग युध्द में हुए जनसंहार को देखकर उनका मन पश्चाताप से भर उठा। उन्होने बौध्द धम्म कबुल कर लिया और खुद को लोगों की सेवा में अर्पित कर दिया।(http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great. htm; http://storieswithasoul.wordpress.com/Maurya Empire – Emperor Ashoka the Great _ storieswithasoul.htm) ईसापूर्व 260 को उन्होने बौध्द धम्म को राजधर्म का दर्जा दिया। बौध्द धम्म के सदाचार के मूल सिधान्त पूरे मन से अपनाए। ईसापूर्व 250 में उन्होने विदेशों में धम्म का प्रचार और प्रसार किया।(http://www.india-intro.com/ Emperor Ashoka The Great.htm)

सम्राट अशोक मौर्यवंशी यानी गोन्ड ही थे यह बात अशोक चक्र से साबित होती है। गोंडों में जीवित व्यक्ति को वेण तथा मृत बुजुर्गो को पेन कहा जाता है। गोंडों के विश्वास के अनुसार चार कुल गटों में कुल 22 देवताएं तथा आद्य स्त्री-पुरुष जंगो-लिंगों मिलाकर 24 गोंड आद्य देवताएं (पेन) है जिनमे 12 पुरुष तथा 12 स्त्रियों का समावेश है। अशोक-चक्र के 24 आरे इन्ही आद्य बुजुर्गो के प्रतिक है। उसी प्रकार 24 आद्य-बुध्दों की उनसे एकरुपता होने का आभास होता है। अशोक-स्तंभ पर पाया गया मत्स्य गोंडी विश्वास के अनुसार ''जंगो'' है। अशोक-चक्र के बाजु में स्थित दौडता घोडा, दौडता नंदी, हाथी, इ॰ सभी गोंडों में विद्यमान विश्वास, मान्यताओं के ही प्रतिक है। गोंडी भाषा में घोडे को कोडा तथा घोडादेव को कोडापेन कहते है। ताडोबा जंगल (चंद्रपुर) में आज भी तादोबा और कोदोबा की स्मृति यात्रा के रुप में कायम है। गोंडो में कोडापा गोत्र होकर उनका कुलचिन्ह घोडा होता है।(व्यंकटेश आत्राम, p.58-59) सम्राट अशोक मारा गोंड (मोरीया) वंश के होने के कारण अशोक व्दारा चौमुद्रांकित सिंहमूर्ति सोडुम, सोनाम, सुडराम, सिडाम, चिडाम इ॰ सिंह अर्थ के चारदेवे (Four brother phratry) व उनके कुलचिन्ह सिंह को ही अशोक ने अंकित किया है। गोंडों के आदिम विश्वास निम्नलिखित

गीत में व्यक्त होता है :- '' पारेन्डन पारेन्ड रंगलुंग कळीकुन। रावुड रायताड तिरिइंता चाकुम।। नालुंग सगाना कोयवाना अल्पुम। भुईराइंताडे सांगोता पिर्तम।।'' यानि चार गोत्र संचों के 22 देवता और जंगो-लिगो ये आद्यदैवत मिलकर चौबीस वंशोत्पादक देवता अविरत श्रृष्टी-चक्र चला रहे है। जिससे भारत (गोंडवंश) पृथ्वी जैसा चक्रांकित होकर फैला है। (व्यंकटेश आत्राम, p.63,65,66)

सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य को चार हिस्सों में विभाजित किया था। जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। अशोक के शिलालेखों के मुताबिक साम्राज्य के यह चार भाग पूर्व में तोसाली, पश्चिम में उज्जैन, दक्षिण में सुवर्णगीरी, तथा उत्तर में तक्षिला थे। इनके प्रमुख राजकुमार थे जो सम्राट अशोक के प्रतिनिधि के तौर पर काम देखते थे। उनके सहयोग के लिये मंत्रिपरिषद होती थी। सम्राट अशोक ने भले ही आक्रमण को त्याग दिया था लेकिन उन्होने अपनी विशाल सेना कायम रखी थी ताकि साम्राज्य की रक्षा की जा सके और अपने सामाज्य में तथा पश्चिम व दक्षिण एशिया में शांति बनाकर रखी जा सके। मेगास्थेनिस के मुताबिक सम्राट अशोक की पैदल सेना में छह लाख सिपाही थे। तीस हजार घुडसवार सैनिक थे और नौ हजार युध्द के हाथी थे। उन्होने राज्य की जानकारी रखने के लिये गुप्तचरों का विशाल जाल भी कायम किया हुआ था।

सम्राट अशोक ने अपने से बेहद छोटे पडौसी राज्यों के साथ भी शांति समझौते कायम किये जबकि वह उन्हे आसानी से अपने राज्य में फौरन शामिल कर सकता था। अशोक ने सभी समुदायों के हितों की सुरक्षा करने तथा सभी धार्मिक मतों के प्रति उदार रवैया अपनाने की नीति अपनाई।(http://hubpages.com/Ashok A Short Biography of Ashoka the Great of India.htm) लेकिन जो बातें नैतिकता के या आम लोगों के हितों के खिलाफ है ऐसी धार्मिक परंपराओं को प्रतिबंधित करने में बिल्कुल हिचक नही दिखाई।

अंतर्गत शांति और एकता कायम करने तथा रास्तों का संजाल बिछाने से आंतरिक व्यापार ने जोर पकड लिया। इंडो-ग्रिक मित्रता संधी से अंर्तराष्ट्रीय व्यापार का विस्तार हुआ। खैबर पास विदेशी व्यापार का महत्वपूर्ण मार्ग था। ग्रीक इ. हेलेनिक राज्य, पश्चिम एशिया के देश, मलय पेनिनसुला के दक्षिण एशिया के देशों से परस्पर व्यापार था। भारत रेशिम के कपडे, मसाले, उत्तेजक अन्न इ. का निर्यात करता था। युरोप तथा पश्चिम एशिया के साथ तकनीक और विज्ञान का आदान प्रदान था। व्यापार, टॅक्स, पैदावार का संकलन इ. को आसान बनाने से आर्थिक गतिविधियाँ तेज हुई। बौध्द धम्म के उसूलों से कानून का राज्य कायम करने, अंतर्गत संघर्षो को लगभग खत्म करने, अपराधों की तादाद बेहद कम करने तथा समाज में समृध्दी लाने में आश्चर्यजनक रुप से मदद मिली। जाति-व्यवस्था को नकार दिया गया तथा समानता का प्रचार और प्रसार किया गया।(http://en.wikipedia.org/Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

सम्राट अशोक के शिला तथा स्तभों पर लिखे राजादेश !

शिलाओं पर लिखे सम्राट अशोक के राजआदेश (Edicts) अशोक स्तंभ के रुप में जाने जाने वाले स्तंभों पर लिखे है। इनकी कुल तादाद 33 है। उनके आदेश दिगर शिलाओं पर भी लिखे गये है। ये आदेश ईसापूर्व 269 से ईसापूर्व 231 तक के है। ये शिलालेख आधुनिक बंगला देश, भारत, नेपाल तथा पाकिस्तान में है। इन धार्मिक आदेशों में बताया गया है कि बुध्द के सदाचार के सिधान्तों का प्रचार-प्रसार मध्य पूर्व के देशों तक दूर दूर तक हुआ है तथा बौध्दधम्म से संबंधित शिल्पों का निर्माण किया गया है।

अशोक के आदेशों को दो भागों में रखा जा सकता है 1) स्तंभादेश तथा 2) शिलादेश। शिलादेशों को दो भागों में 1) मुख्य शिलादेश (major rock edicts) तथा 2) गौण शिलादेश (minor rock edicts) के रुप में उनकी आयु के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। गौण शिलादेश आरंभिक शिलादेश है। उसके बाद मुख्य शिलादेश तथा अंत में स्तंभादेशों का निर्माण हुआ। गौण शिलादेशों में दस को ''minor rock edict I'' कहते है। इनमें बौध्द धम्म के सदाचार के नियमों का पालन करने के लिये लोगों को प्रेरित किया गया है। अंतिम 7 गौण शिलादेशोंको ''minor rock edict II'' कहा गया है जिसमें लोगों को अपने माता-पिता, बुजूर्गो तथा शिक्षकों के प्रति आज्ञाकारी होने इ. के लिये प्रेरित किया गया है। एक गौण शिलादेश कलकत्ता की एशियाटीक सोसायटी में रखा गया है जिसमें बौध्दों को बुध्द धम्म के मूल सिधान्त पढने के लिये प्रेरित किया गया है।

छह आधारभूत (basic) स्तंभालेख रेत के पत्थर पर लिखे गए है। इन में नैतिकता के नियमों का प्रचार-प्रसार किया गया है। दया, सहिष्णुता, तथा लोगों की भलाई के लिये अशोक के मन की चिंता को व्यक्त किया गया है।(http://en.wikipedia.org/Ashokan Edicts in Delhi - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

मूल रुप से अशोक के स्तंभालेखों की तादाद बहुत ज्यादा होगी लेकिन अपने लेखों के साथ दस ही बच पाये है। उनकी उंचाई चालीस से पचास फीट उंची तथा प्रत्येक स्तंभ का वजन पचास टन तक है। सभी स्तंभों को वाराणसी के दक्षिण में चुनार में बनाया गया। बाद में उन्हे सैंकडों मील दूर अलग अलग जगहों पर खडा किया गया। हर स्तंभ पर दहाडते शेर की, सांड की, या घोडे की प्रतिमा होती थी। ये स्तंभ प्राचीन कला और तकनीक का बेहतरीन नमुना है। स्तंभ तथा उपर बने जानवरों को चीकना लेप चढाया गया है जो सदियों से कायम है।(KING ASHOKA His Edicts and His Times.htm)

कहा जाता है कि अचाईमेनियन (Achaemenian) सम्राट डेरियस (Darius) ने अशोक को धार्मिक आदेश शिलालेखों के रुप में बनाने का सुझाव दिया। सम्राट अशोक ने इस कल्पना को विस्तारित करते हुए स्तंभादेश भी बनाये। शिलालेख तो दुनिया के कई हिस्सों में पाये जाते है लेकिन स्तंभादेश सिर्फ सम्राट अशोक की विशेषता है। सभी शिलादेश और स्तंभादेश स्थानीय भाषाओं में है। कोई भी शिलादेश संस्कृत में नही है। अधिकतर शिलालेख प्राकृत भाषाओं में ब्राह्मी लिपि में है। उत्तर-पश्चिमी भारत में शिलादेश खरोष्ठी लिपि में है। कंधहार तथा अफगानिस्तान में प्राप्त कुछ शिलादेश ग्रीक तथा आर्मेनियन भाषा में है। हरप्पा के बाद पहली लिखी इबारत सम्राट अशोक के ही शिलादेश है। ब्राह्मी लिपि को समझने का काम जेम्स प्रिन्सेप (James Prinsep) ने किया है।

शिलादेशों पर नैतिक सामाजिक सदाचार के नियमों पर चलने के लिये लोगों को प्रेरित किया गया है। किसी भी धर्म का नाम नही है। कुछ शिलादेशों में बौध्द धम्म के नाम का उल्लेख है लेकिन बौध्द धम्म के दर्शन की बजाय सर्वमान्य सदाचार के नियम बताये गए है। अशोक ने अपने निजी संदेश भी अंकित किये है।

अशोक अपने किये हुए अच्छे कामों का उल्लेख करते है। इसमें आत्म बढाई की भावना नही है। इसमें उनकी प्रामाणिकता और लोगों के प्रति फिक्र उजागर होती है। अशोक अपने शिलादेशों में बताते है कि लोग उनके लिये बेटों की तरह है। उनकी भलाई ही उनका मुख्य मकसद और चिंता का विषय है। शिलादेशों को अशोक ने अपने सीधे स्पष्ट शब्दों में जनभाषाओं में लिखवाया है।

सम्राट अशोक व्दारा बौध्द धम्म का विदेशों में प्रचार-प्रसार !

सम्राट अशोक के काल में ही बौध्द धम्म के प्रसार-प्रचार का काम भारत के बाहर हुआ। सम्राट अशोक के शिलादेशों तथा स्तंभादेशों (the Edicts of Ashoka) के मुताबिक विभिन्न देशों में सम्राट अशोक के प्रतिनिधि और प्रचारक बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु भेजे गए। इन देशों में श्रीलंका, ग्रीक राज्य, तथा मेडिटेरॅनियन देश शामिल है।(http://www.lucky-buddha.com//History of Buddhism.htm) सम्राट अशोक ने बौध्द धम्म को अंर्तराष्ट्रीय धम्म बनाने में बहुत बडी भूमिका अदा की है। महिन्द्र तथा संघमित्रा यह सम्राट अशोक की पहली बिवी से उज्जैन में पैदा जुडवा बेटा-बेटी थे। सम्राट अशोक ने उन पर विदेशों में बौध्द धम्म के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी। महिन्द्र तथा संघमित्रा ने ताम्रपर्णी यानि श्रीलंका में जाकर बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार किया।(http://www.india-intro.com/Emperor Ashoka The Great.htm) सम्राट अशोक ने कई प्रमुख भिख्खुओं को कश्मीर, अफगानीस्तान, सीरिया, पर्शिया,इजिप्त, ग्रीस, इटली, तुर्की, नेपाल, भुतान, चीन, मंगोलिया, कंबोडिया, लाओस, सुवर्णभूमि यानि बर्मा, थायलंड, विएतनाम, महाराट्टा यानि महाराष्ट्र, दक्षिण भारत इ. जगह भेजा। अशोक ने बौध्दों तथा गैरबौध्दों को धार्मिक संवाद के लिये आमंत्रित किया।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) श्रीलंका के राजा तिस्सा बौध्द सिधान्तों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने न सिर्फ बौध्द धम्म को अपनाया बल्कि उसे राजधर्म का दर्जा दिया। सम्राट अशोक ने बौध्द मोनेस्टरिज, शालाएं तथा बौध्द साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये विशेष विभाग कायम किया। बौध्द धम्म को सायबेरिया तक में प्रसिध्द किया। भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में ग्रीक लोग अशोक के राज्य की जनता थे। अशोक के शिलादेशों के मुताबिक ग्रीक लोगों ने बौध्द धम्म को अपनाया था। शिलादेश (Rock Edict Nb13) के मुताबिक सम्राट के राज्य में ग्रीक, कंबोज, नाभक, नभपामकीट, भोज, आंध्र, पिटिनिक, तथा पलिडा सभी जगहों में लोग देवप्रिय सम्राट के धम्म की सूचनाओं का पालन कर रहे है।(http://en.wikipedia.org/Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ग्रीक तथा आर्मेनियन भाषा में लिखे सम्राट अशोक के कंदहार में पाये गए शिलादेश काबुल म्युजियम में है। क्लिमेंन्ट ऑफ अलेक्झांड्रिया के मुताबिक ग्रीस यानि हेलेनिक विश्व में और खास कर अलेक्झांड्रिया में बौध्द समुदाय थे। उसी प्रकार ईसाईयों के पहले ही मोनेस्टीक आर्डर ऑफ Therapeutae यानि थेरावाद मौजूद था। दार्शनिक Hegesias of Cyrene सम्राट अशोक के धर्मप्रचारकों के विचारों से प्रभावित थे। Ptolemaic काल में बौध्द कब्रों के पत्थर (Buddhist gravestones) भी प्राप्त हुये है जिनपर धम्मचक्र अंकित

था। कई स्कॉलर्स का मानना है कि अलेक्झांड्रिया में ये वही बौध्दों के स्थान है जो बाद में ईसाईयत के केन्द्र बने। दूसरी शताब्दी में ईसाई रुढ़ीवादी क्लिमेंट ऑफ अलेक्झांड्रिया के मुताबिक ग्रीक विचारों पर बौध्द मत का प्रभाव पडा है। डोनाल्ड ए. मेकेन्झी (Donald A. Mackenzie) के मुताबिक दूसरी शताब्दी में बौध्द और ड्रईड दोनों ही ईसापूर्व ब्रिटेन में देखे जाते थे।(http://www.lucky-buddha.com/History of Buddhism.htm) प्रि कोलंबियन अमेरिका में भी बौध्दों का व्यापक प्रभाव था। प्रो. एफ. डब्लु. पुतनाम ने होंडुरस के जंगल में एक शिल्प देखा जो बुध्द जैसा था। अमेरिकन हापर्स मॅगझीन के जुलाई 1901 के अंक में यह बात सप्रमाण साबित की गई कि प्राचीन काल में अलास्का से पांच बौध्द भिख्खु मेक्सिको गये थे।(http://www.veda.harekrsna.cz/connections/Americas.htm) ईसा मसीह के दो सौ साल पहले अलेक्झांड्रिया में कई सन्यासियों ने सिलोन में हो रहे बुध्दिस्ट समारोह में बौध्द भीख्खु के रुप में शरीक होने का प्रयोग किया जो कामयाब हुआ। उन्हे सिलोन में सम्मानित किया गया। बुध्द की शिक्षा ईसा के दो सौ साल पहले अलेक्झांड्रीया में पहूंच चुकी थी। (Paramesh Chaudhury p. 216)

सम्राट अशोक के बाद मौर्य राजवंश !

सम्राट अशोक की मौत के बाद मौर्य साम्राज्य का धीमी गति से क्षय हुआ। सम्राट अशोक के पहले उत्तराधिकारी कुणाल बने। हालांकि कुणाल अंधे थे उन्होने आठ वर्ष तक राज किया। वे राज्य के असली शासक नही थे बल्कि राज्य के प्रमुख थे।

बौध्द सम्राट दशरथ (252–224 BCE) का शासनकाल ईसापूर्व 232 से 224 माना जाता है। दशरथ के काल में साम्राज्य के कुछ हिस्से आजाद बने। सातवहन सहित दक्षिण भारत के कई राज्य मौर्य साम्राज्य के अधिन थे। इन राज्यों का उल्लेख सम्राट अशोक ने अपने शिलादेशों में किया है। ये राज्य उनके साम्राज्य की परिधी का क्षेत्र थे और शासन के मामले में काफी स्वतंत्रता का आनंद लेते थे। सम्राट दशरथ इन दूरस्त राज्यों पर अपना नियंत्रण नही रख पाये। ये क्षेत्र जल्द ही उनसे आजाद हो गए। कलिंग की महामेघवाहन वांशीक साम्राज्य भी सम्राट अशोक की मौत के बाद अलग हो गया। दशरथ ने अपने दादा सम्राट अशोक की धार्मिक और सामाजिक नीतियों का पालन करते हुए राज किया। दशरथ मौर्य वंश के ऐसे आखरी सम्राट है जिन्होने अपने शिलादेश बनवाये है। दशरथ ने नागार्जुनी पर्वत की तीन गुफाएं अजिवक पंथ के लोगों को सौंप दी। इन गुफाओं की तिन इबारतों में उनका उल्लेख 'देवनामप्रिय दशरथ' ऐसा किया गया है। यह गुफायें उन्हे उनकी ताजपोशी के उपलक्ष में समर्पित की गई थी। सम्राट दशरथ की ईसापूर्व 224 में मौत हुई। इसके बाद संप्रति ने राजगद्दी संभाली। बुध्दीस्ट तथा जैन स्त्रोतों के मुताबिक वह कुणाल का बेटा यानि वह दशरथ का भाई था। दशरथ और संप्रति के बेहद करिबी रक्त संबंध थे लेकिन उनके पारिवारिक संबंध स्पष्ट नही है। जिस समय संप्रति ने राजगद्दी संभाली अशोक का राज्य दो हिस्सों में बांटा गया था। संप्रति ने पूर्वी क्षेत्र को जबकि उसके भाई दशरथ ने पश्चिम क्षेत्र नियंत्रित किया था। हालांकि स्मिथ के मुताबिक अशोक के राज्य का दो भागों में बँटवारा किये जाने के स्पष्ट प्रमाण नही है। संप्रति जैन धर्म का अनुयायी था। संप्रति ने अपने समुचे राज्य में जैन मंदिर कायम किये। कहा जाता है कि उन्होने अपने समुचे राज्य में 125,000 derasars का निर्माण किया। उनमें से कई आज भी अहमदाबाद, वीरमगाम, उज्जैन, तथा पालिताना में है। संप्रति ने जैन धर्म के प्रचार और प्रसार के लिये अपने दूत तथा

जैन धर्म के धार्मिक प्रचारक ग्रीस, पर्शिया तथा मध्य एशिया भेजे। लेकिन इस संबंध में कोई खोज नही की गई है। चंद्रगुप्त मौर्य तथा संप्रति ने जैन धर्म का प्रचार प्रसार दक्षिण भारत में किया। उनके शासन काल में लाखों जैन मंदिर तथा स्तुप बनाये गए।

मौर्य राजवंश का आखरी सम्राट ब्रहदथ था। वह बौध्द धम्म का कद्दर अनुयायी था। उसकी हत्या उसी के ब्राह्मण सेनाप्रमुख पुष्यमित्र शुंग ने की। पुष्यमित्र शुंग ने राजगद्दी संभालते ही श्रमण परंपरा के बौध्द धम्म, जैन धर्म तथा अजिवक पंथ के उन्मूलन का अभियान छेड दिया। हरप्रसाद शास्त्री के मुताबिक पुष्यमित्र शुंग का विद्रोह मौर्य वंश के सम्राटों व्दारा श्रमण परंपरा के धर्म-पंथों को बढावा देने तथा 1) वेदिक ब्राह्मणों की बलिप्रथा तथा कर्मकांडों के विरोध की प्रतिक्रिया थी। 2) सम्राट अशोक ने ब्राह्मणों को झूठे लोगों के रुप में बेनकाब किया। स्पष्ट है कि अशोक के ब्राह्मणों के साथ संबंध ठिक नही थे। पुष्यमित्र शुंग व्दारा सत्ता ग्रहण करने को ब्राह्मणों की श्रमण धर्मो पर जीत साबित होती है। (http://en.wikipedia.org/wiki/Maurya_Empire Written by Nathan Relke (Spring 2010); http://en.wikipedia.org/Dasaratha Maurya - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://hubpages.com/The Religion of Mauryan Emperors. htm; http://en.wikipedia.org/Maurya Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

ग्रीक-बुध्दीस्ट शासन !

ग्रेसो बुध्दिजम (Greco-Buddhism / Graeco-Buddhism) बुध्दीस्ट तथा हेलेनिक संस्कृति के मिलाप से पैदा संस्कृति है। यह मिश्र संस्कृति ईसापूर्व 4 थी शताब्दी तथा बाद में ईसवी पांचवी शताब्दी में खास तौर से अफगानीस्तान, पाकिस्तान तथा भारत के उत्तरपूर्व के सीमावर्ति क्षेत्रों में विकसित हुई। जब अलेक्झांडर ने बॅक्ट्रीया तथा गांधार के क्षेत्रों पर हमला किया तब ये क्षेत्र पहले से ही बौध्द तथा जैन प्रभाव में थे। अलेक्झांडर ने आक्सस तथा बॅक्ट्रीया में कई शहर तथा ग्रीक वसाहतें बसायी। ग्रीक वसाहतें खैबर पास, गांधार तथा पंजाब तक बसी जिसकी वजह से भारतीय तथा ग्रीक लोगों के बीच सांस्कृतिक तथा व्यापारिक आदान-प्रदान हुआ। कई ग्रीक दार्शनीक जैसे कि पायऱ्हो (Pyrrho), अनॅक्झार्चस (Anaxarchus) तथा ओनेसीक्रिटस् (Onesicritus) का चुनाव अलेक्झांडर ने खुद किया था ताकि वे मुहिम के दौरान उसके साथ रहे। वे भारत में 18 माह तक रहे। उन्होने नग्न मुनियों से संवाद कायम किया। पायऱ्हो ने ग्रीक जाकर पायऱ्होवाद (Skepticism) कायम किया। ग्रीक जीवनचरित्रकार डायओजेनेस लॅरटीअस (Diogenes Laertius) के मुताबिक पायऱ्हो के दुनिया से अलगाव की वजह भारत के मुनियों का उन पर प्रभाव था। ओनेसीक्रिटस् (Onesicritus) भी भारत के दर्शन से प्रभावित थे।

ग्रीक समुदाय इस्लामाबाद तथा दक्षिण अफगानीस्तान के ग्रेडोसिया इ. में बसे थे। अशोक के समय में ग्रीक लोगों की तादाद काफी थी।(http://en.wikipedia.org/Edicts of Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) जब पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य साम्राज्य का इसापूर्व 180 में तख्ता पलट दिया तब ग्रेसो-बॅक्ट्रीयन्स राजाओं ने भारत के प्रदेशों में अपना राज्य कायम किया और बौध्द धर्म को विकसित होने का पूरा अवसर मिला।(http://en.wikipedia.org/Greco-Buddhism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

1) ग्रेसो-बॅक्ट्रीयन राजा डेमेट्रअस प्रथम (King Demetrius I) :- ने ईसापूर्व में भारत पर पाटलिपुत्र तक हमला किया तथा उत्तरी भारत में अपना राज्य कायम किया जो इसवी पहली शताब्दी तक कायम था। ग्रेसो-बॅक्ट्रीयन शासन में बौध्द धम्म का पूरा

पूरा विकास हुआ। वास्तव में उन्होने पुष्यमित्र शुंग के बौध्द धम्म के खिलाफ चलाये जाने वाले अभियानों से बौध्द धम्म की रक्षा के लिये ही भारत में आक्रमण किया था।

2) राजा मेनांदर :- वे प्रसिध्द इंडो-ग्रीक राजा थे। उन्होने लगभग इसापूर्व 160–135 के दौरान राज किया। उन्होने महायान बौध्द धम्म के प्रचार-प्रसार में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजा मेनांदर तथा भिख्खु नागसेन के बीच ईसापूर्व 160 वर्ष को हुए प्रश्न-उत्तर संवाद को मिलिंद प्रश्न नाम की किताब में सुरक्षित किया गया है। राजा मेनांदर के सिक्कों पर ग्रीक भाषा में उन्हे {बौध्द धम्म की} ''रक्षा करने वाला राजा'' कहा गया है। कई सिक्कों पर आठ स्पोक वाला धम्म चक्र है। मेनांदर की मौत के बाद उनकी अस्थियों को राज्य के विभिन्न स्तुपों में रखा गया।(Plutarch, Praec. reip. ger. 28, 6) अशोक तथा कनिष्क के बाद मेनांदर का बौध्द धम्म के विकास में बहुत महत्व है।

प्टोलेमी (Ptolemy) के मुताबिक ग्रेसो बॅक्ट्रियनों ने उत्तरी भारत में ग्रीक शहर कायम किये थे। राजा मेनांदर ने सागाला (Sagala) नामक राजधानी कायम की जो पंजाब का आधुनिक सियालकोट है। वह बौध्द धम्म का एक सांस्कृतिक केन्द्र था। (Milinda Panha, Chap. I) डेमेट्रिअस (Demetrius) ने तक्षिला के निकट बडा शहर बसाया था जिसका पूर्ननिर्माण मेनांदर ने किया था। तक्षिला के निकट आर्कालॉजिकल स्थल सीरकॅप (Sirkap) में खुदाई की गई जहां बौध्द स्तुप तथा ग्रीक मंदिर साथ साथ बने थे। (http://en.wikipedia.org/Greco-Buddhism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) मेनांदर के बाद कई इंडो-ग्रिक राजा हुए जैसे कि झाइलोस प्रथम (Zoilos I), स्ट्राटो प्रथम (Strato I), हेलिओक्लस व्दितीय (Heliokles II), थिओफिलोस (Theophilos), पिओकोलाओस (Peukolaos), मेनांदर व्दितीय (Menander II), तथा आर्चेबायस (Archebios) इ. के सिक्कों पर 'महाराजसा धर्मिका' यानि धर्म का राजा ऐसा प्राकृत भाषा में खरोष्ठी लिपि में लिखा है। मेनांदर के उत्तराधिकारियों ने अपने सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में ''धम्म का अनुयायी'' लिखवाया तथा खुद को सिक्कों में वितर्क मुद्रा में दर्शाया। मेनांदर प्रथम का एक सिक्का ब्रिटिश म्युजियम में रखा है। इस सिक्के पर आठ स्पोक वाला धम्म चक्र अंकित है। बुध्दीस्ट सोने का सिक्का उत्तरी अफगानिस्तान के पुरातत्वीय स्थल टीलीया टेपे (Tillia tepe) की चौथी कब्र में मिला है। वह पहली इसवी शताब्दी का है। सिक्के के पीछे शेर तथा नंदीपद है। एक नग्न व्यक्ति धम्मचक्र घुमा रहा है। खरोष्ठी में इस मिथक को 'वह जिसने कानून के चक्र को सक्रिय किया' ऐसा होता है। इंडो-ग्रिक सिक्कों में हाथी का चिन्ह बौध्द धम्म के साथ संबंधित हो सकता है।

ग्रीक शासक बेहतर सिक्के भारत लाये। उन्होने परस्पर अंर्तराष्ट्रीय व्यापार कायम किया। उनकी खगोलशास्त्र, भवन निर्मिति, तथा कला सारे भारत में प्रचारित हुई। बुध्द की कलात्मक मूर्तियां तथा तस्वीरे बनाई गई।(http://www.fsmitha.com/Collapse of the Maurya Empire.htm) बौध्द धार्मिक विचार इसवी पहली शताब्दी से मध्य एशिया, उत्तर-पूर्व एशिया में प्रसारित थे जहां से वे चीन, कोरीया, जापान तथा विएतनाम पहुंचे।

बौध्द सातवाहन साम्राज्य

[Information about Satavahana Empire is synthesized from following web page articles : http://en.wikipedia.org/Satavahana dynasty - Wikipedia, the free

encyclopedia.htm; http://www.lotussculpture.com//History Pala Empire, Pala Dynasty, Pala Dynasty in India 8th 12th century.htm; http://en.wikipedia.org/History of Mumbai under indigenous empires - Wikipedia, the free encyclopedia.htm;]

सातवहन साम्राज्य आंध्र प्रदेश के अमरावती, महाराष्ट्र के जुनार (पूणे) तथा प्रतिष्ठान (पैठन) से संबंधित था। इसापूर्व 230 से आगे सातवहन का साम्राज्य भारत के काफी बडे हिस्से पर काबिज था। सम्राट अशोक के शिलादेशों में सातवहन के राज्य को अशोक साम्राज्य के अधिन बताया गया था। सातवहन सम्राट अशोक के अधिन थे। उसी दौरान उनके बीच बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार हुआ था। इसलिये सातवहन बौध्द मत के थे। सातवहन ने सम्राट अशोक की मौत के कुछ ही साल बाद खुद को आजाद घोषित कर दिया। सातवहन को श्रेय जाता है कि मौर्य साम्राज्य के क्षय के बाद उन्होने विदेशी हमलों से बचाकर देश में अमन कायम किया। मेगास्थेनेस के मुताबिक सातवहन के पास एक लाख पैदल सेना, एक हजार हाथी तथा पूरी तरह से सुरक्षित बनाये गये 30 नगर थे। उन्होने पहले ब्राह्मण शुंगों से तथा बाद में ब्राह्मण कण्वों से मुकाबला कर अपने साम्राज्य को स्थापित किया। सातकर्णी ने उत्तर भारत के शुंग राजवंश को पराजित किया और उनसे मालवा छीन लिया। उन्होने भारत को सको, यवनों, पहलवों इ. के हमलों से बचाया। पश्चिमी क्षत्रपों के साथ उनका संघर्ष काफी लंबा चला। सातवहन राजवंश के महान शासकों में गौतमीपुत्र सातकर्णी, तथा श्री यजना सातकर्णी विदेशी पश्चिमी क्षत्रपों को परास्त करने में कामयाब रहे। फौज के अलावा नेवी तथा व्यापारिक गतिविधियों ने दक्षिण-पूर्व एशिया में उनके उपनिवेश कायम किये। इन देशों में महायान बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार हुआ। सातवहन की अमरावती शैली की शिल्पकला तथा संस्कृति का प्रचार-प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया में हुआ। सातवहन पहले शासक थे जिन्होने सिक्कों पर अपनी तस्वीर अंकित की। सातवहन के सिक्कों में प्राकृत भाषा का इस्तेमाल किया जाता था। सिक्कों के पिछे तेलगु भाषा का भी इस्तेमाल किया गया है। ये सिक्के आंध्र प्रदेश के गोदावरी, कोटीलिंगाला, करीमनगर, क्रिष्णा, अमरावती, गुंटूर इ. क्षेत्रों में इस्तेमाल होते थे। कुछ सिक्के तमिल ब्राह्मी में है। सिक्कों में हाथी, शेर, घोडे, चैत्य, स्तुप, तथा उज्जैन चिन्ह इ. चिन्ह थे। सिक्कों पर सातवहन राजवंश को सातवहन तथा सातकर्णी कहा गया है।

सातवहन सम्राटों ने बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार किया। आंध्र में अमरावती क्षेत्र में बौध्द धर्म पूरी तरह से स्थापित था। सातवहन एलोरा की गुफाओं से लेकर अमरावती तक में बौध्द स्थलों के संरक्षण और विकास करने में प्रसिध्द थे। सातवहन शासक बुध्दि दस्ट कला तथा शिल्पकृतियों के लिये मशहूर थे। उन्होने क्रिष्णा नदी घाटी में विशाल स्तुपों का निर्माण किया। इसमें आंध्र प्रदेश के अमरावती के स्तुप भी शामिल है। स्तुपों को संगमरमर के पत्थरों से सजाया गया था। उनपर बुध्द के जीवन की घटनाओं को बडे ही कलात्मक ढंग से अंकित किया गया था। सातवहनों ने सांची के बौध्द स्तुप का विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्तुप के प्रवेशव्दार तथा संबंधित निर्माण जो इसापूर्व 70 के बाद किया गया वह उनके व्दारा संपन्न हुआ। एक शिलालेख के मुताबिक दक्षिण प्रवेशव्दार को सातवहन सम्राट के कारागिरों ने बनाया। महाराष्ट्र के कोल्हापुर के उत्खनन में सातवहन काल के अवशेष मिले है जिनपर बौध्द धम्म के चिन्ह है। आज की मुंबई सात व्दीपों का समुह था। ये व्दीप मछुआरों की देवता मुंबादेवी के नाम से जाने जाते थे। ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में मुंबई व्दीपसमूह मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत थे। बौध्द

भिख्खुओं ने, स्कॉलर्स तथा कलाकारों ने कान्हेरी तथा महाकाली गुफाओं में कलाकृतियां निर्माण की तथा शिलालेख लिखे। ईसापूर्व दूसरी शताब्दी के अंत तक कुल बुध्दीस्ट गुफा विहारों की तादाद 109 थी। मौर्य साम्राज्य के लगभग ईसापूर्व 185 में पतन के बाद मुंबई के व्दीप सातवहन के साम्राज्य का हिस्सा बने। सोपारा का बंदरगाह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। इसवी 250 में सातवहन साम्राज्य के खत्म होने के बाद पश्चिम महाराष्ट्र के अभीरों ने तथा विदर्भ के वाकाटकों ने मुंबई पर अधिकार किया। अभीरों ने ईसवी 417 तक 187 सालों तक राज किया। पांचवी शताब्दी इसवी में मुंबई कालाचुरियों के हाथों में आई। इसके बाद मौर्यो के अधिकार में आई। जोगेश्वरी गुफाओं को मौर्य काल में इसवी 520 से 550 के दौरान बनाया गया। मौर्य उपस्थिती तब खत्म हुई जब चालुक्यों ने पुलाकेसी व्दीतीय के नेतृत्व में सन् 610 में मुंबई पर आक्रमण किया।

जैन सम्राट खारावेला

[Information about Kharavela Empire is synthesized from following web pages : http://en.wikipedia.org/Hathigumpha inscription - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Kharavela - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Udayagiri and Khandagiri Caves - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; Pusyamitra Sunga From Thedesipub http://www.wiki-site.com/Pusyamitra Sunga - Thedesipub.htm; http://en.wikipedia.org/History of India - Wikipedia, the free encyclopedia.htm]

खाराबेला (खारावेला) कर्लींग यानि आज के ओरीसा के महामेघवाहन राजवंश का तीसरा महान सम्राट था। खारावेला जैन धर्म का अनुयायी था जिसने जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। खारावेला के बारे जानकारी हातिगुंफा गुफा की 17 लाईनों वाले शिलालेख से मिलती है। शिलालेख की इबारत ईसापूर्व 150 वर्ष पूरानी कलिंग की ब्राह्मी लिपि है। हातिगुंफा गुफाएं ओरिसा में भुवनेश्वर के निकट उदयगीरी पर्वत में बनी है। इन शिलालेखों के मुताबिक खारावेला चेदी समूह के और राजा वासू के वंशज थे। खारावेला ने कलिंग की विशाल सेना खडी की। समुद्र मार्ग से सिंहला (श्रीलंका), बर्मा (मॅनमार), सियाम (थायलंड), विएतनाम, कंबोजा (कंबोडिया), बोर्निओ, बाली, समुद्रा (सुमात्रा) तथा जाबाव्दीपा (जावा) इ. देशों से खारावेला के व्यापारिक संबंध थे। खारावेला ने मगध, अंग, सातवाहन इ. राज्यों के खिलाफ कामयाब सैनिक अभियान चलाये। उनको दक्षिण के राज्यों के संगठन को तोडने का श्रेय है। उन्होने पश्चिमी ताकतों को उखाड फेंका तथा बॅक्ट्रीया के इंडो-ग्रीक राजा डीमेट्रिअस को पराजित किया। इस जीत को जश्न में बदलने के लिये खारावेला ने कलिंगनगरी में विशाल महल बनाया। इस महल के निर्माण में 38 लाख सुवर्णमुद्राएं खर्च की गई। डीमेट्रिअस पर खारावेला की विजय के बाद मगध राजगृह के पहले शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग ने खारावेला के अधिन रहना कबुल किया। इसके संबंध लिखे शिलालेख जो प्राकृत भाषा में देवनागरी लिपि में लिखा है कि सम्राट ने आक्रमण कर मगध तथा पाटलीपुत्र को पूरी तरह से पराजित कर दिया। उन्होने शुंग की राजधानी को पराजित कर ब्रहस्पतिमित्र यानि पुष्यमित्र शुंग को अपने कदमों पर झुकने के लिये मजबूर किया।

इस इबारत की खोज ए. स्टिर्लिंग (A. Stirling) ने 1820 में की जबकि उसके अर्थ को समझने का काम जेम्स प्रिन्सेप (James Prinsep) ने किया। ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने महावीर की जीना मूर्ति को भी कलिंग को वापस कर दिया। इस तरह उन्होने कलिंग के गौरव को पूर्नस्थापित कर दिया। उन्होने कलिंग को एक बहुत बडा साम्राज्य बना दिया। खारावेला के शासन काल में कलिंग का चेदी राजवंश अपने चरम गौरव पर पहुंचा।

खारावेला से संबंधित गौण शिलालेख ब्राह्मी लिपि तथा प्राकृत भाषा में है। हाथीगुंफा शिलालेख के मुताबिक खारावेला के शासन के काल को ईसापूर्व पहली शताब्दी के दूसरे आधे भाग (second half) में दर्शाया गया है। फीलहाल ठिक ठिक समय तय करना मुश्किल है। खारावेला के मेधवाहन राजवंश का क्रम मेघवाहन, सेताराजा, खारावेला, कुदेपासीरी, बादुखा, महासादा तथा सादा के उत्तराधिकारी इस प्रकार है।

बौध्द सम्राट कनिष्क !

[Information on Kushan Empire is synthesized from articles in following web pages :- http://en.wikipedia.org/Greco-Buddhism - Wikipedia, the free encyclopedia. htm; http://www.crystalinks.com/History of India - Crystalinks.htm; http://www. cemml.colostate.edu/Afghanistan The Kushan Empire.htm; http://in.answers.yahoo. com/Why was emperor kanishka considered as "king of kings" , what's the reason - Yahoo! Answers India.htm; http://www.proud2bindian.in//The Kushan Empire and Kanishka.htm#.UVHGCDebXg0; www.keele.ac.uk/The History of Pakistan: The Kushans pak_history@yahoo.com; http://www.encyclopedia.com/Kushan King Kanishka Facts, information, pictures _ Encyclopedia.com articles about Kushan King Kanishka.htm; http://en.wikipedia.org/Kushan Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.historytuition.com//Kushan Dynasty, History of Kushanas, Post Mauryan India.htm; www.historyfiles.co.u/Kingdoms of South Asia - Kushan Empire.htm; http://en.wikipedia.org/Kanishka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia.org/Greco-Buddhism - Wikipedia, the free encyclopedia.htm]

कुशान कौन थे ?

कुशान साम्राज्य की शुरुआत मध्य एशिया के इंडो-युरोपियन टोलियों के संघ युएह-ची (Yueh-chi) के शासन के रुप में हुई। कई स्कॉलर कुशानों का संबंध चीन के तारीम बेसिन (Tarim Basin) के तोचरियन (Tocharians) लोगों से जोडते है। तोचरियन कॉकेशियन लोग है जिनके सुनहरे या लाल बालों वाली ममियां प्राप्त हुई है। कुशान यह शब्द चीन के गुईशांग (Guishang) प्रांत के नाम से बना है। ईसवी 20 या 30 में कुशान लोगों को हुणों के पूर्वज क्सीओग्नु (Xiongnu) नामक अतिहिंसक लोगों ने कुशानों को पश्चिम की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। कुशान लोग अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान तथा उजबेकिस्तान के सीमावर्ति क्षेत्र बॅक्ट्रीया आये। कुशान समुह ने इन

टोचरियन समूहों का एक यूउझी समूह तैयार किया था। जिन पांच चीनी जनजाति समूहों ने मिलकर यूउझी (Yuezhi) समूह का निर्माण किया वे चीन में क्झीउ-मी (Xiu-mì), गुईशुआंग (Guishuang, Kushan), शुआंगमी (Shuangmi), क्सीडून (Xidun) तथा डूमी (Du-mì) समूह है। कुजुला काडफाईसेस या काडफाईसेस प्रथम (Kujula Kadphises or Kadphises I) इस समूह का नेता बना। बॅक्ट्रिया में उन्होने इंडो-ग्रीक राजा मेनांदर की मौत के ठिक बाद सीथियनों को पराजित कर बॅक्ट्रिया से ग्रीक साम्राज्य को खत्म कर तोखारिस्तान राज्य कायम किया। उन्होने अपने राज्य को गांधार तक बढा लिया। बाद में वे इंदस नदी तक पहुंच गए। उनकी सीमा चीन के गुईशुआंग (Guishuang) राज्य की सीमा तक पहुंच गई।

सब से पहला कुशान शासक हेराईओस (Heraios) माना जाता है। अपने सिक्कों पर वह खुद को 'क्रूर-शासक' कहता था। उसके सिक्कों में ग्रीक बनावट थी। अपने सिक्कों पर वे ग्रीक भाषा के मिथकों का तथा पाली मिथकों का खरोष्ठी लिपि में उपयोग कनिष्क के शासन के कुछ वर्षो तक करते थे। इसके बाद उन्होने सम्मीलित रुप से कुशान मिथकों का इस्तेमाल ग्रीक लिपि में करना शुरु किया। कनिष्क सबसे प्रसिध्द कुशान शासक था। उसके शिलालेख आज तक सुरक्षित है।

कुशान साम्राज्य का विस्तार :- कुशान साम्राज्य का पहला शासक कुजुला काडफाइसेस, उसके बाद उसका बेटा विमा काडफाइसेस व्दितीय तथा उसके बाद कनिष्क हुए है। कुशान साम्राज्य का लगातार विस्तार होते गया। कुशान साम्राज्य की मध्य एशिया में सीमा चीन तक थी। उसकी सीमा तारीम बेसिन यानि अपनी मातृभूमि तक पहुंच चुकी थी। अफगानीस्तान, कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, तथा खोटान से लेकर कोंकण तक उसका साम्राज्य फैला था। उसके साम्राज्य का विस्तार अराल समुद्र से लेकर बंगाल की खाडी तक था। उसकी राजधानी पाकिस्तान की प्रुशापुर यानि पेशावर थी। कनिष्क ने अपने नाम के साथ शाह, शहेनशाह कैसर तथा देवपुत्र इ. विशेषण लगाये थे। ग्रीक भाषा में लिखे सिक्कों में उसे राजाओं का राजा कहा गया था।

कुशान साम्राज्य के व्यापार तथा राजनीतिक संबंध :- रोमन-मध्य पूर्व-चीनी व्यापार मार्ग पर उसका नियंत्रण था। मध्य एशिया पर नियंत्रण होने की वजह से उसके नियंत्रण में मुख्य व्यापारिक मार्ग तथा बंदरगाह भी थे। रोमन लोग अपना सोना तथा चीनी लोग अपना रेशीम आपस में बदलने के लिये मध्यस्त के तौर पर कुशान साम्राज्य का उपयोग करने पर मजबूर थे। कनिष्क व्यापारियों से अच्छी खासी कमीशन लेकर उन्हे इन मार्गो से जाने देता था। कुशान साम्राज्य की अर्थव्यवस्था विदेशी व्यापार की वजह से फलफूल रही थी। कुशान राज्य में व्यापारी समूह पैदा हो गए जिससे नगरों का विकास हुआ।

कुशान राज्य की सीमाएं प्रसिध्द सभ्यताओं के साथ मिलती थी। ट्राजान (Trajan) तथा हाड्रियन (Hadrian) के काल (ईसवी 98-138) में रोमन साम्राज्य की सीमा पाकिस्तान में कुशान साम्राज्य से मिलती थी। कुशान साम्राज्य की सीमा चीनी सीमा से भी मिलती थी। कुशान साम्राज्य को विभिन्न सभ्यताओं के संपर्क से विभिन्न क्षेत्रों में तकनिकी ज्ञान तथा कला व सांस्कृतिक क्षेत्रों में फायदा पहुंचा। कुशानों ने ग्रीक अक्षरों में कुछ बदलाव कर उनका इस्तेमाल शुरु किया। ग्रीक तकनीक से अपने सिक्के ढाले। सिक्कों पर पाली भाषा भी खरोष्ठी लिपि में लिखी जाती थी। कुशान साम्राज्य की वजह से महायान बौध्द धम्म चीन इ. देशों में और ज्यादा विस्तारित हुआ। कुशान शासकों ने चीन, रोम, सासानियन पर्शिया, इ. देशों में अपने राजदूतों का आदान-प्रदान किया।

कुशान सम्राटों ने महायान बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार किया :- शायद वेदिक धर्म की जाति-वर्ण व्यवस्था में कुशानों का स्थान नीचला माना जाता। इसलिये प्रचलित बौध्द धम्म को अपनाने से उन्हे व्यापक जनसमर्थन तथा सम्मानपूर्ण सामाजिक स्थान मिला। सबूत यह भी दर्शाते है कि वह पर्शियन देवता मिथ्रा की पूजा भी करता था। कुशान सिक्कों में हेलिओस (Helios) तथा हेरॅक्लस से लेकर बुध्द, अहूरा मझदा, मिथ्रा, तथा अतार (Atar) नामक आग के देवता की तस्वीरें पाई गई है। कनिष्क के विश्वास में इजिप्शीयन झोरोस्टर धर्म तथा बौध्द संस्कृति का मिश्रण था। कनिष्क ने महायान बौध्द धम्म मध्य एशिया तथा चीन में फैलाया। कनिष्क ने चौथी बौध्द संगती लगभग ईसवी 100 में जालंधर अथवा कश्मीर में आयोजित की। कुची, खोटन तथा कश्मीर बौध्द अध्ययन के केन्द्र बने।

कनिष्क विव्दानों को आश्रय देने में विख्यात था। इसलिये उसके दरबार में कला, साहित्य तथा विज्ञान के विव्दान मौजूद रहते थे। अश्वघोष नामक बौध्द संस्कृत कवि को कनिष्क ने आश्रय दिया हुआ था। चरक जो औषधी विज्ञान का विव्दान तथा लेखक था कनिष्क के दरबार का राज चिकित्सक था। नागार्जुन, अश्वघोष तथा वासुमित्र कनिष्क के आश्रित थे। कनिष्क के बारे में जानकारी मुख्य रुप से चीनी शिलालेखों तथा दस्तावेजों से हासिल होती है। भारत में उसके संबंध में कोई दस्तावेज मौजूद नही है।

कुशान साम्राज्य का अंत :- मुख्य कुशान राजवंश के शासक निम्न प्रकार से है। 1) हेराइओस (Heraios, c. 1 – 30) पहला कुशान शासक था। 2) कुजुला काडफाइसेस (c. 30 – c. 80), 3) विमा टाक्टो (c. 80 – c. 95), 4) विमा काडफाइसेस (c. 95 – c. 127), 5) कनिष्क प्रथम (127 – c. 140), 6) वसीस्का (c. 140 – c. 160), 7) हुविश्का (c. 160 – c. 190), 8) वासुदेव प्रथम (c. 190 – to at least 230), 9) कनिष्क व्दितीय (c. 230 – 240), 10) वशिश्का (c. 240 – 250), 11) कनिष्क तृतिय (c. 250 – 275), 12) वासुदेव व्दितिय (c. 275 – 310), 13) वासुदेव तृतिय 14) वासुदेव चतुर्थ 15) काबुल का वासुदेव, 16) छु (Chhu, c. 310? – 325?) 17) शाका प्रथम (c. 325 – 345), 18) किपुनाडा (c. 345 – 375) वासुदेव प्रथम की मौत के बाद से ही कुशान साम्राज्य का विघटन हुआ।

पर्शिया के सासानीड राजाओं ने कमजोर कुशान राजाओं को अपने अधिन कर लिया। गंगा के मैदानी क्षेत्रों के लगभग 270 प्रदेशों ने खुद को आजाद घोषित किया। इन छोटे राज्यों पर बाद में ब्राह्मणवादी गुप्ता शासकों ने कब्जा किया। बचे खुचे हिस्से पर किडारा ने कब्जा किया। कुशान राज्य के अवशेषों को पूरी तरह से हुनों तथा मुस्लिम शासकों ने खत्म किया। ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य पाकिस्तान को अपने साम्राज्य में मिलाने में नाकामयाब साबित हुआ था। गुप्त साम्राज्य के दौरान पाकिस्तान कुशानों तथा सासानियनों की हुकुमत में था। गुप्त साम्राज्य में कश्मीर भी कभी शामिल नही था।

बौध्द सम्राट हर्षवर्धन !

[Information about Empire of Harshavardhan is synthesized from following web pages : http://theguptaage.blogspot.in/The Gupta Age November 2009.htm; http://en.wikipedia.org/Harsha - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.

indianmirror.com/Vardhan Dynasty, Vardhan Dynasty in India, Harshavardhan dynasty, Rulers of Vardhan Dynasty.htm; Time check: Ancient India: Harshavardhana: a gifted ruler By Mubarak Ali April 10th, 2010 ; KING HARSA by Stacey Platt (March 2009); http://hubpages.com//King Harshavardhana.htm; http://hmindia.blogspot.in/History and Mythology ACK-095 Harsha - The Great Ruler of Thaneshwar.htm]

वर्धन राजवंश का पहला राजा प्रभाकर वर्धन था। उसकी राजधानी थानेसर थी। सन् 605 में प्रभाकर वर्धन की मौत के बाद उसके बडे बेटे राज्य वर्धन ने राजगद्दी संभाली। हर्षवर्धन राज्यवर्धन का छोटा भाई था। उनकी राज्यश्री नाम की बहन थी। उसका विवाह मौखारी के राजा गृहवर्मन के साथ हुआ था। मालवा के राजा देवगुप्ता ने गृहवर्धन पर हमला कर उसे मार डाला और राज्यश्री को कैद किया। राज्यवर्धन ने देवगुप्ता पर हमला कर उसे परास्त किया। तभी पूर्व बंगाल के गौडा के राजा शसांक ने मगध में राज्यवर्धन के मित्र के रुप में प्रवेश किया। लेकिन वह मालवा राजा देवगुप्त से मिला था। शशांक ने छल से राज्यवर्धन की हत्या कर दी। अपने भाई की हत्या की खबर सुनते ही हर्षवर्धन ने शशांक पर आक्रमण किया और देवगुप्त को युध्द में मार डाला। हर्षवर्धन ने राजगद्दी मात्र सोलहवे साल में संभाली। उसने खुद को पूरी तरह से काबिल साबित किया। हर्षवर्धन ने कनौज को राजधानी बनाई। हर्षवर्धन ने शशांक को परास्त किया। लेकिन उसे मारने में नाकामयाब रहा। शसांक का राज्य हर्षवर्धन के अधिान था। शशांक ने विद्रोह किया जिसमें उसकी मौत हुई। उसके राज्य को हर्षवर्धन ने तथा उसके मित्र भाष्कर ने आपस में बाँट लिया। हर्षवर्धन का राज्य पंजाब, राजस्तान, गुजरात, बंगाल, ओरीसा, नर्मदा नदी के उत्तर में संपूर्ण गंगा के मैदान थे। हर्षवर्धन ने अपने साम्राज्य को दक्षिण में भी बढाना चाहा लेकिन उत्तरी कर्नाटक के वाटापी के चालुक्य राजा पुलकेसी व्दीतीय के हाथों पराजित होने के बाद उनके बीच शांति समझौता हुआ। तय हुआ की हर्षवर्धन के राज्य की दक्षिणी सीमारेखा नर्मदा नदी होगी। अपने साम्राज्य का इतना विस्तार करने के बाद उसने शांतिपूर्ण जीवनपध्दति अपनाई। इसी वक्त हर्षवर्धन ने बौध्द धम्म अपनाया। सन् 641 में ह्युएन सांग की भारत भेंट के वक्त हर्षवर्धन अपने साम्राज्य के उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। हर्षवर्धन ने चीन के साथ सबसे पहले राजनीतिक संबंध कायम किये। इसका उल्लेख राजगीर के शिलालेखों में है। आठ साल के दौरान 3 मिशन चीन से भारत और 3 भारत से चीन भेजे गए थे। हर्षवर्धन एक महान सम्राट था जिसने उत्तर भारत पर 40 साल तक यानि ईसवी 606 से 647 तक राज किया।

सम्राट हर्षवर्धन व्दारा बौध्द धम्म का प्रचार और प्रसार :- सम्राट हर्षवर्धन के भाई प्रभाकर हिनयान बौध्द धम्म के थे। बाणा के मुताबिक हर्षवर्धन महायान बौध्द धर्म का अनुयायी था। सम्राट हर्षवर्धन की बहन राज्यश्री भी बौध्द धम्म की अनुयायी थी।

हर्षवर्धन की राजधानी कनौज में 400 बौध्द मोनेस्ट्रीज तथा 200 मंदिर थे। हर्षवधिन ने बौध्द उसूलों का पालन करते हुए जानवरों के कत्लेआम पर पाबंदी आयद की थी। हर्षवर्धन हर चार साल के बाद अपने राज्य के खजाने में जमा होने वाली रकम को अपने राज्य की प्रजा तथा जनोपयोगी कार्यो में खर्च करता था। हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय की सुरक्षा के लिये संपूर्ण विश्वविद्यालय के क्षेत्र में विशाल दीवार खडी की थी। वह नालंदा विश्वविद्यालय का संरक्षक था।

चीनी प्रवासी ह्युएन सांग के मुताबिक हर्षवर्धन ने बडी तादाद में बौध्द स्तुपों का निर्माण किया। हर्षवर्धन ने इन्सानों तथा जानवरों के लिये मुफ्त अस्पताल खोले। उन्होने मुसाफिरों के लिये धर्मशालाएं खोली जहां गरीबों को मुफ्त में खाना खाने तथा रहने की सुविधा थी।

हर्षवर्धन अपने राज्य के विभिन्न हिस्सों में सतत दौरे करता था ताकि उनकी समस्याओं का निराकरण कर सके। अपने शासन का अगला आधा हिस्सा उसने लगभग कँम्पों में ही बिताया। हर्षवर्धन साहित्य में रुची रखता था तथा अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद उसने कई नाटक जैसे कि रत्नावली, प्रीयदर्शिका, तथा नागानंदा इ. लिखे। इनमें से पहले दो हास्य रचनाएं तथा तीसरा नाटक गंभीर धार्मिक विषय को लेकर है। हर्षवर्धन के दरबार में दार्शनिक, कवि, नाटककार, तथा चीत्रकारों को आश्रय दिया हुआ था। बाणा हर्षचरीत तथा कादंबरी का लेखक तथा राजकवि था।

हर्षवर्धन के राज्य का अंत :- हर्षवर्धन अविवाहित था इसलिये हर्षवर्धन की मौत के बाद वारीस के अभाव में हर्षवर्धन के साम्राज्य का विघटन हुआ। हर्षवर्धन की मौत सन् 647 को हुई। तिब्बती किताब 'The White Annals' के मुताबिक चीनी सम्राट ने हर्षवध र्न से मिलने 30 घुडसवारों का प्रतिनिधि मंडल भेजा। भारत पहुंचने पर उन्होने देखा कि हर्षवर्धन की मौत हो चुकी है। उसके मंत्री अर्जुन ने राजगद्दी पर कब्जा जमाया है और बौध्दों को प्रताडित कर रहा है। अर्जुन ने इस प्रतिनिधि मंडल पर भी हमला किया। वे भागकर तिब्बत पहुंचे। तिब्बती राजा ने चीनी सम्राट की बेइज्जती का बदला लेने की ठानी। इसी प्रतिनिधिमंडल को भारी सेना के साथ भारत भेजा। इस सेना ने अर्जुन को परास्त कर अर्जुन तथा उसके परिवार को कैद कर लिया। वे उन्हे चीन ले गए।

पाल राजवंश के बौध्द सम्राट !

[Information about Empire of Pala Dynasty is synthesized from following sources : http://en.wikipedia.org/Pala Empire - Wikipedia, the free encyclopedia. htm; http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm; http://www.lotussculpture.com//History Pala Empire, Pala Dynasty, Pala Dynasty in India 8th 12th century.htm; http://www.indianmirror.com/ Pala Dynasty, Pala Empire, Pala empire in India, Pala School of Sculptures.htm; http://en.wikipedia.org//Kamboja Pala dynasty - Wikipedia, the free encyclopedia. htm]

पाल साम्राज्य का कालखंड सन् 750–1174 वर्ष का है। पाल राजवंश के बौध्द राजाओं ने बंगाल से भारत के एक बडे भाग पर राज किया। पाल सम्राट महायान तथा तंत्रयान बौध्दधम्म को मानते थे। पाल का अर्थ पालने वाला होता है। पाल राजवंश का सबसे पहला शासक गोपाल हुआ है। जनतांत्रिक ढंग से हुए चुनाव में उसे अपना राजा घोषित किया गया था। यह वाकया महाजनपदों के बाद का दक्षिण एशिया का पहला वाकया है जब किसी राजा का इन्तेखाब जनता ने किया हो। गोपाल ने ईसवी सन् 750 से 770 तक राज किया। उन्होने संपूर्ण बंगाल में अपने राज्य का विस्तार कर

उसे मजबूत बनाया। पाल साम्राज्य धर्मपाल तथा देवपाल के काल में अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुंचा। धर्मपाल ने पाल साम्राज्य को उत्तरी भारतीय उपमहाव्दीप में विस्तारित किया। उनके उत्तराधिकारी देवपाल ने पाल साम्राज्य को दक्षिण एशिया तथा उसके बाहर तक पहुंचाया। जावा, सुमात्रा तथा मलाया के शैलेन्द्र का साम्राज्य पाल साम्राज्य के उपनिवेश थे। धर्मपाल ने अपने साम्राज्य की सीमा अब्बासाईड साम्राज्य की सीमा से भीडा दी। खलिफा हारुन अल रशीद से कूटनीतिक संबंध कायम किये। हारुन अल रशीद के सिक्के महास्थानगढ़ में पाये गए। उनका साम्राज्य आसाम, ओरीसा, कंबोज यानि आधुनिक अफगानिस्तान, तथा दख्खण तक फैला था। पाल साम्राज्य को बंगाल का सुवर्ण युग कहा जाता है। पाल साम्राज्य का दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापारिक संबंध था। पाल साम्रज्य का संपर्क दूरस्थ जगहों से आक्रमण तथा व्यापार के माध्यम से हुआ था।

पाल साम्राज्य के तांबे के तख्ते पर लिखे हुए ताम्रलेख साहित्य की दृष्टी से बेहद मुल्यवान थे। इन लेखों को गौडिया पध्दति (Style) कहा जाता था।

पाल ताम्रपत्रों में लिखा है कि पाल की पैदल सेना में सैनिक कंबोज, खासा, हुण, मालवा, गुजरात तथा कर्नाटा से नियुक्त किये जाते थे। कंबोज सैनिक पाल साम्राज्य के महत्वपूर्ण सैनिक थे। कंबोज सेना ने आपस में अपने समुह बनाये थे। वे अपने कमांडर की आज्ञा का पालन करने के लिये प्रतिबध्द थे। पाल साम्राज्य के पास विशाल सेना थी जिसको धर्मपाल तथा देवपाल के काल में मिथक के मुताबिक 'नव लक्ष सैन्य' कहा जाता था। हुदुद अल आलम नामक पर्शियन साहित्य (सन् 982–983) के मुताबिक ध र्मपाल के पास तीन लाख पैदल सैनिक थे। पाल सम्राटों के पास पर्याप्त सैन्य बल तथा साहस था जिससे वे उत्तर भारत को प्रतिहारों तथा राष्ट्रकुटों के हमले से बचा सके।

पाल साम्राज्य ने तिब्बत के साथ धार्मिक तथा कूटनीतिक संबंध कायम किये। हाल की खोजों से पता चला है कि पंजाब के पर्वतों पर पाल साम्राज्य का प्रभाव था। वहा इस परंपरा का कडाई से पालन किया जाता है कि कुछ राज्यों के सत्ताधारी परिवार गौर बंगाल राजा के वंशज होने चाहिये। ये राज्य सुकेत (Suket), केओन्थाल (Keonthal), कश्तवार (Kashtwar), तथा मंडी (Mandi) है।

पाल साम्राज्य ब्राह्मणों के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त था। बल्लाला-कारिता (Ballala-Carita) के मुताबिक पाल राजवंश पीछडी जातियों के क्षत्रिय थे। इसी बात को इतिहासकार तारानाथ ने अपनी किताब 'हिस्ट्री ऑफ बुध्दीजम इन इंडिया' में दोहराया है। घनाराम चक्रवर्ति ने अपनी धर्ममंगला (Dharmamangala) नामक किताब में यही कहा है। ये दोनों किताबें सोलहवी शताब्दी की है। ब्राह्मण सुत्र गोपाला को शुद्र करार देते है। मंजुश्री मुलाकल्प (Manjus'ree Mulakalpa) के मुताबिक गोपाल शुद्र था। अरेबिक दस्तावेजों के मुताबिक पाल सम्राट राजवंश से नही थे।

पाल सम्राटों व्दारा बौध्द धम्म का प्रसार-प्रचार :- सम्राट हर्षवर्धन के बाद बौध्द ध र्म के सामने अस्तित्व का संकट निर्माण हुआ। तब पाल सम्राटों ने महायान बौध्द धम्म को राजाश्रय प्रदान किया। पाल सम्राटों ने महायान बौध्द धम्म को तिब्बत, भुतान, तथा मॅनमार में प्रसारित किया। बंगला देश में सोमापुरा बौध्द विहार समुचे भारतीय उपमहाव्दीप का सबसे बडा बौध्द विहार है। इसका निर्माण धर्मपाल ने किया था। यह मोनेस्ट्री 21 एकर के क्षेत्र में बनी है। इसके 177 छोटे कमरे तथा बहुत अधिक स्तुप है। इसमें बौध्द मंदिर तथा सहायक इमारतें थी। इस बौध्द विहार को 1985 में युनेस्को ने वर्ल्ड हेरिटेज स्थल का दर्जा देकर उसे 'दुनियां की आंखों की खुशी' करार दिया गया है।

पाल साम्राज्य का अंत :- पाल साम्राज्य ने लगभग 400 सालों तक राज किया और इस काल में बंगाल अपने गौरव की चरम अवस्था तक पहुंचा। देवपाल की मौत के बाद पाल राजवंश के उत्कर्ष की गति रुक गई तथा कई स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। महिपाल प्रथम ने पाल साम्राज्य के विघटन को रोकने की पूरी कोशिश की। उन्होने समुचे बंगाल में अपना नियंत्रण कायम किया और साम्राज्य का विस्तार किया। उसने राजेन्द्र चोल तथा चालुक्य के आक्रमणों को भी विफल कर दिया। महिलपाल प्रथम के बाद पाल साम्राज्य का लगातार क्षय हुआ। पाल राजवंश के आखरी सम्राट रामपाल ने हालत में कुछ सुधार किया। उसने विरेन्द्र की बगावत को कुचल दिया। अपने साम्राज्य को कमारपुरा, ओरीसा तथा उत्तरी भारत में विस्तारित किया। लेकिन 12 वी शताब्दी में सेन राजवंश के हमलों से तथा बख्तियार खिलजी के हमलों से यह साम्राज्य लगभग नष्ट हो गया।

मूलनिवासी श्रमण धर्मो की जनहितकारी गौरवशाली परंपरा !

[Information for this chapter is synthesized from following source materials : wps.ablongman.co/Religious Rivalries and India's Golden Age.htm; http://www.foreignaffairs.com/The Buddhism That Was India _ Foreign Affairs.htm; http://nirmukta.com/The Great Nastik Revolt _ Nirmukta.htm; Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Lal Mani JoshiDepartment of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151; Aspects of Buddhism in Indian History By L. M. Joshi, Ph.D. Reader in Buddhist Studies Punjabi University, Patiala Buddhist Publication Society Kandy , Sri lanka; http://www.milligazette.com/Hinduism and Talibanism, The Milli Gazette, Vol. 2 No. 8.htm; http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Decline of Buddhism in India.htm; http://www.historytuition.com//Contribution of Buddhism, Buddhism in ancient india, Ancient India Religions.htm; Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Lal Mani JoshiDepartment of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151; http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm; Facets of the relation ship between Buddhism and Hinduism]

मूलनिवासी श्रमण धर्मो ने जनता के कल्याण को सबकुछ माना !

बौध्द धम्म के मूल सिधान्तों में अहिंसा, ईमानदारी, करुणा, सहनशिलता, सभी मानवों के बीच समानता इ. नियम बिना किसी भेदभाव के सभी पर एक जैसे लागू होते है।

बौध्द धम्म में वर्ण या जाति-व्यवस्था के लिये कोई स्थान नही है। सभी ने जीवन के महत्व को समझकर जानवरों की बलि नही चढानी चाहिये। यज्ञ में चावल घी इ. खाद्य पदार्थो को जलाया जाना बौध्द धम्म को मंजूर नही है। बुध्द ने न सिर्फ लोगों को अपनी लालसाओं को समझकर उनपर योग्य नियंत्रण कायम कर सही सुख की लोगों को पहचान कराई बल्कि औरतों और मर्दो को समान मानवाधिकार और समान सामाजिक दर्जा दिया। उन्होने स्त्रियों तथा पुरुषों को समान धार्मिक अधिकार प्रदान किये। अपने दर्शन को लिंग भेद, जाति, धर्म, प्रांत या देश का भेद किये बिना सभी को समझाया। बुध्द के विचार पूरी मानवता के लिये थे। वे पूरी दुनियां के लोगों के लिये थे। इतिहास में पहली बार बौध्द धम्म ने अपने दर्शन को उन सबके लिये खुला किया जो भी उसे जानना समझना चाहते है। उन्होने अपने धम्म का लक्ष्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' घोषित किया जो ब्राह्मण धर्म के लिये मुमकिन ही नही था। ब्राह्मणों ने अपने धर्मग्रंथों की गैर-ब्राह्मणों को हवा तक नही लगने दी। उपनिषदों ने भी यही किया क्योंकि उपनिषद शब्द का अर्थ ही अपने शिक्षक के समिप रहकर रहस्य की बातें समझना है। इसलिये उपनिषद सभी के लिये नही थे। ब्राह्मण धर्म का मानना है कि धर्म का अध्ययन करने का हक सिर्फ ब्राह्मणों का है। ब्राह्मणों ने गैरब्राह्मणों को ज्ञान अर्जित करने से मना कर दिया इसलिये बौध्द धर्मग्रंथों में वेदीक ब्राह्मण धर्म की कठोर शब्दों में भर्सना की गई है। (Aspects of Buddhism in Indian History By L. M. Joshi, Ph.D. Reader in Buddhist Studies Punjabi University, Patiala Buddhist Publication Society Kandy , Sri lanka)

ब्राह्मण-धर्म का मतलब हर वर्ण के लोग ईमानदारी से अपने अपने वर्ण के लिये मनुस्मृति व्दारा निर्धारित कामों को करते रहे। क्षत्रिय का काम दुश्मन के प्रदेश पर हमला कर उनकी गायों की चोरी करना, उनके घरों को जलाना, उनकी संपत्ति पर कब्जा करना है। इसी बात को कृष्ण के मुँह से भगवत गीता (BG: 1:15) में अर्जून के लिये 'धनंजय' यानि धन को जीतने वाला तथा पारानथापा (Paranthapa) शत्रुओं को प्रताडित करने वाला (BG: 2:3) कहलवाया गया। अर्जून कृष्ण को मधुसुदन यानि मधु को नष्ट करने वाला तथा अरीसुदन (BG: 2:4) यानि दुश्मनों को मार डालने वाला कहता है। क्षत्रिय को अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते वक्त अपने मन में कोई दया, करुणा और प्रेम की भावना नही रखनी है। शत्रु चाहे गुरु, चाचा, दादा, चचेरा भाई चाहे जो हो उनकी हत्या करनी चाहिये। कोई अपराध-बोध अथवा पाप किये जाने की भावना (BG: 18:17) नही होनी चाहिये। वह ऐसा करने से इन्कार करता है तो वह अपने क्षत्रिय धर्म को त्याग रहा है। ऐसे क्षत्रिय को नामर्द, कायर, और गैरतहीन (BG: 2-3) समझा जाता है। वह इस दुनिया में इज्जत के काबिल नही है। मरने के बाद वह नर्क में जायेगा।(BG: 2:33) ब्राह्मणों का धर्म यज्ञ का संचालन करना, वेदमंत्रों का उच्चारण करना, जानवरों की बलि चढाकर उनके मांस को काटना इ. है। इंडो-आर्य टोलियों के प्रमुख तथा शिक्षक आपस में लडते रहे है। एक-दूसरे के जानवरों तथा संपत्ति पर कब्जा कर यज्ञ में जानवरों की बलि चढाकर सोमरस पी कर जश्न मनाते रहे है। आर्यो में नैतिकता तथा आध्यात्मिक उद्देश्य का पूरा अभाव था। आर्यो में नैतिकता की खोज एक व्यर्थ कोशिश है। सिलवेन लेवी (Sylvain Levi) के मुताबिक ब्राह्मणों की धार्मिक विचारधारा से ज्यादा क्रूर तथा ज्यादा भौतिक धार्मिक विचारधारा की कल्पना करना असंभव है .... ब्राह्मणों की धार्मिक व्यवस्था में नैतिकता के लिये कोई जगह नही है। डब्लु क्रूके (W. Crooke) के मुताबिक इंद्र का नशा करना, स्त्रियों पर बलात्कार करना, प्रजापति व्दारा अपनी बेटी से लैंगिक संबंध कायम करना इ. उनके काम मौजूदा नैतिक विश्वासों के खिलाफ है।

एच. जैकोबी (H. Jacobi) के मुताबिक ब्राह्मणों के ब्राह्मणा नामक ग्रंथ पूरी तरह से बलि-प्रथा से संबंधित है। इंडो-आर्यन संस्कृति का आरंभ और अंत यज्ञ में दी जाने वाली जानवरों की बलि है। यज्ञ ही इंडो-आर्यन लोगों की विचारधारा का मूल मकसद है। बलि प्रथा का सिधान्त वेदिक संस्कृति का दिल और प्राण है। बौध्द धम्म ने ब्राह्मण संस्कृति के दिल और प्राण पर आघात किया :- 1) बौध्द धम्म ने ब्राह्मणों के यज्ञ, उसमें दी जाने वाली जानवरों की बलि तथा दिगर कर्मकांडों की भर्सना की है। 2) बौध्द धम्म ने ब्राह्मणों की वर्ण और जाति व्यवस्था की भर्सना की है। 3) बौध्द धम्म ने ब्राह्मणों के वर्णश्रम के विशेष दर्जे को तथा उनकी सुविधाएं नकार दी है। 4) ब्राह्मणों के तमाम अंध ाविश्वासों को नकार दिया है। बौध्द धम्म के मुताबिक ब्राह्मणवाद में लोगों की भलाई के लिये कुछ भी नही है।

सतपथ ब्राह्मणा (22-6, 3-4-14) के मुताबिक संपुर्ण कायनात ईश्वर के नियंत्रण में है। ईश्वर मंत्रों से नियंत्रित है। मंत्र ब्राह्मणों के पास है इसलिये ब्राह्मण इस धरती के ईश्वर है। ब्राह्मणों ने अपने मंत्रों तथा शाप का डर लोगों के दिमाग में इस कदर बिठा दिया कि लोग ब्राह्मणों की हर मनमानी सहन करने पर मजबूर थे। बौध्द धम्म ने तार्किक सोच को बढावा दिया। बौध्द धम्म ने लोगों को तार्किक चिंतन कर ब्राह्मणों व्दारा पैदा किये प्रत्येक झूठे डर को बेनकाब कर लोगों को इससे मुक्त किया। बुध्द ने आम लोगों को ऐसा सीदा-सादा धम्म दिया जो व्यर्थ के कर्मकांडों, जानवरों की बली को, तथा पूजारी वर्ग के वर्चस्व को पूरी तरह से नकारता है। बौध्द धम्म ने अपनी सामाजिक उपयोगिता से आम लोगों को बहुत अधिक प्रभावित किया।

बौध्द 'संघ' भिख्खुओं का समूह मात्र नही है। भिख्खुओं का समुदाय बौध्द संघ का एक हिस्सा मात्र है। संघ में उन सभी का समावेश होता है जो बुध्द के सिधान्तों पर विश्वास करते है। इसलिये बौध्द संघ में बुध्द के सिधान्तों में विश्वास रखने वाले वाले पुरुष, औरतें, भिख्खु तथा गृहस्थ सभी का समावेश होता है। बौध्द शब्दावली में संघ का अर्थ भिख्खु, भिख्खुणी, उपासक, उपासिकाएं ये सभी बौध्द संघ का हिस्सा है। पाली सुत्तों में कई प्रवचन आम गृहस्थों व्दारा पालन किये जाने वाले सिधान्तों तथा रीतियों का वर्णन है। मज्जिमा निकाय के एक भाग को गृहपतिवग्गा (gahapativagga) कहा गया है। रोज जो मंगलसुत्त पढा जाता है वह एक सामाजिक आध्यात्मिक उत्थान दर्शन का सार है। थेरावादी बौध्द धम्म का सामाजिक पहलु अम्बाम्महासुत्ता (Ambammhasutta), सिगलोवदासुत्ता (Siglovdasutta), कांडारकासुत्ता (Kandarakasutta), अम्महकांगरासुत्ता (Ammhakangarasutta), उपालीसुत्ता (UPalisutta), न्हामिकासुत्ता तथा महाकम्माविभंगासुत्ता (Mahkammavibhangasutta) में देखा जा सकता है। बौध्द धम्म की सामाजिक नैतिकता के पहुलुओं को सम्राट अशोक के शिलादेशों में देखा जा सकता है। बौध्द भिख्खु समाज से तथा उसके दुखों से विमुक्त कतई नही रह सकते थे। धम्म-विनय सिर्फ उन्ही लोगों के लिये नही था जो घरबार छोड भिख्खु बन गए है। बुध्द पूरी मानवता के शिक्षक थे न कि सिर्फ भिख्खुओं के। करुणा एक सामाजिक भावना-संवेग है। उनका मकसद बहुजन हिताय बहुजन सुखाय था। इसलिये बौध्द भिख्खु समाज के शिक्षकों के रुप में कार्यरत नजर आते थे। वे लोगों को उनके जीवन की समस्याओं को सुलझाने में सही मार्गदर्शन करते थे। भिख्खुओं को औषधी-विज्ञान तथा विभिन्न कलाओं की भी जानकारी होती थी। वे लोगों की मदद करते थे। धम्म की शिक्षा आम लोगों की भाषा में होती थी। बौध्द ध ाम्म ने सामाजिक समानता की पैरवी की। औरतों तथा शुद्रों को समान अधिकार दिये।

बौध्द धम्म का इकलौता लक्ष्य बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय है इसलिये वह आम लोगों के मानसिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिये प्रयत्नरत रहा है। जैसे ही बौध्द धर्म का प्रचार प्रसार हुआ कृषिक्षेत्र, कलाक्षेत्र का विकास होकर शहरी संस्कृति का विकास हुआ। उत्पादन में बढौतरी होकर अंर्तराष्ट्रीय व्यापार का विकास हुआ। इसके विपरित वेदिक ब्राह्मणों का उत्पादन में कभी योगदान नही रहा है। वे सिर्फ लोगों से दान मांगकर दूसरों की कमाई पर परजीवीयों की तरह पलते रहे है। जिनके दान पर ये पलते रहे उन्ही को इन्होने हीन और खुद को श्रेष्ठ करार दिया। वेदिक ब्राह्मण संस्कृति मुफ्तखोरों को श्रेष्ठ तथा मेहनतकशों को हीन करार देती है। वेदिक ब्राह्मण ों को गैरब्राह्मणों के पास धन तथा समृध्दी का होना काँटों की तरह खटकते रहा है। मनुस्मृति में कहा गया है कि शुद्र को संपत्ति इकट्ठा करने का कोई अधिकार नही है। अगर वह संपत्ति अर्जित करता है तो ब्राह्मण जो उसका मालक है बिना किसी हिचक के उसे अपने कब्जे में कर सकता है। ऋग्वेद एक कदम आगे जाकर कहता है कि जो लोग ब्राह्मणों को दान नही देते उन्हे जान से मारने का ब्राह्मणों को हक है। यानि दूसरों ने ब्राह्मणों की सुख-सुविधा के लिये परिश्रम कर खुद अपनी कमाई संपत्ति से वंचित रहना चाहिये। वेदिक ब्राह्मण-धर्म मेहनतकशों का घोर हितशत्रु है। जबकि बौध्द धम्म ने मेहनतकशों को श्रेष्ठ करार दिया है।

बौध्द धम्म ने लोगों को अपनी लालसाओं को जान-समझ कर ऐसी बातों के पीछे भागने से रोका है जो अंततः मन का सुख चैन नष्ट कर देती है, आपस के प्रेम को खत्म कर देती है, व्यर्थ की लालसाएं शोषण और दमन को बढावा देती है। बौध्द धम्म ने सच्चे सुख की पहचान करा कर लोगों को अष्ठांग मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया। उन्हे हर तरह के ज्ञान को हासिल करने के लिये प्रेरित किया। अलौकिकता को नकारकर तर्कपूर्ण सोच के माध्यम से मन को अंधविश्वासों से मुक्त कराया। इस तरह बौध्द ध ाम्म ने लोगों के मानसिक विकास को चरम अवस्था तक पहुंचा दिया। इसके विपरित वेदिक ब्राह्मण-धर्म ने लोगों को कर्मकांडों तथा तमाम अंधविश्वासों की गंदगी में डूबोकर उनका तार्किक मानसिक विकास बाधित कर मनमाने तरिकों से उनका शोषण किया है।

बुध्द ने जनतांत्रिक राज्य को सबसे मजबूत और सुरक्षित राज्य कहा था। उन्होने मगध के राजनयीक वस्सक्रा को लोकतांत्रिक राज्य के सात गुणधर्म बताये थे। बौध्द ध ाम्म के राजतंत्र जनतांत्रिक नियमों पर आधारित थे। विभिन्न गण मिलकर अपने राजा का चयन करते थे। बौध्द धम्म की शिक्षा के मुताबिक राज्यशासन लोककल्याण के लिये समर्पित होता था। राज्य में सदाचार, नैतिकता, व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा न्यायपूर्ण व्यवस्था को बेहद महत्व था। बौध्द धम्म का प्राचीन भारत की राज्य-व्यवस्था पर कितना भारी प्रभाव था इसे इस बात से समझा जा सकता है कि भिख्खु संघों का कामकाज पूरी तरह से जनतांत्रिक पध्दति से संचालित होता था।

बौध्द सिधान्तों का गहरा प्रभाव राजाओं, रानियों, उनके मंत्रियों तथा आम जनता में देखा जा सकता था। गणतंत्र की बुनियाद बेहद मजबुत थी। प्राचीन भारत में हर जाति समुदायों की पंचायतें होती थी जो चुने गए पंचों के नेतृत्व में सर्वसम्मति से अपनी समस्याएं सुलझाने के लिये योग्य निर्णय लेती थी। भारत में बौध्द जनतंत्र की बुनियाद इतनी ज्यादा मजबूत है कि आज भी यह व्यवस्था गांवों, कस्बों में देखी जाती है। आध ुनिक भारत में ग्राम-पंचायतों का निर्माण बौध्द परंपरा की उपज है। राज्य के उत्पन्न होने का बौध्द धम्म का सिधान्त अग्गानासुत्त (Aggannasutta) में दिया गया है।

ब्राह्मणवादी समुद्रगुप्त इ. गुप्त राजाओं ने चौथी शताब्दी में बुध्दिस्ट जनतांत्रिक राज्यों को तानाशाही राज्यों में बदलने का काम किया। इसके बावजूद चुनाव व्दारा राजाओं के चुने जाने की परंपरा भारत के कई हिस्सों में इसवी 12 वी शताब्दी तक देखी जा सकती थी। बंगाल के पाल राजवंश के राजा गोपाल का चुनाव लोगों के व्दारा किया गया था।

बौध्द धम्म के उसूल पूंजीवाद की लूट-खसोट, तानाशाहों के खास विभ्रम और नफरत इ. से मुक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था है। सम्राट अशोक वे पहले शासक थे जिन्होने बौध्द सिधान्तों को लोगों बीच पूरी संजीदगी से अमल किया। सम्राट अशोक के शिलादेश दुनियां को एक अर्थपूर्ण, जनोपयोगी, लोकतांत्रिक मुल्यों तथा आध्यात्मिक दर्शन पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था कायम करने को प्रेरित करते है।

बौध्द धम्म लोगों को जोडने की सबसे बडी ताकत था। बौध्द सम्राटों ने भारत के दूर दूर के देशों से मैत्री संबंध कायम किये। ज्ञान तथा संस्कृति का आदान प्रदान किया। दूसरे देशों की खासियतों को भारत ने अपना लिया। जो भी जनता के हित के लिये उपयोगी था उसे खुले मन से कबुल किया। इसी खुले नजरिये की वजह से बौध्द धम्म दूर देशों में फैलता चला गया। एल. एम. जोशी के मुताबिक बौध्द धम्म के समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के घोष वाक्य से ही भारत आये विदेशियों को भारतीय समाज में समाहित किया गया। ऐसा ब्राह्मणवाद की वर्णव्यवस्था तथा असमानता की सीख के चलते होना कतई मुमकिन नही था। बौध्द धम्म के सामाजिक सदभाव के सिधान्तों से ही विदेशी आक्रमणकारी जैसे कि ग्रीक, शक, पहलवी, कुशान, तथा हुन भारत आये और यहीं पर रच बस गए और भारतीय समाज में समाहित हो गए। बौध्द धम्म का यह सामाजिक एकता और राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। यह ब्राह्मण धर्म की वर्ण-व्यवस्था में कतई मुमकिन नही था।(L.M.Joshi:1973:52) भारत में कभी हिन्दू-मुस्लिम जातीय संघर्ष ही पैदा नही होता अगर मुस्लिम आक्रमण के वक्त भारत में बौध्द धम्म कायम होता। भारत में मुस्लिम जनता दिगर जातियों के साथ एकरुप न होने की वजह ब्राह्मण-धर्म की असमानता और जाति-व्यवस्था की धार्मिक शिक्षा और पंरपरा है।(http://www.experiencefestival.com//Buddhism in Bangladesh - History - Encyclopedia II _ Global Oneness.htm) बुध्द के सामाजिक समानता तथा सदभाव का पैगाम लोगों के दिलों दिमाग में बडी गहराई से उतरा है। बौध्द धम्म के उन्मुलन के बाद भी गैरब्राह्मण संतों की शिक्षा में मौजूद रहा। बहुजन संतों ने ब्राह्मणवाद के खिलाफ बगावत की। उन्होने ब्राह्मणों की वर्ण-व्यवस्था को नकार दिया। जन्म पर आधारित जाति तथा वर्ण की श्रेष्ठता को नकार दिया। उन्होने ब्राह्मणों के कर्मकांडों को नकार दिया। उनके विचार बौध्द मत से प्रभावित थे।

कल्याणकारी बुध्दिस्ट राज्य की रुपरेखा !

बौध्द धम्म लोगों को नैतिकतापूर्ण जीवन जीने, औरों की भलाई के काम करने को प्रेरित करता है। बौध्द धम्म राजाओं तथा सभी स्तर के शासकों को लोगों की भलाई के लिये समर्पित होने को कहता है। बौध्द धर्म आम अवाम की भलाई चाहता है जबकि वेदीक ब्राह्मण धर्म की मान्यता है कि सारी दुनियां ब्राह्मणों के उपभोग के लिये बनी है। कल्याणकारी बुध्दिस्ट राज्य की संकल्पना की अभिव्यक्ति बौध्द राजाओं के कार्यो से पता चलती है। सम्राट अशोक को अपने राज्यशासन में बुध्दिस्ट राज्य की संकल्पना को साकार करने का बेहतर मौका हासिल हुआ है।

उनके कामों की जानकारी उनके शिलादेशों (Edicts) से मिलती है। ये शिलादेश सम्राट अशोक के संपूर्ण साम्राज्य भर में पाये गए।

करुणा-भाव बौध्द-राज्य मूलाधार है !

लोगों के दुखों के प्रति संवेदनशिल होना बौध्द राज्य का मूलाधार है। इसी प्रेरण ा से शासक अहिंसा, न्याय तथा आम लोगों की भलाई के काम कर सकता है। करुणा उत्पन्न होने की वजह से ही सम्राट अशोक के मन में कलींग युध्द में हुए भीषण जनसंहार के प्रति भारी पश्चाताप था। सम्राट अशोक ने अपने शिलादेशों में कलींग युध्द में हुई हिंसा और जनसंहार की हानी पर पश्चाताप व्यक्त किया। सम्राट अशोक के शिलादेश के मुताबिक :- देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी ने राजगद्दी संभालने के आठ वर्ष बाद कलिंग पर कब्जा किया। देढ लाख लोग इसमें विस्थापित हुए। एक लाख लोग मारे गये, तथा कई लोग दूसरे कारणों से मौत के शिकार हुए। कलींग पर विजय हासिल करने के बाद देवप्रिय धम्म की ओर, धम्म की सीख की ओर तीव्रता से आकर्षित हुए है। देवप्रिय को कलिंग विजय पर गहरा पश्चाताप है।(Rock Edict Nb13 (S. Dhammika))

सभी राज्यों से मित्रता के संबंध !

सम्राट अशोक के शिलादेशों में उन्होने काबिज किये हुए प्रदेशों का तथा मित्र राष्ट्रों का उल्लेख है। सम्राट अशोक की सैन्य ताकत इतनी अधिक थी कि वह सभी पडौसी राज्यों को आसानी से जीत सकते थे। ऐसा करने की बजाय सम्राट अशोक ने चोला, पांडया, केरलपुत्र, अलेक्झांडर के बाद के राज्य (eleucid Empire and the Greco-Bactrian kingdom established by Diodotus I), ताम्रपर्णी (श्रीलंका), तथा सुवण र्भूमि (बर्मा) इ. को अपना मित्र राष्ट्र बनाया। सम्राट अशोक अपने शिलादेशों में कहते है कि पडौसी राज्यों को उनसे डरने की कतई जरुरत नही है। वे लोगों के दिल धम्म की दलीलों से जीतेंगे न कि हिंसा से। सम्राट अशोक कलींग युध्द पर पश्चाताप व्यक्त करते हुए इन देशों को भरोसा दिलाते है कि उनका साम्राज्य विस्तार का कोई इरादा नही है। सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिये तथा शांति बनाये रखने के लिये अपनी विशाल सेना कायम रखी। इसलिये कभी किसी की हिम्मत नही हुई कि कोई उनपर आक्रमण करें। सम्राट अशोक ने न सिर्फ पडौसी राज्यों से मित्रता कायम की बल्कि एशिया तथा युरोप के बाकी देशों से मित्रता तथा व्यापार के संबंध कायम किये। उन्होने इन देशों में अपने बौध्द धर्म के प्रचारक भेजे ताकि धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान किया जा सके। सम्राट अशोक ग्रीक हेलेनिक दुनिया से पूरी तरह से वाकिफ थे। उनके शिलादेशों में मित्रों के तौर पर इनका उल्लेख है।(http://storieswithasoul.wordpress.com/Maurya Empire – Emperor Ashoka the Great _ storieswithasoul.htm)

बौध्द सम्राटों ने समाजिक समानता को प्रोत्साहित किया !

ब्राह्मणों को सम्राट अशोक के काल में राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में जबर्दस्त शिकश्त का सामना करना पडा। सम्राट अशोक ने सभी लोगों को एक समान करार दिया और ब्राह्मणों के समकक्ष लाकर खडा किया। सम्राट अशोक ने शुद्रों तथा दलित

जातियों को अपने शासन में उच्च पद दिये।(Original Buddhism And Brahminic Interference Dr. K. Jamanadas, "Shalimar", Main Road, Chandrapur (Maharashtra), 442 402 E-mail: kjdas@rediffmail.com) तामिल भाषी प्रांतों के राजवंश किसान कुलों से थे। पांडया का उगम मारार नामक जनजाति से हुआ था। चोल राजा तिराय्यीरार जनजाति से तथा चेरा वानावार नामक जनजाति से थे। बौध्द धम्म का प्रभाव लोगों के मन में इतना अधिक था कि इसवी पहली शताब्दी तक भी भारत ब्राह्मणों की जाति व्यवस्था से मुक्त था।(Cambridge hist. of India, p. 540)

बौध्द शासन-व्यवस्था धर्मपिरपेक्ष जनतांत्रिक व्यवस्था है !

बौध्द धम्म की धर्मनिरपेक्षता का मतलब राज्य का धर्मविहीन होना नही है। इसका अर्थ यह है कि राज्य तमाम धर्मो के नैतिक और जनोपयोगी, लोककल्याणकारी बातों तथा उसूलों को बिना किसी पक्षपात के बढावा देगा। इसे सम्राट अशोक के शिलादेशों से स्पष्ट रुप से समझा जा सकता है। सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों में बौध्द ध म्म के नैतिकता, सदाचार और लोककल्याण की बातों के लिये लोगों को प्रेरित करते वक्त धम्म का नाम लिये बिना सिर्फ उसूलों की बातें की है ताकि हर धर्म के लोग बिना किसी हिचक के उनपर अमल कर सके। सम्राट अशोक ने हर किसी जाति-समुह को चाहे फिर उसका धर्म कोई भी क्यों ना हो कभी भेदभाव नही किया। सभी को समान रुप से देखा गया।

यहां यह स्पष्ट करना जरुरी है कि जो बातें नैतिकता, सदाचार और लोककल्याण के खिलाफ है वे बातें चाहे किसी भी धर्म ने क्यों ना बताई गई हो सम्राट अशोक ने उन बातों पर सख्ती से पाबंदी आयद की है। उन्होने जाति और वर्ण-व्यवस्था को नकार दिया। उन्होने जानवरों की यज्ञ में बलि देना, जानवरों का शिकार करना इ. पर पाबंदी आयद की, कुप्रथाओं तथा खर्चीली परंपराओं को त्यागने, व्यर्थ का खर्चा न करने के लिये लोगों को प्रेरित किया। सम्राट अशोक ने कई हजार पाखंडी भिख्खुओं को बौध्द धम्म से बाहर का रास्ता दिखाया था। धर्म निरपेक्षता का मतलब धर्म की हर उलूल-जुलुल, जनविरोधी, शोषणपरस्त, अलोकतांत्रिक और असमानता का पोषण करने वाली बातों को मानना नही है। सम्राट अशोक की नजर में धम्म का अर्थ नैतिकता, समाज के उत्थान के प्रति संवेदनशिलता, धार्मिक सहीष्णुता, साम्राज्य विस्तार के युध्दों का त्याग इ. है। सम्राट अशोक के राज्य में जैन-धर्म, झोरोस्टर का धर्म, ग्रीक बहुदेवतावाद, इ. धर्मो का पालन किया जाता था। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'सभी धर्म हर जगह उपस्थित रहे क्योंकि सभी आत्म-नियंत्रण और मन की शुध्दता चाहते है। (Rock Edict Nb7 (S. Dhammika)) धर्मो के बीच का संवाद एक अच्छी बात है। हमने सभी धर्मो के सिधान्त सूनने और समझने चाहिये तथा उनका आदर करना चाहिये। देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी की इच्छा है कि सभी लोग दूसरे धर्मो के अच्छे सिधान्तों से खुद को अवगत करें। (Rock Edict Nb12 (S. Dhammika)) उपरोक्त शिलादेश से स्पष्ट है कि सम्राट अशोक सिर्फ विभिन्न धर्मो के अच्छे पहलुओं पर ही जोर देते थे। ब्राह्मणों के वेदिक ध र्म में खोजकर भी कोई अच्छी बात नही मिल सकती इस बात को स्पष्ट करना जरुरी है। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'पहले किसी भी शासक ने धम्म महामत्रा (Dhamma Mahamatras) यानि धार्मिक विभाग का मंत्रालय कायम नही किया था। लेकिन मैने राजगद्दी संभालने के 13 साल बाद ऐसे अधिकारी नियुक्त किये है। अब वे सभी ध र्मो के बीच धम्म को कायम करने, धम्म को बढावा देने, तथा सभी लोगों की भलाई

और सुखों के लिये काम करते है। वे ग्रीक, कंबोज, गांधार, राष्ट्रक, पितिनिक, पश्चिमी सीमावर्ति क्षेत्र तथा दिगर लोगों के बीच काम करते है। वे सेना के सिपाहियों के बीच, प्रमुखों के बीच, ब्राह्मणों के बीच, गृहस्थों के बीच, गरीबों के बीच, वयस्कों के बीच तथा जो धम्म को समर्पित है उन सभी लोगों के बीच उनकी भलाई के लिये काम करते है। ताकि लोग दूखों तथा तकलीफों से मुक्त रहे।(Rock Edict Nb5 (S. Dhammika))

सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक धम्म महमत्रा नामक अधिकारी कैदियों के साथ अच्छा बर्ताव करने, उन्हे जंजीरों से मुक्त रखने, अगर यह महसूस किया जाता कि उसपर ही उसका पूरा परिवार भरण-पोषण के लिये निर्भर है, या जो बहुत बूढा है तो ऐसे कैदी को मुक्त करने की सीफारीश करते थे। ये अधिकारी सभी लोगों के बीच काम करते थे और इस बात की जानकारी रखते थे कि कौन कितना धम्म के प्रति समर्पित है। धम्म के प्रति कौन कितना उदार है।(Rock Edict V)

सम्राट अशोक के राज्य की जिम्मेदारी सभी धर्मो की हिफाजत करना, धर्मो के बीच सदभाव बनाये रखना थी। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक लोगों का आपस में भाईचारे और प्रेम से रहना धार्मिक उत्सव मनाने तथा कर्मकांड करने से अच्छा था। सम्राट अशोक ने लोगों को दयाभाव रखने, खुद के कामों तथा विचारों का आत्म-परिक्षण करने, इमानदारी बरतने, मन गलत विचारों से मुक्त रखने, भलाई के प्रति आभारी होने, उत्साही बनने, प्रामाणिकता तथा आत्म-संयम बरतने तथा धम्म के सिध ान्तों से प्रेम करने के लिये प्रेरित किया। प्राचीन भारत के सभी राजाओं तथा हुक्मरानों को सम्राट अशोक की राज्यव्यवस्था के आदर्शो का पालन करने के लिये प्रेरित किया जाता था।(The Edicts of King Asoka An English rendering By Ven. S. Dhammika) पाल सम्राटों ने भी खुद को धार्मिक सहिष्णुता के लिये समर्पित किया था ताकि सभी ध र्मो के लोग आपस में प्रेम से रह सके।

आम लोगों के लिये सम्राट अशोक की आश्चर्यजनक उपलब्धता !

सम्राट अशोक लोगों को किसी भी समय आसानी से उपलब्ध थे। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक वे लोगों से प्रत्यक्ष मिलना पसंद करते है। इसलिये वे अपने राज्य में सतत दौरे पर रहते थे। उन्होने अपने अधिकारियों को आदेश दिया था कि वे भी जनता को हमेशा आसानी से उपलब्ध रहे। सम्राट अशोक के शिलादेश के मुताबिक :- देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी कहते है कि इसके पहले राज्य के कामकाज की रिपोर्ट राजाओं को किसी भी समय नही दी जा सकती थी। लेकिन मैने आदेश जारी किये है कि किसी भी समय चाहे मै खाना खा रहा हुं, अपने शयन कक्ष में हुं, अपने रथ पर हुं, पालखी में हुं, बगीचे में हु, चाहे जहां भी हुं खबरचीयों ने लोगों के मामलों में फौरन सूचना देनी चाहिये ताकि मै उसपर फौरन कार्रवाई कर सकुं। दान के संबंध में या जाहिर घोषण ाओं के संबंध में मैने जो भी मौखिक आदेश दिये है उसके संबंध में या मंत्रालय का जरुरी काम आने पर या किसी बात पर काउंसिल में असहमति पैदा होने पर या विवाद होने पर इसकी सूचना मुझे फौरन दी जाये। मुझे काम से कभी थकान नही होती। मै सभी की भलाई को अपना कर्तव्य मानता हुं। इसके लिये खुद को हमेशा उपलब्ध रखना जरुरी है। लोगों की भलाई से बडा कोई काम नही है। मै लोगों की भलाई के लिये जो कुछ भी करता हुं मै सभी लोगों के प्रति अपना फर्ज अदा कर रहा हुं ताकि उनका जीवन खुशहाल हो। इस धम्मादेश को शिलाओं पर लिखा गया है ताकि मेरे बेटे तथा पोते इसके मुताबिक चल सके। चाहे यह काम कितना भी कठिन क्यों ना हो वे बिना

थके इसे करते रहे।(Rock Edict VI)

स्थानीय भाषाओं में राजकाज !

बौध्द शासकों ने आम लोगों की स्थानीय भाषाओं में राजकाज किया। उन्होने स्थानीय भाषाओं के विकास के लिये तथा स्थानीय भाषाओं में साहित्य निर्माण में मदद दी। भारत के इतिहास की सबसे पहली इबारतें बौध्द इबारतें है। अशोक की धम्मलिपि ब्राह्मी तथा उससे निर्मित लिपियों की जननी है। पालि जनभाषा का विकास तथा उसके साहित्य के विस्तार की वजह बौध्द धम्म है। बौध्द धम्म की परंपराओं में प्राकृत भाषा का बडा योगदान है। सम्राट अशोक के शिलालेखों में प्राकृत भाषा के प्रकार का इस्तेमाल किया गया है। सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों में स्थानीय भाषाओं का इस्तेमाल किया है। बुध्द का भिख्खुओं को आदेश था कि वे लोगों को उनकी भाषाओं में धम्म समझाये। बौध्द धम्म को अपनी जनभाषा में समझे। बुध्द के आदेशों का कडाई से पालन किया जाता था।

पाल सम्राटों की भाषा आरंभिक बंगाली (Proto-Bengal Language) भाषा थी। पाल सम्राटों के शासन के दौरान ही आरंभिक बंगला भाषा का विकास हुआ था। चर्यपद (Charyapada) नामक बौध्द साहित्य भी आरंभिक बंगला भाषा में ही लिखे गए थे। इस भाषा का राजभाषा के रुप में तिब्बत, मॅनमार जावा तथा सुमात्रा में उपयोग किया जाता था। पाल साम्राज्य के दौरान ज्ञान के सभी क्षेत्रों में साहित्य का निर्माण किया गया। दर्शनशास्त्र में गौडपद व्दारा अगम शास्त्र बनाया गया। श्रीधर भट्ट व्दारा न्याय कुंडली, भट्ट भवदेव व्दारा कर्मनुष्ठान पध्दति, औषधीविज्ञान में चिकित्सा संग्रह, भानुमति, शब्दचंद्रिका, चक्रपाणी दत्त व्दारा द्रव्यगुणसंग्रह, शब्द प्रदीप, सुरेश्वर व्दारा लौहपध्दति, वंगसेन व्दारा चिकित्सा सारसंग्रह, गदाधर वैद्य व्दारा सुश्रत, दयाभागा, जिमुतवाहन व्दारा व्यवहार मांत्रिक तथा कलाविवेक इ. लिखे गए। अतिशा ने 200 से अधिक किताबों का संकलन किया।

न्याय तथा दंड-व्यवस्था !

सम्राट अशोक ने न्याय-व्यवस्था में उचित सुधार किया ताकि लोगों को फौरन, बिना किसी तकलीफ के न्याय मिल सके। अशोक बहुत महत्व देते थे कि लोगों को निपक्ष रुप से न्याय मिले। जिन्हे मौत की सजा दी गई है उन्हे यह सुविधा थी कि वे सजा के खिलाफ अपील तैयार कर सके। उचित कारण होने पर वे उनकी सजा माफ कर देते थे। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक :- यह मेरी इच्छा है कि न्याय देने में सभी के लिये समान कानून हो तथा सभी के साथ एक जैसा रवैया अपनाया जाये। मै यहा तक कहता हुं कि जिन्हे मौत की सजा दी गई है उनकी सजा को तीन दिनों के लिये मुल्तवी रखा जाये ताकि कैदी के रिश्तेदार उसकी जान बक्श देने के लिये अपील तैयार कर सके। अगर कैदी के लिये अपील करने वाला कोई भी रिश्तेदार नही है तो कैदी लोगों को दान इ. कर पुण्य कमाये, उपवास इ. करें।(Pilar Edict Nb4 (S. Dhammika)) अशोक का कैदियों के प्रति दृष्टीकोण दयापूर्ण था। उन्होने कैदियों को यातनाएं देने, उनकी आँखे निकालने, मृत्यु दंड इ. पर प्रतिबंध आयद किया। बुजुर्ग कैदियों को, तथा जिनपर परिवार पूरी तरह से निर्भर है इ. को माफी दी। उन्होने कैदियों को साल में एक बार कैद से बाहर रहने की व्यवस्था की। सम्राट अशोक के शिलादेश के मुताबिक :- पिछले 26 सालों के शासन में 25 अवसरों पर कैदियों को माफी दी गई। (Pillar Edict V)

रोगियों के उपचार की सुविधाएं !

सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक उन्होने बीमार इन्सानों तथा जानवरों के इलाज के लिये न सिर्फ अपने साम्राज्य में बल्कि अपने पडौसी राज्यों तक में दवाखाने खोले। सम्राट अशोक के शासन में विज्ञान, तकनीक, औषधि-विज्ञान और शल्य-चिकित्सा में बेहद उन्नती हुई। गीरनार तथा सौराष्ट्र में प्राप्त सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'देवप्रिय दयालू सम्राट ने चोल, सेरा, पांडया, ताम्रपर्णी (श्रीलंका) तथा ग्रीक राजा एन्टीओचस (Antiochus) के राज्य के बीमार इन्सानों तथा जानवरों के उपचार के लिये दवाखाने इ. की व्यवस्था की।' कई बौध्द भिख्खु जो बौध्द मोनेस्टरी में रहते थे वे लोगों को मोनेस्ट्री के स्कूलों में मुफ्त शिक्षा देने के अलावा कुशल चिकित्सक थे और लोगों का मुफ्त इलाज भी करते थे।(Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka) सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी ने अपने राज्य में हर तरफ अस्पताल खोले है। उन्होने राज्य के बाहर चोला, पांडया, सातियापुत्रास (Satiyaputras), केरलरपुत्रास (Keralaputras), ताम्रपर्णी तथा ग्रीक राजा एन्टीओचस (Antiochos) के राज्य में भी अस्पताल खोले। देवप्रिय प्रियदर्शी सम्राट ने इन्सानों तथा जानवरों के उपचार के लिये दवाखाने खोले। सम्राट अशोक के मुताबिक इन्सानों तथा जानवरों के उपचार के लिये औषधी वनस्पति जहां उपलब्ध नही है, मैने उन वनस्पतियों का विदेशों से आयात किया है और राज्य में उन वनस्पतियों को उगाया है। रास्तों के किनारों पर मैने लोगों की सुविधा के लिये कुंए खोदे है और फलदार वृक्ष लगाये है।(Rock Edict Nb2 (S. Dhammika)) सम्राट अशोक ने पक्षियों के इलाज तक के लिये अस्पताल खोले।

बौध्द शासन-व्यवस्था में अन्य जन-सुविधाओं का निर्माण !

सम्राट अशोक ने अपने समूचे राज्य में रास्तों का संजाल बिछाया ताकि लोगों को सफर में दिक्कत पेश ना आये। उन्होने रास्तों के दोनों और फलों के छायादार पेड लगाये ताकि इनके नीचे लोग विश्राम कर सके। उन्होने रास्तों पर हर आठ कोस के अंतरों पर कुएं खुदवाये ताकि लोगों तथा उनके जानवरों को पानी के लिये तरसना ना पडे। उन्होने नगरों में धर्मशालाएं बनाई ताकि गरीब मुसाफीर वहां मुफ्त में ठहर सके। सम्राट अशोक ने बगीचे और तालाब बनवाये। सम्राट अशोक ने आमों के उपवन लगाये। सम्राट अशोक के शिलादेशों मुताबिक उन्होने ऐसा इसलिये किया है ताकि लोग धम्म के उसूलों के प्रति आकर्षित हो। (Pilar Edict Nb7 (S. Dhammika)) यानि उन्होने यह सब खुद को श्रेय देने के लिये नही बल्कि धम्म के उसूलों का पालन करने के मकसद से किया था। सम्राट अशोक ने आम लोगों में उच्च व्यवसायिक मकसद जगाने की पूरजोर कोशिशें की ताकि समाज का हर तबका आगे बढ सके। उन्होंने लोगों की शिक्षा के लिये शिक्षा केन्द्रों को कायम किया। व्यापारियों तथा किसानों के विकास के लिये बेहतर सिंचाई व्यवस्था कायम की। सम्राट अशोक के आदर्शो को सामने रखते हुए पाल साम्राज्य के सम्राटों ने भी जनकल्याण और सामाजिक सुधार को सबसे पहली प्राथमिकता पर रखा। उन्होने भी जगह जगह कुंए, तालाब बनवाये तथा नगरों की रचना की। उनके कामों की वजह से आज भी बंगाल के गांवों में 'महिपाल के गीत' के नाम से पाल राजाओं की प्रसंशा के गीत गाये जाते है।

बौध्द शासन सदाचार के पालन के लिये समर्पित है !

सम्राट अशोक अपने कल्याणकारी कामों से धम्म-अशोका के नाम से प्रसिध्द हुए। उनके शिलालेखों में लोगों को नैतिकता तथा अहिंसा को सदाचार के जीवन-दर्शन यानि अष्टांग मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया गया। ताकि वे सच्ची खुशी हासिल कर सके और वे समाजोपयोगी बने। सम्राट अशोक के शासन में चोरी जैसी घटनाएं सुनी तक नही जाती थी। सम्राट अशोक के शिलालेखों के मुताबिक उनके प्रयत्नों से लोग बडी तादाद में धम्म के रास्ते पर चल पडे है। सम्राट अशोक ने लोगों को अपने मां-बाप, शिक्षकों, बुजुर्गो, मित्रों यहांतक कि अपने नौकरों तक का आदर करने की शिक्षा दी। सम्राट अशोक ने बताया हुआ धम्म नैतिकता का पालन करने और समाज उपयोगी अच्छे काम करने, लोगों का सम्मान करने, मन में करुणा विकसित करने, जरुरतमंदों की मदद करने, छल-कपट से दूर, उदार तथा शुध्द मन का होने पर जोर दिया है। अशोक के कंधहार में प्राप्त शिलालेख के मुताबिक जो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नही कर सकते थे धम्म के रास्ते पर चलने के बाद उन्हे खुद पर नियंत्रण करना आ गया। वे अब अपने माता-पिता, बुजुर्गो, शिक्षकों तथा सभी के साथ नम्रता से पेश आते है। अब वे ज्यादा अच्छा और सुखी जीवन जी रहे है।(Pilar Edict Nb2, Rock Pilar Nb7 (S. Dharmika)) सम्राट अशोक के धम्म का मकसद शासन की ताकत तथा धन का उपयोग लोगों का भौतिक तथा नैतिक रुप से विकास करना है।

सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'देवप्रिय प्रियदर्शी सम्राट कहते है कि जब कोई बीमार होता है, जब किसी के बेटे या बेटी की शादी होती है, परिवार में बच्चे का जन्म, सफर तथा दिगर अवसरों पर लोग असभ्य तथा उपयोगहीन समारोहों या कर्मकांडों का आयोजन करते है। इन कर्मकांडों से कोई फायदा नही है। जबकि धम्म की राह पर {अष्ठांगमार्ग पर} चलने में लोगों को अच्छे फल मिलते है।(Rock Edict IX) देवप्रिय सम्राट प्रियदर्शी कहते है कि लोगों को हम यह कहते हुए देखते है कि उन्होने यह अच्छा काम किया है। लेकिन उनकी नजर अपने गलत कामों पर नही जाती। वे यह कहते दिखाई नही देते कि मैने यह गलत काम किया है। खुद के दोषों को देखने समझने की प्रवृत्ति का होना कठिन है। इस पर सभी ने गौर करना चाहिये क्योंकि इसी प्रवृत्ति की वजह से लोग दुष्ट काम, हिंसा, गुस्सा, घमंड तथा इर्षा इ. के शिकार होते है। हमें इन बातों से खुद को तबाह-बर्बाद नही होने देना है। इस बात पर विचार करना है कि क्या यह बात हमें सचमुच सुखी कर सकती है ?(Pillar Edict III)

बौध्द धम्म विचारों को लादने में नही बल्कि समझाने में विश्वास करता है !

सम्राट अशोक ने यह घोषित किया कि उन्होने युध्द घोष को बंद कर धम्म घोष से अपने साम्राज्य के लोगों के दिलों को जीता है। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'देवप्रीय प्रियदर्शी सम्राट कहते है कि धम्म के जरिये लोगों की भलाई का काम 1) धम्म संबंधी नियम बनाकर तथा 2) लोगों को धम्म के नियमों का पालन करने के लिये उनका मन परिवर्तन इन दो उपायों से किया गया। धम्म के नियम बनोने का बहुत कम असर हुआ। लेकिन जब धम्म के नियम समझाकर दिलों को बदला गया तो नियमों के पालन करने में बहुत बडा असर दिखाई दिया। धम्म के नियमों में कहा गया है कि विभिन्न जानवरों की रक्षा की जाये। इसके साथ ही कई धम्म संबंधी नियम बनाये गए। लेकिन लोगों के मन परिवर्तन कर के ही इनपर व्यापक रुप से अमल हुआ। (Pillar Edict VII)

बलिप्रथा तथा जानवरों की हत्या पर पाबंदी !

सम्राट अशोक ने वेदिक ब्राह्मणों के यज्ञों में बलि के नाम पर बडे पैमाने पर किये जाने वाले जानवरों के कत्लेआम पर पाबंदी आयद कर दी। सम्राट के शिलालेख के मुताबिक किसी भी जीव की मेरे राज्य में बलि नही चढाई जायेगी।(Here (in my domain) no living beings are to be slaughtered or offered in sacrifice. Rock Edict Nb1 (S. Dhammika)) कंदहार में प्राप्त सम्राट अशोक के शिलादेश के मुताबिक सम्राट अशोक ने जानवरों का शिकार करना बंद कर दिया है। उसी प्रकार शिकारियों व्दारा शिकार करने पर पाबंदी लगाई है। मछुआरे भी मछलियाँ पकडने से परहेज कर रहे है। सम्राट अशोक दुनियां के पहले ऐसे सम्राट है जिन्होने जंगली जानवरों तक को सुरक्षा दी है। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक 'राजगद्दी पर बैठे हुए मुझे 26 साल हो चुके है। मैने कई जानवरों को सुरक्षित जानवर घोषित किया है। इनमें तोते, मैना, अरूणा, जंगली बत्थक, रुडी गीस (ruddy geese), नंदीमुख (nandimukhas), गेलाट (gelatas), चमगादड, रानी चीटीयां, कछुए, बिना रीढ़ की मछली, वेडारेयाक (vedareyaka), गंगापुपुटक (gangapuputaka), पोरक्युपाईन (porcupines), गीलहरीयां, हिरण, बैल या सांड, ओकापिंड (okapinda), जंगली गधे, जंगली कबुतर, पालतु कबुतर तथा ऐसे सभी चार पैरों वाले जानवर जो न ही उपयोगी है और न ही खाने योग्य है। बच्चेवाली बकरी, बच्चेवाली भेड, इ. जो अपने बच्चों को दूध पिलाती है संरक्षित जानवर है। छह महीने से कम उम्र के उनके बछडे भी संरक्षित जानवर है। मूर्गो के सीर के तुर्रे को काटा न जाये न ही उसे बांध कर रखा जाये। ऐसे जंगल या झाडियां जिनमें जानवर आश्रय लेते है जलाये न जाये। एक जानवर दूसरे जानवर को खिलाया न जाये। (Edict on Fifth Pillar)

भले ही जानवरों को संरक्षित किया गया था लेकिन बाकी के जानवरों को जो छह माह से उपर के है मांसाहारी भोजन के मकसद से काटा जा सकता था। लेकिन लोगों को ऐसा कम से कम करने के लिये समझाया गया। सम्राट अशोक के शिलालेख के मुताबिक हमारे सम्राट बहुत कम जानवरों की हत्या करते है। पांचवे शिलालेख के मुताबिक भोजन के लिये मारे जाने वाले जानवरों की तादाद कम रखी जाये। उन्होने जानवरों के साथ क्रूरता का बर्ताव करने उनका खच्चीकरण करने का भी विरोध किया है।

सम्राट अशोक के शिलादेश क्रमांक 1 के मुताबिक किसी भी जानवर की बलि नही दी जाएगी। पहाडों पर जानवरों के मांस की दावतें नही मनाई जाएगी। उन्होने शाही रसोई में रोज एक मोर को काटने की प्रथा पर भी पाबंदी आयद की। मांसाहार पर पाबंदी नही थी लेकिन बहुसंख्य आबादी ने खुद होकर शाकाहारी भोजन को अपनाया। बीमार और कमजोर भिख्खुओं तथा लोगों के लिये मछली तथा मांस का भोजन करने की सीफारीश की गई। अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर इरफान हबीब के मुताबिक बौध्द भिख्खु माँसाहार कर सकते थे। बौध्द धम्म में इस संबंध में सिर्फ यह प्रतिबंध है कि भिख्खु की दावत के लिये कोई प्राणी को न काटा जाये। बौध्द सुत्रों में इस बात का जिक्र है कि अगर कोई उन्हे मांस पेश करता है तो वे उसे पकाकर खा सकते है। लाहीरी के मुताबिक बौध्द भिख्खु मांसाहार करते थे यह बात श्रीलंका में अनुराधापूरा के अभयगीरी बौध्द विहार तथा सिगिरिया बौध्द विहार में जानवरों की छोटी छोटी हड्डियां उत्खनन में मिली है इससे साबित होती है। सम्राट अशोक के शिलादेशों के मुताबिक कुछ खास दिनों में जानवरों को काटे जाने पर पाबंदी थी।(Pillar Edict V)

बौध्द शासन में पर्यावरण का संरक्षण !

मौर्य साम्राज्य पहला साम्राज्य है जिसने सारे भारत को एक किया तथा पर्यावरण की रक्षा के लिये तथा नैसर्गिक संसाधनों के इस्तेमाल को लेकर निश्चित नीति लागू की। इन संसाधनों की रक्षा के लिये उन्होने अधिकारी नियुक्त किये। सम्राट अशोक ने प्राणियों के शिकार पर पाबंदी आयद की। उन्होने जंगल जलाने पर पाबंदी आयद की तथा उपयोगी व औषधी वनस्पतियों को संरक्षित किया।

बौध्द व जैन धर्म ने विभिन्न कलाओं तथा निर्माणों को बढावा दिया !

गांधार की बौध्द कला :- आरंभ में बुध्द की तस्वीर या मूर्ति नही बनाई जाती थी क्योंकि बुध्द ने अपने सिधान्तों को ही सर्वोपरी माना है। उन्होने धर्म का उत्तराधिकारी नियुक्त करने तक से मना कर दिया। उन्होने खुद को मार्गदाता कहा न की मोक्षदाता। इसलिये प्रतिक चिन्हों में खाली सिंहासन, बोधी वृक्ष, बुध्द के पदचिन्ह, तथा धम्मचक्र माने जाते थे। महायान बौध्द धर्म ने बुध्द को इन्सान की बजाय अलौकिक ताकतों से युक्त करार देकर उनकी तस्वीरें, मूर्तियां इ. बनाना शुरु किया। बुध्द की मूर्तियां ग्रीक-रोमन पध्दति से बनाई गई। यह कलापध्दति गांधार कला पध्दति कहलाई गई जो ग्रीक, रोमन तथा भारतीय कला का संमिश्रण थी। कुशान साम्राज्य में कमर पर बांधने वाले पट्टों तथा कपडों पर भी बुध्द की आकृति होती थी। गांधार कला तथा संस्कृति का पश्चिम के देशों पर बडा गहरा प्रभाव पडा है।

बौध्द धम्म ने वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला को बहुत अधिक प्रोत्साहन दिया। बौध्द विहार, स्तुप, चैत्य इ. बेमिसाल कलाकृतियाँ है। सांची, बाहरुट, बौध्द गया, नालंदा, अमरावती, तक्षिला, इ. जगहों पर बने बौध्द स्थलों की कला बेमिसाल है। अजंता, कार्ले, भजा, एलोरा इ. गुफाओं में मौजूद चित्रकारी तथा मूर्तिकारी भी देखने लायक है। अजंता की चित्रकारी में बुध्द के जीवन के विभिन्न प्रसंग दिखाये गए है। ये सारी कलाकृतियां विश्व-प्रसिध्द है। इन कलाकृतियों का निर्माण बौध्द भिख्खुओं ने उस समय किया जब बौध्द भिख्खु ब्राह्मणवादी राजाओं की प्रताडना से बचने के लिये इन दुर्गम गुफाओं में शरण लिये हुए थे। बौध्द धम्म के व्दारा ही भारतीय कला, साहित्य, दर्शन तथा नैतिक मानदंडों का प्रचार प्रसार व्यापक रुप से एशिया के विभिन्न हिस्सों में इसवी पहली शताब्दी में हुआ। नालंदा युनिवर्सिटी के मालदा शिलालेखों के मुताबिक युनिवर्सिटी के भिख्खु मूर्तिकला तथा दिगर कलाओं में बहुत पारंगत होते थे। सबसे प्राचीन और सबसे बेहतर कलाकृतियां बौध्द कलाकृतियां थी। मूर्तिकला की विषयवस्तु के लिये बौध्द धम्म एक आदर्श स्त्रोत था। बौध्द कलाकृतियों की अपनी अलग विशेषता (style) है। अकेले सांची में 827 शिलालेख है। इन शिलालेखों में दानदाताओं में दौ सौ से ज्यादा नाम भिख्खुओं तथा भिख्खुनियों के तथा बाकी नाम आम बौध्दों के है। यही बात दिगर बौध्द स्थलों पर लागू होती है। चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग के मुताबिक कई बौध्द भिख्खुओं ने बौध्द मॉनेस्टरिज का निर्माण किया और उसमें कलात्मक मूर्तिकारी और चित्रकारी की। यक्टिवन विहार के जयसेन एक उपासक थे। वे बौध्द दर्शन के एक शिक्षक भी थे। उन्होने कई बौध्द सुत्त लिखे। सबसे प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के अवशेषों में इंटों से बनाये गए बौध्द मानेस्टरिज है। इन्सान व्दारा पत्थरों को काट कर बनाये गये सबसे प्राचीन हॉल (halls) बौध्द विहार तथा जिवक श्रमणों के विहार है जिन्हे बौध्द राजाओं के आदेश पर खोदकर बनाया गया था। सबसे प्राचीन तथा सबसे खुबसुरत स्तंभों का

निर्माण जिनके उपर सिंह इ. जानवरों की मूर्ति लगाई गई है सम्राट अशोक ने बनाई बौध्द कलाकृतियां है। इन स्तंभों का चमकदार लेप कई शताब्दियों से सुरक्षित है। इन्हे अशोक की लाट भी कहा जाता है। भारत की प्राचीन भाषाओं की जानकारी (palaeography) तथा उनका आकलन (epigraphy) असंख्य तादाद में मिले बौध्द शिलालेखों से ही मुमकिन हो सका है। भारत भर में जो 1200 पत्थर से बनी गुफाएं, मोनॅस्ट्रीज, आश्रयस्थल, मंदिर इ. स्थल मिले है उनमें से 100 जैन धर्म के, 200 ब्राह्मण धर्म के तथा बाकी सारे बौध्द स्थल है। ब्राह्मण धर्म के अधीकांश स्थल मूल रुप से बौध्द स्थल है। उन स्थलों पर जबरन कब्जा कर उन्हे ब्राह्मण धर्म के स्थल बताये गये। प्राचीन भारत के सांस्कृतिक तथा सभ्यता के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे कि कला, साहित्य, भाषा, नैतिक दर्शन, रहस्यवाद, दर्शनशास्त्र, ज्ञान संबंधी शास्त्र (epistemology), तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान तथा सामाजिक चिंतन बौध्द धम्म की देन है जो बहुत महान, बहुत गहरी, और विविध प्रकार की है।

कुशानों सम्राटों व्दारा बौध्द-स्तुपों इ. का निर्माण :- सम्राट कनिष्क विशाल कलात्मक इमारतों के निर्माण में बहुत अग्रणी थे। उन्होने बौध्द मॉनेस्ट्री के निर्माण के लिये ग्रीक इंजिनियरों तथा कलाकारों की मदद ली। उन्होने पेशावर पाकिस्तान में विशाल बौध्द स्तूप का निर्माण किया। चीनी प्रवासी ह्युएन त्सांग (Xuan Zang) के मुताबिक इस विशाल स्तुप की उंचाई 600 to 700 चीनी फीट यानि आज की 591–689 फीट थी। उनपर मौल्यवान जवाहरात इ. लगाये गए थे। यह इमारत निश्चित रुप से प्राचीन भारत के लिये एक अजूबा थी। इस स्तुप में बुध्द की तीन अस्थियां रखी गई थी। इस स्तुप का उल्लेख चीन के डनह्युएंग के स्क्रोल्स (scrolls) में भी पाया गया है। इसके तीन दशक बाद चीनी प्रवासी फाहियान (Fa-hien) ने इस स्तुप को देखने के बाद यह यह निष्कर्ष निकाला कि यह अपनी तरह का इकलौता सबसे बडा स्तुप है। ए. फाउचर (A. Foucher) ने उत्खनन के लिये इस क्षेत्र का दोबारा निर्धारण सन् 1901 में किया। लेकिन सन् 1908–1911 के दौरान पूरातत्व वैज्ञानिक डेविड ब्रेनेरर्ड स्पुनर (David Brainerd Spooner) तथा एच. हारग्रीव्हस् ने अपने उत्खनन में पाया कि इस स्तुप के डायेमिटर (diameter) 286 फीट था। इसका मुख्य स्तुप 54 वर्ग मीटर में था। तथा इसके हर दीशा में अध ॅगोलाकार 15 मीटर का भाग बाहर निकला था। मुख्य स्तुप के इर्दगीर्द कई छोटे स्तुप बने थे। इस स्तुप का आधार पांच स्तरों का था। दूसरे सेक्शन में 13 मंजीला इमारत थी जिसका लकडा नक्काशीदार था। उसमें लोहे के स्तंभ लगे थे जिनपर तांबे का मुलम्मा चढाया गया था। प्रस्तुत विवरण चीनी प्रवासियों व्दारा किये गए विवरणों से पूरी तरह से मेल खाता है। सोने का मुलम्मा चढाई हुई कास्य की पेटी (casket) में सम्राट कनिष्क का नाम खरोष्टी लिपि में लिखा गया था। बाकी इबारत को लगभग सौ वर्ष बाद हॅरी फाल्क ने सन् 2002 में समझा। इससे यह दोबारा स्थापित हुआ कि इस विशाल स्तुप का निर्माण सम्राट कनिष्क ने ही किया है। इस पेटी यानि (casket) के ढक्कन पर बुध्द कमल की आकृति के आसन पर बैठे है। उनकी पूजा ब्रह्मा तथा इंद्र कर रहे है। पेटी के बाकी हिस्सों में सम्राट कनिष्क को, ईरान के सुर्य तथा चंद्र देवताओं को भी बताया गया है। पेटी के दूसरे हिस्से में बुध्द की आकृतियां है जिनकी पूजा राजपरिवार के लोग कर रहे है। एक पंख लगे बच्चे के हाथ में फूलों का हार है जो इस दृष्य को घेर कर है। ये कलाकृतियां ग्रीक पध्दति से बनी है। इस पेटी के निर्माण का श्रेय कुशान सम्राट हविष्क को दिया जाता है। यह पेटी पेशावर म्युजियम में रखी गई है। इसकी प्रतिकृति ब्रिटीश म्युजियम में है। बुध्द की अफगानिस्तान के बामियान तथा हेड्डा में बनी विशाल

बौध्द प्रतिमायें इसी काल में बनी है।

पेशावर में एक और विशाल स्तुप का पता चला है। सन 2012 की फरवरी में Hans Loeschner ने युनिवर्सिटी ऑफ कॅलिफोर्निया बर्कले में ऑसमंड बोपिराच्ची (Osmund Bopearachchi) से विचार विमर्श किया। बोपिराच्ची ने बताया कि 1) हाल में आयी बडी बाढ से स्तुप के हिस्से दिखाई दिये। 2) यह स्थल पेशावर के केन्द्रस्थल में आता है तथा 3) यह अवशेष कनिष्क के स्तुप हो सकते है।(SINO-PLATONIC PAPERS Number 227 July, 2012The Stkpa of the Kushan Emperor Kanishka the Great, with Comments on the Azes Era and Kushan Chronology by Hans Loeschner)

सम्राट कनिष्क ने इमारतें बनाई और शिल्पकला का विकास किया। पेशावर में बना विशाल टॉवर बुध्द की अस्थियों पर बना है। यह टावर लकडी से बना है और 400 फुट उंचा है। भर्टीडा का किला मुबारक भी कनिष्क ने बनवाया था। कनिष्क ने सम्राट अशोक की तरह स्तभ बनाये उनपर सिंह की मूर्ति स्थापित की। शायद सम्राट कनिष्क खुद को दूसरा अशोक मानता था, या अशोक उनका आदर्श था। कनिष्क के राजतिलक के वक्त भारत में पहली बार सोने के सिक्के ढाले गए। कुशान सम्राट हविश्क ने तीसरी शताब्दी में नक्काशीदार सिक्के जारी किये जो बुध्द गया में समर्पित किये गए। कुशान सम्राटों व्दारा जारी किये गये सोने के सिक्के उत्कृष्ट कलाकारी का नमुना थे। इसके अलावा इन सिक्कों में सोने की मात्रा ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं ने जारी किये सिक्कों से कहीं ज्यादा थी। यानि कुशान साम्राज्य बहुत खुशहाल था। ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं के सोने के सिक्कों का अशुध्द होना उनकी आर्थिक दुर्दशा को स्पष्ट करता है।

पाल सम्राटों के साम्राज्य में कला तथा संस्कृति का विकास :- पाल राजवंश के सम्राट बौध्द कलाओं, साहित्य तथा अध्ययन में जबर्दस्त रुची रखते थे। पाल साम्राज्य की खुबी उनकी बेहतरीन कला और शिल्पकारी थी। पाल साम्राज्य ने 'पाल शिल्पकला' नामक अपनी विशेष शिल्प पध्दति का विकास किया। उनके शासनकाल में कला, संस्कृति, साहित्य तथा चित्रकारी का खुब विकास हुआ। विक्रमशिल बौध्द विहार तथा युनिवर्सिटी, औदांतपुरी विहार तथा युनिवर्सिटी, जगद्दला विहार तथा युनिवर्सिटी की विशाल संरचना बेमिसाल पाल कला का नमुना है। बख्तियार खिलजी ने इन विशाल इमारतों को बडी दीवारों से सुरक्षित बनाये गए किले मानकर उन्हे ध्वस्त किया था। पाल इमारत निर्माण कला का उपयोग संपूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, जापान, तथा तिब्बत इ. में किया गया। बंगाल को स्वाभाविक तौर पर ''पूरब की रानी'' के तौर पर ख्याति हुई। डॉ. स्टेला (Dr. Stella Kramrisch) के मुताबिक बिहार तथा बंगाल की कला ने नेपाल, बर्मा, सिलोन, तथा जावा पर बडा गहरा असर डाला। धीमन तथा विट्टपाल नामक दो प्रसिध्द पाल शिल्पकार थे। सोमपुरा महाविहार के बारे में जे. सी. फ्रेंच का कहना है कि यह बडे दुख की बात है कि एक ओर जहां इजिप्त के पिरॅमिडों के अध्ययन के लिये कई मिलियन डॉलर हर साल खर्चा किये गये लेकिन हमने सोमपुरा महाविहार के उत्खनन के लिये उसका सिर्फ एक प्रतिशत ही खर्च किया है। कौन जानता है कि वहां कितनी आश्चर्यजनक बातें छुपी हुई है। (The Art of the Pala Empire of Bengal," p. 4)

जैन सम्राट खारावेला व्दारा बनाई गई गुफाएं :- भारतीय उपमहाव्दीप में जैन धर्म के प्रचार प्रसार में खारावेला का महत्वपूर्ण योगदान है। ओरीसा राज्य में भुवनेश्वर के निकट स्थित उदयगीरी तथा खंडागीरी गुफाएं कुछ प्राकृतिक तथा कुछ कृत्रिम रुप से बनाई गई गुफाएं है। उनमें अच्छे से सजाई हुई कई गुफाएं है। यह माना जाता है कि

इन गुफाओं में शिल्पकला का काम जैन मुनियों ने खारावेला के शासनकाल में किया है। उदयगीरी का मतलब सुर्योदय पहाडी होता है। इसमें 18 गुफाएं है। जबकि खंडागीरी में 15 गुफाएं है। इन गुफाओं को शिलालेखों में लेणी कहा गया है। इन गुफासमूहों में सबसे महत्वपूर्ण उदयगीरी में रानीगुंफा है जो दो मंजीला मोनेस्ट्री है। बी. एम. बरुआ ने हाथीगुंफा लेखों को पढने के बाद घोषित किया कि खारावेला तथा अन्यों ने उदयगीरी के कुमारी पहाडी में 117 गुफाएं खोदी थी। मार्शल ने इन दोनों पहाडियों पर 35 गुफाएं खोजी। उदयगीरी हाथीगुंफा में गुफा क्रमांक 14 तथा गणेशगुंफा गुफा क्रमांक 10 अपनी बेहतरीन शिल्प कलाकृतियों के लिये मशहूर है। रानी का नौर यानि रानी महल गुफा क्रमांक 1 भी कलाकृतियों का बेमिसाल उदाहरण है। अनंत गुफा गुफा क्रमांक 3 में औरतों, हाथियों, शारीरिक कर्तब दिखाने वालों की तथा अपनी चोंच में फल लिये हुए बदकों के शिल्प है। हाथिगुंफा में सम्राट खारावेला की इबारतें है। ये इबारतें सम्राट अशोक की इबारतों के सामने धाउली (Dhauli) में है। इसके अलावा भी कुछ गौण शिलालेख है।

बौध्द साम्राज्य में बिना किसी भेदभाव के सबको समान शिक्षा !

बौध्द तथा जैन धर्म की बुनियाद सभी के लिये समानता के व्यवहार पर आधारित है। प्राचीन भारत के बुध्दिस्ट मोनॅस्टीक विद्यालय तथा युनिवर्सिटीज सभी के लिये अपने दरवाजे खुले रखती थी चाहे फिर वे किसी भी लिंग, वर्ण, जाति, धर्म, प्रांत या देश के हो। इसलिये इन बौध्द शिक्षा संस्थानों को भारी ख्याति मिली और दूर दूर के देशों से छात्र इन विश्वविद्यालयों में पढने के लिये आये। ब्राह्मणवाद के लिये ऐसा करना कतई मुमकिन नही था क्योंकि वे ब्राह्मणों के अलावा किसी को शिक्षा लेने के अधिकार को नही मंजूर करते। ब्राह्मण-धर्म में हर वर्ण अपने वर्ण के मुताबिक काम करने पर मजबूर है। इसलिये शिक्षा संस्थानों का सबसे पहले निर्माण बौध्दों ने ही किया है। इसके पहले कोई शिक्षा संस्थान नही थे। बौध्द धम्म न सिर्फ भिख्खुओं को शिक्षित करने में विश्वास करता है बल्कि हर नागरिक को शिक्षित करना अपना पवित्र कर्तव्य समझता है। बिना शिक्षा के बौध्द धम्म का 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के घोष वाक्य का कोई अर्थ नही रहता। इसलिये बौध्द विहारों में भिख्खु लोगों को न सिर्फ बौध्द दर्शन समझाते थे बल्कि कई तरह के समाजोपयोगी हुनर और कला कौशल्य भी सिखाते थे। बौध्द धम्म की भिक्षुणियों को थेरी कहा जाता था। उनकी धार्मिक कविताओं को थेरीगाथा कहा गया है।

प्राचीन भारत के बौध्द विश्वविद्यालय !

[Information about Buddhist Universities of Ancient India is synthesized from following sources : NALANDA: lIustrious International Buddhist University 5th century CE to 12 century CE; NALANDA AND OTHER BUDDHIST UNIVERSITIES IN ANCIENT INDIA BY. SATYA SREE; http://yabaluri.org/Nalanda and Other Buddhist Universities.htm; http://en.wikipedia.org/Nalanda - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; Universities in Ancient India D. G. APTE Printed at the M.S. University of Baroda Press (Sadhana Press), Raopura, Baroda; http:// www.buddhist-tourism.com/Vikramshila Bihar,Buddhism in Vikramshila,Buddhist Heritage of Vikramshila,Buddhist Site of Vikramshila India.htm; http://en.wikipedia. org/Taxila - Wikipedia, the free encyclopedia.htm]

बौध्द भारत में बौध्द शिक्षा संस्थान 1) नालंदा, 2) वल्लभी विश्वविद्यालय 3)

व्रिक्रमशिला, 4) औदांतापुरी, 5) जगदल्ला, 6) सोमापुरा तथा 7) तक्षिला विश्वविख्यात रहे है।

1) नालंदा बौध्द विश्वविद्यालय :- नालंदा बौध्द विश्वविद्यालय को भारत की सबसे पहली महान युनिवर्सिटी के तौर पर मान्यता है। बुध्द नालंदा में रुके थे। बुध्द के समय में भी नालंदा एक समृध्द नगर था। बुध्द के समय से ही नालंदा में भिख्खुओं के व्दारा लोगों को धार्मिक तथा दिगर शिक्षा दी जाती थी। बुध्द के बाद यहां एक बौध्द विहार कायम किया गया। सम्राट अशोक ने नालंदा में बौध्द विहार का विकास और विस्तार किया था जहां बौध्द दर्शन के अलावा दिगर शैक्षणिक कार्य भी किये जाते थे। इसके बाद हर बौध्द सम्राट ने उसके विकास में अपना योगदान दिया। इस बौध्द विश्वविद्यालय का चरम विकास पाल बौध्द सम्राटों के काल में हुआ। पाल सम्राटों ने नालंदा तथा विक्रमशिला इ. सभी बौध्द युनिवर्सिटीयों का विकास किया। सम्राट देवपाल ने जावा के राजा बालपुत्रदेवा के अनुरोध पर जावा के विव्दानों के लिये बने मठ के खर्चे को पूरा करने के लिये पांच गांव नालंदा विश्वविद्यालय को भेंट किये। नालंदा इ. युनिवर्सिटी के धार्मिक प्रचारकों के माध्यम से बौध्द धम्म अंततः तिब्बत में स्थापित हो सका था। नालंदा विश्वविद्यालय ईसवी 500 से 13 वी शताब्दियों तक कार्य करता रहा।

नालंदा विश्वविद्यालय का कुल क्षेत्र 30 एकर था। ह्युएन त्सांग तथा दिगर प्रसिध्द चीनी प्रवासियों ने 7 वी शताब्दी के आरंभ में नालंदा विश्वविद्यालय को भेंट दी। वास्तव में ह्युएन त्सांग सात वर्षो तक नालंदा विश्वविद्यालय का छात्र रहा। नालंदा एक अंर्तराष्ट्रीय युनिवर्सिटी थी। इसमें श्रीलंका, तिब्बत, नेपाल, चीन, मंगोलिया, तुर्किस्तान, जापान, कोरिया, इंडोनेशिया, मध्य एशिया, विएतनाम, सुमात्रा, जावा, पर्शिया, ग्रीस तथा टर्की इ. देशों से छात्र आते थे। कहा जाता है कि इसा मसीह ने कई वर्ष नालंदा विश्वविद्यालय में बिताये। इस संबंध में विस्तृत जानकारी इंटरनेट पर www.Utube.com पर Where was Jesus for 18 years? By Yogeeshsharam शीर्ष से देखी जा सकती है। इस वेब पेज के मुताबिक तिब्बत में इसके लिखित दस्तावेज मौजूद है।

नालंदा दुनिया का सबसे पहला आवासीय विश्वविद्यालय था। नालंदा विश्वविद्यालय में कई हजार कुशल विव्दान बौध्द भिख्खु रहते थे जिनमें कई विदेशों से थे। फा हाईन (Fa Hien) के मुताबिक सारीपुत्र चैत्य तथा सम्राट अशोक व्दारा निर्माण की गई मॉनेस्ट्री दिगर जगहों में से एक महत्वपूर्ण स्थल है। ई-त्सींग (I-Tsing) के मुताबिक 8 विशाल हॉल तथा 300 बडे कमरे तथा एक विशाल पुस्तकालय था। नालंदा विश्वविद्यालय में कई विशाल इमारतें थी जिनमें लेक्चर हॉल (halls), ध्यान के लिये हॉल, विशाल पुस्तकालय, मोनेस्ट्रीज, छात्रावास, चैत्य, तालाब तथा पार्क थे। तालाब तथा तालों में कमल के फुल खिले रहते थे। विश्वविद्यालय के लॉन बहुत खुबसुरत थे। आम के बगीचे बनाये गये थे। खुबसुरत फूलों की कॅरियां तथा आने जाने के लिये खुबसुरत रास्ते बने थे। नालंदा विश्वविद्यालय में असंख्य धार्मिक स्थल थे जहां के शिल्प अपनी खुबसुरती में बेमिसाल थे। ह्युएन त्सांग के मुताबिक नालंदा विश्वविद्यालय कला का एक सर्वोत्तम नमुना था।

मुख्य पुस्तकालय की नौ मंजीली तीन ईमारतें थी। इनके नाम 1) रत्नसागर, 2) रत्नोदधी, तथा 3) रत्नरंजक था। नालंदा मोनेस्ट्री के पुस्तकालय में कई लाख हस्तलिखित किताबें तथा दस्तावेज रखे गए थे। शिलालेख की इबारत से पता चलता है कि इन तीनों इमारतों को संयुक्त रुप से धर्मगंज कहा जाता था। पुस्तकालय प्रमुख का काम छात्रों को किताबों के बारे में मार्गदर्शन करना भी था। सातवी शताब्दी के रिकार्ड के मुताबिक

नालंदा विश्वविद्यालय में दस हजार छात्र पढते थे। शिक्षकों की तादाद दो हजार थी। काम करने वाले कर्मचारियों की तादाद देढ हजार थी।

नालंदा के अभ्यासक्रम में धार्मिक शिक्षा में बौध्द धम्म के सभी पंथ, भारत के तमाम आध्यात्मिक दर्शन पढाये जाते थे। गैर धार्मिक विषयों में चिकित्साशास्त्र, औषधी विज्ञान, भूगोल, गणीत, तर्कशास्त्र, खगोशशास्त्र, भाषा तथा व्याकरण पढाये जाते थे। कला-कौशल्यों में धागा तैयार करना, कपडे बुनना, लकडी की वस्तुएं बनाना, तरह तरह के बर्तन बनाना, धातुओं से कलात्मक वस्तुएं बनाना, चित्रकारी, शिल्पकला इ. कौशल्य सिखाये जाते थे। हालांकि नालंदा में बौध्द धम्म पर ज्यादा जोर दिया जाता था लेकिन खुली बहस को हमेशा बढावा दिया जाता था। छात्र कोई भी विषय ले सकते थे लेकिन बौध्द दर्शन के विषय अनिवार्य थे। महायान बौध्द धम्म पर ज्यादा जोर दिया जाता था। व्हउई ली (Hwui-Li) के मुताबिक महायान बौध्द धम्म पर जोर देने से नालंदा विश्वविद्यालय को थेरावादी बौध्दों व्दारा आलोचना की नजर से देखा जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय में उच्च स्तरीय शिक्षा दी जाती थी। सिर्फ उन्ही छात्रों को प्रवेश दिया जाता था जो विश्वविद्यालय के प्रवेश व्दार पर ली जाने वाली मौखिक प्रवेश परीक्षाओं में कामयाब होते थे। बौध्द सिधान्तों के मुताबिक प्रवेश के लिये लिंग, जाति, धर्म, प्रांत, देश इ. की कोई रुकावट नही थी। कोई भी प्रवेश पा सकता था। ह्युएन त्सांग के मुताबिक 20 फीसदी विदेशी छात्र इन प्रवेश परीक्षाओं में कामयाब होते थे। भारत से सिर्फ 30 फीसदी छात्र कामयाब होते थे।

प्रत्येक शिक्षक के अधिन 30 छात्र होते थे। शिक्षा का तरिका मुख्यतः चर्चाएं होता था जिनमें छात्र तथा शिक्षक शामिल होते थे। अनुशासन का कडाई से पालन किया जाता था। सभी छात्रों के लिये नैतिकता के उच्च आदर्शो का पालन करना अनिवार्य था। अपने कई शताब्दियों के काल में अनुशासन को लेकर किसी विरोध की या उसे तोडे जाने का कोई उल्लेख नही है। नालंदा के पूर्व छात्रों का विश्वविद्यालय में तथा बाहरी जगत में बेहद सम्मान था। नालंदा विश्वविद्यालय के बौध्द भिख्खुओं व्दारा लिखी गई रचनाओं का भाषांतर चीन तथा तिब्बत में किया गया। भारत के बाहर बौध्द धम्म को प्रसारित करने में इन बौध्द भिख्खुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

2) वल्लभी बौध्द विश्वविद्यालय :- मैत्रका बौध्द राजा सौराष्ट्र तथा पश्चिमी भारत पर राज करते थे। उनकी राजधानी वल्लभी थी। बुध्द ने वल्लभी में भेंट दी थी। सम्राट अशोक ने उन सभी जगहों पर विहार और स्तुप कायम किये जहां भी बुध्द के कदम पडे थे। सम्राट अशोक ने वल्लभी में भी स्तुपों का निर्माण किया था। वल्लभी विश्वविद्यालय पश्चिम महाराष्ट्र के सौराष्ट्र प्रांत में स्थित था। मैत्रका बौध्द राजाओं ने वल्लभी विश्वविद्यालय के विकास में बडी उदारता से धन खर्च किया। उन्होने वल्लभी विश्वविद्यालय के लिये हर तरह से प्रोत्साहन दिया। इसके अलावा राज्य के धनी लोग तथा आम जनता भी इस विश्वविद्यालय को अपनी क्षमता के मुताबिक मदद देते थी। सातवी शताब्दी में नालंदा विश्वविद्यालय की तरह ही वल्लभी विश्वविद्यालय की प्रसिध्दी थी। नालंदा विश्वविद्यालय महायान बौध्द धर्म का केन्द्र था जबकि वल्लभी विश्वविद्यालय ने थेरावादी बौध्द धम्म के केन्द्र के रुप में ख्याति अर्जित की। ह्युएन त्सांग ने वल्लभी विश्वविद्यालय को भी भेंट दी थी। वहां 100 मोनेस्ट्रीज थी तथा उनमें लगभग 6000 बौध्द भिख्खु रहते थे। अधिकांश सम्मितिया (Sammitiya) पंथ के थे। वे महायान पंथ के अभिधम्म में विश्वास नही करते थे। उनके मुताबिक अभिधम्म बुध्द की शिक्षा नही है।

वे अंर्तभव सिधान्त को मानते थे तथा पुग्गलवाद (Puggalavada) परंपरा के थे जो अभिध ाम्म को नकारती है। अभिधम्म बुध्द के सुत्तों से मेल नही खाती और विरोधाभासी है। ई-त्सिंग के मुताबिक नालंदा विश्वविद्यालय की तरह ही वल्लभी विश्वविद्यालय में भी विदेशों से छात्र पढने आते थे। वल्लभी विश्वविद्यालय में विशाल पुस्तकालय था। इस पुस्तकालय का खर्च राजा व्दारा कायम किये गए फंड से चलता था। वल्लभी विश्वविद्यालय में पढाये जाने वाले विषयों में विभिन्न धर्म-पंथों का तुलनात्मक अध्ययन, राजनीतिशास्त्र, कानून, कृषि-विज्ञान, अर्थशास्त्र इ. विषयों को पढाया जाता था। वल्लभी युनिवर्सिटी ईसवी **470** से 1200 तक अपने पूरे समृध्दी में थी। एक लंबे समय तक वह नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी युनिवर्सिटी बनी रही। बंदरगाह के करीब होने से उसे अंर्तराष्ट्रीय संपर्क का फायदा मिला। वल्लभी विश्वविज्ञालय की प्रसिध्दी संपूण र्ा उत्तरी भारत में इस कदर थी कि कथासरीतसागर के मुताबिक लोग अपने बच्चों को नालंदा के बजाय वल्लभी विश्वविद्यालय में भेजना पसंद करते थे। वल्लभी के शिक्षकों व्दारा प्रमाणित सिधान्तों को विव्दानों के बीच बहुत महत्व था। मैत्रका राजाओं पर सन् 775 में अरबों ने आक्रमण करने से वल्लभी युनिवर्सिटी को कुछ समय तक तकलीफें सहन करनी पडी। इसके बावजूद वल्लभी युनिवर्सिटी अपना काम करते रही। लेकिन मैत्रका राजाओं के पतन के बाद तथा दिगर मददगार राजाओं के न होने के बाद 12 वी शताब्दी के बाद यह विश्वविद्यालय खत्म हुआ।

3) विक्रमशिला युनिवर्सिटी :- विक्रमशिला युनिवर्सिटी मगध के उत्तर में गंगा नदी के किनारे अंटीचाक (Antichak) गांव, कहालगांव में भागलपुर जिले में स्थित थी। विक्रमशिला युनिवर्सिटी नालंदा युनिवर्सिटी की सह युनिवर्सिटी मानी जाती है। इसका निर्माण कंपाला नामक बौध्द भिख्खु ने सम्राट धर्मपाल (770-810) के संरक्षण में किया था। सम्राट धर्मपाल ने इस विश्वविद्यालय के विकास के लिये उदारता से धन खर्च किया ताकि वहां रहने वाले छात्रों तथा शिक्षकों को भोजन इ. की सुविधा हो सके। सम्राट ने युनिवर्सिटी के खर्चे के लिये बडी तादाद में जमीन दी हुई थी। विक्रमशिला विश्वविद्यालय की इमारतें पाल सम्राटों व्दारा बहुत ही योजनापूर्वक ढंग से बनाई थी जो भव्यता और कला का बेमिसाल नमुना थी। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में छह विशाल इमारतें तथा 108 विहार थे। इन सबकी रचना इस प्रकार से की गई थी कि मानों कमल के फुल से उनकी पंखडियां बाहर निकली हो। केन्द्र में महाबोधी बौध्द विहार था जिसके छह व्दार विश्वविद्यालय की छह इमारतों की ओर खुलते थे। इस सभी छह इमारतों में विशाल हॉल तथा छात्रों की कक्षाएं थी। युनिवर्सिटी के केन्द्र में विद्यागृह नाम का मुख्य लेक्चर हॉल था। हर इमारत के छह दरवाजे थे जिसके पास एक मोनेस्ट्री बनी थी। हर मोनेस्ट्री में 150 शिक्षक रहते थे। लगभग 108 शिक्षकों को प्रशासनीक काम सौंपे गये थे। इन सभी इमारतों को बहुत ही मजबूत दीवार से घेरा गया था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय का अभ्यासक्रम नालंदा विश्वविद्यालय के अभ्यासक्रम जैसा था। तांत्रिक बौध्द धम्म को वरीयता दी जाती थी। सभी पाल राजाओं की मदद से वह नालंदा विश्वविद्यालय के समकक्ष बन गई। तिब्बत के प्रसिध्द बौध्द भिख्खु अतिशा (981-1054) जिन्होने तिब्बत के बौध्द धम्म में कई परिवर्तन किये वह विक्रमशिला मोनेस्टरी के प्रमुख थे।

डॉ. एस. सी. विद्याभिषण ने कन्निंघम के साथ मिलकर विक्रमशिला युनिवर्सिटी के स्थल को भागलपुर जिले के सुल्तानगंज में बडागांव के निकट सिलाओ गांव में खोजा है। इस स्थल के अवशेष 4 कीलोमीटर के क्षेत्र में फैले है। यहां एक तिब्बती निवासस्थल

(dormitory) के अवशेष साठ वर्ग फीट चौडे क्षेत्र में पाये गए है। इसके पास एक ध्यान केन्द्र बना है। 300 फुट चौडे चबुतरे पर बना 60 फुट चौडा स्तुप खस्ता हालत में पाया गया। इस पुरातत्वीय स्थल का उत्खनन अभी भी बाकी है।

4) औदांतपुरी बौध्द युनिवर्सिटी :- औदांतपुरी बौध्द युनिवर्सिटी को भारत की दूसरी पूरानी युनिवर्सिटी माना जाता है। यह मगध में नालंदा से छह मील दूर स्थित है। पाल सम्राट गोपाल (660-705) ने इस युनिवर्सिटी को कायम करने में बडी मदद की है। तिब्बत के सुत्रों के मुताबिक औदांतपूरी युनिवर्सिटी में बारह हजार छात्र पढते थे।

5) सोमपुरा बौध्द युनिवर्सिटी :- सोमापूरा आधुनिक बंगला देश में स्थित थी। सम्राट देवपाल ने (810-850) सोमपुरा में धर्मपाल महाविहार कायम किया था। इस महाविहार के अवशेष 1 वर्ग मील क्षेत्र में है। इससे संबंधित तमाम इमारतों को एक मजबूत दीवार के साथ घेरा गया था। इसमें 177 कमरे थे। इसके अलावा कई कलाकृतियों तथा चित्रकारियों से सजी विशेष इमारतें बनी थी। एक बडे भोजन हॉल तथा सामान्य रसोईघर के अवशेष प्राप्त हुये है। सम्राट धर्मपाल के व्दारा निर्माण किया गया सोमपुरा नामक महाबौध्द विहार संपूर्ण भारतीय महाव्दीप में सबसे बडा है।

6) जगद्दला बौध्द युनिवर्सिटी :- इस युनिवर्सिटी की स्थापना सम्राट रामपाल (1077-1129) ने की थी। जगद्दला युनिवर्सिटी पाल राजाओं ने किया हुआ सबसे बडा निर्माण कार्य था। यह तांत्रिक बौध्द धम्म के अध्ययन तथा प्रचार-प्रसार का केन्द्र भी था। वह नालंदा विश्वविद्यालय के तरिकों तथा परंपराओं के मुताबिक कार्य करता था। तिब्बती साहित्य के मुताबिक जगद्दला में कई किताबों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया था।

7) तक्षिला बौध्द युनिवर्सिटी :- तक्षिला प्राचीन काल से ही अध्ययन का केन्द्र था। प्रत्येक शिक्षक अपने छात्रों का अपने तरिके से चुनाव कर उनका अध्ययन कराता था। उनके उपर राजा या अन्य किसी का नियंत्रण नही होता था। वे अध्ययन की कालावधी, अध्ययन की विषयवस्तु, छात्रों के लिये नियम इ. सभी मामले खुद तय करते थे। जैसे ही छात्र किसी विषय में दक्ष हो जाता था उसकी पढाई उसी वक्त खत्म मानी जाती थी। उनकी कोई परीक्षा नही ली जाती थी। उन्हे कोई डिग्री नही दी जाती थी। तक्षिला युनिवर्सिटी के शिक्षकों को जरुरी आर्थिक सहायता समाज के धनी तथा अन्य लोग करते थे। मगध सम्राट बिंबीसार के राजदरबार के चिकित्सक जीवक जिन्होने एक बार बुध्द का इलाज किया था ने तक्षिला में ही अध्ययन किया था। सम्राट अशोक के काल में तक्षिला बौध्द अध्ययन केन्द्र बना। अशोक ने 1600 कीलोमीटर लंबे राष्ट्रीय मार्ग बनाकर पाटलीपुत्र को तक्षिला से जोडकर व्यापार को बढावा दिया।

तक्षिला पर कई तरह के प्रभाव पैदा हुये। इसापूर्व छटवी शताब्दि तक तक्षिला को विभिन्न राजाओं ने अपने कब्जे में किया। ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में तक्षिला को इंडो-बॅक्ट्रियन ग्रीक राजाओं ने अपने नियंत्रण में किया। उन्होने शायद नये अभ्यासक्रम को शामिल किया। यह तय करना मुश्किल है कि इस समय वहां का अभ्यासक्रम क्या था। यह तय है कि वहां ग्रीक भाषा भी पढाई जाती थी। इसापूर्व पहली शताब्दी में इस क्षेत्र पर सिथीयनों ने हमला किया। पहली ईसवी शताब्दी में कुशानों ने हमला किया। कनिष्क के काल में यह महायान बौध्द धम्म का केन्द्र बना। प्रसिध्द चिकित्सक चरक ने तक्षिला में अध्ययन किया था। इसके बाद उसने तक्षिला में पढाने का काम भी किया। कहा जाता है कि महायान बौध्द धम्म ने तक्षिला में ही आकार ग्रहण किया था। पांचवी शताब्दी में इस क्षेत्र पर हुनों का आक्रमण हुआ। इसी शताब्दी में तक्षिला युनिवर्सिटी

तबाह हो गई। पांचवी शताब्दी के मध्य में वह बंद हो गई।

बौध्द विश्वविद्यालयों के स्त्रोत तथा प्रबंधन :- युनिवर्सिटी के प्रमुख यानि कुलपति का पद एक भिख्खु को दिया जाता था जिसका चुनाव बौध्द संघों के संघ (federation) व्दारा किया जाता था। शैक्षणिक तथा प्रसासनीक कार्यो के लिये दो अलग अलग कमिटियां होती थी। नालंदा युनिवर्सिटी की मोहर धम्मचक्र थी जिसकी बेहद प्रतिष्ठा थी। विश्वविद्यालय के किसी भी शिक्षक (भिख्खु) को सोना-चांदी या नगदी को स्वीकार करने की इजाजत नही थी। इसका उल्लंघन एक गंभीर अपराध माना जाता था। बुध्द ने अपने जीवनकाल में ही भिख्खु संघ के लिये उपहार स्वीकार करने की इजाजत दी थी इसलिये भिख्खु संघ बुध्द के काल में ही बहुत अमिर बन गए थे। बुध्द के वक्त भिख्खु संघ को बगीचे, उपवन, तालाब, इमारतें, मैदान, बौध्द विहार इ. की भेंट दी जाती थी।

नालंदा का खर्च राजा व्दारा भेंट किये गए सात गांवों से प्राप्त करों की बदौलत चलता था। बौध्द तथा दिगर राजाओं से भी आर्थिक सहायता हासिल होती थी। सम्राट हर्षवर्धन के काल में 200 गांवों को उसे दान में दिया गया था। विश्वविद्यालयों की अपनी जमीन थी जिस पर खेती तथा पशुपालन किया जाता था। इससे जरुरी राशन उपलब्ध होता था। नालंदा की कई इमारतों को बनाने का काम विभिन्न देशों के राजाओं ने भी किया है। मसलन सुमात्रा के राजा श्रीविजय ने नालंदा की एक इमारत बनाई थी। जावा, सुमात्रा, तिब्बत के अलावा कई देशों के राजा इन बौध्द विश्वविद्यालयों की मदद करते थे। बौध्द विश्वविद्यालयों के अंर्तराष्ट्रीय स्वरुप तथा उसमें मौजूद भारी तादाद में विदेशी छात्रों की मौजूदगी से ही ब्राह्मणवादी गुप्त तथा दिगर ब्राह्मणवादी राजाओं की बौध्द विश्वविद्यालयों पर हमला करने की हिम्मत नही हुई। उल्टे वे भी इन विश्वविद्यालयों को मदद देने पर मजबूर थे। कुमारा गुप्ता (415-455) ने नालंदा में एक मोनेस्ट्री कायम की थी। राजा बुध्द गुप्ता (455-467), जतागथा गुप्ता (467-500), बालादित्य (500-525) तथा विजरा (525) इ. राजाओं ने नालंदा विश्वविद्यालय के विकास में सहयोग दिया। पाल सम्राट इन बौध्द विश्वविद्यालयों के सबसे बडे रखवाले थे।

पाल सम्राटों के तहत बौध्द विश्वविद्यालयों का संघ :- विक्रमशिला युनिवर्सिटी, औदांतपुरी युनिवर्सिटी, जगद्दला युनिवर्सिटी तथा सोमापुरा युनिवर्सिटी का निर्माण पाल सम्राटों ने किया था। उनके रखरखाव में उनकी प्रत्यक्ष भूमिका थी। इसलिये नालंदा सहित इन तमाम युनिवर्सिटीयों का राज्य के नियंत्रण में एक संघ बनाया गया। इनके बीच सामंजस्य कायम करने के लिये एक यंत्रणा कायम की गई। इन विश्वविद्यालयों के शिक्षक इ. एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय में पढाने तथा प्रबंधन कार्य करते थे।

ब्राह्मण तथा ईसाई पूजारियों व्दारा ज्ञान तथा विरोधी साहित्य का विध्वंस !

ब्राह्मणों ने गैरब्राह्मणों पर शिक्षा लेने पर पूरी पाबंदी आयद कर उन्हे ज्ञान से पूरी तरह से वंचित कर उनके जीवन को नर्क बनाने में कोई कसर बाकी नही छोडी। इसलिये नालंदा तथा दिगर बौध्द विश्वविद्यालयों को ब्राह्मणों के व्देष का सामना करना पडा। ब्राह्मण गुप्त शासन के काल में बहुत ज्यादा ताकतवर हो गए थे। नालंदा के विशाल पुस्तकालयों को जलाने की ब्राह्मणों ने कई कोशिशें की।

जहां तक आम मुस्लिम शासकों की बात है हकीकत यह है कि भारत में अरब, तुर्क, अफगान इ. विदेशियों ने शासन किया लेकिन उन्होने किसी बौध्द मोनेस्ट्री को ध्वस्त नही किया। बिहार का महाबोधी महाविहार आज भी अपनी जगह पर खडा है।

अजंता, एलोरा, सारनाथ, साँची इ. जगहों के स्तुप आज भी अपनी जगहों पर कायम है। बौध्द विश्वविद्यालयों को ध्वस्त करने का काम ब्राह्मणों के षडयंत्रों की वजह से अंजाम दिया गया है। ब्राह्मणों के साथ हुये गुप्त समझौते के तहत बख्तीयार खिलजी ने (सन 1199) ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में निहथ्थे बौध्द भिक्षुओं का कत्लेआम मचाया। बौध्द विहारों, स्तुपों, चैत्यों व पुस्तकालयों को चुनचुनकर नष्ट किया। ''तबाकत ए नासरी'' के अनुसार मुगलों ने ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में नालंदा विश्वविद्यालय, उसके ग्रंथालय तथा बौध्द विहार, स्तुप इ॰ को ध्वस्त किया। बख्तीयार खिलजी ने औदांदापुरी विश्वविद्यालय को नष्ट करके उसके पुस्तकालय को जला दिया। निहथ्थे बौध्द भिख्खुओं का कत्लेआम मचाया। इसके बावजूद किसी तरह नालंदा विश्वविद्यालय का नौ मंजीला रत्नबोधी का विशाल पुस्तकालय इस विध्वंस से बच गया तो ब्राम्हणों ने एक यज्ञ करके उसकी चिंगारियों से पुस्तकालय में आग लगाकर इस पुस्तकालय को नष्ट कर दिया। डॉ. अम्बेदकर के अनुसार नालंदा, विक्रमशिला, जगद्दला, ओदांतापुरी इ॰ के बौध्द विश्वविद्यालयों को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। हजारों बौध्द भिख्खु अपनी जान बचाने के लिये नेपाल, तिब्बत इ॰ जगहों में भाग गये। (Dr. B. R. Ambedkar, P. 232, Vol. 3) शारमास्वामीन नामक तिब्बती प्रवासी बख्तियार खिलजी ने 12 वी शताब्दी में आक्रमण करने के तीन दशक बाद बिहार आया था। उसके मुताबिक नालंदा के विशाल पुस्तकालय को ब्राह्मण पूजारियों ने बख्तियार खिलजी के आक्रमण से`पैदा हुई हडबडी के दौरान जलाया था। ब्राह्मणों ने नालंदा के बौध्द विहार में यज्ञ का आयोजन किया तथा यज्ञ की आग में जलती लकडियों से पुस्तकालय जला दिया। (Prakash, 213; http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

प्रसिध्द पर्शियन इतिहासकार मिर्जा ए सीराज अपनी किताब 'तबाकात ए नासीरी' (Tabaquat-I-Nasiri) में लिखते है कि नालंदा के विशाल पुस्तकालयों में 90 लाख महत्वपूर्ण हस्तलिखित किताबें तथा दिगर दस्तावेज थे। ये किताबें तथा दस्तावेज सैंकडो वर्षो की मेहनत से किया गया संग्रह था। ब्राह्मणों ने जब नालंदा के पुस्तकालयों को आग लगाई तो यह आग लगातार छह माह तक जलती रही। इससे उठने वाले धुंए के बादल नालंदा में छाये रहे। कुछ बौध्द भिख्खु चंद किताबों के साथ तिब्बत, नेपाल, चीन इ. देशों में भागने में कामयाब हो गए। पुरातत्व के उत्खनन बताते है कि जला हुआ खाना तथा अनाज स्पष्ट करता है कि भिख्खु भोजन की प्रतिक्षा में बैठे थे तभी आग लगाई गई थी। मिर्जा ए सीराज के मुताबिक हजारों बौध्द भिख्खु जिंदा जल गए। तिब्बती ग्रंथ पागसाम-जॉन-झॅन्ग (pagsam-jon-zang) के मुताबिक ब्राह्मणों ने नालंदा के पुस्तकालय को जला दिया।

गोपीनाथ राव (East & West Vol. 35) के मुताबिक अलबेरुनी ने उललेख किया है कि 11 वी शताब्दी में लोकायत, चार्वक दर्शन इ. गैर ब्राह्मण साहित्य को नष्ट किया गया।(http://karthiknavayan.wordpress.com/How the Buddhists and Jains were Persecuted in Ancient India. _ ???????? ??????.htm) कोलाथेरी संकरा मेनन के मुताबिक संपूर्ण केरल में ब्राह्मणों ने बौध्द साहित्यों की होलियां जलाई।

गैर-ब्राह्मण साहित्य का किया गया विनाश इतना मुकम्मल और पूरा पूरा था कि जब आधुनिक इतिहासकारों ने बौध्द साहित्य की खोज शुरु की तो उन्हे भारत में कहीं कोई बौध्द साहित्य नही मिला। उन्हे भारत के बाहर के देशों में उपलब्ध बौध्द साहित्य

से काम चलाना पडा।(Swami Dharmatirtha, p. 108) राहुल सांस्कृत्यायन के मुताबिक पश्चिमी देशों के शोधकर्ताओं को भारत भर में कोई बौध्द साहित्य नही मिला। उन्हे केरल में मात्र मंजुश्री मूल कल्प नामक किताब मिली।(Rahul Sankrutyayan, "Buddhacharya") विक्रमशिला विश्वविद्यालय के विध्वंस में सेन राजवंश का भी सहयोग था। इस महान विश्वविद्यालय के अवशेष बातेश्वर स्थान (पाथेर घट्टा) तथा अंटीचाक गांव में है जिनका उत्खनन आज तक जारी है।

ब्राह्मणों तथा ईसाई पूजारियों का धर्म शोषण-व्यवस्थाओं का रक्षक रहा है। इसलिये बौध्द भारत में जहां शिक्षा अपने चरम उत्कर्ष पर थी वहीं रोम में इसाई पूजारियों की सत्ता आते ही ज्ञान की रोशनी बुझाकर अज्ञान का अंधेरा और अत्याचार फैलाया गया ताकि पूजारियों की ताकत को कोई चुनौति न दे सके। इस दौरान ग्रीक और रोमन लोगों ने जो भी प्रगति की थी वह जैसे थम गई। स्कूल तथा दर्शन के केन्द्र बंद कर दिये गए। अलेक्झांड्रीयां की प्रसिध्द लायब्ररी को पूजारियों के नेतृत्व में ईसाई भीड़ ने जला डाला। इजिप्त के अलेक्झांड्रिया के पुस्तकालय को दूनिया के सात अजूबों में से एक माना जाता था। वहां के मुख्य पुस्तकालय में लगभग पांच लाख किताबें थी। हीपॅटीया (Hypatia) नामक दार्शनीक तथा शिक्षक को चर्च मे घसीटकर लाया गया और उसके शरीर का माँस उधेडा गया। ऐसे अत्याचारों, ज्ञान के अंधकार तथा गरीबी में युरोप लगभग एक हजार साल तक डूबा रहा। गैरइसाईयों को प्रताडित कर मार डालना, औरतों को चुडैल करार देकर जला देना, ईसाई संकल्पनाओं से असहमत वैज्ञानिकों को मार डालना या प्रताडित करना ईसाई पूजारीराज का काला इतिहास रहा है।

युरोप का काला युग वास्तव में ईसाई पूजारियों के लिये सुनहरा युग था क्योंकि इसी युग में पूजारियों ने ताकत के बल पर लोगों को जबरन ईसाई धर्म में शामिल किया। सॉक्रेटस्, प्लॅटो, ॲरिसटॉटल, सेनेका (Seneca), प्लिनी (Pliny) इ. जो भी महान दार्शनिक तथा बुध्दिजीवी युरोप में हुए वे सभी ईसाई पूजारियों के पहले हुए थे। ईसाई पूजारियों की धार्मिक असहिष्णुता अपने चरम पर थी। ईसाई पूजारियों के काले युग में ऐसा कोई भी विव्दान नही उभरने दिया गया। मुस्लिमों ने रोमन साम्राज्य के कई हिस्सों पर कब्जा कर स्पेन, पोर्तुगाल, तथा फ्रांस के कुछ हिस्सों में अपना राज कायम किया। उन्होने ग्रीक तथा रोमन लोगों को भारत से अपने संपर्क में जो ज्ञान हासिल हुआ था उससे अवगत कराया। विश्वविद्यालय कायम करने की कल्पना मुस्लिमों ने बौध दों से ली है। इसी की बदौलत मार्टीन लुथर ने कॅथलिक चर्च के खिलाफ बगावत का झंडा बुलंद किया तथा उदारवादी प्रोटेस्टंट ईसाई चर्च का निर्माण हुआ। इसके बाद ही ईसाई पूजारीवाद को कुछ हद तक नियंत्रित कर ज्ञान को बढाना मुमकिन हुआ।(http://www.budsas.org/The six Buddhist universities of ancient India.htm)

मूलनिवासी श्रमण धर्मो का
शोषणपरस्त ब्राह्मण-धर्म में रुपांतरण !

[Information for Revival of Brahminism is synthesized from following source material : http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee News.htm; Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy Sri Lanka]

बौध्द धम्म ब्राह्मण-धर्म का सबसे बडा खतरा !

मानव इतिहास में हुए सबसे कठोर संघर्षो में एक संघर्ष बुध्दिजम और ब्राह्मणवाद के बीच भारत के नियंत्रण को लेकर हुआ संघर्ष है जो बहुत लंबे समय तक चलता रहा। ब्राह्मणवादी ताकतों ने इस संघर्ष को छुपाने हर तरह की तिकडमें की है।

आरंभिक ब्राह्मण साहित्य में कपीला तथा बुध्द को असूर करार दिया गया है। अैतरेय ब्राह्मणा के मुताबिक श्रमणों ने तथा बौध्द भिख्खुओं ने ब्राह्मणों के वेदों तथा उपनिषदों का तीव्र विरोध किया। गौतम बुध्द के मुताबिक ब्राह्मणों का यह दावा कि वे तीन वेदों में पारंगत है विचित्र, हास्यास्पद तथा खोखली बातें है।(Dighanikaya, London, 1967, vol.I, p.240, Tevijjasutta 15) **ब्राह्मणवादी विवेकानंद के मुताबिक बुध्द जहां भी गया बुध्द ने हिन्दूओं की {ब्राह्मण-धर्म की} हर पूरानी बात को मिट्टी में मिला दिया। ... यही काम जैनों ने भी किया जो ईश्वर की संकल्पना का मजाक उडाते थे।**

बुध्द ने वेदों को मूर्खतापूर्ण बकवास, बिना पानी का रेगीस्तान तथा वेदों की तीन गुना विव्दता को रास्ताविहीन जंगल तथा संपूर्ण विध्वंस करार दिया है। (ibid., p.248, Tevijjasutta) **बुध्द ने ब्राह्मण वेदिक व्यवस्था के अज्ञान तथा त्रृटियों को उजागर किया। ब्राह्मणों को पाखंडी, धोखेबाज** (charlatans), **शब्दों की बाजीगरी करने वाले इ. कहकर नकार दिया। बुध्द की इस कठोर आलोचना से ब्राह्मण तिलमिलाकर थे। बुध्द को उनकी दुश्मनी सहन करनी पडी। फाहीयान तथा ह्युएन त्सांग के मुताबिक बुध्द को सीधे सीधे धमकाया गया। उनकी हत्या करने की कई कोशिशें हुई। यह आश्चर्य है कि बुध्द ब्राह्मणों के हमलों से सकुशल बचते रहे।**(Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka) **डॉ. तुलसीदास के अनुसार बुध्द को उनके जीवनकाल में मारने का प्रयास किया गया। बुध्द के दो प्रथम शिष्यों में से एक भिक्षु मौदगल्यायन की ब्राह्मणों ने हत्या कर दी।** (भारत अश्वघोष, मई-जून, 1998) **बुध्द काल में आर्य-ब्राह्मण गौतम बुध्द को ''भो गौतम'' यानि ''अरे गौतम'' कहकर अपमानित करते थे। भिक्षु-संघ में** 75% **भिक्षु ब्राह्मण थे।**(गोडबोले, वामनराव, p.173) **बुध्द स्वँय यह जानते थे कि बहुतांश व्यक्ति इसलिये भिख्खु बनते है क्योंकि भिख्खु बनने से उन्हे दुनिया में सम्मान मिलता है, श्रम तथा जिम्मेदारियों से बचकर आराम से रहने की सुविधा मिलती है। बुध्द जानते थे कि उनके साथी भिक्षु अपनी ब्राह्मणवादी मान्यताओं को प्रचारित करते थे।** (Rhys Davis, p.206,103,107,146)

बौध्द धर्म-ग्रंथों का हर पृष्ट वेदों से लडाई है। ब्राह्मण भिख्खु अच्छी तरह से जानते थे कि उनके विचारों और कृती से बुध्द असहमत है लेकिन उन्होने बुध्द की बातों पर कोई ध्यान नही दिया, बुध्द की शिक्षाओं में वे परिवर्तन करते रहे। बुध्द ने अपने एक शिष्य मंतिथा से कहा कि मंथिता तुमने मेरे संदेश को पट्टीका पर सही तरह से अंकित नही किया है। सही अर्थ बताकर कहा कि इसे अभी इसी समय दुरुस्त करो। मंतिथा ने कहा कि वह ऐसा करेगा लेकिन प्रत्यक्ष में उसने ऐसा कभी भी नही किया। भिख्खुओं का इसी तरह का आचरण था। इसलिए बुध्द निराश और व्यथित होकर अपने प्रिय

शिष्य आनंद के साथ श्रावस्थी से निकल पडे और वृध्द होने के बावजूद स्वँय ही अपनी शिक्षा को आम जनता में प्रचारित किया जिसका व्यापक प्रभाव हुआ। ब्राह्मणों व्दारा लिखे बौध्द साहित्य में गलत लिखा है कि बुध्द सैंकडो भिख्खुओं के साथ श्रावस्थी से गये। आज के बुध्द-साहित्य में बुध्द की शिक्षा को बेहद विकृत किया गया है। (Rhys Davis, p. 210,223-228)

ब्राह्मणों तथा मूलनिवासी नाग-द्रविड श्रामणों के बीच का वैचारिक संघर्ष सम्राट अशोक के काल में भी तीव्र था। सम्राट अशोक अपने शिलादेशों में दोहराते है कि ब्राह्मण ों तथा श्रामणों ने आपस में संघर्ष नही करना चाहिये बल्कि सहिष्णुता का पालन करना चाहिये। पातंजली (cir. 150 BCE) ब्राह्मणों तथा श्रामणों को परस्पर-विरोधी विचारधारा की वजह से संघर्षरत दूश्मन करार देता है। (Brahmanism, Buddhism, and Hinduism An Essay on their Origins and Interactions by Lal Mani Joshi Department of Religious Studies Punjabi University, Patiala, India Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka The Wheel Publication No. 150/151)

सम्राट अशोक बौध्द धम्म के मूल सिध्दान्तों की रक्षा करना चाहते थे !

सम्राट अशोक ने शिलादेशों में कर्मकांडों की व्यर्थता को स्पष्ट किया और वेदिक ब्राह्मण धर्म के यज्ञों में बडे पैमाने पर जानवरों की बलि देने पर पाबंदी आयद की थी। उन्होने खुद को एक उपासक घोषित किया। जहां बुध्द ने भेंट दी या बुध्द रुके उन जगहों में उन्होने अपने स्तंभादेश खडे किये। ऐसा दूसरे धर्म-स्थलों के बारे में नही किया। उन्होने धम्म शब्द का इस्तेमाल किया जो सिर्फ बौध्द धम्म के लिये प्रयुक्त होता है। (http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.porchlight.ca/EMPEROR ASHOKA.htm) सम्राट अशोक ने लोगों तथा बौध्द भिख्खुओं को बुध्द के साहित्य का अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया। सम्राट अशोक के शिलालेख के मुताबिक : प्रियदर्शी मगध के सम्राट संघ को प्रणाम करते है और उन्हे बेहतर स्वास्थ्य की कामना करते हुए यह कहना चाहते है कि मेरा बुध्द, धम्म और संघ के प्रति गहरा विश्वास है। बुध्द ने जो कुछ भी शिक्षा दी है वह उत्तम शिक्षा है। मै चाहता हुं कि धम्म प्रवचन के खास अंश जैसे कि अष्ठांग मार्ग, भावी खतरों के बारे में बुध्द की चेतावनियां (the Fears to Come), मौन मुनि के बारे में कविता, शुध्द जीवन के संबंध में बुध्द के उपदेश, उपासिकाओं के सवाल, बुध्द ने राहुल को झूठे संभाषण के संबंध में दिये गये उपदेश को भिख्खुओं, भिक्षुणियों तथा गृहस्थ औरतों तथा मर्दो ने सतत रुप से सूनना और याद करना चाहिये। (Minor Rock Edict Nb3 (S. Dhammika))

राजाओं तथा धनिकों के कुलदेवताओं की पूजा ब्राह्मणों व्दारा की जाती थी। रानी तथा गृहणियों की मदद से वे अपना असर बढाकर बौध्द धर्म के उसूलों को नष्ट करने में लगे रहे। सम्राट अशोक के काल में कुलदेवताओं के पूजा की भर्सना की गई। उन्होने इन कुलदेवताओं की मूर्तियाँ बाहर करवाई। यह ब्राह्मणों पर एक बडा आघात था। इससे उनकी रोजी और धूर्त प्रचार पर आघात हुआ। वे बदला लेने पर उतारु हो गए। उन्होने राजसत्ता पर कब्जा करने की हर संभव कोशिशें की। जहां राजयंत्रणा पर प्रत्यक्ष नियंत्रण संभव नही था वहां उन्होने अपने पसंद के व्यक्ति को कठपूतली बनाकर राज किया। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 18-III, p.209-11)

सम्राट अशोक ने तिसरी बौध्द संगति ईसापूर्व लगभग 250 वर्ष पहले पाटलिपुत्र के

अशोकरमा में खुद के संरक्षण में आयोजित की। इस संगति के आयोजन का मकसद भिख्खु संघ में घुसपैठियें नकली, भ्रष्ट और बुध्द विरोधी मत रखने वाले बौध्द भिख्खुओं की पहचान कर उन्हे भिख्खु संघ से बाहर करना था। इस संगति की अध्यक्षता मोगलिपुत्त तिस्सा ने की। साठ हजार बौध्द भिख्खुओं में से सिर्फ एक हजार भिख्खुओं का चयन किया गया। गलत विचारों वाले भिख्खुओं को भिख्खु संघ में प्रवेश प्रवेश नकार दिया गया। सम्राट अशोक ने खुद इन भिख्खुओं से बुध्द की शिक्षा को लेकर सवाल किये। जिनके विचार बुध्द के विचारों से विसंगत पाये गए उन्हे फौरन भिख्खु संघ से निष्काषित कर दिया गया। सम्राट अशोक ने बडी तादाद में नकली और भ्रष्ट भिख्खुओं को भिख्खु संघ से बाहर कर दिया। इस बौध्द संगति के बाद सम्राट अशोक ने बौध्द धम्म में प्रशिक्षित सही दृष्टीकोण वाले बौध्द भिख्खुओं को बौध्द धम्म का प्रचार-प्रसार करने के लिये देश तथा विदेशों में रवाना किया।(http://en.wikipedia.org/Third Buddhist council - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सारनाथ के एक शिलादेश में सम्राट अशोक ने बौध्द समाज में विभाजन करने की कोशिशों का विरोध किया है। शिलादेश के मुताबिक 'कोई भी भिख्खु संघ को विभाजित करने की कोशिश ना करें'।(http://en.wikipedia.org/Ashoka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm) सम्राट अशोक ने मूल भिख्खु संघ से साठ हजार नकली बौध्द भिख्खुओं को निकाल बाहर किया जो पाली जनभाषा का उपयोग नही करते थे और बुध्द की मूल शिक्षा से कोसों दूर थे।

सम्राट अशोक ने बौध्द धम्म के निष्पक्ष प्रचार के लिए खुद की निगरानी में नियुक्तियाँ की थी, जिनमें ब्राह्मणों को नही लिया गया था। (प्रदीप कुमार मौर्य, p.129) सम्राट अशोक के शासन में ब्राह्मणों की एक न चली और बौध्द धर्म संपुर्ण एशिया, इजिप्त अफ्रिका तथा युरोप तक फैला। बुडापेस्ट का नाम बूध्द-पथ था। मक्का के पास बुध्दकाना नामक स्थान है।(Gopal Gurung, In quest of Mangol Identity, P.O. Box 2828 Kathmandu) सम्राट अशोक व्दारा वेदीक ब्राह्मण-धर्म में दी जाने वाली जानवरों की बलि पर रोक लगाना ब्राह्मणों पर बडा आघात था क्योंकि वेदीक बलि परंपरा ही उनकी कमाई का मुख्य जरिया था। ब्राह्मणों को स्पष्ट हो गया कि बौध्द सिधान्तों के चलते उनकी कमाई मुमकिन नही है। ब्राह्मण-धर्म और बौध्द-धम्म का एक साथ रहना नामुकिन है।

घुसपैठ और भ्रष्ट्राचार से ब्राह्मणों व्दारा बौध्द धम्म का विध्वंस !

मूल भिख्खु संघ पाली भाषा का इस्तेमाल करता था जो संपूर्ण उत्तरी तथा मध्य भारत की भाषा थी। मूल भिख्खु संघ को स्थाविरवादी कहा जाता था। उनका मुख्यालय अवंती (आधुनिक उज्जैन) था। सम्राट अशोक के बेटे महेन्द्र अवंति त्रिपीठक को सिलोन ले गये थे। उसकी भाषा अशोक के गीरनार स्थित शिलादेश जैसी है। ब्राह्मण अंदर से सम्राट अशोक से बेहद नफरत करते थे। जब वे सम्राट अशोक का कुछ नही बिगाड सके तो उन्होने भीतराघात की नीति अपनाई। सम्राट अशोक ने ब्राह्मणों की कपटनीति का अवमुल्यांकन किया था। इसलिये सम्राट अशोक व्दारा आयोजित तिसरी बौध्द संगति की अध्यक्षता ब्राह्मण मोगलिपुत्त तिस्सा कर रहा था। इस संगति में संपूर्ण त्रिपीठक को अंतिम रुप दिया गया। प्रथम तथा व्दितीय संगतियों के दौरान बौध्द धम्म के मूल ग्रंथ ध म्म तथा विनय के नाम से जाने जाते थे। मोगलिपुत्त तिस्सा ने महाकश्यप तथा सारीपुत्त के साहित्य को विस्तृत कर उसे अभिधम्म पीठक का रुप दिया। इस अभिधम्म पीठक की सात किताबें थी। इसमें मोगलिपुत्त तिस्सा की खुदकी किताब 'कथा वत्थु' (Katha vatthu)

शामिल थी। इस अभिधम्म में बिना किसी लोक उपयोगिता के दार्शनिक तथा अलौकिक दर्शन को शामिल किया गया। धम्म को जटील बनाकर आम लोगों की आकलन क्षमता से बाहर कर दिया गया। तिस्सा ने अभिधम्म को पीठकों की श्रेणी में रखकर उसके महत्व को जानबूझकर बढा दिया जबकि यह बुध्द की शिक्षा से कोसो दूर थी। वह तिस्सा ही था जिसने पीठकों की शब्दावली को विनय, सुत्त तथा अभिधम्म के तौर पर प्रस्तुत किया। उसने मामुली 'चरिया पीठक' (Chariya Pitaka) नामक किताब को पीठक का दर्जा दिया।

चरिया पीठक में पूर्नजन्म की संकल्पनाओं को घूसेडा गया। जबकि मज्जिम निकाय के चुल दुख खंड सुत्त में स्पष्ट तौर से बुध्द ने कहा है कि सिर्फ एक ही जन्म है और वह मौजूदा जन्म है। चरिया पीठिका की बदौलत जिसमें 34 लघुकथाओं को काव्य रुप दिया गया है जातक कथाओं की तथा अट्टकथाओं की निर्मिति की गई। हर जन्म के लिये परिमिताएं जोडी गई। इसतरह ब्राह्मण भिख्खुओं ने सुत्त पीठकों को ब्राह्मण-धर्म के मुताबिक बदला है।(Original Buddhism And Brahminic Interference Dr. K. Jamanadas, "Shalimar", Main Road, Chandrapur (Maharashtra), 442 402 E-mail: kjdas@rediffmail.com)

ब्राह्मणों ने बुध्द को ब्राह्मण धर्म का एक देवता घोषित किया। अशोक के बाद ब्राह्मणों ने बडे पैमाने पर भिख्खु संघ में घुसपैठ की। कुमारिला भट, नागार्जुन इ. ब्राह्मणों ने भिख्खु बनने के बाद बौध्द धम्म में ब्राह्मण-धर्म का जहर मिलाना शुरु किया। नागार्जुन के ब्राह्मण शिष्यों ने यह प्रचारित किया कि नागार्जून ही असली बुध्द है। मूल बुध्द मात्र उनकी छबी थे, बुध्द ने बताया है कि उन्होने अपने कुछ रहस्य नागों के पास छुपाये है। उनकी मौत के आठ सौ साल बाद दूसरे बुध्द का जन्म होगा। वह नागों से इन रहस्यों को हासिल करेगा। (http://yabaluri.org/Kalidas.htm)

बुध्दघोष बौध्द गया का ब्राह्मण था। वह अपने बचपन से ही वेदों का जानकार था। उसने सारे भारत का भ्रमण किया और पातंजली योग के बारे में व्याख्यान दिये। भिख्खु रेवत ने उसे बौध्द धम्म में शामिल किया और अपने दुष्ट मकसद को पूरा करने के लिये श्रीलंका भेजा। वहां जाकर उसने सबसे पहले 'विसुध्दीमग्गा' लिखकर खुद को प्रस्थापित किया। इसके बाद उसने अट्टकथा लिखना शुरु किया। यह काम बुध्ददत्ता ने शुरु किया था लेकिन वह पूरा नही हो सका था। अट्टकथाओं को महिन्द्रा ने सींहली में भाषांतरित करवाया था। बुध्दघोष ने इसे दोबारा पाली में भाषांतरित किया। ऐसा करते ही उसने महिन्द्रा की मूल अट्टकथाओं को जला डाला ताकि पता न चल सके कि उसने भाषांतर सही किया है या गलत। आश्चर्य की बात यह है कि श्रीलंका के भिख्खुओं ने उसे ऐसा करने दिया। ये अट्टकथाएं अब चमत्कार और अलौकिक कल्पनाओं से भरी है जो बुध्द के मूल विचारों से पूरी तरह से विसंगत है। इन अट्टकथाओं ने जातक कथाओं को जन्म दिया। उन्होने चरित पिठिका के भाष्य (commentaries) लिखते वक्त ऐसा किया। इसतरह बुध्द के पूर्वकाल की कथाएं, नीतिकथाएं, लोककल्पनाएं इ. जिनका बुध्द के जीवन से या विचारों से कोई संबंध नही है को बुध्द के पूर्वजन्मों की कथाओं के रुप में प्रचारित किया। (Original Buddhism And Brahminic Interference Dr. K. Jamanadas, "Shalimar", Main Road, Chandrapur (Maharashtra), 442 402 E-mail: kjdas@rediffmail.com)

येमेलु तथा टेकुल नाम के दो ब्राह्मण बौध्द भिख्खुओं ने बुध्द से विनती की थी कि

उन्हे इजाजत दी जाये कि बुध्द की शिक्षा प्रवचनों को वे संस्कृत में लिख लें। बुध्द ने उनसे स्पष्ट रुप से कहा था कि वे चाहे जिस भाषा में उनकी शिक्षा को लिखे लेकिन संस्कृत जैसी भाषा में बिल्कुल नही क्योंकि यह जनभाषा नही है, यह भाषा सिर्फ ब्राह्मणों की भाषा है। बुध्द ने कहा कि जो भी कोई ऐसा करता है, वह दुख्खीता अपराध (गलत काम के अपराध) का दोषी होगा। इस वाकये का उल्लेख विनय पीठक में है। इसके बावजूद नागार्जुन ने जनभाषा पाली की बजाय संस्कृत में बौध्द साहित्य लिखना शुरु किया ताकि बौध्द धम्म की शिक्षा को विकृत किया जा सके। अश्वघोष ने भी पाली भाषा को त्याग कर संस्कृत को अपना लिया जबकि पाली भाषा को बौध्द धम्म की जनभाषा का स्थान प्राप्त था।(http://yabaluri.org/Kalidas.htm) संस्कृत भाषा का उपयोग करने वाले मथुरा क्षेत्र के भिख्खुओं ने मूल भिख्खु संघ से अलग स्वतंत्र भिख्खु संघ कायम किया। इन ब्राह्मण भिख्खुओं ने खुद को सर्वस्थीवादी, महासंघिका कहलाना शुरु किया। इनमें से अधिकांश भिख्खु पूर्वी क्षेत्र के थे। इन्होने राजगीर, नालंदा तथा वैशाली पर कब्जा कर लिया। वे सिर्फ संस्कृत में लिखते थे। ब्राह्मणों के अलावा संस्कृत कोई नही जानता था इसलिये उन्होने बौध्द धम्म की शिक्षा में मनमाने परिवर्तन किये। उनका मकसद भिख्खु संघ में विभाजन पैदा करना था। जब वे मूल भिख्खु संघ से अलग हुए तो उन्होने न सिर्फ वीनय पीठक में परिवर्तन किया बल्कि बौध्द धम्म की मूल शिक्षा में भी ब्राह्मण-धर्म के अनुकुल परिवर्तन किया। सारीपुत्त ने सुत्त निपात पर 'निद्देश' नामक भाष्य (commentary) लिखकर त्रिपीठक पर भाष्य (commentary) लिखने की नई परंपरा कायम की ताकि हर कोई अपने मन से बुध्द की शिक्षा की व्याख्या कर उसे विकृत कर सके। ब्राह्मणों व्दारा लिखे त्रिपीठकों में ब्राह्मणों का गौरवगाण किया गया है। सारीपुत्त ने दिघ्घ निकाय में 'संगीत परियय सुत्त' (Sangit pariyay Sutta) लिखा। इसमें बुध्द के सम्यक अष्टांग मार्ग की बजाय 'मिथ्या अष्ठरंग मार्ग' लिखा है। इससे रीस डेविस को भ्रम हुआ कि अष्ठांग मार्ग बुध्द की मूल शिक्षा नही है। धमचक्र प्रवर्तन सुत्त में दिया हुआ अष्ठांग मार्ग बुध्द की मूल शिक्षा का आधार है लेकिन सारीपुत्त ने उसी को ध्वस्त करने की कोशिश की है। ब्राह्मणों ने सुत्त पीठक में विकृत शिक्षा को शामिल किया है ताकि ब्राह्मणों के वचर्स्व को कायम किया जा सके। बुध्द के काल में सिर्फ वर्ण थे, जातियां नही थी लेकिन पहली बार 'गौतम धम्म सुत्त' में जातियों का उल्लेख किया गया है।

ब्राह्मण जैन आचार्यो ने भी जैन धर्मग्रंथों को संस्कृत में रुपांतरित करना शुरु किया। उन्होने जैन विचारों को वेदिक ब्राह्मण-धर्म का स्वरुप देने की पूरी पूरी कोशिश की। इसका अनुभव आचार्य जिनसेना के साहित्य से किया जा सकता है। आचार्य जीनसेना वेदीक ब्राह्मण था जिसने दक्षिण भारत के जैन मत को कर्मकांडों वाले जैन ध र्म में बदल दिया। जबकि प्राकृत भाषा में लिखा गया जैन साहित्य मूल जैन विचारधारा को दर्शाता है। संस्कृत में लिखा गया जैन साहित्य ऐसा बिल्कुल नही करता। आचार्य कुंडकुंडा के प्राकृत में लिखे साहित्य की तूलना आचार्य जीनसेना के संस्कृत साहित्य से कर इसे सहज रुप से समझा जा सकता है। यही बात बौध्द साहित्य के बारे में भी हुई है।(http://hubpages.com//Sanskrit Language Facts.htm)

इसवी शताब्दी के शुरु होते ही कनिश्क के काल में अश्वघोष, नागार्जून जैसे महायानी बौध्द भिख्खुओं का प्रभाव बढा। अश्वघोष ने 'बुध्द चरीत' लिखा। अश्वघोष ने सिध्दार्थ को औरतों के बीच रासलीला करते दिखाया। अश्वघोष ने बुध्द के चरित्र को ही ध्वस्त करने की कोशिश की है। इसमें ऐसी अविश्वनीय बातें बताई है कि सिधार्थ को

मौत, बुढापा क्या है इसका पता नही था जबकि सिधार्थ शस्त्रविद्या में प्रशिक्षित था। ऐसे अविश्वसनीय कारणों से सिधार्थ को घर छोडते हुए बताया गया। मूल त्रिपीठक के बुध्द को पूरी तरह भूला दिया गया है। भिख्खु संघ पर संस्कृत अनिवार्य कर दी गई। बुध्द की प्रतिमाएं व मूर्तियां बनाई गई तथा बुध्द की पूजा की जाने लगी। बौध्द धम्म का मूल मकसद निर्वाण की बजाय अलौकिक बुध्दत्व को प्राप्त करना बताया गया। अरहंत संकल्पना की जगह बोधिसत्व संकल्पना लागू की गई। ब्राह्मण भिख्खुओं ने बुध्द को लोकोत्तर दैवी ताकतों से युक्त हमेशा ही समाधी में लीन रहने वाला दैवी व्यक्तित्व घोषित किया। उन्होने कई कई बुध्द होने की कल्पना पेश की और कहा कि लोग भी अलौकिक बुधत्व को प्राप्त कर सकते है। जातक कथाएं लिखकर बौध्द धम्म को अलौकिक ताकतों से युक्त धम्म बनाया तथा बुध्द के सिधे सादे धम्म में कर्मकांड शुरु किये।

ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म को तांत्रिक धम्म में बदल दिया। भिख्खुओं के भेस में उन्होने घृणास्पद अपराध किये ताकि बौध्द धम्म को बदनाम किया जा सके।(http://yabaluri.org/Kalidas.htm) कथित तंत्रयान वास्तव में बौध्द धम्म के लिबास में अथर्व वेद के टोने टोटके और जादूई कल्पनाएं है। तंत्रयान में मातृ-देवता तारा की पूजा को शामिल किया गया। तांत्रिक बौध्द धम्म में बुध्द के पूर्नजन्म है। ब्राह्मण-धर्म के लैंगिक कर्मकांडों को शामिल किया गया। तांत्रिक बौध्द धम्म जादू-टोना और लैंगिकता के सिवा कुछ नही है। इस तरह ब्राह्मण-धर्म और बौध्द धम्म के बीच के फर्क को पाट दिया गया। लोगों के लिये बौध्द धम्म और ब्राह्मण-धर्म में कोई फर्क नही बचा।

रीस डेवीस के मुताबिक ब्राह्मण बुध्द के कभी इमानदार शिष्य नही थे। उन्होने कभी मूल बौध्द धम्म की शिक्षा को प्रचारित नही किया। वे बौध्द विहारों में आराम की जींदगी जीते रहे। भंते आनंद, भंते उपाली इ. गैरब्राह्मण भिख्खु वास्तव में बौध्द धम्म के सच्चे प्रचारक थे। कई गैरब्राह्मण भिक्षुणियाँ जैसे कि महाप्रजापति, गोतमी, विशाखा, आम्रपाली इ. ने बौध्द धम्म को प्रचारित किया जो गैरब्राह्मण थी। राजा बिंबिसार की पूर्व पत्नि जो भिक्षुणी खेमा हुई ने कोसल के राजा प्रसेनजीत के साथ बौध्द धम्म पर बहस की थी। गैरब्राह्मण भिक्षुणियों का बौध्द धम्म के प्रसार-प्रचार में बहुत अधिक योगदान रहा है। जब भी कोई गैरब्राह्मण भिख्खु आम लोगों के बीच जाता था तो लोग उनको सतत रुप से आगाह करते थे कि वे अपने भिख्खु संघ में ब्राह्मणों को शामिल ना करें क्योंकि वे बौध्द धम्म को तबाह-बर्बाद कर देंगे। रीस डेविस ने यही मत व्यक्त किया है।

सम्राट कनिष्क ने चौथी बौध्द संगती का आयोजन लगभग ईसवी 100 में जालंधर अथवा कश्मीर में किया था। इस बौध्द संगती में महायान बौध्द धम्म विधिवत मूल थेरावाद बौध्द धम्म से अलग हो गया। इस संगती अथवा काउंसिल में वासुमित्रा के नेतृत्व में 500 भिख्खुओं ने भाग लिया। अभिधम्म पर विस्तुत commentaries लिखी गई। मौजूदा बौध्द के नियमों में परिवर्तन किये गए। काउंसिल में तिन लाख verses तथा 90 लाख विधानों को तैयार किया गया। इस काम को पूरा करने में पूरे 12 वर्ष लगे। इस काउंसिल ने 'महा विभाषा' (Great Exegesis) यानि धर्मग्रंथ का स्पष्टीकरण नामक विशाल भाष्य का निर्माण किया। यह सर्वस्थीवादी अभिधर्मा की किताब है। प्राकृत में लिखे बौध्द धम्म के ग्रंथों का रुपांतरण संस्कृत भाषा में किया गया। महायान बौध्द धम्म के सभी साहित्य को संस्कृत में बदल दिया गया।

थेरावादी बौध्द धम्म ने कभी संस्कृत भाषा का इस्तेमाल नही किया क्योंकि बुध्द के स्पष्ट निर्देश थे कि बौध्द साहित्य का संस्कृत में भाषांतर कतई नही किया जाये।

इसलिये थेरावादी बौध्द धम्म कनिष्क व्दारा आयोजित इस चौथी बौध्द संगती को मान्यता प्रदान नही करता। वह इसे बौध्द धर्म में बिगाड पैदा करने वाले भिख्खुओं की संगति करार देता है। थेरावादी बौध्द धम्म ने अपनी चौथी संगति का आयोजन श्रीलंका में इसके 200 साल पहले किया हुआ था। इसमें पाली धर्मग्रंथों को पहली बार लिखा गया था। इसलिये दो चौथी बौध्द संगतियां है। अंतिम पाली साहित्य का निर्माण श्रीलंका में हुआ।

ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग व्दारा बौध्द सम्राट ब्रहद्रथ की हत्या कर सत्ता काबिज करते ही ब्राह्मणों ने बौध्द विहारों पर कब्जा कर पाली भाषा में लोगों को धम्म समझाने वाले भिख्खुओं का कत्लेआम शुरु किया। पुष्यमित्र शुंग की प्रतिक्रांति के बाद कोई भी पाली भाषा का महत्वपूर्ण भिख्खु कहीं नजर नही आता। पुष्यमित्र शुंग के बाद के काल में हमें पाली भाषा की 'मिलिंद पन्हो' नामक यही इकलौति किताब नजर आती है। इस किताब में ब्राह्मण भिख्खु नागसेन व्दारा राजा मेनांदर से किया हुआ संभाषण दर्ज है। इस किताब के पहले तिन अध्याय बुध्द की शिक्षा के मुताबिक है। बाद में यह किताब ब्राह्मण-धर्म की विचारधारा की ओर मूड जाती है। चमत्कार और अलौकिकता की कल्पनाओं से सराबोर है। चीनी मूल किताब में ऐसे अध्याय नही है। ब्रहद्रथ की हत्या करते ही ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने बौध्दों के खिलाफ हिंसक अभियान छेड दिया। ब्राह्मणों के पुराण इ. साहित्य में बौध्द धम्म की कटू आलोचना की गई है। विष्णु पुराण में बौध्दों का संपूर्ण सामाजिक बहिष्कार करने को कहा गया है। उनसे कोई भी संबंध रखने को पाप करार दिया गया है। यहां तक कि बुध्द भिख्खु को देखने भर से ही होने वाले पाप के प्रायश्चित की लंबी विधियां बताई गई है। कहा गया कि बौध्द के साथ खाना खाने वाला व्यक्ति सीधे नर्क जाता है । किसी को सपने में बौध्द का दिखाई देना भी अशुभ संकेत है। पुष्यमित्र शुंग तथा गुप्त साम्राज्य ब्राह्मण-धम्म की बौध्द धम्म पर विजय के रुप में जाना गया है।

ब्राह्मणवादी गुप्त राजा नालंदा इ. विश्वविद्यालयों को उसके अंर्तराष्ट्रीय चरित्र की वजह से खत्म नही कर पाये। नालंदा विश्वविद्यालय को ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं का इसलिये सहयोग मिला ताकि नालंदा विश्वविद्यालय में भारी घुसपैठ कर तंत्रयान को विकसित कर बौध्द धम्म की मूल शिक्षा को खत्म किया जा सके।

भिख्खुओं का बददिमाग पंडों में रुपांतरण !

बुध्द ने आम इन्सानों को, गृहस्थ जीवन तथा परिवार को अत्यंत महत्व दिया। लेकिन भिख्खुओं ने प्रचारित किया कि भिख्खु ही निर्वाण प्राप्त करेंगे। इसलिए आम लोग भिख्खुओं को महत्व देने लगे। आम लोगों ने भिक्षुओं को महत्व देते ही बौध्द ध म्म 'भिख्खु-केन्द्रित'' होते गया। भिख्खु खुद को आम जनता से उच्च स्तर के समझते थे। बौध्द भिख्खुओं ने खुद को मोनेस्ट्रीज में केन्द्रित कर लिया तथा बुध्द की सीधी सादी आसान शिक्षा की बजाय ब्राह्मणवादी तर्क-कुतर्को में उलझ कर रह गए। उनका आम लोगों से संबंध कट गया और वे अमीर लोगों तक सिमित होकर रह गए। उन्ही के हितों की हिफाजत करने लगे। उन्होने बौध्द धम्म को कर्मकांडों के धर्म में बदल दिया।

डॉ. तुलसीदास के अनुसार बुध्द धर्म में ब्राह्मणों ने इतने बडे पैमाने पर शिरकत की कि 90% भिख्खु ब्राह्मण थे। बौध्द धर्म को अंदर से नष्ट करने के बाद वे फिर ब्राह्मण-ध र्म में वापस आ गये। (भारत अश्वघोष, मई-जून, 1998)

गुप्त साम्राज्य आर्य-ब्राह्मणों का सुवर्ण-युग !

[Information for Revival of Brahminism is synthesized from following sources : Pusyamitra Sunga From Thedesipub http://www.wiki-site.com/Pusyamitra Sunga - Thedesipub.htm; http://en.wikipedia.org/Sunga - Wikipedia, the free encyclopedia. htm; http://www.indianetzone.com/Pushyamitra Sunga, King of Sunga Dynasty. htm; http://rivr.sulekha.com/Pushyamitra Sunga _ Sulekha Creative.htm; http:// en.wikipedia.org/Sunga - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://en.wikipedia. org/Sunga Empire - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.answers. com//Who are brahmin kings.htm; http://nirmukta.com/Decay of Dharma and Rise of Adharma _ Nirmukta.htm; http://nirmukta.com/Seven Samurai Of The Great Nastik Revolt _ Nirmukta.htm; Religious Rivalries and India‘s Golden Age; The Cultural Revival under the Guptas BY SHISHIR COOMAR MITRA www.yabaluri. or/The Cultural Revival under the Guptas.htm; http://en.wikipedia.org/History of Buddhism in India - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://rupeenews. com//How Adi Shankara destroyed Buddhism and founded ‘Hinduism’ in the 8th century _ Rupee News.htm; http://en.wikipedia.org/Shambuka - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.india-seminar.com/608 Romila Thapar, The epic of the Bharatas.htm; http://rupeenews.com/Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm; http://www.indianetzone.com//Religious movements in Gupta Period. htm; www.globalsecurity.org/Revival of Brahmanism.htm; http://www.kish.in//The Classical Age of Indian Culture.htm; http://indiansaga.com/History of India.htm; Buddhism in South India by Pandit Hisselle Dhammaratana Mahthera Buddhist Publication Society Kandy • Sri Lanka]

अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने कुटील षडयंत्रों से,
श्रमण परंपरा के मूलनिवासी राज्यों को नष्ट किया !

सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ग्रीक आक्रमण को इसलिये परास्त कर सके क्योंकि उन्होने स्थानीय राजाओं का मजबूत संयुक्त संघ बनाया था। लेकिन ब्राह्मण विचारधारा किसी भी एकता की विरोधी है क्योंकि एकीकृत समाज ब्राह्मण-धर्म और ब्राह्मण-वर्चस्व के लिये सबसे बडा खतरा है। समाज और देश को विभाजित रखकर ही ब्राह्मण-धर्म और अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों का वर्चस्व कायम रह सकता है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों का इतिहास रहा है कि उन्होने एक राजा को दूसरे राजा से लडाकर ही ताकत हासिल की है। राजाओं को अपने इशारों पर नचाया है। इसलिये {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के वर्चस्व के लिये यह जरुरी था कि कई दुश्मन राजा एक दूसरे के विनाश के लिये तत्पर बैठे रहे। इसलिये पुष्यमित्र शुंग व्दारा मौर्य साम्राज्य का तख्ता पलट देने के बाद कोई भी राज्य कभी एकसंघ नही रह सका। ब्राह्मण राजा भी एक दूसरे के खिलाफ षडयंत्र करते रहे। ब्राह्मण कण्वों ने षडयंत्र कर ब्राह्मण शुंग राजाओं का तख्ता पलट दिया। देश को विदेशी आक्रमण से

बचाने की बात तो दूर अल्पसंख्यक ब्राह्मणों की विभाजन की नीति की बदौलत भारतीय राज्य विदेशी आक्रमणों के आगे ढहते चले गए। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने हर श्रमण परंपरा के राजा का तख्ता पलटने के लिये विदेशी आक्रमणकारियों का साथ दिया। अलेक्झांडर बुखारा में ही था तो अम्भी ने अलेक्झांडर से वार्तालाप शुरु कर दिया था। तक्षिला से गए संदेशवाहकों ने बताया कि अम्भी अलेक्झांडर की ओर से उन भारतीय राजाओं के खिलाफ युध्द में उतरने के लिये तैयार है जो आत्मसमर्पण नही करना चाहते।(E. R. Bevan:1968:313) इसतरह तक्षिला के अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के ताकतवर राज्य ने पोरस के खिलाफ लडने के लिये अलेक्झांडर को आमंत्रित किया था।(FOREIGN INVASIONS AND CASTE Foreigners were assimilated by Buddhist ideals and not the Brahmanic) अलेक्झांडर के जाने के बाद राजनीतिक अस्थिरता निर्माण हुई। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने बौध्द तथा श्रमण संस्कृति के राजाओं का तख्ता पलटने के लिये विदेशी आक्रमण को आमंत्रित किया। उन्होने उन राजाओं की मदद की जो अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों तथा उनके वेदिक ब्राह्मण-धर्म के संरक्षण के लिये राजी है। इसतरह {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने अपनी खोई हुई ताकत दोबारा हासिल करने की कोशिश की। मौर्य साम्राज्य में वे घुसपैठ करो और श्रमण परंपरा के धर्मो को विकृत करो की नीति पर चलते रहे। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर-पश्चिमी सीमा विदेशी आक्रमण का रास्ता बन गया। लेकिन {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने आक्रमण के इस रास्ते को रोकने की कोई कोशिश नही की बल्कि {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के वर्चस्व के राज्यों ने ग्रीक, तुर्क, सीथीयन, चीनी, हुन इ. विदेशी ताकतों से सतत संपर्क बनाये रखा ताकि उनका इस्तेमाल श्रमण परंपरा के राज्यों के खिलाफ किया जा सके। जब भी {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को श्रमण संस्कृति के किसी राज्य से खतरा महसूस हुआ तो उन्होने उस राज्य के खिलाफ विदेशी या देशी आक्रमण को आमंत्रित किया।(Swami Dharmatirtha, p. 97-98; FOREIGN INVASIONS AND CASTE Foreigners were assimilated by Buddhist ideals and not the Brahmanic) {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को बौध्द शासकों की जडों पर प्रहार करने के लिये हुण, आरंभिक कुशान, इ. विदेशी आक्रमणकारियों से सहयोग करने में कोई हिचक नही हुई। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने हुण आक्रमणकारी मिहिरकुल को आमंत्रित कर उसका इस्तेमाल बौध्द धम्म के उन्मूलन के लिये किया। मिहिरकुल ने बौध्द स्थलों का विध्वंस किया और बौध्द भिख्खुओं का जनसंहार किया। (http://shaheed-khalsa.com/shaheedkhalsa.com.htm) जब भी किसी राजा ने बौध्द धम्म का संरक्षण किया उसके खिलाफ बिना किसी अपवाद के ब्राह्मण-धर्म के पैरोकार आक्रमणकारी को देखा गया। किसी राज्य ने ब्राह्मणों की कुटील नीतियों को समझकर बौध्द धम्म को राजाश्रय दिया तो {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने उसका तख्ता पलट दिया। इन षडयंत्रों को पुराण इ. लिखकर सही ठहराया गया।(TECHNIQUES IN CAUSING FALL OF BUDDHISM Decline and fall of Buddhism)

भारत को सदियों से मनुस्मृति कानूनों के मुताबिक चलाया जा रहा है। प्राचीन तथा मध्य-युगीन राजा तथा सम्राटों के हाथों में कानून बनाने का कोई अधिकार नही था। वे सिर्फ {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों व्दारा निर्मित दैविक कानूनों पर अमल करने वाले प्यादे मात्र थे। राजाओं ने {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के इशारों पर जो भी युध्द लडे है वे मनु इ. व्दारा बनाये धर्मशास्त्रों की रक्षा के लिये लडे है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के धर्मशास्त्रों की रक्षा करना राजाओं का फर्ज माना गया है। इसलिये राम ने चातुवर्ण की रक्षा के लिये ज्ञान प्राप्त करने वाले ओबीसी समाज के शंबुक की हत्या कर दी। तेली समाज के

विव्दानों का मानना है कि शंबुक तेली समाज के थे। राजाओं के हाथों में सिर्फ राज्य के प्रबंधन, टॅक्स इ. से संबंधित कानून बनाने का अधिकार था। यह अधिकार भी निध ारित सीमाओं के भीतर ही था मसलन {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को या तो करों से मुक्त रखना होता था या फिर {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों से नाममात्र का कर लेना होता था। राजा {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के बनाये कानूनों के खिलाफ नही जा सकता था।(http://www.paklinks.com/Investigation Did Muslims drive Buddhists out of India.htm)

कुटील षडयंत्रों से अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के राज की स्थापना !

मौर्य वंश के आखरी बौध्द सम्राट ब्रहद्रथ की सेना के प्रमुख ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने ईसापूर्व 185 वर्ष पहले सम्राट ब्रहद्रथ की हत्या कर {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों का राज कायम किया। अशोकवदना ग्रंथ के मुताबिक उसने बौध्दों के उन्मूलन का अभियान छेड दिया। उसने बौध्द मोनस्टरीज, स्तुपों, विहारों इ.को ध्वस्त कर दिया तथा एक भिख्खु का सिर लाने वाले को 100 सोने के सिक्के देने का ऐलान किया। (Indian Historical Quarterly Vol. XXII, p.81 ff cited in Hars.407, also Divyavadana, p.429-434) उसने सम्राट अशोक के व्दारा निर्मित 84000 बौध्द स्तूपों का विध्वंस किया। नालंदा, बुध्द गया, सारनाथ, मथूरा इ. जगहों में बडी तादाद में बौध्द स्थलों को ब्राह्मण-धर्म के स्थलों में बदला गया। अशोकवदना ग्रंथ के मुताबिक पुष्यमित्र शुंग ने बौध्द धम्म के विध्वंस के लिये चार गुनी सैनिक ताकत बढाई तथा बौध्दों के विनाश के लिये वह कुक्कुतरामा तक गया। पुष्यमित्र ने संघरामा को ध्वस्त किया। बौध्द भिख्खुओं का कत्लेआम करने के बाद ही वहां से लौटा। वह साकाला आया और बौध्द भिख्खु का सिर लाने वाले को सौ सोने के दिनार देने का ऐलान किया। (Ashokavadana, 133, trans. John Strong) सर जॉन मार्शल के मुताबिक संभव है कि सम्राट अशोक व्दारा बनाये गए मूल स्तूप को पुष्यमित्र ने ध्वस्त किया है।(Sir John Marshall, "A Guide to Sanchi", Eastern Book House, 1990, ISBN-10: 8185204322, pg.38) कई बौध्द मोनेस्टरीज तथा स्तुपों पर अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने कब्जा किया ताकि आर्थिक लाभ हासिल कर सके और बुध्द की शिक्षा को विकृत रुप से प्रचारित किया जा सके। इसलिये ऐसे बौध्द स्थल अस्तित्व में दिखाई देते है। सर जॉन मार्शल ने सूचित किया है कि पुष्यमित्र शुंग ने सांची के स्तुप को ध्वस्त किया था जिसे बाद में उसके उत्तराधिकारी अग्निमित्र ने दोबारा बनाया। उसी प्रकार देवकोथार स्तुप जो सांची और भारहट के बीच स्थित है, उसे भी इसी दौरान ध वस्त किया गया।

विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ के मुताबिक पुष्यमित्र शुंग इरानी मूल का था क्योंकि सभी शुंग राजा अपने पहले नाम के आखीर में मित्र शब्द जोडते है। मिथ्र / मित्र यह पर्शियन देवता का नाम है। शुंग राजाओं के काल में वेदिक ब्राह्मण-धर्म का जबर्दस्त विकास हुआ। शुंग काल में पातंजली ने महाभाष्य ग्रंथ लिखा। शुंग राजवंश का अंत ईसापूर्व 75 वर्ष पहले हुआ जब आखरी शुंग राजा देवभूति की उसी के ब्राह्मण मंत्री वासुदेव कण्व ने हत्या कर दी और कण्व राजवंश कायम किया। कण्व वंश में चार राजा हुए और उनका कुल कार्यकाल 45 साल रहा। ईसापूर्व 30 वर्ष पहले दक्षिण भारत के सातवहन बौध्द सम्राटों ने शुंग तथा कण्व दोनों का ही सुपडा साफ कर दिया और पूर्वी मालवा क्षेत्र पर अपना कब्जा किया। इन हालातों के चलते अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की राजनीतिक सत्ता कमजोर बनी रही। ईसवी 320 में ब्राह्मणवादी गुप्त साम्राज्य की स्थापना होते ही

परजीवी अल्पसंख्यक ब्राह्मणों का सुवर्णयुग शुरु हुआ। अल्पसंख्यक ब्राह्मणों का सुवर्णयुग भारत की मूलनिवासी बहुसंख्यंक जनता के लिये इतिहास का सबसे अंधकारमय युग था।

वेदिक यज्ञ प्रथा की पूर्नस्थापना !

अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय ने पूरजोर दावा किया कि वे संपूर्ण कायनात को नियंत्रित करते है। ब्राह्मणों ने तर्क दिया कि देवों के व्दारा इस दुनिया का नियंत्रण होता है। ब्राह्मणों के यज्ञ तथा मंत्र देवों को उनकी इच्छा पूरी करने पर मजबूर करते है। इसलिये अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय संपूर्ण कायनात का नियंत्रण करते है। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की बातों का भरोसा कर क्षत्रियों ने यज्ञ में अनाज, घी, तथा जानवरों की आहुति देना शुरु किया ताकि ईश्वर उन्हे सत्ता, दौलत और मरने के बाद स्वर्ग दे सके।(BG: 2:43) ब्राह्मणों ने यज्ञ को राजाओं की प्रतिष्ठा का विषय बना दिया। एक की देखादेखी दूसरे राजा भी प्रतिष्ठा की खातिर उससे भी बडा अश्वमेध यज्ञ, राजासुया यज्ञ तथा वाजपेया यज्ञ कराने लगे और अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय को भारी दान देने लगे।

अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय ही पढने-लिखने वाला समुदाय था इसलिये अल्पसंख्यंक ब्राह्मण नौकरशाही तथा प्रशासन पर काबिज हो गये। ब्राह्मणों को ही धार्मिक विधियां करने का अधिकार था क्योंकि अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने खुद को ईश्वर और आम इन्सानों के बीच का मध्यस्थ करार दिया था। यह भरोसा दिलाया गया था कि ईश्वर सिर्फ अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की बात मानते है और किसी की नही। इसलिये अल्पसंख्यंक ब्राह्मण ों को अपने आप प्रतिष्ठा और विशेष दर्जा हासिल हुआ। अल्पसंख्यंक ब्राह्मण ही राजाओं का राज्याभिषेक कर सकते थे। औरों व्दारा किये राज्याभिषेक को ईश्वर के यहां मान्यता नही थी। ऐसे राजा पर या उसके राज्य पर संकट आ सकते थे। राज्य या राजा पर संकट लाने का काम भी अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के षडयंत्रों के तहत ही होता था। इसलिये तमाम राजा अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के हाथों से कर्मकांड और बेहद खर्चीले यज्ञ करने पर मजबूर थे। ब्राह्मण राजाओं से भारी दान वसूल करते थे। यज्ञों की से अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों का सामाजिक तथा राजनीतिक वर्चस्व कायम था। ब्राह्मण चाहे जितना अमीर क्यों ना हो वह करों से मुक्त था। ब्राह्मणों ने खुद को 'संरक्षित मानव-प्राणी' करार दिया था। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की हत्या को कई पीढीयों तक चलने वाला सबसे बडा पाप करार दिया था। अश्वमेध यज्ञ ब्राह्मणों की सर्वोच्च सत्ता का प्रतिक था। अल्पसंख्यंक ब्राह्मण राजाओं की रानियों का बलि दिये गए घोडे से लैंगिक संबंध कायम कर उन्हे अपमानित करते थे।

जब किसी घोडे की गर्दन को फाँस लगाकर मारा जाता है तो स्वाभाविक रुप से उसका लिंग सख्त हो जाता है। इस यज्ञ की विधि को अंजाम देने वाले चार ब्राह्मण पूजारी भी अपनी पत्नियों के साथ लैंगिक संबंध कायम करते है। अश्वमेध यज्ञ के महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि महाभारत में अश्वमेध पर्व के नाम से 14 वा पूरा अध्याय है।(http://www.atlan.org//The Horse Sacrifice.htm) अश्वमेध यज्ञ में बडे लंबे मंत्रोच्चारण के बीच यज्ञ का आयोजन करने वाले राजा की रानी के जननेंन्द्रीय में बलि दिये गये घोडे के लिंग को ब्राह्मण पूरोहित प्रवेशित कराते थे। वजस्नेय संहिता के एक मंत्र के अनुसार अश्वमेध यज्ञ के इस हिस्से का भागी बनने के लिये रानियों में प्रतिव्दंदिता पायी जाती थी। अश्वमेध यज्ञ के इस हिस्से का अत्यंत सुक्ष्म वर्णन यर्जुवेद के महिन्द्रा के वर्णन में पढा जा सकता है। (Dr Ambedkar, Vol. 4 , P. 109, 295)

अश्वमेध यज्ञ के कर्मकांड में रानी मारे गये घोडे के मंत्रोच्चाण के साथ फेरे लगाती है। दूसरी रानियां गंदे गदे अश्लिल वाक्य बोलती है। इसके बाद वह रातभर उस घोडे के साथ लैंगिक संबंध कायम करती है।(Ashvamedha - Wikipedia, the free encyclopedia. htm) रामायण में उल्लेख है कि राजा दशरथ ने पूत्र की प्राप्ति के लिये यज्ञ किया था जिसमें विभिन्न जानवरों की बलि दी गई थी। इसके बाद उन्होने अपनी तिन रानियों कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकई को तीन पूजारियों को सौंप दिया। इन पूजारियों ने अपनी लैंगिक इच्छा पूरी करने के बाद रानियाँ राजा दशरथ को लौटा दी। इस यज्ञ के परिण ाम स्वरुप राजा दशरथ की बिबियों को राम, लक्ष्मण और भरत नाम के पूत्र हुए।(Bala Kandam, Chapter 14. For more details on yaham, refer to the book "Gnana Surian", published by Kudi Arasu Press) महाभारत में युधीष्ठीर ने अश्वमेध यज्ञ करने का उल्लेख है। (Book 14) वेदीक ब्राह्मण धर्म के ग्रंथों में स्त्रियों व्दारा जानवरों के साथ लैंगिक संबंध बनाने या ऐसी इच्छा उजागर करने के कई उदाहरण है। यर्जुवेद में ऐसे कई उदाहरण है जब यज्ञ का आयोजन करने वाले की मुख्य पत्नि ने घोडे के साथ लैंगिक संबंध बनाया है। मसलन मंत्र जिसमें यज्ञ का आयोजन करने वाले की सभी बिबियां तिन मंत्रों का उच्चारण करते हुए घोडे की परिक्रमा करती है और प्रार्थना करती है कि 'ए घोडे तु अपने अच्छे गुणों की वजह से समुदाय का रक्षक है। तु खुशियों का खजाना है। ए घोडे तु मेरा पति बन जा।' (Yajur Veda 23/19) जब पूजारी घोडे को पवित्र कर देता है तो यज्ञ का आयोजन करने वाले की मुख्य पत्नि घोडे के साथ लेटकर कहती है कि 'ए घोडे मै गर्भाधारण योग्य वीर्य ग्रहण करती हुं तूम गर्भाधारण योग्य वीर्य प्रवाहित करो।'(Yajur Veda 23/20) यज्ञ के आयोजनकर्ता की मुख्य पत्नि और घोडे के पैर फैलाये जाते है। पूजारी इनके इर्दगीर्द पर्दा लगाने को कहता है। इसके बाद यज्ञ के आयोजनकर्ता की मुख्य पत्नि घोडे के लिंग को खिंचकर अपनी योनि में स्थापित करती है और कहती है 'यह घोडा अपना वीर्य मुझमें प्रवाहित करे।'(Yajur Veda 23/20) इसके बाद यज्ञ का आयोजन करने वाला जजमान घोडे से कहता है कि 'ए घोडे मेरी पत्नि के भीतर अपना वीर्य छोडो, अपने लिंग को फैलाओ और उसे उसकी योनि में प्रवेशित करो क्योंकि अंदर प्रवेशित लिंग औरत को सुखी और जींदादिल बनाता है' -23/21(http://mukto-mona.net//Women in Hinduism by Abul Kasem.htm) मौर्य सम्राट ब्रहद्रथ का तख्ता पलटने के बाद ब्राह्मण पुष्यमित्र शुंग ने अश्वमेध यज्ञ किया था। अश्वमेध यज्ञ की स्मृति में समुद्रगुप्त ने सिक्के जारी किये है। इस यज्ञ की समाप्ती के बाद उसने महाराजाधिराज की उपाधी ग्रहण की। राजा कनौज ने भी अश्वमेध यज्ञ करना चाहा जो नाकाम रहा। अश्वमेध यज्ञ का आखरी उदाहरण ईसवी 1716 में जयपूर के अंबर के राजा जयसींह व्दीतीय का है।

गुप्त राजाओं ने अश्वमेध यज्ञ किये। ब्राह्मणवादी चंद्रगुप्त की मथूरा में लिखी इबारत से तथा स्कंदगुप्त के बिहार की इबारत से स्पष्ट है कि उन्होने अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त तथा कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ किया। यज्ञ की प्रतिष्ठा दक्षिण तक पहुंची और पुलाकेशी प्रथम नामक चालुक्य राजा ने भी अश्वमेध यज्ञ किया। उसके राजवंश के कई राजकुमारों ने भी दिगर यज्ञ किये और अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों को बडी जमीने दी। ब्राह्मण राजा भी अश्वमेध यज्ञ करते थे। ब्राह्मणों की सेवा करने वाले राजाओं को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि करार दिया गया। वे देवताओं की तरह सम्मानित किये जाने लगे। अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की राजमंदी से विधिपूर्वक चंद्रगुप्त व्दीतीय ने, कुमारगुप्त ने, तथा स्कंदगुप्त ने खुद को परम भागवत कहा। अपने सिक्कों पर भी यही उपाधी अंकित

की। राजा खुद को परमेश्वर, महाराजाधीराज, परमभट्टरका इ. विशेषण लगाने लगे।

स्थानीय भाषाओं को कुचलकर संस्कृत का पुरस्कार !

ब्राह्मणवादी गुप्त राजाओं ने संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में जबर्दस्त योगदान दिया। उन्होने संस्कृत को अपनी राजभाषा बनाया। संस्कृत को न्यायालय तथा दरबार की भाषा बनाया गया। अपने शिलालेख तथा सभी इबारतें संस्कृत में लिखी। पाली प्राकृत इ. भाषाओं को निरुत्साहित किया गया। नाटकों इ. में सभ्य प्रतिष्ठित लोगों को संस्कृत में बोलते हुए जबकि खलनायकों तथा गौण चरित्र के पात्रों को स्थानीय भाषाओं में बोलते हुए बताया गया। संस्कृत में लिखना प्रतिष्ठा की बात जबकि स्थानीय भाषाओं में लिखना अप्रतिष्ठा की बात जताया गया। मजबुरन सभी धर्मो के धर्मग्रंथ भी संस्कृत में भाषांतरित होने शुरु हुए। गुप्त राजाओं के काल में स्थानीय भाषाओं में लिखे धार्मिक, कलात्मक, साहित्यिक तथा तमाम विद्याओं से संबंधित किताबों को अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों की सुविधा के मुताबिक तमाम हेर फेर और ब्राह्मण धर्म की मिलावट करते हुए संस्कृत में भाषांतरित किया गया। बाद में इसे संस्कृत का मूल साहित्य प्रचारित किया गया। भाषांतरकार ही मूल लेखक बन बैठे। गुप्त राजा काल संस्कृत का सुवर्णयुग है।

{अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण समुदाय के कॅलेंडर में शक संवत् और विक्रम संवत जैसी दो कालगणनाएं होने के पीछे का राज ब्राह्मणों व्दारा पाली भाषा और बौध्द धम्म के विध्वंस प्रक्रिया से जुडा है। शक युग की शुरुआत ईसवी 78 से हुई जो बौध्द सम्राट कनिष्क के काल से संबंधित है। कनिश्क के काल में ही ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म का हीनयान और महायान धम्म में विभाजन किया और महायान पंथ के ब्राह्मणों ने पाली को त्यागकर संस्कृत को अपना लिया। शक काल बौध्द धम्म के विभाजन और पाली पर संस्कृत की विजय का प्रतिक है। विक्रम काल का संबंध ब्राह्मणवादी गुप्त राजवंश के चंद्रगुप्त विक्रमादित्य से है। गुप्त काल ब्राह्मण-धर्म का सुवर्णयुग माना जाता है। गुप्त राजाओं के शासन काल में संस्कृत को राजभाषा का दर्जा दिया गया। स्थानीय भाषाओं के साहित्य को संस्कृत में भाषांतरित कर स्थानीय भाषाओं के साहित्य को नष्ट किया गया। पाली भाषा को खत्म करने की जो प्रक्रिया शक काल में शुरु हुई वह विक्रम काल में पूरी हुई।(http://brahminterrorism.wordpress.com/How Brahmins Killed Buddhism In India _ Brahmin Terrorism.htm)

ब्राह्मणों को सर्वोच्च बनाने वेद, पुराण इ. धर्म-ग्रंथ दोबारा लिखे गए !

गुप्त काल में रामायण, महाभारत तथा पुराणों में व्यापक परिवर्तन किया गया। ब्राह्मणों का महिमामंडन कर उन्हे सर्वोच्च स्थान पर स्थापित किया गया। धर्मग्रंथों में ऐसे कई वाकये शामिल किये गए जिसमें {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण देवों तक को शाप देकर प्रताडित करते है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के शाप की वजह से दुनियां में तबाही होती है। गीता में कृष्ण को यह कहते हुए बताया गया है कि तमाम जातियों का निर्माण उसने खुद किया है, हर किसी ने अपने जाति-वर्ण के मुताबिक अपना कर्तव्य करते रहना चाहिये। मनुस्मृति, विष्णुस्मृति, पुराण, ब्राह्मणा इ. धर्मग्रंथों में {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को दिगर वर्णो से श्रेष्ठ स्थापित करने वाले नियम-कानून बनाये गए तथा दूसरे जाति-वर्णो को अपमानित किया गया है।(http://www.dharmawheel.net/Dharma Wheel • View topic - Brahmayana Buddhism.htm) मनुस्मृति के अलावा ब्राह्मण धर्मग्रंथों में अनेक

मनगढंत कहानियां {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों का वर्चस्व कायम करने के लिये गढी गई है :- 1) भ्रीगु नाम के ब्राह्मण ने विष्णु देवता की छाती पर लात मारी। देवता {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के नौकर है इसलिये सभी ने {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के नौकर बनकर रहना चाहिये। 2) परशुराम नाम के ब्राह्मण ने पृथ्वी से 21 बार क्षत्रियों को निक्षत्रिय बनाया। ऐसे अनगिनत उदाहरण {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के धर्मग्रंथों में है। (http://in.answers.yahoo.com/What about false fabricated PURANIC TALES to propagate superiority of caste Brahmins above all(even GOD) - Yahoo! Answers India.htm) महाभारत की किताब अनुसासानिका (Anusasanika) के अध्याय में भिष्म युध्दिस्टीर से कहता है कि राजा का कर्तव्य विव्दान ब्राह्मणों की पूजा करना है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों की इस तरह से रक्षा करनी चाहिये जैसे कि कोई खुद की या अपने बच्चों की रक्षा करता है। उनका आदर करना चाहिये, उनके आगे सीर झुकाना चाहिये। उनका माता पिता की तरह आदर करना चाहिये। अगर {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण संतुष्ट रहते है तो सारा देश सुरक्षित है। वे असंतुष्ट और गुस्से में है तो सबकुछ ध्वस्त हो जाता है। वे ईश्वर को गैरईश्वर और गैरईश्वर को ईश्वर बना सकते है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण जिसकी प्रसंशा करते है वह समृध्द बनता है, {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण जिससे नाराज होते है उसकी हालत दयनीय हो जाती है।

गुप्त राजाओं के काल में तमाम धर्मशास्त्र, पुराण, रामायण, महाभारत इ. को दोबारा लिखा गया ताकि बदली हुई हालातों के मुताबिक {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के वर्चस्व को बहुसंख्यक जनता पर पूर्नस्थापित किया जा सके। ये सारे बदलाव मूल लेखकों के नाम पर खपाये गए। ऐसी कोई धार्मिक किताब नही जिसमें काल्पनिक बातें, दंतकथाएं तथा काल्पनिक इतिहास नही घुसाये गये। ऋग्वेद की दसवी किताब का लेखक प्रत्यक्ष ईश्वर बताया गया ताकि किसी को शक तक ना हो कि यह दसवी किताब (मंडल) बाद में लिखी गई है। ब्राह्मण-धर्म के पुर्नरुत्थान के काल में ऐसे नकली शास्त्रों और पुराण ों की बहुतायत है।(Dharma Teertha, p. 124 ff) मनुस्मृति को अंतिम आकार देने का काम गुप्त राजाओं के काल में किया गया। आर. जी. भंडारकर के मुताबिक यज्ञ तथा बलीप्रथा से संबंधित कर्मकांडों के धर्मग्रंथ, भाष्य तथा वेदों के सुत्रों के भाष्य को गुप्त काल में ही लिखना शुरु हुआ। गुप्त काल में वायु पूराण, विष्णु पुराण, लींग पुराण, मत्स्य पुराण तथा मार्केडेय पुराण में भारी परिवर्तन किया गया। जैमिनी के मिमांसा दर्शन पर लंबी बहस सर्वस्वामी व्दारा लिखी गई। सांख्य दर्शन को अपने मुताबिक पेश करते हुए ईश्वरक्रिष्ण ने सांख्य-कारिका नामक किताब लिखी। योग को वैदिक जताकर वेदों को पूर्नप्रतिष्ठित किया गया।(The Cultural Revival under the Guptas BY SHISHIR COOMAR MITRA www.yabaluri.or/The Cultural Revival under the Guptas.htm) रामायण तथा महाभारत में व्यापक परिवर्तन किया गया। यज्नवालक्या ने यज्जवालक्या स्मृति, नारद ने नारदस्मृति, काटयायना ने काटयायनस्मृति, ब्रहस्पति ने ब्रहस्पतिस्मृति, कमंडका इ. लेखकों ने गुप्त नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र लिखे। इसी काल में पाराशर स्मृति लिखी गई। (http://www.kkhsou.in/KKHSOU2.htm) कई दर्शनों को अंतिम रुप दिया गया।

सोलहवी शताब्दी के अंत में तुलसीदास ने रामचरीतमानस लिखकर राम तथा सीता के चरित्र के सभी काले पहलु हटाकर उन्हे दैविक शक्ल दी।(http://www.san.beck.org/Summary and Evaluation of India & Southeast Asia to 1875 by Sanderson Beck.html)

दिगर धर्म-पंथों के व्यक्तित्वों को ब्राह्मण-धर्म में शामिल करने धर्मग्रंथ दोबारा लिखे गये !

दूसरी आध्यात्मिक परंपराओं तथा दर्शनों को ब्राह्मण-धर्म के नाम पर खपाने का अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों का इतिहास रहा है। ए. आर. मजूमदार के मुताबिक इसवी 650 से हिन्दूओं ने {पढीये अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने} सच्चे इतिहास को दबाकर उसकी जगह मनगढंत कहानियां गढ ली।(http://karthiknavayan.wordpress.com/How the Buddhists and Jains were Persecuted in Ancient India. _ ???????? ??????.htm)

अपने दुश्मनों के साहित्य से निपटने के लिये {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने हमेशा 1) दुश्मनों के साहित्य को नष्ट किया है, तथा 2) दुश्मनों के साहित्य में ब्राह्मण-धर्म की मिलावट कर उसे ब्राह्मण-धर्म के अनुकुल बना दिया है। मूल भगवत गीता ब्राह्मणवाद को दुष्ट ताकत मानती थी। ब्राह्मणवाद को उखाड फेंकने के 'भागवत इन्केलाब के घोषणापत्र' को ब्राह्मणों ने अतिसंपादन के माध्यम से 'ब्राह्मणवाद की प्रमाणित अभ्यास-पुस्तिका (Handbook)' में बदल दिया। ब्राह्मण-धर्म के खिलाफ जो लगातार दो इन्केलाब हुए थे उनपर पर्दा डाला गया। ब्राह्मण-धर्म के कर्म सिधान्त, वर्ण-व्यवस्था, यज्ञ व {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों की बहुसंख्यंक जनता पर सर्वोच्चता को मान्यता इ. को भगवत गीता में शामिल किया गया। ब्राह्मण संपादकों ने कृष्ण व्दारा {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों की अत्यंत कठोर आलोचना-भर्सना को निरस्त करने की कोशिश की है। इसके लिये उन्होने इन श्लोकों को सोलहवे अध्याय में 'दैवी तथा दुष्टता के बीच फर्क का योग' (The Yoga of Division Between The Divine and Demonical) जैसे शीर्षक से डाला है। इस अध्याय में क्षत्रियों को कोसा (16:11-20) तथा ब्राह्मणों को (16:21-24) अत्यंत कटू वचनों से लताडा गया है। अध्याय 17 अध्याय 16 के पहले आना चाहिये था क्योंकि इसमें ब्राह्मणों के श्लोक (17:1-4; 7-28) की प्रतिक्रिया है। लेकिन 16 वे अध्याय को 17 वे अध्याय के पहले डाल देने से किसी को पता ही नही चलता कि कृष्ण किसकी भर्सना कर रहा है। वे कौन है जिसको कृष्ण क्रूर नफरत करने वाले, इन्सानों में सबसे बूरे, दुष्ट कहकर उन्हे कृष्ण हमेशा के लिये शैतानों के गर्भ में भेजना चाहता है। ब्राह्मणों ने इसके झूठे स्पष्टीकरण के लिये राक्षसों की कल्पित कहानियां गढ ली जिनको कृष्ण ने मारा बताया गया। इन राक्षसों को मारने के लिये कृष्ण को दुश्मनों के विनाशक (2:4) के नाम से पुकारा गया। अतिसंपादन (Extreme editing) की बदौलत भगवत गीता अनाकलनिय, अतार्किक, भ्रमित करने वाली, विरोधाभासी तथा लगभग अनाकलनिय बन गई। इससे {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को अपनी हेराफेरी छुपाने में और ज्यादा आसानी हुई। उन्होने यह नियम बनाया कि भगवत गीता का अध्ययन बिना गुरु के नही किया जाये। यानि गीता सिर्फ {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के मार्गदर्शन में ही पढी जाये।(http://nirmukta.com/Subterfuge How Brahmins Destroyed The Bhagavata Revolution _ Nirmukta.htm) शंकराचार्य ने गीता के श्लोको को गलत ढंग से पढा, उनका गलत स्पष्टीकरण किया और श्लोकों के इन्केलाबी अर्थ को विकृत किया। ब्राह्मणों ने भक्तियोग से योग हटाकर, उसमें पूजा जो छुपे रुप में यज्ञ था घुसाकर भगवतवाद को भ्रष्ट किया। दसवी शताब्दी में भगवत गीता को ब्राह्मणवाद की प्रमाणित अभ्यास पुस्तिका के रुप में जानी गई। इसका उल्लेख अलबेरुनी ने अपनी किताब किताबुल हिन्द में किया है। (http:// nirmukta.com// Legacy Of Ancient

Religions Of India _ Nirmukta.htm) शंकराचार्य (788-820 A. D.) ने भगवत गीता को 'ब्राह्मणवाद को उखाड फेंकने के घोषणपत्र' को 'ब्राह्मणवाद की प्रमाणित अभ्यास-पुस्तिका (Handbook) में बदल दिया।(http://nirmukta.com//The Great Nastik Revolt _ Nirmukta.htm)

आस्तीक का अर्थ है जो वेदों तथा चातुवर्ण्य पर आस्था रखते है फिर भले ही वो ईश्वर पर भरोसा न भी रखते हो। नास्तिक वह है जो वेदों तथा चातुववर्ण की श्रेष्ठता पर विश्वास नही करते फिर भले ही वे ईश्वर पर भरोसा रखते हो (Will Durant, p.534)। उपरोक्त परिभाषा उपनिषदों के ईश्वर विरोधी रुख को देखते हुये कि गयी है। इसतरह ब्राम्हणों ने ईश्वर को मानने वाले तथा न मानने वाले सभी तरह के लोगों को अंततः ब्राम्हणवाद के शोषणव्युह की गिरफ्त में लाने का कार्य किया है।

ईसाई धर्म से ब्राह्मण-धर्म को बचाने,
अल्पसंख्यंक ब्राह्मण समुदाय ने अपने धर्मग्रंथों में बदलाव किये !

भारत में ईसाई धर्म के परिचय के पहले धर्म के रुप में धार्मिक दर्शन तथा धार्मिक साहित्य सिर्फ बौध्द तथा जैन धर्म के पास ही था। ब्राह्मणों के वेदिक धर्म में सर्वोच्च ईश्वर की संकल्पना नही थी। ईश्वर के प्रतिनिधि ने जन्म लेना, ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण तथा भक्ति से स्वर्ग की प्राप्ति इ. संकल्पनाएं {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों तथा बहुसंख्यंक मूलनिवासियों के धर्मो के लिये अपरिचित थी। बौध्द तथा जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नही करते थे जबकि ब्राह्मण सूर्य, उषा, अग्नि, वरुण इ. प्रत्यक्ष अनुभव होने वाली प्राकृतिक ताकतों को प्रसन्न करने के लिये जानवरों की बलि चढाते थे तथा उनकी प्रसंशा करते थे। ईसाई धर्म का परिचय ईसवी 52 वे वर्ष में किया गया। सेंट थॉमस ने पूरे भारत में ईसा मसीह के नाम से चर्च कायम किये। परमेश्वर तथा महेश्वर यह शब्द {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने पहली ईसवी शताब्दी के बाद इस्तेमाल किये है। इसके पहले संपूर्ण भारतीय उपमहाव्दीप के लिये यह शब्द नये थे। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों में यह परिवर्तन इसलिये हुआ था क्योंकि ईसाई धर्म में सिर्फ इकलौते एक ईश्वर की संकल्पना है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के वेद, उपनिषद, ब्रह्मसुत्र, भागवत गीता इ. दूसरी शताब्दी के बाद लिखे गए है। उनपर ईसाई धर्म का प्रभाव स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। इसी वजह से वेदिक ब्राह्मणों के इंद्र, वरुण, अग्नि,उषा इ. कुदरति ताकतों ने धीरे ध ीरे देवताओं के रुप में अपना महत्व खो दिया।(Presented at the First International Conference on the History of Early Christianity in India New York, August 2005 Christianity and the Origin of Sanskrit Dr. Alexander Harris appiusforum@alum. MIT.edu)

पहले ईसाई तथा बाद में इस्लाम का मुकाबला करने के लिये ही सर्वोच्च शक्ति की कल्पना की गई। स्वर्ग और नर्क की संकल्पना भी धर्मग्रंथों में शामिल की गई। ध्यान में पडे रहने को महीमामंडित किया गया। जन्म-मृत्यु के दुश्चक्र से खुद को मुक्त कर स्वर्ग में ईश्वर के पास जाना इन्सान का मकसद बताया गया। इन बदलावों से ईसाई तथा इस्लाम को कामयाबी से रोका जा सका। मूलनिवासी श्रमण कपीला, बुध्द, महावीर इ. के दर्शन को विकृत किया गया। इससे भारत के मूलनिवासियों की सोच को वैज्ञानिकता से अतार्किक धार्मिक अंधविश्वासी सोच में बदला गया। इसतरह सच्चा भारत खत्म हुआ।(http://www.indiadivine.org/Scriptures CORRUPTED in 800 Ad.htm)

ईसा मसीह तथा कृष्ण के जीवनक्रम की घटनाओं में कई समानताएं है जबकि उनके जन्म के काल में बहुत ज्यादा फर्क है। कृष्ण तथा ईसा मसीह दोनों ही नोह के वंशज है। दोनों के जन्म का भविष्य पहले ही बताया जा चुका था। ईसा मसीह अब्राहम का वंशज है जबकि कृष्ण ब्रह्मा का पिता माना जाता है। ईसा मसीह कोरेश तथा यहूदी था। कृष्ण भी कुरु, अभीरा तथा यादव वंश का माना जाता है। ईसा मसीह को याह-वेह (Yah-Veh) का अवतार माना जाता है जबकि कृष्ण को विष्णु तथा शिव का अवतार माना जाता है। कृष्ण को वास्तविक पिता नही था बल्कि वासूदेव नाम का संरक्षक था। ईसा मसीह का भी वास्तविक पिता नही था बल्कि उसका पालनपोषण जोसफ नाम के संरक्षक ने किया था। येशु मसीह का पहला नाम येशुआ था। कृष्ण को भी येशु-कृष्ण के नाम से जाना जाता था। राजाओं ने कृष्ण और ईसा मसीह को खतरा मानते हुए हत्या के लिये उनकी खोजबीन की थी। ईसा मसीह की रक्षा के लिये उसकी मां मेरी ने उसे इजिप्त के मतुराई (Maturai) भेजा था जबकि कृष्ण को भारत के मथूरा में भेजा गया था। ईसा मसीह तथा कृष्ण के बारे में भविष्यवाणी थी कि दूसरों के पापों के लिये उनकी हत्या की जाएगी। ईसा मसीह को सलीब पर चढाया गया था। तीन दिन बाद वे जीवित हो गए थे। पेड के तने से सटकर लेटे कृष्ण की एक शिकारी के तीर से मौत हुई। कृष्ण भी बाद में जीवित होकर चला गया। ईसा मसीह को जेरुसलेम में सलीब पर चढाया गया था। कुछ हिन्दू स्कॉलर्स के मुताबिक कृष्ण की भी येरुशलेम में मौत हुई। हिन्दू-ईसाई दोनों इन्कार करते है कि ईसा मसीह और कृष्ण एक-दूसरे से संबंधित है। वे एक-दूसरों पर आरोप लगाते है।(http://mondovista.com//India's God Krishna Was the King of Jerusalem!.htm)

बहुसंख्यंक मूलनिवासियों को शुद्र करार देने,
अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथों को दोबारा लिखा !

मनुस्मृति में जातियों का स्पष्टीकरण देते वक्त बहुसंख्यंक मूलनिवासी बहुजन जातियों को बुरी तरह से अपमानित किया गया है। मनु के अनुसार वैदेह का समुदाय वैश्य पुरुषों और ब्राह्मण स्त्रियों के संबंधों से अस्तित्व में आया है। शब्द-उत्पत्तिशास्त्र (Etymology) के अनुसार बिहार के प्राचीन विदेह तथा आधुनिक चंपारन तथा दरभंगा में रहने वाले लोग विदेह है। मनु के अनुसार आंध्रा समुदाय वैदेहा पुरुष और करवर स्त्रियों के संबधों से अस्तित्व में आया है। जबकि आंध्रा समुदाय दक्षिण-पूर्व भारत का अत्यंत शक्तिशाली समुदाय है। मनु के अनुसार अभीर समुदाय ब्राह्मण पुरुष और अम्बस्ठी स्त्रियों के संबंध ों से अस्तित्व में आया है जबकि अभीर यह अहिर का अशुध्द रुप है। मनु के अनुसार मगधी (Magadhas) वैश्य पुरुषों तथा क्षत्रिय स्त्रियों की अवैध संताने है जबकि पाणीनी के अनुसार मगध प्रांत के लोग मगधी है। अथर्ववेद में मगधियों का स्वतंत्र जाति के रुप में उल्लेख है। मनुस्मृति के अनुसार निषाद समुदाय ब्राह्मण पुरुष तथा शुद्र स्त्रियों के संबंधों से उत्पन्न हुआ है। जबकि निषाद समुदाय अत्यंत प्राचीन स्वतंत्र समुदाय होकर उनके अपने निषाद राजा थे; रामायण में गुहा नामक निषाद राजाओं का उल्लेख है जिनकी राजधानी श्रींगवेरापूरा थी। मनु के अनुसार ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्रियों के संबंधों से अंबस्ठी समुदाय अस्तित्व में आया है। जबकि पातंजली के अनुसार अंबस्ठ देश के रहने वालों को अंबस्ठी कहते है। मनु के अनुसार व्याभिचारिणी ब्राह्मण स्त्रियों और शुद्र पुरुषों के संभोग से नमोशुद्र (चांडाल) जाति अस्तित्व में आई है। यह कोरी बकवास है। नमोशुद्रों की लोकसंख्या इतनी अधिक है की सारी ब्राह्मण स्त्रियाँ विशाल नमोशुद्र

जनसंख्या के सामने कम पडेगी।(Dr Ambedkar, Vol. 4, P.223-224 225) बाल्मीकि जाति अत्यंत पूरातन समाज है जिसका वाल्मीकि रामायण से कोई संबंध नही है। ब्राम्हण वादियों ने वाल्मीकी समाज की पहचान खतम करने के लिए उन्हे वाल्मीकि रामायण से जोड दिया। (आर.पी. हर्ष, दलित व्हाईस, p. 22, 16-31 जनवरी 2002) मनुस्मृति का उद्देश्य चातुवर्ण्य की परिधी से बाहर के विशाल मूलनिवासी (85%) बहुजनों की निर्मिती का किसी तरह से स्पष्टीकरण करके उन्हे ब्राम्हण धर्म की परिघी में लाना है।

नये देवताओं के निर्माण के लिये
पुराण इ. धर्मग्रंथों को दोबारा लिखा गया !

बहुसंख्यक मूलनिवासियों के देवि-देवताओं पर कब्जा जमाने के लिये {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण समुदाय के लिये जरुरी था कि वे उन्हे {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण जाति से संबंधित करें। इसलिये उन्होने पुराणों में कहानियां गढ कर बहुसंख्यंक बहुजनों के देवि-देवताओं को किसी न किसी ब्राह्मण ऋषि की संतान बताया।(www.countercurrents.org/Saffronization,HinduizationOr Brahminization By Dr. K. Jamanadas.htm) 1) व्यास मुनी ब्राह्मण नही था। लेकिन उसे जबरन ब्राह्मण साबित करने के लिये उन्होने एक अश्लील और विचित्र कहानी गढ ली। 2) ब्राह्मणों ने राम के जन्म के संबंध में भी ऐसी ही कहानी गढ ली ताकि {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को बहुसंख्यंक बहुजनों से श्रेष्ठ साबित किया जा सके।(http://in.answers.yahoo.com/What about false fabricated PURANIC TALES to propagate superiority of caste Brahmins above all(even GOD) {रावण इ. क बारे में भी ऐसी ही कहानियां गढी गई है।} शैववाद, शक्तिवाद, वैष्णववाद यह गैरब्राह्मण पंथ थे। इन पंथों के संमिश्रण से पौराणिक हिन्दूधर्म की निर्मिति गुप्त काल में की गई है। मूलनिवासी देवि-देवताओं का ब्राह्मण धर्म के देवताओं से संबंध जोडने के लिये पुराणों में मनगढंत कहानियां गढी गई। कुशानों में युध्द देवता कार्तिकेय का पंथ प्रसिध्द था। इसका पता कुशान प्रमुख हविष्क के सिक्कों से चलता है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने कहानियां गढ कर कार्तिकेय, गणेश को शिव का बेटा बताया। ईसवी 300 तक गणेश का कहीं भी पता नही था। गुप्त काल में उसे देवता बनाया गया। तांत्रिक पंथ में सृजन की देवता के रुप में मातृ-देवता की पूजा की जाती थी। आरंभ से ही शक्ति की पूजा काली, चामुंडा, और भीमा के रुप में की जाती थी। बाद में दुर्गा को भी शक्ति का ही रुप माना गया। उन्हे शिव की पत्नियां बताया गया। दोनों के संमिश्रित पंथ को शिव-शक्ति नाम दिया गया। शिव के उग्र रुप को रुद्र तथा शक्ति के उग्र रुप को चामुंडा कहा गया। उसके सौम्य रुप को उमा तथा महादेव कहा गया। उमा, हेमवति, दुर्गा, काली, इ. की शिव की पत्नियों के रुप में पूजा की जाने लगी। लक्ष्मी को पहले गज-लक्ष्मी थी। वह एक अविवाहित देवी थी। उसे विष्णु की बिवी और धन की देवी के रुप में प्रचारित किया गया।(http://www.indianetzone.com//Religious movements in Gupta Period.htm) बुध्द की पूजा पर कब्जा करने के लिये उन्हे विष्णु का नौवा अवतार करार दिया।

पुराणों में गैरब्राह्मण पंथों के देवि-देवताओं को शामिल कर देने से इन धर्म-पंथों पर जबरन कब्जा करना {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के लिये बेहद आसान हुआ।(Looking for a Hindu Identity Dwijendra Narayan Jha)

बौध्द जैन इ. के धर्मस्थलों को हडपने के लिये,
अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथ दोबारा लिखे !

बौध्द स्थलों को किसी न किसी पौराणिक देवि-देवता के स्थल साबित करने के लिये पुराणों को दोबारा लिखा गया। जैसे जैसे बौध्द स्थल हडपे गए वैसे वैसे पुराणों में कई कई बार परिवर्तन किये गये। इस विषय पर जो शोध होने चाहिये थे नही किये गए।(Tirupati Balaji was a Buddhist Shrine by K. Jamanadas, Published by Dalit E Forum) **बौध्द धर्मस्थलों पर जबरन कब्जा कर उन्हे हिन्दू धर्मस्थलों तीर्थो में बदला गया और इसके संबंध में पुराणों में कहानियां भी गढी गई।** (Joshi: 1977: 338)

इतिहास को जागरुक होकर सावधानी से पढने पर कई चौंकाने वाले सत्य नजर आएंगे। वाल्मीकी रामायण में राम बुध्द को 'चोर' कहता है। यह राम की दूसरे धर्मो के प्रति असहिष्णुता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राम या तो बुध्द का समकालीन था या फिर बाद के काल का था। वाल्मिकी रामायण के सुंदर कांड में रावण के महल की वाटीका का नाम अशोक वाटीका है। यह वाटीका सम्राट अशोक के नाम पर रखी गई है। इस वाटीका में दुर्लभ औषधी जडी बुटियाँ इ. थी। इसका विध्वंस हनुमान ने किया। इससे स्पष्ट है कि राम सम्राट अशोक के बाद के काल का है। अशोक वाटिका के विध वंस के अलावा हनुमान ने कई चैत्य नष्ट किये। रामायण में इनके जो भी नाम बताये गए है वे सभी बौध्द स्थल रहे है। रामायण के माध्यम से {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने बौध्द स्थलों के इतिहास को मिटाने की कोशिश की है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने बौध्द धम्म को विस्मृत करने के मकसद से रामायण की रचना की है।(The Secrets of the Socalled Sacred Journey of RAMA - Dr. M.S.Jayaprakash; http://www.modernrationalist.com/ THE SECRETS OF THE SOCALLED SACRED JOURNEY OF RAMA - II.htm)

केरला यह शब्द द्रविड-बौध्द शब्द चेरला का संस्कृत अपभ्रंष है। परशुराम के मिथक का मकसद ही केरल के गौरवशाली बौध्द इतिहास को छुपाना है।(http://rupeenews.com/ Why did Buddhism disappear from South Asia Brahmin atrocities that destroyed Buddhism in the Subcontinent _ Rupee News.htm)

बुध्द के खिलाफ नफरत फैलाने के लिये,
अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने पुराण इ. धर्मग्रंथ दोबारा लिखे !

{अल्पसंख्यंक} **ब्राह्मणों ने पुराण इ. ग्रंथों में बुध्द, बौध्द ग्रंथों तथा बौध्दों के प्रति नफरत फैलाई ताकि बौध्दों का हिंसक उन्मूलन किया जा सके। वाल्मिकी रामायण के अयोध्या कांड में बुध्द की तुलना एक चोर से की गई है। उन्हे नास्तीक कहकर कोसा गया है**(Sarga 109; shloka 34)**। यजन्वालक्यास्मृति के मुताबिक बौध्द भिख्खु का स्वप्न तक में दर्शन होना अशुभ लक्षण है।**(Yajnavalkya SmritiI/272-273) **अग्नि पुराण** (18/13-18), **तथा विष्णु पुराण** (18/13-18) **के मुताबिक बुध्द सबसे बडा धोखा** (ma-yamohasvarup) **है जिसने लोगों को भ्रमित कर वेदिक धर्म से दूर किया है। अपने प्रायश्चित मायुखा** (Prayaschit Mayukha) **में मनु के श्लोक को उदघृत करते हुए नीलकांत कहता है कि अगर कोई किसी बौध्द को, पांचुपत लोकायका** (Panchupat, Iokayataka) **के अनुयायी को, नास्तीक को, या महापातकी को छू भी लेता है तो स्नान करने के बाद ही वह पाप से शुध्द हो पाएगा। यही बात अपाराका** (Aparaka) **ने अपनी स्मृति में लिखी है। वृध्दा**

चरित (Vradha charit) घोषित करता है कि बौध्द स्थल में प्रवेश करना पाप है जिसको दूर करने के लिये स्नान करना जरुरी है। ब्रह्मनारदीय पुराण मुसिबत की हालत में भी किसी बौध्द के घर में प्रवेश करने को गंभीर पाप करार देता है। अग्नि पुराण में घोषित किया गया है कि शुध्दोदन के बेटे (बुध्द) ने दैत्यों को मूर्ख बनाकर बौध्द बनाया। पुराण के मुताबिक बुध्द धोखेबाज था जिसने वेदों के सही रास्ते से राक्षसों {यानि मूलनिवासियों} को दूर किया। वायु पुराण बुध्द के बारे में इर्षा व्यक्त करता है। वायू पुराण बुध्द को स्त्री-लंपट (seducer) और राक्षसों {यानि मूलनिवासियों} को बहकाने के लिये इस दुनिया में आया हुआ महा मोह करार देता है। वायू पुराण लोगों को आगाह करता है कि बौध्द भिख्खु से बात तक करने से व्यक्ति नर्क में चला जाता है।

मनुस्मृति सहित {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के पुराण, स्मृति इ. धर्मग्रंथों ने बुध्द और बौध्द धम्म के प्रति बेपनाह नफरत उजागर की है। कुशीनगर यानि हरम्भा (Harramba) एक महत्वपूर्ण बौध्द स्थल था। यहां बुध्द का महापरिनिर्वाण हुआ था। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण हरम्भा के नाम से ही जलभून जाते थे। लोगों को हरम्भा जाने से रोकने के लिये यह कहानी गढी गई कि जिसकी भी हरम्भा में मौत होती है वह नर्क में जाता है। उसका पूर्नजन्म गधे के रुप में होता है। जिसकी मौत काशी में होती है वह सीधे स्वर्ग जाता है। इसलिये जब संत कबीर की सन् 1518 में कुशीनगर के पास माघर में मौत हुई तो कबीर के हिन्दू भक्तों ने उनका पुण्यस्थल वहां बनाने की बजाय उसे काशी में स्थापित किया। {जबकि कबीर ने जानबूझकर माघर में मौत को चुना था} कबीर के मुसलमान अनुयायियों ने कबीर की कब्र माघर में ही बनाई।(http://rupeenews.com// How Adi Shankara destroyed Buddhism and founded 'Hinduism' in the 8th century _ Rupee News.htm)

श्रमण धर्मो के दमन के लिये नये पूजा-कर्मकांडों का निर्माण !

मान. बी. आर. सांपला के मुताबिक ब्राह्मण तुलसी दास ने अशोक धम्म दशमी पर्व के साथ राम का नाम जोडकर बौध्दों के त्यौहार पर डाका डाला है। सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेन्द्र को धम्मदान करते हुए बौध्द धम्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। इस महान धम्मदान से यह पर्व अशोक धम्म दशमी यानी धर्म-दशहरा नाम से प्रसिध्द हुवा। सारे भारत में असोज महिने के पहले दिन से दस दिन तक धम्म-दशमी समारोह मनाये जाते थे। यह समारोह 15 वी शताब्दि तक जारी रहे। परंन्तु ब्राह्मण कवि तुलसी दास ने इस समारोह को रामलीला में परिवर्तित कर दिया।(बी.आर. सांपला, p.1138-139) {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण दशहरे को रावण की हत्या के तथा दिवाली में नरकासुर तथा बाली की हत्या को जश्न के रुप में मनाते है। होली मनाने के पीछे का अप्रत्यक्ष मतलब हिरण्यकश्यप की मौत का जश्न मनाना है। होलिका की कथा {अल्पसंख्यक ब्राह्मण ों व्दारा} बहुसंख्यक मूलनिवासी भारतीयों को धोखा देने की कोशिश है। होली जलाने के लिये आग किसी दलित के घर से लाई जाती रही है।(Ghurye: Caste and Race in India, 1969, Popular Prakashan Bombay, p. 26) होली का अंत किसी अछूत को छुकर नहाने से किया जाता था।("Rigvedi": marathi book - "aryaachya sanaancha prachin va arvachin itihas" p. 366, 1979, pradnya patha shala mandal, Wai-dist. Satara, M.S.)

{बहुजनव्देषी} ब्राह्मण तिलक ने गणेश चतुर्थी का उपयोग सन् 1894 में मुहर्रम में गैरमुस्लिमों की उपस्थिति को रोकने तथा मुसलमान और गैरमुसलमानों के बीच सांप्रदायिक दंगे फैलाने के लिये किया। गणेश चतुर्थी के मौके पर गणेश की प्रतिमा स्थापित किये

जाने के बाद ही हिन्दूओं ने मुहर्रम में भाग लेना बंद किया। पूना में सन् 1894 में तथा धुलिया में 1895 में सांप्रदायिक दंगे भडके थे। {बहुजनव्देषी} ब्राह्मण तिलक के अनुयायी इस अर्थ का गीत गाते थे कि :- ओह तुमने क्यों हिन्दू धर्म को त्याग दिया है ? तुम गणपती, शिव और मारुती को क्यों भूल गये ? ताबुत की पूजा करके तुमको क्या मिला है ? अल्लाह ने तुम्हे क्या दिया है जिससे तुम मूसलमान हो गए। विदेशियों के धर्म से मित्रता मत जोडो। अपने धर्म को छोडकर पतित मत बनो। ताबुतों को सम्मान मत दो। गाय हमारी माता है उसे मत भूलो।(http://netunm.blogspot.in/2009/05/lokmanya-bal-gangadhar-tilak.html)

श्रमण धर्मो पर कब्जा करने और
दान वसूलने अल्पसंख्यक ब्राह्मणों ने मूर्तिपूजा शुरु की !

वेदिक ब्राह्मण-धर्म में मूर्तिपूजा नही थी लेकिन गुप्त काल से मंदिरों में मूर्तिपूजा एक सामान्य परंपरा हो गई। मूलनिवासी जाति-समूह कृषि से संबंधित अपने त्योहार शुरु से मनाते थे। इन त्योहारों को धार्मिक रंग देकर उन्हे मनाया जाने लगा। इन त्योहारों के साथ मूर्तिपूजा और कर्मकांड भी जोड देने से न सिर्फ विभिन्न जाति-समूहों को जबरन {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के वर्चस्व में लाया गया बल्कि इससे {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों की खुब कमाई होने लगी। जमीन दान, अन्न दान, धन तथा पशुदान इ. पाकर तथा कर माफ किये जाने से {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण धनवान होते चले गए। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने जो सुविधाएं चाही है उसकी लंबी सूची पांचवी शताब्दी में लिखी गई नारदस्मृति में दी गई है। वेदिक ब्राह्मणों के यज्ञों को लोकप्रियता नही मिलने से {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण ों ने यज्ञ के कर्मकांडों को मूर्तिपूजा में मिला दिये।(http://www.indianetzone.com// Religious movements in Gupta Period.htm) कई मंदिरों में मूर्तियों की बजाय तस्वीरों की पूजा की जाती थी और कर्मकांडों को महत्व दिया जाता था।(http://www.kish.in// The Classical Age of Indian Culture.htm) {ब्राह्मण} शंकराचार्य ने बद्रीनाथ, केदारनाथ इ. हिमालय में स्थित धार्मिक जगहों पर जत्रा आयोजित करनी शुरु की ताकि बौध्द ध म्म को शह दी जा सके। इन दुर्गम धर्मस्थलों के लिये कोई ब्राह्मण उपलब्ध नही था इसलिये उसने केरल से नंबुद्री ब्राह्मण मंगाये जो आज इन तीर्थस्थलों के प्रमुख है। जत्रा से तीर्थस्थलों को आबाद होने में देर नही लगी। महाराष्ट्र से जोशी तथा पंतों का, बंगाल से गैरोला तथा गुजरात से नेगी इ. ब्राह्मणों का आगमन हुआ। श्रध्दालुओं के दान से {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण पूजारी वर्ग, व्यापारी वर्ग धनी बन गया।(http://karthiknavayan. wordpress.com/How the Buddhists and Jains were Persecuted in Ancient India. _ ???????? ??????.htm)

तमाम मंदिर और तीर्थस्थल {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के लिये लिये भारी कमाई का जरीया होने से {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने इन तीर्थस्थलों और मंदिरों को पुराणों में इनके चमत्कारी होने का प्रचार किया। इससे मूर्तियों पर चढावा चढाने, मन्नतें मांगने, {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को दान देने की परंपरा सामान्य परंपरा बन गई। अपनी इच्छा पूर्ति के लिये, खतरों से खुद की हिफाजत के लिये, पुत्र प्राप्ति इ. के लिये लोग मंदिरों में सोना, चांदी, कीमती पत्थर, धन इ. चढाने लगे। इससे मंदिरों में धन के अम्बार इकट्टा होने लगे। उत्तर भारत में मुल्तान, मथूरा, कनौज, थानेश्वर, सोमनाथ इ. जगहों में हजारों की तादाद में मंदिर बनाये गए। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने अपने लिये जमीन, धन, पशु इ. के दान ही नही वसूले बल्कि अंधविश्वासु धनी श्रध्दालुओं तथा राजाओं

को नये मंदिर बनाने पर मजबूर करते रहे। हजारों {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण इन मंदिरों में जोंको की तरह अंधविश्वासों में जकडे श्रध्दालुओं को लूटने लगे।

{अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने बहुसंख्यक मूलनिवासी जाति-समूहों की पूजा परंपराओं को ब्राह्मण धर्म में शामिल किया। शैवपंथी शिक्षक अप्पेर, सुंदर, तीरुजनसंबंधर अपने थेवरम श्लोकों में बौध्दों का उल्लेख बोधीयार यानि बोधी वृक्ष की पूजा करने वालों के तौर पर करते है। वृक्षों की पूजा करने की परंपरा दक्षिण भारत के हिन्दूओं में आज भी है। वे इस बात को नही जानते कि इस पूजा का संबंध उनके बौध्द पुरखों से है।

गुप्त साम्राज्य में अल्पसंख्यक ब्राह्मणों को ताकतवर बनाया गया !

गुप्त साम्राज्य के काल में {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को बडे बडे सरकारी पद देने, जमीनें दान में देने, करों से मुक्त रखने इ. काम सरकारी स्तरों पर किये गए। गुप्त साम्राज्य में ब्राह्मणों को जमीन दान देने के काम को संपन्न करना दुताका (Dutakas) का काम था। गुप्त साम्राज्य में {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों की वसाहतों को ब्रहमादिया (brahmadiyas), अग्रहार (agraharas) इ. नामों से जाना जाता था। उन्हे दी गई जमीन कर मुक्त थी। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को ही वसाहतों के किसानों से टॅक्स वसूलने के लिये अधिकृत किया गया था। इसलिये टॅक्स राजा की बजाय {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को मिलता था। सरकारी प्रतिनिधि इन गांवों में प्रवेश नही कर सकते थे।

मध्य प्रदेश में किसानों की जगह ब्राह्मण जमींदार कायम हुए। एक ही व्यक्ति के हाथों में कई कार्यालय दिये गए तथा इनके पद अनुवांशिक बन गए। राजा को यह हक था कि वे किसानों से जबरन काम कराये। इसलिये किसानों का आर्थिक और सामाजिक स्तर बहुत ही नीचे आ गया। किसानों की उपज पर लगाया गया टॅक्स 25 फीसदी से 17 फीसदी तक था। भारी तादाद में {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को जमीनों का दान दिया गया था इसलिये सरकारी खर्च पूरा करने के लिये किसानों पर तथा अन्य उत्पादक समूहों पर नये नये करों का बोझ डाला गया। (http://theguptaage.blogspot.in/The Gupta Age November 2009.htm) अथर्व वेद (5:17:8-9) के मुताबिक {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण किसी भी वर्ण के व्यक्ति की बिवी को उसका हाथ पकड कर ले जाने का अधिकार रखता है।(Vedas and Upanishads http://www.san.beck.org/index.html)

ब्राह्मणों की रक्षक जातियों को,
अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों ने क्षत्रिय वर्ण प्रदान किया !

दक्षिण भारत में लोगों को शुध्द बनाने तथा क्षत्रिय का दर्जा देने की प्रथा को हिरण्यगर्भसमहादान (Hiranya-garbhsmahadana) तथा क्षत्रिय करार दिये गए राजा को 'हिरण्यगर्भप्रसुता' (Hiranya-garbha-prasuta) कहा जाता था। इस विधि में सोने का अंडा ब्राह्मण पूजारियों को दिया जाता था।(D. C. Sircar, 'The Classical Age', HCIP vol. III, p. 225) इस तरह से क्षत्रिय बनाये गए राजाओं में 1) चेझार्ला (Chezarla) से संबंधित आनंद गोत्र, 2) श्रीसैला (Srisaila) से संबंधित विष्णुकुंडीन 3) चालुक्य, 4) पांडया, 5) राष्ट्रकुट (Rashtrakutas) इ. का समावेश है। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण खास महत्वपूर्ण लोगों को ही राजपूतों के तौर पर शामिल करते थे। बाकी समुहों को मामुली जातियों का दर्जा देते थे।(http://histhink.wordpress.com/Adivasis Were Buddhist Naagas K. Jamanadas _ HISTHINK!.htm) जिन विदेशी समुदायों का व्यवसाय युध्द करना था

{अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने अपने हक में इस्तेमाल कर उन्हे राजपूत क्षत्रिय करार दिया। जो जाति-समुदाय कम लडाकु थे उन्हे {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने कम सामाजिक दर्जा दिया। इन जातियों में गुर्जर, जाट इ. जातियों का समावेश होता है। राजपूत समुदाय जैसे कि चौहान, परिहार, पवार (परमार), सोलंकी (चालुक्य) मुख्यतः विदेशी सिथीयन है। कई मूलनिवासी समुदायों को ब्राह्मणों ने क्षत्रियों का ओहदा दिया। दक्षिण के राष्ट्रकुट, राजपुताना के राठोर, बुंदेलखंड के चंदेल वे मूलनिवासी समुदाय है जिन्हे ब्राह्मणों ने राजपूत क्षत्रिय का दर्जा दिया।

मनुस्मृति के एक अध्याय के मुताबिक कई भारतीय जनजातियां जैसे कि पुन्ड्रक (Pundrakas), द्रविड, यवन, शक तथा पहलव मूलतः क्षत्रिय थे लेकिन ब्राह्मणों को खुद से दूर करने की वजह से तथा धार्मिक कर्मकांड करना बंद करने की वजह से शुद्र बन गये है। शक, यवन, कम्बोज शुद्र बन गए क्योंकि वे {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के कहने के मुताबिक नही चल सके। इससे स्पष्ट है कि जो भी {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के कर्मकांडों से बाहर है वह समुदाय {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों व्दारा शुद्र करार दिया गया है।(http://www.ebooksread.com/Read the ebook A peep into the early history of India from the foundation of the Maurya Dynasty to the downfall of the imperial Gupta Dynasty %3b 322 B.C.-circa 500 A.D. by Ramkrishna Gopal Bhandarkar.htm)

बौध्दों को शह देने गाय-भक्षी वेदिक ब्राह्मण शाकाहारी बनें !

[Information on this chapter is synthesized from the following Sources : http://rupeenews.com//Why Buddhism thrived in Asia but died in India _ Rupee News.htm; http://sunnitigers.blogspot.in/HINDUISM COW EATING.htm; http://www.dawahdesk.com/EATING MEAT ACCORDING TO HINDU SCRIPTURES2.htm; http://creative.sulekha.com/I AM A HINDU AND A BEEF-EATER TOO!!!! _ Sulekha Creative.htm; http://en.wikipedia.org/History of Brahmin diet - Wikipedia, the free encyclopedia.htm; http://www.milligazette.com/Rigveda, Manusmiriti sanction beef-eating, The Milli Gazette, Vol.3 No.16, MG62 (16-31 Aug 02).htm; http://truthabouthinduism.wordpress.com/Meat Consumption in Hinduism « TruthOfHinduism.com.htm; http://www.topix.com/WEIRDEST HINDUISM LORD INDRA LOVE FOR DOG-EATING - Topix.htm; http://www.dawahdesk.com/MORE EVIDENCES FROM HINDU SCRIPTURES AND SCHOLARS FOR PERMISSIBILITY OF EATING BEEF.htm; http://truthabouthinduism.wordpress.com/Meat Consumption in Hinduism « TruthOfHinduism.com.htm]

{अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने जैन धर्म के अहिंसा सिधान्त को हिन्दू धर्म में शामिल किया। बौध्द भिक्षुओं से खुद को श्रेष्ठ दिखाने के लिए {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मण शाकाहारी बनकर गाय की गोमाता कहकर पूजा करने लगे। ब्राह्मणों ने गाय को माता का दर्जा दे दिया। सन् 400 ईसवी में गाय की हत्या को मृत्यु दंड का अपराध बनाया गया।

वेदिक ब्राह्मणों में गोमांस भक्षण का प्रचलन !

ब्राह्मणवादी विवेकानंद का आत्मचरित्र लिखने वाले स्वामी निखिलानंद के मुताबिक

विवेकानंद ने रूढीवादी ब्राह्मणों से बडे उत्साह से कहा कि वेदिक काल में ब्राह्मणों व्दारा गोमांस भक्षण करने का सामान्य प्रचलन था ... सिर्फ पांच ब्राह्मण मिलकर सारी गाय खा जाते थे। (For reference see 'Vivekanand: A Biography', page 96.) पृष्ठ क्रमांक 174 पर स्वामी लिखते है कि भारत में एक समय ऐसा था कि ब्राह्मणों को तबतक ब्राह्मण नही माना जाता था जबतक वह गोमांस का भक्षण न कर ले।

वेदिक साहित्य के स्कॉलर पांडूरंग वामन काणे के मुताबिक 'बजसांक्ययी (Bajsancyi) संहिता गोमांस को उसकी शुध्दता की वजह से धार्मिक अनुमति प्रदान करती है। (Dharmashastra Vichar Marathi, page 180) भारतीय विद्या भवन, मुंबई व्दारा प्रकाशित किताब ''The History and Culture of the Indian People'' का संपादन इतिहासकार आर. सी. मजुमदार (Vol.2, page 578) ने किया है। उनके मुताबिक 'महाभारत के राजा रतीदेव यज्ञ में दो हजार गायों के अलावा दो हजार अन्य जानवरों की बलि रोज देते थे ताकि उनके मांस को ब्राह्मणों में दान किया जा सके। अपनी किताब 'Cow Slaughter – Horns of a Dilemma' के पेज क्रमांक 18 पर मुकुंदीलाल लिखते है कि 'प्राचीन भारत में कुछ त्योहारों पर मांस के लिये गायों की हत्या करना पवित्र कार्य माना जाता था। बलिवेदी के पास लाल बैल के पास बैठना वर-वधु की परंपरा थी।

मनुस्मृति (5:32) के मुताबिक जानवरों का माँस किसी भी समय खाया जा सकता है लेकिन उसका कुछ हिस्सा देवता के नाम पर, या जजमान के पुरखों की आत्मा के नाम पर, या मेहमान के नाम पर चढाना जरुरी है। मनुस्मूति के अध्याय 5 श्लोक 35 में कहा गया है कि 'अगर कोई यज्ञ के कर्मकांडों में विधिवत शामिल है लेकिन वह मांस का सेवन नही करता है तो मरने के बाद वह अगले 21 जन्मों तक बलि का जानवर बनकर बलि चढाया जाता रहेगा।' वशिष्ठ धर्मसुत्र (11/34) में लिखा गया है कि 'अगर कोई ब्राह्मण श्राध्द के समारोह में अथवा पूजा में परोसा गया मांस खाने से मना करता है तो वह नर्क में जाता है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण किताब 1 अध्याय 140 श्लोक 49 व 50 में कहा गया है कि जो श्राध्द समारोह में परोसा गया मांस खाने से इनकार करते है वे सिधे नर्क में जाते है। मनुस्मृति अध्याय 5 श्लोक 39 व 40 में कहा गया है कि 'ईश्वर ने खुद ही बलि के लिये जानवर तैयार किये है .. इसलिये बलि विधि में जानवरों की हत्या करना हत्या नही है।' मनुस्मृति भी यज्ञ में जानवरों की बलि चढाने को सर्वोच्च मानती है। इस बात का उल्लेख अध्याय 5 तथा श्लोक 42 में किया गया है। मनुस्मृति के मुताबिक कोई व्दीज जो वेदों के सही अर्थ को समझते है और जानवरों की बलि चढाते है वह खुद को तथा जानवरों को उच्च स्तर के अस्तित्व तक पहुंचाते है।

ब्रहदारण्यक उपनिषद (VI.4.18) में पति-पत्नि को सलाह दी गई है कि वेदों में दक्ष विव्दान बेटा चाहते है तो रोज शाम को अपने भोजन में गोमांस या बछडे के मांस के पुलाव का सेवन करे और गाय और बैल की तरह आपस में लैंगिक संबंध कायम करे।(Robert Trumbull, As I see India, London, 1957, p.241) चरक संहिता के उपचार अध्याय (pages 86-87) में विभिन्न बीमारियों में गोमांस खाने को कहा गया है। अनियमित बुखार तथा शारीरिक कमजोरियों के उपचार के लिये गोमांस तथा जोडों के दर्द के उपचार के लिये गाय की चर्बी खाने को कहा गया है।(http://www.hindugrouponnet.com/The Hindu Beef eating strangulating history.htm) चरक सुश्रुता में चरक गर्भवति महिला को भ्रुण ताकतवर बनाने के लिये गोमांस खाने की सलाह देता है। कोई चाहता है कि उसका होने वाला बच्चा महान वक्ता, वेदों का बडा विव्दान हो, और उसकी आयू 100 साल की हो तो उस पति-पत्नि ने सांड या बैल के मांस को घी में मिलाकर चावल

के साथ खाना चाहिये। वेदिक काल में गाय तथा सुवर का मांस आर्यो के भोजन का सामान्य हिस्सा था वर्ना चरक गोमांस खाने की सलाह कभी नही देता।

शंकराचार्य ने ब्रहदरण्यकोपनिषद पर अपने भाष्य (6/4/18) में लिखा है कि ओदन (चावल) मांस के साथ मिलाने पर मांसोदन (Mansodan) कहलाता है। जब शंकराचार्य से पूछा गया कि कौनसा मांस तो उसने जवाब दिया कि 'उकषा' (Uksha) यानि बैल का मांस जो वीर्य पैदा करने की क्षमता रखता है।

सतपथ ब्राह्मणा (11:7:1:3; cf. 12:8:3:12) के मुताबिक मांस वास्तव में उत्कृष्ट भोजन है। तैतरिया ब्राह्मणा में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि 'वास्तव में गाय भोजन है' (atho annam via gauh)। यज्नवालक्या के मुताबिक गाय का नर्म मुलायम मांस खाना चाहिये। ऐसे वाकये बताये गए है कि जहां 500 बैल, 500 जवान पुरुष बछडे, 500 स्त्रीलिंगी बछडे, 500 बकरियां बली चढाने के लिये खंबों से बांधी गयी थी। दिघ्घ निकाय के मुताबिक जब बुध्द मगध में प्रवास कर रहे थे तो उन्होने देखा कि कुटडंटा (Kutadanta) नामक ब्राह्मण 700 बैलों, 700 बकरों तथा 700 भेडों को बलि चढाने ले जा रहा था।

मृतक व्यक्ति के समारोह में (AV, XII.2, 48) मृतक के नाम पर ब्राह्मणों को गाय अथवा बैल का मांस खिलाना परंपरा थी। इसका वर्णन है कि पुरखों के नाम पर किस जानवर के मांस की बलि देने पर पुरखों की आत्मा को कितनी मात्रा में कितनी अवध ी तक संतुष्ठी प्राप्त होगी। गाय के मांस से उन्हे एक साल तक संतुष्ठी प्राप्त होगी। महाभारत के शांतिपर्व (29/179) के मुताबिक श्राध्द में गाय की बलि चढाने से पुरखे कम से कम एक साल के लिये संतुष्ठ रहते है। महाभारत के अनुशासन पर्व अध्याय 88 (मूतक के समारोह) के मुताबिक आपके पुरखे हमेशा के लिये संतुष्ठ रहे इसके लिये उनके नाम पर लाल बकरे का मांस खिलाना चाहिये। धर्मशास्त्रों के मुताबिक बलि चढाई जाने वाली गाय साबुत होनी चाहिये। कोई कान कटा या आंख फुटी हुई नही होनी चाहिये। सिंग भी पूरे साबुत होने चाहिये। ऐसी गाय की बलि देने पर गोमेध यज्ञ करने वाला जजमान स्वर्ग को जाता है और यज्ञ की गाय गोलोक को जाती है। गवमायाना नामक बलि को ब्राह्मण अंजाम देते थे। मांस को समारोहपूर्वक खाया जाता था। कई श्रोतासुत्रों (rautasutras) में गृहमेध (grhamedha) की चर्चा की गई है जिसमें मनमानी तादाद में गायों को काटकर खाया जाता था। पुरातत्वीय सबुत जानवरों को काटे जाने का समर्थन करते है।

रामायण के उत्तर-रामचरित जो कि आखरी अध्याय है में सात (सप्तर्षि) में से दो प्रमुख ऋषियों व्दारा गाय का मांस खाने का उल्लेख है। वाल्मिकी अपने मेहमानों को चविष्ट भोजन खिलाते थे जिनमें गोमांस मुख्य पदार्थ होता था। उनके मेहमानों में वशिष्ठ, विश्वामित्र, जमदग्नी तथा जनक थे। 'महावीर चरित में हम पढते है कि वसीष्ठ क्रोधित जमदग्नी को यह कहकर शांत कर रहे है कि बछडा काटा जा रहा है और उत्कृष्ट घी के साथ खाना पकाया जा रहा है। आईये और समारोह में अपनी उपस्थिति से हम सबको अनुग्रहित करें। ऋग्वेद (10.85.13) के मुताबिक माध के दिनों में सांडों को काटा जाता है, अर्जुरी (Arjuris) में वे लडकियों की शादी करते है। सतपथ ब्राह्मणा (3/1/2/21) में यज्नवालक्या कहते है कि मै गोमांस का भक्षण करता हुं क्योंकि वह बहुत ही नर्म-मुलायम और स्वादिष्ट है। अपस्तंब गृहसुत्रम (1/3/10) के मुताबिक मेहमान आने पर, पूरखों के श्राध्द पर, तथा विवाह के अवसर पर गाय काटनी चाहिये। ऋग्वेद (10/85/13) में घोषित किया गया है कि लडकी के विवाह पर बैल और गायों को काटना चाहिये।

ऋग्वेद (6/17/1) के मुताबिक गाय, बछडे, घोडे तथा भैस के मांस को इंद्र खाता था। ऋग्वेद की दसवी किताब (Hymn 28 verse 3) के मुताबिक 'ओ इंद्र वे तुम्हारे लिये सांड का मांस सजाते है। ऋग्वेद (4/18/13) के मुताबिक इंद्र यह बताता है कि जब उसकी हालत बहुत खराब थी तब उसने कुत्ते की अतडियां पकाकर खाई। ऋग्वेद (RV, V.29.7ab; VI.17.11b; VIII.12.8ab X.27.2c; X. 28. 3c;X.86.14ab) के मुताबिक इंद्र को सांड का मांस सबसे ज्यादा प्रिय था। ऋग्वेद (5.29.8) के मुताबिक जब इंद्र ने तीन सौ भैसों का मांस खाया, और सोमरस के तिन तालाब पी लिये और ड्रेगन का वध किया। सभी देवताओं ने इंद्र की प्रसंशा में जयघोष किया।

(इन्द्र की उक्ति) - मेरे लिये इन्द्राणी के व्दारा प्रेषित याज्ञिक लोग पंद्रह-बीस सांड वा बैल पकाते है। उन्हे खाकर मै मोटा होता हुं। मेरी दोनों कुक्षिओं को याज्ञिक लोग सोम से भरते है। इन्द्र सर्वश्रेष्ठ है। (हिन्दी ऋगवेद पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी, p. 1499) ऋग्वेद (10.86.13) के मुताबिक इंद्र तुम्हारे सारे बैल खा जाएगा ... ऋग्वेद (8.43.11) के मुताबिक अग्नी को गाय और बैल के मांस पर पला हुआ बताया गया है जो यह संकेत है कि बलि दिये जानवरों को आग पर भूना जाता था। ऋग्वेद (10.16.7) में मृतक की लाश को जलाने से पहले गाय के मांस से ढंका जाता था। तैतरेय ब्राह्मणा (II.1.11.1) तथा पंचविंश ब्राह्मणा (XXXI.14.5) के मुताबिक अगस्त्य (Agastya) ऋषि ने सौ बैलों की बलि चढाई। सतपथ ब्राह्मणा (III.1.2.21) में यज्नवालक्या जोर देकर कहता है कि गाय भले ही सबके लिये उपयोगी है, हमने गाय के मांस का भक्षण करना चाहिये अगर वह स्वादिष्ठ है। सतपथ ब्राह्मणा (IV.5-2.1) में बिना बछडे वाली गाय को मांस भक्षण के लिये काटा जा सकता है। सतपथ ब्राह्मणा (II.4.2) में सुझाव दिया गया है कि मोटे सांड या बकरे को महत्वपूर्ण मेहमान के स्वागत में काटा जाना चाहिये। इसलिये मेहमान को गोघना (goghna) यानि जिसके लिये गाय काटी जाति है ऐसा व्यक्ति कहा गया है। ऋग्वेद (10.27.2) के मुताबिक जब मै अपने मित्रों को ईश्वरहीन लडाकु लोगों के खिलाफ युध्द में उतारता हुं, उन्हे बलवर्धक बैल का मांस खिलाता हुं और 15 गुना तेज सोमरस पिलाता हुं। महाभारत के शांति पर्व अध्याय 29 के मुताबिक जब रतिदेव के महल में मेहमान ठहरते थे बीस हजार एक सौ गायों को काटा जाता था। दूसरी जगह (III.208.8-9) कहा गया कि राजा रतिदेव के रसोईघर में दो हजार गायों को रोज काटा जाता था तथा उनके मांस को अनाज के साथ ब्राह्मणों में बांटा जाता था।

खोर्डा अवेस्टा (Khorda Avesta 8.16.58) के मुताबिक अहुर मझदा जवाब देते है कि आर्य राष्ट्र ने उनके लिये जानवर का सिर पकाना चाहिये फिर वह जानवर चाहे जिस रंग का हो लेकिन उसका रंग एक समान होना चाहिये। अथर्व वेद (6.71.1) के मुताबिक मै घोडे, बकरों, बैल इ. का मांस खाता हुं ... शुक्ल यर्जुवेद (2.5.5) के मुताबिक पुनम की रात को देवताओं के लिये सोमरस निकाला जाता है और मित्रा तथा वरुण देवता के लिये गाय काटी जाती है। ऋग्वेद (10.91.14-15) अग्नी में घोडे, बैल, सांड, बिना बछडे की गायें, तथा भेडें चढाई जाती है। अथर्व वेद (9.4.18) के मुताबिक सभी देवता उस ब्राह्मण का स्तर बढाते है जो उन्हे सांड की बलि चढाता है। ऋग्वेद (X.14-18) के मुताबिक मूर्दे पर गाय की मोटी चर्बी ओढी जाती थी। अथर्ववेद के मुताबिक (AV, XII.2, 48) मूर्दे के साथ एक बैल को भी जलाया जाता था ताकि वह उसपर चढकर अपना अगला सफर तय कर सके।

गुजरात के चंदूपंडित (late 13th century), तथा आंध्र-प्रदेश तेलंगाना के नरहरी (14th century) व मल्लीनाथ (14th-15th century) जो विद्यानगर के राजा देवराय व्दीतीय से

संबंधित थे ने स्पष्ट रुप से लिखा है कि गायों को धार्मिक विधि में काटकर उसका मांस खाया जाता था। अट्ठरहवी शताब्दी में तंजोर राज्य के मंत्री घनस्याम (Ghanasyama) लिखते है कि मेहमानों के लिये गाय का काटना मेहमान का सम्मान माना जाता था और यह पूरातन नियम था। मेधातिथी (Medhatithi, 9th century) जो शायद एक कश्मीरी ब्राह्मण था के मुताबिक शासक के या किसी सम्माननीय व्यक्ति के सम्मान में एक सांड या बैल को काटा जाना चाहिये। धार्मिक समारोह में गाय का मांस परोसना चाहिये।(http://www.dawahdesk.com/MORE EVIDENCES FROM HINDU SCRIPTURES AND SCHOLARS FOR PERMISSIBILITY OF EATING BEEF.htm) दक्षिण भारत के ब्राह्मण सुत्र काल में उत्तरी भारत के ब्राह्मणों की तरह ही मांस भक्षण करते थे। प्राचीन तामिलनाडू के कपिलार नामक ब्राह्मण कवि (Purananuru, poems 113,119) के मुताबिक मेरे हाथ नर्म और मुलायम है क्योंकि वे चावल और मसाले के साथ (tamarind) पकाये हुए मांस को खाने के अलावा और कोई काम नही जानते।

पितामह ज्योतिराव फुले मुताबिक ब्राह्मण गाय, बैल इ.जानवरों के मुंह में कपडा ठूंस देते थे ताकि वे चिल्ला न सके, फिर उनकी गर्दन पर घुंसे मार कर उनकी जान ली जाती थी। {शायद आर्य-ब्राह्मण इसलिये ऐसा करते थे ताकि जानवरों का रक्त यानि सत्व व्यर्थ ही न बह जाये।(ज्योतिराव फुले, महात्मा फुले समग्र वांग्मय, पांचवी आवृत्ति 1991, महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल, मुंबई -32; P. 488) ब्राह्मण सर्वजीव-यज्ञ में इन्सानों से लेकर सभी जानवरों की बलि चढाकर उनका मांस खाते थे। इसलिये घोषित हिन्दुराष्ट्र नेपाल के आर्य ब्राह्मणवादी आज भी गाय को बडी शान से बलि चढाते है।

काठमांडू की काली माता के मंदिर में मनोकामना पूरी करने के लिये लोग गाय को काली माता के सामने बलि चढाते है। मुंबई से निकलने वाले ''बिज'' नामक गुजराती मासिक के अनुसार काठमांडू से दक्षिण में दक्षिण काली माता के मंदिर में पहले तो गाय की पूजा की जाती है, उसके बाद गाय के मूँह पर पानी के छींटे मारे जाते है। अगर गाय ने मुँह हिला दिया तो प्रसाद के लिये मंजूरी का हुक्म समझा जाता है और गाय की बलि चढाई जाती है। गाय ने अगर मुँह नही हिलाया तो तबतक पानी के छींटे मारे जाते है जबतक गाय अपनी मुंडी न हिला दे। गाय के मुंडी हिलाते ही मूर्ति के सामने गाय को ले जाकर तेज धार वाले छूरे से गाय की गर्दन पर पूजारी जोरदार वार इस तरह से करता है कि खून का फव्वारा काली माता की मूर्ति के चरणों में गिरे। यह करने के बाद तडपती हुई गाय का खून अन्य मूर्तियों पर भी चढाया जाता है। गर्दन को पूजारी खुद ले जाता है। यदि बलि चढाने वाला गाय की गर्दन लेना चाहे तो उसे उसके पैसे अदा करने पडते है। गाय का पूरा शरीर मंदिर के पिछे बहने वाली नदी में साफ किया जाता है। (देखिये मान॰ अब्दूल करीम पारेख)

मांस-भक्षण संबंधी ब्राह्मण-धर्म के नियम !

अथर्व वेद (9.4.37-39) के मुताबिक गाय के सबसे रुचकर पदार्थ मांस, दूध इ. को मेहमान के पहले नही खाना चाहिये। मेहमान जो अक्सर विव्दान ब्राह्मण होता है उसके खाना खाने के बाद ही मेजबान ने खाना खाना चाहिये। ऋग्वेद के अैतरेय ब्राह्मणा में बलि चढाये गए जानवर के शरीर के कौनसे हिस्से किसे कितने मिलेंगे इससे संबंधित नियम विस्तार से समझाये गये है। जीभ के साथ दो जबडे की हड्डियां प्रस्तोतर

(Prastotar) को दी जाये, गरुड के आकार वाला सीने का हिस्सा उदगातार (Udgatar) को दिया जाये, गर्दन का हिस्सा प्रतिहर्तार (Pratihartar) को दिया जाये। बलि आयोजन करने वाले जजमान क्षत्रिय को बलि दिये गए जानवर के मांस इ. भोजन को खाने की इजाजत नही है क्योंकि उसके नाम पर ब्राह्मण उस जानवर का मांस खाते है। (http://en.wikipedia.org/History of Brahmin diet - Wikipedia, the free encyclopedia.htm)

वेदिक आर्यो में इन्सानों की बलि चढाने की प्रथा !

यजुर्वेद (VS 30–31) में न सिर्फ अश्वमेध यानि आर्यो व्दारा घोडे की बलि का वर्णन है बल्कि पुरुषमेध यानि आर्यो व्दारा इन्सानों की बलि चढाये जाने का भी उल्लेख है। हर तरह के इन्सानों को खंबे से बांधकर प्रजापति को उसकी बलि चढाई जाती थी।

आर्यो में नरमेध यज्ञ की परंपरा थी। नरमेध यज्ञ का विस्तृत वर्णन यर्जुवेद संहिता, यर्जु वेद बाह्मणा, सांख्यना, और वैतन सुत्रों में पढा जा सकता है। नरमेध यज्ञ अत्यंत महंगा यज्ञ माना जाता था क्योंकि बलि के लिए एक आदमी की कीमत उस वक्त एक हजार गायों के बराबर थी।(Dr,B.R. Ambedkar , Vol. 4 , P. 294, vol. 3, P. 174-175) वेदों के मुताबिक बलि के लिये {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों को छोडकर किसी भी जाति के लोगों की बलि चढाई जा सकती है।(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm)''काली की पूजा में नरबलि दी जाती थी। {अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों ने घोषित किया कि काली सिर्फ {बहुसंख्यक} शुद्रों की बलि स्वीकार करती है। इसतरह मूलनिवासी शुद्रों को बलि चढाना शुरु किया।'' (Will Durant, p. 520)

हिन्दूओं के कुछ खास मंदिरों में इन्सानों की बलि चढाना आज भी जारी है। युनायटेड प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया की खबर के मुताबिक पिछले तिन सालों में 2,500 नौजवान लडके तथा लडकियों की बलि काली को चढाई जा चुकी है। दूसरी एक रिपोर्ट (AFP's recent reports) के मुताबिक काली के आगे हर माह जवान लडके तथा लडकियों की बलि चढाई जाती है। रामसेवक नाम के व्यक्ति ने दिल्ली में अपने आठ साल के बेटे को काली को दिन-दहाडे बलि चढा दिया क्योंकि उसके मुताबिक काली ने उसे कहा था कि ऐसा करने पर उसका बेटा दोबारा जिंदा हो जायेगा और उसे भारी धनलाभ भी होगा। दिल्ली के कालीबारी के पूजारी के मुताबिक काली माता को बच्चे की बलि चढाने से उसे बेटा ही पैदा होता है। इसलिये कई लोग बेटा पाने की चाहत में किसी बच्चे की बलि चढाते है। देवताओं को प्रसन्न कर अपनी कामना पूरी करने के लिये भी लोग इन्सानों की बलि देवता पर चढाते है। बिहार के पुलिस प्रमुख जे. सहाय के मुताबिक हमने हर कोशिश कर ली कि इन्सानों की बलि चढाना बंद हो जाये लेकिन हम इसमें नाकामयाब रहे है। तब कोई क्या कर सकता है जब पूरा गांव मां-बाप की मर्जी से उसके बेटे की बलि चढाने पर राजी है ? बिहार के वकील उर्नकांत चतुर्वेदी के मुताबिक इन्सानों की बलि चढाना हत्या है। लेकिन हत्यारा पकडा नही जाता क्योंकि वह स्थानीय पूजारी होता है। स्थानीय पुलिस कोई कार्रवाई नही करती क्योंकि उन्हे देवि-देवता के कुपित होने का भय होता है।

केरल राज्य के सिध्दार्थ और रवि नाम के दो भाईयों ने अपनी 21 साल की बहन शोभा को पास के मंदिर में स्नान कर प्रार्थना करने के लिये कहा। इसके बाद उन्होने मंत्रोच्चारण करते हुए तलवार और लोहे की सलाख से उसकी बलि चढा दी।

` उसके रोने, चीखने-चील्लाने का उनपर कोई असर नही हुआ। बाद में उन्होने उसके टूकडे टूकडे कर दिये और उन्हे जला दिया। उन्होने यह सब गडा खजाना हासिल करने के लिये किया था। इसके पहले उन्होने दूसरी लडकी हासिल करने की कोशिश की थी लेकिन इसमें नाकाम रहने पर अपनी ही बहन की उन्होने बलि चढा दी।(http://www.danielpipes.org/explain that i have seen that video Reader comments at Daniel Pipes.htm)

अल्पसंख्यक ब्राह्मणों के संघ-परिवार व्दारा,
गोभक्षण की सच्चाई को नकारने की कोशिशें !

अतिशी मार्लेना के लेख 'The Politics of Hindutva and the NCERT Textbooks' के मुताबिक कक्षा 11 वी की आर. एस. शर्मा व्दारा लिखी किताब में तथा रोमिला थापर व्दारा लिखी 6 वी कक्षा की किताब में वेदिक काल में गोमांस भक्षण की प्रथा संबंधी हिस्सों को {बिजेपी सरकार के काल में} हटा दिया गया है। जबकि इस सच्चाई को साबित करने के हस्तिनापूर सहीत कई क्षेत्रों के उत्खनन से प्राप्त ढेर सारे पुरातत्वीय सबुत उपलब्ध है कि पहले गोमांस भक्षण किया जाता था। इस सच्चाई को किताबों से हटाकर यह जताया जा रहा है कि पूरातन काल से भारत में शाकाहार चला आ रहा है कोई भी गाय इ. का मांस नही खाता था।(http://www.revolutionarydemocracy.org/The Politics of Hindutva and the NCERT Textbooks.htm) मुसलमान और इसाई गोमांस भक्षण करते है यह दर्शाकर उनके खिलाफ नफरत फैलाने की संघपरिवार की मंशा है।

{अल्पसंख्यंक} ब्राह्मणों के धर्मग्रंथों में वेदिक ब्राह्मणों व्दारा गोमांस भक्षण करने के बेशुमार उदाहरण होने के बावजूद यह तर्क दिया जा रहा है कि गाय पवित्र मानी जाती है इसलिये उसकी हत्या नही की जाती थी। अथर्ववेद में उसे अघन्या (aghnya) कहा गया है। सच्चाई यह है कि सिर्फ ब्राह्मण को दक्षिणा के रुप में मिली हुई गाय को दूसरा कोई बलि नही चढा सकता था। वह ब्राह्मण चाहे तो अपनी गाय की खुद बलि चढा सकता है या उसे मारकर खा सकता है। दूसरा कोई उसकी गाय के साथ ऐसा नही कर सकता। बी वाकर (B.Walker) के मुताबिक दूध देने वाली गाय की बलि के खिलाफ प्रतिबंध है, अन्य गायों तथा बैलों को काटने पर कोई प्रतिबंध नही है। वेदिक आर्य गोमांस का बडे पैमाने पर भक्षण करते थे। कई संशोधकों का मानना है कि गाय को गोमाता करार देने का काम मुख्य रुप से मुस्लिम आक्रमण के बाद ही किया गया ताकि मुस्लिमों के खिलाफ नफरत पैदा की जा सके।(THE MYTHS OF HINDUTVA Dr. J. Kuruvachira)

संत कबीर के मुताबिक ब्राह्मण दक्ष कसाई है। वे बकरे की हत्या करते है और हत्या करने के लिये भैस के पीछे दौडते है। उनके मन में दया, करुणा के लिये कोई जगह नही है। नहा-धोकर, माथे पर तिलक लगाकर वे देवी के आगे तरह तरह के कर्मकांड करते है। वे जीव की तुरंत हत्या कर खून की नदी बहा देते है। इनको अगर ब्राह्मण कहे तो कसाई किसे कहेंगे ?(The Bijak of Kabir, by the Rev. Ahmad Shah, published by the author at Hamirpur in 1917) संतों पांडे निपुण कसाई। बकरा मारी भैसा पर ध ावै, दिल में दर्द न आई।। करी अस्नान तिलक दै बैठे, विधि से देवी पुजाई। आतम मारि पलक में बिनसे, रुधिर की नदी बहाई।। धर्म करै तह जीव बधत है, अकरम करे मोरे भाई। जो तोहरा को ब्राह्मण कहिये, तो काको कहिये कसाई।। (कबीर साहब का बीजक, प्रकाशक बेलवेडियर प्रेस प्रयाग। पहला एडिशन, 1926, p.56)

संत कबीर कहते है ''अश्वमेध, गोमेध, नरमेध यज्ञ अश्वमेध यज्ञ कहे कबीरा अधर्म बताये वेद।'' (संघर्षासाठी मूलनिवासी भारत, 16 जूलाई 2006)

अल्पसंख्यंक ब्राह्मणों के संघ-परिवार व्दारा गो-वध
के नाम पर मुस्लिम इसाईयों के खिलाफ नफरत का प्रचार !

इस देश की जितनी गाएं–भैसे मुसलमानों तथा इसाईयों ने मार कर नही खाई है उससे ज्यादा गायों को प्राचीन ब्राह्मणों ने मार कर खाया है। ब्राह्मण–धर्मग्रंथों के मुताबिक गायों के बँटवारे को लेकर गाय–भैसों की चमडी पर मिल्कियत को लेकर ब्राह्मणों ने आपस में हमेशा युध्द किये है। ब्राह्मणों के देवताओं को प्रसन्न रखने के लिये जो पशु हत्या नही करते थे उन्हे ब्राह्मण–धर्म का अनुयायी नही माना जाता था। (Dr. Ambedkar : Writing and Speeches Vol. 18-III, p.474) गाय के असली हत्यारे खुद ब्राह्मणवादी है जबकि दोष मूलनिवासी मुस्लिमों पर मढा जाता रहा है।

सरकारी आंकडों के अनुसार देशभर में चलाये जा रहे कत्तलखानों से गोमांस की विदेशों में भारी मांग के मद्देनजर इसका भारी मात्रा में निर्यात करके केन्द्र की बीजेपी सरकार भारी आय कमाती रही है। देश भर में बडी-बडी पूंजी से अत्याधुनिक कत्लखाने और गोमांस से तरह तरह की खाद्य-सामग्री तैयार करने के उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिलता चला गया। (लोकमत समाचार, 13 अगस्त 2003) पूरे भारत में 3600 कानूनी मान्यता प्राप्त कत्लखानें है। इन कत्लखानों के अलावा कानूनी मान्यता के बगैर चलने वाले कत्लखानों की संख्या 32,000 है। कार्यालयीन आंकडों के अनुसार किये जाने वाले मांस के निर्यात का 80% गाय का तथा बाकी का भैंस का मांस होता है। अधिकांश राज्यों में गोहत्या पर पाबंदी है इसलिये अधिकांश कत्तलखाने केरल तथा पश्चिम बंगाल में है जहां गोहत्या पर पाबंदी नही है।(Frontline, 12 september 2003)

सन 73-74 में मांस का विदेशों में निर्यात 2000 टन था, जबकि सन् 80-81 में यह 80,000 टन पर पहुंच गया। महाराष्ट्र में बॅबकाक विलकॉक एन्ड कंपनी (Babcock Willcock &Co.) के सरकारी परमिट से चलने वाले मशिनी कत्तलखाने में रोज दो हजार बडे जानवर मशिनों से काटकर उनका मांस विदेशों में निर्यात किया जाता है। बंबई देवनार का कत्लखाना विश्व का दूसरे नंबर का तथा एशिया का पहले नंबर का कत्लखाना है। इसमें रोजाना 10,000 जानवरों को काटने की क्षमता है। सन् 1979 में केरल के मुख्यमंत्री ने जानकारी दी थी कि इस साल केरल में चौदह लाख गायें काटी गई। स्टेट ट्रेडींग कार्पोरेशन के चेअरमन श्री बी.के दास गुप्ता ने गोश्त निर्यात करने वाले व्यापारियों की मीटिंग को संबोधित करते हुए कहा कि दुनियाँ में सबसे ज्यादा पशुधन भारत में है लेकिन इस हिसाब से मांस निर्यात नही किया जाता, इसलिये मांस निर्यात बढाने की ओर ध्यान देना चाहिये। इधर भारत सरकार ने नये और आधुनिक कत्लखाने और प्लांट स्थापित करने की योजना बनाई है। (अब्दूल करिम पारेख)

मान॰ इंदरसिंह वर्मा (गुडगांव हरियाणा) के अनुसार कृषि मंत्रालय में मांस निर्यात को बढावा देने के लिये जो समिति बनी है उसमें उसके प्रभारी और अध्यक्ष पद पर देश के सबसे बडे मांस निर्यातक व्यापारी है। सतीश सभरवाल ने वाजपेयी सरकार व्दारा स्थापित राष्ट्रीय मांस मंडल को गौमांस के निर्यात में अधिक बढौतरी करने की सिफारीश की थी जिसके फलस्वरुप 1998-99 के गौमांस निर्यात के मुकाबले में 2001-2002 के दौरान 50% की बढौतरी हो चुकी है। भाजपा की वाजपेयी सरकार ने 10 वी पंचवर्षीय

योजना के दौरान देश में विभिन्न स्थानों पर 65 हजार कत्लखाने खोलने के लिए 5137 करोड रुपये की गुंजाईश रखी है। (मान॰ मंजरुल हक अन्सारी जी का पत्र, लोकमत समाचार, 27 जुलाई 2003) मान॰ मंजरुल हक अंसारी, न्यू येरखेडा कामठी नागपूर के अनुसार देश में नए कत्तलखाने खोलने के लिये भाजपा सरकार ने साढे सात हजार करोड रुपये दिये है। (नवभारत, 21 अक्तूबर 2003) मांस व्यापार कूल 10,000 करोड रुपयों का है। इसकी भागीदारी में मांस निर्यात से संबंधित व्यापारियों के अलावा राजनीतिज्ञ, उच्च पुलिस अधिकारीगण, नौकरशाह, यहांतक कि नगर परिषदों के चौकी नाकों के मामूली कर्मचारी तक शामिल है। जो जानवरों को बूचडखानों तक पहुँचाने में हर मुमकिन मदद देने के बदले नगद नारायण की भेंट से लाभ हासिल करते है।(p.68, ''मासिक अल्लाह की पूकार,'' अप्रैल 2003)

कुरआन के आदेशानुसार कोई भी मुसलमान हलाल किये बगैर जानवर का मांस नही खा सकता। मुस्लिम सिर्फ हलाल किया हुआ मांस ही खाते है। हलाल करने के लिये जानवर को पवित्र काबा की ओर मुँह करके लिटाना, उसपर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहना तथा जानवर को जिबह करने वाले व्यक्ति का मुसलमान होना भी जरुरी है। इसके अलावा कुरान का आदेश है - ''तुम पर हराम कर दिया गया है मरा हुआ जानवर, खून और सुअर का गोश्त भी हराम कर दिया गया है, जिस जानवर पर अल्लाह के अलावा किसी दूसरे का नाम पूकारा गया हो, जो जानवर गला घोंटकर मार दिया जाए, जो चोट लगकर मर गया हो, जो उपर से गिरकर मर गया हो, सींग मारने से मर गया हो, जंगली दरिंदों ने जिस जानवर को फाड खाया हो ये सब जानवर हराम है।''- (5: अल मायदा-3) मशिनी कत्लखाने में इतनी सारी पाबंदियाँ और सावधानियाँ बरतना कतई संभव नही है। इसलिये अरब देशों को जब अंदेशा हुआ कि उन्हे निर्यात किया जा रहा गाय का मांस हलाल किया हुआ मांस नही है तो उन्होने इसे खरीदने से मना कर दिया। आर्डर कॅन्सल होने तथा अरबों व्दारा मांस की डिलीवरी लेने से मना करने से हडकंप मच गया। 8 अगस्त 1983 को युएनआई की रिपोर्ट के अनुसार गाय के मांस के हिन्दु व्यापारियों, निर्यातकों, उनके एजन्टों और गोश्त के दलालों के होश उड गये। वह भारत सरकार के डेप्युटी कामर्स मिनिस्टर के साथ दौडे दौडे अरब देशों को सलामी देने पहुँच गये। बडी चापलूसी और खुशामद से अरबों को समझाया गया कि हम तो हलाल तरीके से जिब्ह किया हुआ गाय का गोश्त ही आपको भेजते है। मजे कि बात यह है कि यही लोग भारतीय जनता को यह बताते है कि हम तो बैल और भैसे का गोश्त बाहर भेजते है, गाय का गोश्त नही जबकि ये व्यापारी मुस्लिम और अरब देशों में सलामी देकर बताते है कि ''हुजूर हलाल गाय का बेहतरीन गोश्त खाईये !'' जब अरबों को लगा की उन्हे मिक्स मांस भेजा जा रहा है तो उन्होने फिर मांस लेने से मना किया तब अगस्त 1983 को भारत सरकार का एक प्रतिनिधि मंडल श्री पी.ए. संगमा की अध्यक्षता में अरबों को मनाने लगा कि मांस मंगाना बंद न करे हम आपको शुध्द व हलाल गाय का गोश्त ही दे रहे है।(अब्दूल करीम पारेख) Meat products India के मॅनेजिंग डायरेक्टर Ani S. Das के अनुसार भारत के मांस का विदेशों में विशेष कर मध्य पूर्व के देशों में तेजी से निर्यात बढा है। (Frontline, 12 september 2003)

शहरों के प्राणी संग्रहालयों (Zoo) में रखे मांसाहारी जानवरों को, सरकारी तथा निजी फाईव्ह स्टार होटलों में तथा हवाई सफर में विदेशी मेहमानों तथा यात्रियों को गाय इ॰ जानवरों का मांस परोसा जाता है। इसतरह भारत के ब्राह्मणवादी सारे विश्व को धडल्ले से गाय का मांस परोसने में लिप्त है।

केरल राज्य के ॲनिमल हसबंडरी डिपार्टमेंट के आंकडों के अनुसार केवल केरल राज्य में ही हर साल 4.83 लाख पशु (भैसे छोडकर) कानून व्दारा मान्यता प्राप्त कत्लखानों में काटी जाती है तथा उनसे 24278 टन गोमांस प्राप्त होता है। सरकारी कत्लखानों में ही 10,000 से अधिक परिवारों को रोजगार मिला हुआ है। वस्तूतः गैरकानूनी कत्लखानों में इससे तीन गुना अधिक गायें काटी जाती है। गोमांस के अलावा चमडा, बोन मिल (Bone Meal), जानवरों के खून से तैयार किये जाने वाले उत्पाद, कॅलशियम तथा जिलेटिन इ॰ चिजों से भी भारी मुनाफा होता है। (Frontline, 12 september 2003)

''गोमाता की संतान ही उसकी हत्यारी बन गई'' शिर्षक से सुधीर कुमार (न्यूज नेटवर्क) का लेख साप्ताहिक बेबाक, मालेगांव (महाराष्ट्र) ने छापा जो निम्न प्रकार से है :- पूरे देश के पैमाने पर गोहत्या का धंदा जारी है उसकी रोशनी में इसके सिवा और कुछ कहना मामले की तीव्रता को कम करने के समान होगा कि गोमाता की संतान ही उसकी हत्यारी बनी हुई है। रिपोर्ट बताती है कि देश के इस कोने से उस कोने तक गोहत्या के कारोबार में आरएसएस, बजरंग दल, विश्व हिंदु परिषद और बीजेपी से जुडे नेता, मंत्री यहांतक कि कुछ राज्यपाल भी लिप्त है। अब यह रिपोर्ट सामने आई है कि स्वँय बजरंगदल, विएचपी, बीजेपी और आरएसएस के बडे बडे बडे नेता भी इस कारोबार में लिप्त है। वे एक ओर जहां देश के गांव गांव से गायों को लूट कर लाते है वहीं उनको ट्रकों में भर कर कलकत्ता और पटना भेज देते है जहां एक ओर तो उनकी हत्या कर मांस निर्यात किया जाता है तो दूसरी ओर इस काम में सबसे आगे वही सरकारी संस्था है जिसे गौमाता की रक्षा के लिये स्थापित किया गया है। यानि, गौमाता की हत्या पर राजनीति करने वालों के हाथ ही गौमाता के खून से रंगे हुए है। संघ परिवार से जुडे बहुत से लोग यहांतक कि गौसेवा कमिशन के कुछ सदस्य भी इस काम में साझेदार है। एक सूचना के अनुसार पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में जब एक ट्रक को पुलिस ने रोकना चाहा तो चालक ने वार्निंग को अनदेखा कर तेज गति से ट्रक चलाना शुरु कर दिया। काफी दौड धुप के बाद अंततः ट्रक पकड में आया। चालक ने बडी शान से उतर कर पुलिस को जब पूरी रामकथा सुनाई तो पुलिस के हाथों के तोते उड गये। यह ट्रक जिसमें 17 गायें और 9 बैल थे, गोसेवा कमिशन के सदस्य तथा आरएसएस के नेता अरविंद राय का था। चालक के पास वह पत्र भी था जिसमें पुलिस को बाकायदा निर्देश दिये गये थे कि वे ट्रक को हाथ न लगाये, और उस को बिना चेक किये निकल जाने दे। उत्तर प्रदेश में आजकल स्वदेशी जागरण मंच के पदाधिकारियों ने भी कुहराम मचा रखा है। वे जब चाहते है विभिन्न चेक पोस्टों पर खडे होकर पशु चालकों पर कहर ढा देते है। परंतु लखनउ में इसी स्वदेशी जागरण मंच के कई पदाधिकारी गौहत्या में लिप्त पाये गये। एक तो भूतपूर्व संसद सदस्य भी है और लाखों का धंदा करता है। इसके चार ट्रक पुलिस ने जब्त किये थे जिन में 82 गायों को ठूंस ठूंस कर भरा गया था। जिन में से कई गायें जख्मी भी हो गई थी, बाद में उनमें से कई गायों ने दम तोड दिया। उस पर से तुर्रा यह कि उस भूतपूर्व संसद सदस्य ने लखनउ के डीएम और चीफ मेडिकल ऑफिसर को पत्र लिख कर गायों से भरे उन ट्रकों को छोडने के लिये भी कहा। आरएसएस और उससे जुडे संगठनों के लठैत पदाधिकारी हमेशा मुसलमानों को गौमाता के हत्यारे ठहराते है। इस विषय पर कई लडाई-झगडे भी हुए पर एक हल्का सा सर्वेक्षण या समिक्षा की जाये तो मालूम होगा कि गौहत्या से लेकर उसके मांस और चमडे की तस्करी तक में सब के सब संघ परिवार से संलग्न लोग ही लिप्त है। उदाहरणतः गौसेवा कमिशन के अनुसार उ.प्र. में कई बडे नेताओं के ''पशु बाजार चल रहे है।

जैसे :- 1) राज्य के शिक्षामंत्री शामसुंदर श्री का मथुरा में पनिपार पशुपेठ, 2) स्वास्थ्य मंत्री अरी वामन सिंह का आगरा में पनियहत, नवगांव जगर और बटेश्वर पशुबाजार, 3) चेरिटी (खैराती) मामलों के राज्यमंत्री योगेश प्रताप सिंह का बहराईच में जरवि पशुबाजार, 4) नागरिक उत्थान के राज्यमंत्री शिवेन्द्र सिंह का महाराज गंज में सिस्वां पशुबाजार, 5) भूतपूर्व मंत्री दिवाकर विक्रम सिंह का सिधार्थ नगर में अदोनी पशुबाजार, 6) भूतपूर्व मंत्री मंडलेश्वर सिंह का आगरा में सैयां पशुबाजार, 7) निर्दलीय विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया का प्रतापगढ़ में कंडा पशुबाजार, 8) विधायक जगप्रताप सिंह का सिधार्थ नगर में रानीगंज विहांसी पशुबाजार, 9) विधायक रामचंद्र गिरी का जे.पी. नगर में चंदेश्वर ढक्का, और जनपूर पशुबाजार तथा 10) एमएलसी राकेश प्रकाश सिंह का रायबरेली में शिवगढ़ पशुबाजार है। 11) इन में फैजाबाद में स्थित भगवतिपूर और भीकमपूर पशुबाजार भाजपा के राज्य अध्यक्ष विनय कटियार के पशुबाजार जाने जाते है। परंतू लायसंस में उसका या उसके किसी रिश्तेदार का नाम नही है। 12) धामपूर (बिजनौर) के विधायक मूलचंद (भाजपा) के पशुबाजार से हाल ही में 103 गायें बरामद हुई है जिन को वध के लिये रायपूर ले जाया जा रहा था। यह एक हलका सा नमूना है। इस समय पूरे देश में दूर्दशा यही है कि भाजपा और संघ परिवार से जुडे हुये लोगों के बडे-बडे पशुबाजार ही नही बल्कि स्लाटर हाउस (कत्लखाने), बडे-बडे कोल्ड स्टोरेज और मांस निर्यात करने वाली कंपनियाँ तक इन्ही की है। इन कंपनियों के नाम इस प्रकार रखे गये है कि यह समझना कठिन हो कि यह हिंदुओं की है। जैसे हैदराबाद की निर्यात कंपनी 'अलकबी' एक गैरमुस्लिम (जैन) की है। ऐसी बहूत सी कंपनियाँ है जिन के नाम के पहले ''अल'' लगा कर भ्रम उत्पन्न करने की कोशिश की गई है। जैसे एक कंपनी का नाम ''अललाना'' है। इन कंपनियों के करता-धरता बडी राजनीतिक पहुँच वाले है। इनमें भाजपा सरकार वाले एक राज्य के राज्यपाल तथा उनकी पत्नी के नाम भी लिये जाते है। क्या अब भी इसमें शंका के लिये कोई जगह है कि स्वँय गौमाता के पूजारी ही उसकी हत्या के कारोबार में लगे हुये है। (साप्ताहिक बेबाक, मालेगांव, महाराष्ट्र, 8 अगस्त 2003)

जानवरों की चर्बी से वनस्पति घी लज्जतदार बनता है तथा वनस्पति तेलों से सस्ता पडता है इसलिए वनस्पति घी में जानवरों की चर्बी का इस्तेमाल किया जाता है। गाय की हत्या में साबुन तथा वनस्पति घी बनाने वाले कारखानों का भी बहूत बडा योगदान है। इन कारखानों के मालिक अधिकतर ब्राह्मणवादी ही है। पंजाब में लाखों टन गाय की चरबी पाई गई। पंजाब विधानसभा में यह मामला उठा, हकीकत को छिपाने के लिये गर्मागर्म बहस की आड में गाय की चरबी को भैस की चरबी मशहूर कराकर हुकूमत की जान बचाने की कोशिश की गई। यह दास्तान गढ़ी गई कि वनस्पति घी में चरबी का चोरी-छीपे इस्तेमाल हो रहा था। नई दिल्ली, पंजाब के विभिन्न इलाकों में गाय की चरबी से लदे कई ट्रक पकडे जा चुके है जिसका इस्तेमाल वनस्पति घी बनाने के लिये किया जा रहा था। पंजाब में ऐसे कई लोगों को पकडा भी जा चुका है। मुंबई के बंदरगाह पर भी सैकडों टन चरबी पकडी गई। हिन्दु संगठनों ने भी गाय की चरबी इस्तेमाल करने वालों के विरुध्द मात्र प्रदर्शन करना ही काफी समझा। यह जानते हुये भी कि इस वनस्पति घी का इस्तेमाल गोभक्त हिन्दु करते है इसके बावजूद वनस्पति घी में गाय तथा अन्य जानवरों की चर्बी मिलाना बदस्तूर जारी है। श्री बलराम जाखड ने कहा कि गाय की चर्बी का इस्तेमाल करने वाले मित्तल और जैन निकले। 26 अगस्त 1983 को नागपूर के दैनिक हितवाद ने युएनआई के हवाले से खबर छापी कि

गाजीयाबाद की फर्म ''जैन शुध्द वनस्पति लिमिटेड दिल्ली'' को गाय की चर्बी के इस्तेमाल के संबंध में सरकार ने अपने कानूनी शिकंजे में ले लिया है और आगे की छानबिन के लिये मामले को सीबीआई के हवाले कर दिया गया है। यदि किसी दूसरे समूदाय से संबंध रखने वाला यह हरकत करता तो दंगे भडक उठते। एक अन्य खबर के अनुसार नई दिल्ली लोकदल के सेक्रेटरी श्री रामेश्वरराव सिंह ने आशंका प्रकट की कि वनस्पति घी में गाय की चर्बी के इस्तेमाल के विरुध्द वे देशव्यापी अभियान चला रहे है इसलिये उनकी जान को खतरा है। 22 अगस्त 1983 को एक प्रेस कान्फेस में उन्होने जाहिर किया कि उन्हे अपना यह आन्दोलन बंद करने की धमकियाँ दी जा रही है। श्री सिंह ने अपने बयान को दोहराते हुए कहा है कि देश में वनस्पति घी में इस्तेमाल के उद्देश्य से बडे पैमाने पर गाय की चरबी का आयात किया जा रहा है। उन्होने चुनौति दी कि उनका बयान गलत साबित करने पर वे राज्यसभा की सदस्यता से इस्तिफा दे देंगे। (सेह रोजा दावत, दिल्ली 25 अगस्त 1983, देखिए अब्दूल करीम पारेख)

कभी कभी यह खबरें भी आती रहती है कि दालमोट इ॰ खाद्यपदार्थो जैसी चिजों में भी जानवरों की चर्बी का इस्तेमाल होता है। ऐसा करने वाले आमतौर से ब्राह्मणवादी व्यापारी होते है। इसलिये इन बातों के सामने आने के बावजूद कोई हंगामा नही हुआ है। जबकि जरा जरा सी बात पर जातीय दंगे भडकाये जाते है। उर्दू साप्ताहिक ''निदाए मिल्लत'' ने मांग की है कि सरकार एक श्वेतपत्र जारी करे कि गाय की चर्बी मिलाने के जुर्म में देश के कौन से कारखाने शामिल है और किन ब्रांडों में गाय की चरबी पायी गई। मुसलमानों के लिये भी यह अहम मसला है क्योंकि वे ऐसे वनस्पति घी का इस्तेमाल नही कर सकते जिस में हराम चरबी की मिलावट हो।(अब्दूल करीम पारेख)

कॉफ लेदर (Calf Leather) जो बछडे का चमडा है भारी कीमत में अमेरिका भेजा जाता है। गाभण गाय जिसके पेट में बच्चा होता है उस जीन्दा गाभण गाय के पेट में औजार मारकर जिन्दा बच्चा निकालकर खौलते पानी में डालकर उसे जिन्दा उबालकर उसका चमडा हासिल कर के कई कई हजार की रकम कमाई जाती है। इस कारोबार में एक भी मुस्लिम नही है। सन् 1965-66 में सत्ताईस करोड इक्किस लाख रुपयों का चमडा विदेशों में निर्यात किया गया। इसकी तुलना में 1979-80 में 425 करोड रुपयों का चमडा विदेशों में निर्यात किया गया।(अब्दूल करीम पारेख)

साबुन तथा वनस्पति घी के अलावा गाय बैलों की चर्बी, खून तथा हड्डियों का उद्योगों में धडल्ले से इस्तेमाल होता है। जानवरों की हड्डीयों से उद्योगों में काम में आने वाले तरह तरह के रसायन, दवाईयां तथा वस्तूएं बनाई जाती है। टूथपेस्ट में जानवरों की हड्डी का पाउडर मिला होता है। समाचार के अनुसार मधुमेह के इलाज में इस्तेमाल की जाने वाली इंसुलिन नामक दवाई मृत जानवरों की चर्बी से बनाई जाती है और उसकी कीमत 200 से 400 रुपये होती है। (लोकमत समाचार, 7 अगस्त 2003) अमेरिका की एक फर्म ने गाय के रक्त से सभी प्रोटिन हटाकर उसके होमोग्लोबिन से 'होमोप्योर' नामक एक ऐसा विलयन बनाया है जो लाल रक्त कणिकाओं की भांती ही कार्य करेगा तथा यह विलयन शरीर के सभी उतकों व अंगों तक आक्सिजन पहुँचाने में सहायक होगा। अफ्रीकी मेडिसंस कंट्रोल काउंसिल ने अनेमिया के रोगियों की सर्जरी के दौरान इसके इस्तेमाल की अनुमति भी प्रदान कर दी है। मनुष्य को चढाये जाने वाले रक्त को अभी तक फ्रिजर में ही केवल 42 दिनों तक ही सुरक्षित रखे जा सकने की व्यवस्था है जबकि होमोप्योर को पूरे दो वर्षो तक कमरे के तापमान पर भी रखा जा सकता है।

(लोकमत समाचार, 22 अगस्त 2003) इसतरह गाय-बैलों के शरीर के हिस्सों से होने वाले उत्पाद का कारोगबार बहूत बडा है, जो गैर-मुस्लिमों के हाथों में है।

एक बडा व्यवसायिक वर्ग निजी मुनाफे के लिए गायों को आक्सिटोसिन नामक इंजेक्शन के सहारे गायों का दूध उतारता है। पंजाब, हरियाणा, उ.प्र जैसे राज्यों से जहां गोहत्या पर प्रतिबंध है हर साल लाखों जवान और हट्टीकट्टी गायें कलकत्ता लाई जाती है और इन गायों को दूध बढाने वाले ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन देकर आठ दस महिनों में इनसे ज्यादा से ज्यादा दूध निकाल लिया जाता है। वे हमेशा के लिये दूध देना बंद कर देती है तो उन्हे कत्लखाने भेज दिया जाता है। इससे न सिर्फ गाएं बांझ हो रही है, तील-तिल कर मर रही है, बछडे कसाईघर जाने को विवश है बल्कि सीधा साधा समाज नपुंसकता, गंजेपन, कँसर जैसी बीमारियों का शिकार हो रहा है। इस क्रूरता के लिए संघ परिवार खामोश है क्योंकि ब्राह्मणवादी मुनाफाखोरों के फायदे के लिए सरकारी संरक्षण में गायों पर जुल्म ढाया जा रहा है। आक्सिटोसिन नामक जो इंजेक्शन बाजार में बिक रहा है उसपर दवा नियंत्रकों ने प्रतिबंध लगा दिए है लेकिन बाजार में सस्ता और अधिक दूध उपलब्ध कराने तथा चमडी और मांस के लिए बछडों को कसाईघर पहुंचाने के उद्देश्य से पशुपालन विभाग इसे बढावा दे रहा है। यह दवा तैयार करने वाली कंपनी को स्वास्थ्य मंत्रालय की सशर्त इजाजत है, फिर भी वह कंपनी गैरकानूनी धंदा करती है, यह केन्द्र सरकार को अच्छी तरह पता है। फिर भी उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नही होती। भाजपा शासित गुजरात में आक्सिटोसिन खुब बिकता है। एक छापे में सिर्फ अहमदाबाद में तीन लाख पॅकेट बरामद हुए थे इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वहां गायों पर कितना अत्याचार हो रहा है। संघ परिवार की सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मुंबई की जिस कंपनी को लायसन्स दे रखा है उसपर जानबूझकर पाबन्दी आयद नही की जा रही है। संघ परिवार को राजनीति के अलावा गायों से कोई लेना देना नही है इसलिए उन्होने गौरक्षा विधेयक में इन मुनाफाखोर गो-हत्यारों के खिलाफ कठोर कानून बनाने का प्रस्ताव नही रखा।(नवभारत, 25 जुलाई 2003) ब्राह्मणवादियों का गौवंश प्रेम जानवरों के नाम पर पैसे बटोरने और राजनीतिक स्वार्थ के लिए किया जाने वाला ढोंग-पाखंड है।

तथाकथित जानवर-प्रेमी मेनका गांधी के गो-सदन में सन 1997 से जुन 98 तक 1688 जानवर मर चुके थे। मरने वाले जानवरों की संख्या लगातार बढ रही है इसके बावजुद जानवर प्रेम का ढोंग बदस्तुर जारी है। समाचार के अनुसार मेनका गांधी की संस्था सोसायटी 'प्रिवेंशन ऑफ क्रुएल्टी टू एनिमल्स' की देवीपुरा में स्थापित पशु आश्रय गृह की दशा किसी को भी यह सोचने को विवश कर देने वाली है कि मेनका गांधी का पशुप्रेम सिर्फ ढकोसला है। आश्रय गृह में पशुओं पर अत्याचार की पराकाष्ठा है। जब कुछ समाज सेवियों ने इस आश्रयगृह का दौरा किया और पशुओं को भूख प्यास से तडपते हुए पाया। आश्रयगृह में मौजुद सभी पशु भीषण गर्मी में भी धुप में बंधे मिले। आश्रय गृह में तैनात डाक्टर भी नदारत मिला। वह कभी कभार ही आता है। पशुओं को न ही समय से पानी पिलाया जाता है और न ही सही चारा डाला जाता है। जहाँ पशु बांधे जाते है वहाँ से गंदगी भी नही उठाई जाती। भूख, प्यास व बीमारियों से रोजाना पशुओं की मौत हो रही है। मृत जानवरों के शवों को आसपास के खेतों में फेंका जा रहा है जिससे बीमारियाँ फैलने की आशंकाएं पैदा हो रही है।(नवभारत, 18 जुलाई 2002)

गैर-मुस्लिम ही मुक्ष्य रुप से गोभक्षक है।

गाय बैलों का मांस बौध्द, ईसाई, नेपाली, गुरखे, गोंड, भिल्ल, माडिया इ॰ आदिवासी, दलितों की विभिन्न जातियाँ, यहांतक कि दक्षिणी भारत के हिन्दु भी बहूत बडी संख्या में खाते है।

केरल राज्य के राज्य योजना बोर्ड की कृषि डिविजन के प्रमुख डॉ. पी.एन. राजशेखरन के सर्वे के अनुसार केरल राज्य के 97% ग्रामिण लोग तथा शहरों के 85% लोग मांसाहारी है। राज्य की 70% लोकसंख्या गोमांस खाती है। सामान्य लोगों के लिये गोमांस सस्ता पौष्ठीक आहार है।(Frontline, 12 september 2003) नागालँड तथा मेघालय में कोई भी त्यौहार गोमांस के बिना संपन्न नही होता। मेघालय की राजधानी शिलांग में घुसते ही गोमांस की दुकाने नजर आती है। सरकारी आंकडों के अनुसार मेघालय की 23 लाख जनसंख्या में से 15 लाख लोग गोमांस खाते है। सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुसार मेघालय की खासी जनजाती गोमांस के बिना नही रह सकती। उन्हे गोमांस से वंचित करना ऐसा ही है जैसे कि कोई किसी बंगाली को मछली से वंचित करे। केरल में गोमांस की मांग इतनी अधिक है कि वहां के 95% लोग मांसाहारी है। सरकारी आंकडों के अनुसार केरल में सन् 2001-02 में गोमांस का सेवन 2,45000 टन था। तामिलनाडु कर्नाटक तथा अन्य करिबी राज्यों से केरल में लगभग 10 लाख जानवर लाये जाते है ताकि केरल के लोगों की मांसाहार की जरुरतों को पूरा किया जा सके। लोगों के अनुसार गोवधबंदी से उन्हे सस्ता पोषक आहार मिलना बंद हो जायेगा। इसके अलावा सरकार व्दारा गोमांस के निर्यात को बढावा देने के लिये नॅशनल डेअरी डेव्हलपमेंट बोर्ड के साथ चलाया जाने वाला केरल को रोगमुक्त क्षेत्र बनाने का 33 करोड रुपयों का प्रकल्प भी बेकार चला जायेगा। (p.12-14,The Weeek, 24 Aug. 2003) इन सब लोगों की संख्या की तुलना में मांसाहारी मुस्लिमों की संख्या एक प्रतिशत भी नही है।

भाजपा व्दारा गोहत्या प्रतिबंध के विधेयक को संसद में प्रस्तूत करने के प्रयासों से पूर्वोत्तर राज्यों के लोगों में बहूत नाराजगी है। लोगों ने इस विधेयक का विरोध करने का फैसला किया है। नागालैंड के एक भाजपा नेता होकिशे सेमा ने कहा है कि नागालैंड और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में गोमांस लोगों का प्रमुख आहार है। सरकार को यह तय करने का अधिकार नही है कि लोग क्या खाये और क्या न खाये। मेघालय के मुख्यमंत्री डी.डी. लपांग ने कहा कि सदियों से पूर्वोत्तर के लोग गोमांस खाते रहे है। नागालैंड के एक मंत्री एम. सी. कोनियक ने कहा कि अगर पूर्वोत्तर के राज्यों पर गोहत्या पर प्रतिबंध का फैसला थोंपा गया तो इसके बुरे अंजाम सामने आयेंगे। पूर्वोत्तर के लोग अपने पर्व त्यौहारों पर भी गोमांस परोसते रहे है। मेघालय के एक आदिवासी नेता एम. मार्वनियांग ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों में यह कानून लागू नही किया जा सकता हम हर हाल में इसका विरोध करेंगे। उनका कहना था कि सरकार मनमानी कर रही है जिसके कारण उनकी परंपरा को खतरा पैदा हो गया है। (भाष्कर, 20 अगस्त 2003) एक ओर ब्राह्मण ावादियों व्दारा अपने लाभ के लिए चमडे, चर्बी तथा मांस निर्यात के लिए गाय, बैल इ॰ की हत्या करवाना तथा दूसरी ओर अपने पोषण के लिए उनके पौष्टिक मांस से मूलनिवासियों को वंचित करना मक्कारी के सिवा क्या है ?

द्रमुक के अध्यक्ष करुणानिधि ने कहा है कि उनकी पार्टी गोवध विरोधी विधेयक का विरोध जारी रखेगी क्योंकि यह मुद्दा गरीब लोगों की रोजी रोटी से जुडा है। इस विधेयक के पारित हो जाने से 15 लाख लोग बेरोजगार हो जायेंगे तथा प्रति वर्ष तीन हजार करोड की विदेशी मुद्रा का घाटा होगा। यदि गोहत्या पशुओं के प्रति क्रूरता है तो मछली तथा सभी जानवरों को मारने पर पाबंदी होनी चाहिये। (लोकमत समाचार,

24 अगस्त 2003) हिन्दु वोटों के लिये कांग्रेस खुद को बीजेपी से बडी हिन्दुत्ववादी (ब्राह्मणवादी) जताने पर तुली हुई है इसलिये सोनिया से लेकर हर कांग्रेसी नेता दिन-रात ब्राह्मणवादी साधू-संतों के यहां मत्था टेकते रहे है। दिग्विजय सिंह की गोवध बंदी की मांग और उनकी चुनौति से तिलमिलायी भाजपा सरकार पर दबाव काम कर गया और खुद को गो-भक्त साबित करके राजनीतिक लाभ के उद्देश्य से भाजपा को संसद में गोहत्या-बंदी विधेयक लाना पडा।(लोकमत समाचार, 13 अगस्त 2003) वाजपेयी सरकार का उद्देश्य मात्र राजनीतिक होने के कारण उसने अपने घटक दलों को विधेयक पेश करते समय विश्वास में नही लिया, ताकि खुद को गाय की भक्त तथा अन्यों को गाय विरोधी दर्शाया जा सके। काँग्रेस ने खुद को गोभक्त ही नही बल्कि बीजेपी से भी बडी जानवर भक्त दर्शाने के लिये यह मांग की है कि बीजेपी सरकार गोवध के साथ साथ भेड-बकरियों की हत्या को भी रोके। काँग्रेस ने बीजेपी की ''गो-भक्ति'' को चुनौति देते हुए कहा कि बीजेपी गोवा और नागालैंड में गोहत्या पर पाबंदी क्यों नही लगाती जहां उसकी अथवा उसके समर्थन वाली सरकारें है। (भाष्कर, 19 अगस्त 2003, नवभारत, 22 अगस्त 2003) गोवंश हत्या प्रतिबंध का नाटक करने के पिछे ब्राह्मणवादियों के कई नापाक राजनीतिक इरादें है।

1) ब्राह्मणवादियों का पहला मकसद मूलनिवासी मुस्लिमों के प्रति घृणा को बढाना तथा मूलनिवासी गैरमुस्लिमों से उनका संघर्ष कराकर दोनों को हलाक करवाना है।

गोहत्या विरोधी प्रस्तावित कानून में गायों का निर्यात, गोमांस विक्री पर प्रतिबंध, गोहत्या अथवा गाय को चोट पहुँचाने को कॉगनिजिबल (दखलपात्र) तथा गैरजमानती अपराध करार दिया गया है। प्रस्तूत कानून में बैलों तथा भैसों का भी समावेश होता है। जो भी कोई गाय की हत्या करता है या हत्या के लिये प्रेरित करता है उसे दो साल से अधिक तथा अधिकतम सात साल के कठोर कैद का तथा साथ ही 10,000 रुपयों के जुर्माने का प्रावधान है। गाय को चोट पहुँचाने के लिये पांच हजार तक का जुर्माना किया जा सकता है। इस कानून के अनुसार सब इन्सपेक्टर या सरकार व्दारा नियुक्त कोई भी व्यक्ति किसी भी दुकान में प्रवेश कर सकता है, वाहनों की तलाशी ले सकता है तथा किसी वाहन में गाय इ॰ मिलने पर कार्रवाई कर सकता है। ऐसे अधिकारी की कथित ज्यादतियों के खिलाफ कोई केस नही कर पायेगा या उसके खिलाफ शिकायत नही की जा सकेगी। बीजेपी तथा संघ परिवार इन प्रावधानों का इस्तेमाल अल्पसंख्यंकों के खिलाफ करना चाहती है।(Frontline, 12 september 2003) कृषि मंत्रालय के सुत्रों के मुताबिक गोवध के खिलाफ कानून बनने के बाद गाय को चोट पहुंचाने वाले को छह महिने कारावास की सजा हो सकती है। इस कानून को ''प्रिवेंशनऑफ क्रुअल्टी अगेन्स्ट काउस बिल'' के नाम से जाना जायेगा। (नवभारत, 7 अगस्त, 2003) जाहिर है इस कानून का इस्तेमाल गरीब मूसलमानों पर किया जायेगा न की गाय के ब्राह्मण ावादी हत्यारों के खिलाफ।

2) ब्राह्मणवादियों का दूसरा मकसद माँसाहार और विशेषकर सस्ते में उपलब्ध गोवंश मांसाहार को घृणित प्रचारित करके मेहनतकश बहुजन जनता को पौष्ठिक आहार से वंचित करके उनको कमजोर बनाकर रखना है क्योंकि आम मेहनतकश बहूजन मुर्गा, मटन, मछली, झींगे इ॰ का महंगा माँस नही खरीद सकते।

3) ब्राह्मणवादियों ने गोहत्या विधेयक लाने के पिछे का सबसे बडा मकसद किसानों को तबाह बरबाद करके उन्हे अपनी जमीने विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को

औने-पौने दामों पर बेचने पर मजबूर करना है। विदेशी खेत उत्पादों की भारत में भरमार ने वैसे ही किसानों की कमर तोड दी है, ऐसे में दूध न देने वाले जानवरों को पालने की मजबूरी में किसान आर्थिक रुप से टूट जायेंगे और खेती के व्यवसाय पर ब्राह्मणवादियों और उनके आका विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार हो जायेगा। किसान अपने बैलों से हल इ॰ के काम लेता है तो उसको डर रहेगा कि कहीं उसके खिलाफ कार्रवाई न हो जाये। गरीब किसान ट्रक्टर इ॰ नही खरीद सकता।

स्मिता सिरोही जैसे विशेषज्ञों के अनुसार दूधारु गाय का पालन पोषण करना भी किसानों तथा डेअरी मालिकों के लिये महंगा सौदा है क्योंकि मिलने वाले दूध से चारे का तथा गायों की देखरेख का खर्चा नही निकलता। (Frontline, 12 september 2003) जिस तरह ब्राह्मणवादी पॉलिथिन की थैलियों में बडे पैमाने पर नकली, मिलावटी दूध बेच रहे है उससे दूध का व्यवसाय करने वाले बहुजन परेशान है। दूध न देनेवाले गाय-भैसों को पालने की मजबूरी में तो वे और भी तबाह बरबाद हो जायेंगे और दूध व्यवसाय पर ब्राह्मणवादियों तथा उनके आका विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पूर्ण एकाधिकार कायम हो जायेगा। दलित व्हायस के अनुसार ब्राह्मणवादियों ने गोहत्या-बंदी कानून दलितों व यादवों को आर्थिक रुप से बेबस बनाने के लिए बनाया है। यादव समूदाय बडी संख्या में गाय-भैंसों को पालता है तथा उनके दूध का व्यापार करता है। जब गाय दूध देने लायक नही होती है तो वह उसे कसाईयों को बेचता है तथा उस पैसे से नए बछडे खरीदता है। गोवध बंदी कानून के कारण यादवों को दूध न देने वाली गायों को जबरन पालना पडेगा जिससे वे कंगाल हो जाएंगे। (Dalit voice, 16-30 April, p.8-9)

4) उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणवादियों को बहादूर चमार जाति के मायावती कांशीराम की राजनीतिक ताकत के आगे लाचार होना पडा है। इससे वे चमारों के खिलाफ प्रतिशोध की आग में जल रहे है। गोवध-बंदी कानून के माध्यम से ब्राह्मणवादी चमडे के उत्पादन में भारी कमी को पैदा करके चमारों को चर्मव्यवसाय से बेदखल करके अपना प्रतिशोध पूरा करना चाहते है। गोवध-बंदी कानून का परिणाम यह होगा कि चमडे की वस्तूओं के उद्योगों पर भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार कायम हो जायेगा। इससे ब्राह्मण-बनियों की सिंथेटिक चमडों की वस्तुओं की मांग बढेगी। अन्य जानवरों का मांस कहकर ब्राह्मण ावादियों का गो-मांस और चमडे-चर्बी का कारोबार भी जारी रहेगा।

5) ब्राह्मणवादियों का अंतिम घृणित मकसद मांसाहार को हीन दर्शाकर खुद को श्रेष्ठ और मूलनिवासी बहुजनों को नीच दर्शाना है। ब्राह्मणवादी इससे बहुजनों में हीनता की भावना विकसित करना चाहते है ताकि बहुजनों को पूरी तरह से गुलाम बनाया जा सके। विदेशी आर्य-ब्राह्मण मनुवादियों का मकसद हमेशा से यही रहा है।

संसद में विपक्ष के साथ साथ राजग के कुछ घटक दलों के तीव्र विरोध तथा संसद में विधेयक की प्रतियां फाड देने के चलते वाजपेयी सरकार ने गोहत्या विरोधी विधेयक पेश नही करने का फैसला लिया।(भाष्कर, 22 अगस्त 2003)

शाकाहार भी जीव हत्या है क्योंकि पौधों में जान होती है। पीने के पानी में सुक्ष्म कीटाणु होते है। सांस व्दारा ली जाने वाली हवा में भी कीटाणु होते है। हमारे चलने फिरने से कई जीव रोज मरते है। दही के रुप में हम असंख्य जीवों का भक्षण करते है। इसलिये जीव हत्या या मांसाहार से बचा नही जा सकता। खुद ब्राह्मणों का वैदिक धर्म यज्ञ में जानवरों सहित इन्सानों तक की बलि देने को जायज समझता है तब अपनी भूख मिटाने के लिए मांसाहार करने वाले मूलनिवासियों को क्रूर कहना नाइन्साफी है।

तथाकथित शाकाहारी ब्राह्मण बनियों की क्रूरता ने हैवानियत को भी शर्म से पानी पानी कर दिया है। बालिका-भ्रुण की हत्या करना, दहेज के लिये बहुओं को जिन्दा जलाना, सति के नाम पर विधवाओं को जबरन जिन्दा जलाना, वेश्या की जिंदगी जीने के लिए उन्हे तीर्थस्थलों पर छोड देना, देवदासी बनाना, दंगों में हजारों का कत्लेआम करना, दलितों की बहू-बेटियों पर बलात्कार करना, उनके घर जला देना, उन्हे जिन्दा जला देना ये ब्राह्मणवादियों के काम हैवानियत की इन्तेहा है।

ब्राह्मणवादियों की पाखंडी-क्रूरता की इन्तेहा !

एक समय के गो-भक्षी ब्राह्मणवादियों का गाय को माता करार देना ढोंग-पाखंड के अलावा कुछ नही है। ब्राह्मणवादी जब मरी हुई अपनी माँ की लाश को उठाकर स्मशान ले जाते है तो वे मरने के बाद अपनी गो-माताओं की लाश खुद क्यों नही उठाते ? इनकी मरी गोमाताओं को उठाने के लिये इन्हे दलितों की जरुरत क्यों पडती है ? फिर उसी गो माता के चमडे से बने जूते चप्पलें बनवाते हुए तथा पहनते हुए इन्हे शर्म क्यों नही होती ? अधिकतर चमडे की वस्तूएं बनाने के कारखाने ब्राह्मणवादियों के ही है।

आर.एस.एस. के प्रचारक गीरीराज किशोर ने हरियाणा के झज्जर में ब्राह्मणवादी भीड व्दारा मरे गाय का चमडा उतारते पांच दलितों की गाय का हत्यारा कहकर उनकी हत्या करने को सही ठहराया है कि हमारे धर्मगंथों के मुताबिक गाय की जींदगी कितने भी लोगों की जींदगी से कीमती है।(http://www.countercurrents.org/Manu Reloaded ! Brahminism Yesterday, Hindutva Today By Subhash Gatade.htm) भारत में अस्सी फीसदी दूध भैस से प्राप्त होता है। भैसे भारत की मूलनिवासी प्रजाति है इसलिये उसके संरक्षण में ब्राह्मणों ने संविधान में गाय की रक्षा की तरह कोई प्रावधान नही किया है। गाय द्रविडों का जबकि गाय आर्यो का जानवर है। भैस काले रंग की है और द्रविड लोग भी काले रंग के है।(The Rediff Interview/Dr Kancha Ilaiah/'Brahmins do not have the right to call themselves Indians'.htm)

किताब का पहला हिस्सा समाप्त !

मौजूदा वेबसाईट की वेब-होस्टींग कंपनी व्दारा फाईल साईज की अधिकतम सीमा 2 एम.बी. तय की होने से हमें मूल किताब को दो हिस्सों में तोडकर अपलोड करना पडा है। इसलिये पूरी किताब पढने के लिये कृपया दोनों हिस्से डाउनलोड करें!

प्रस्तूत किताब पूरे एक ही हिस्से में हमारी दूसरी वेबसाईट www.bluemarchorg.wordpress.com से आप डाउनलोड कर सकते है। क्योंकि wordpress.com की अधिकतम फाईल सीमा के भीतर हमारी किताब है। असुविधा के लिये खेद है।